कार्ल मार्क्स

●

राहुल सांकृत्यायन

किताब महल, इलाहाबाद

प्राक्कथन

नवीन मानव-समाजके विधाता कार्ल मार्क्सके जीवन और सिद्धान्तोंके सम्बन्धमें हिन्दीमें छोटी-मोटी पुस्तकोंका बिल्कुल अभाव नहीं है, लेकिन जिसमें पर्याप्त रूपसे मार्क्सकी जीवनी, सिद्धान्त और प्रयोग मौजूद हो, ऐसी पुस्तकका अभाव जरूर खटक रहा था, केवल इसीकी पूर्तिके लिये यह पुस्तक लिखी गई। यह मेरिंगकी पुस्तक "कार्ल मार्क्स" पर आधारित है, इसके अतिरिक्त कुछ और पुस्तको से भी मैंने सहायता ली है। मुझे संतोष होगा, यदि इस प्रयाससे मार्क्सको समझनेमें हिन्दी पाठकोंको सहायता मिले।

यह पुस्तक, उन चार जीवनियोंमें है, जिनको मैंने इस साल (१९५३ ई० मे) लिखनेका सकल्प किया था। "स्तालिन", "लेनिन" और "कार्ल मार्क्स" के समाप्त करनेके बाद अब चौथी पुस्तक "माओ-चे तुंग" ही बाकी थी, जिसे जुलाई मे समाप्त कर दिया।

लिखनेमें डा० महादेव साहा, साथी रमेश सिनहा और साथी सच्चिदानन्द शर्माने पुस्तकोंके जुटानेमें बड़ी मेहनत की। श्री मंगलसिंह परियारने टाइप करके कामको हल्का किया, एतदर्थ इन सभी भाइयोंका आभार मानते हुये धन्यवाद देता हूँ।

राहुल सांकृत्यायन

विषय-सूची

—:०:—

अध्याय १

विषय-प्रवेश

वर्ग-शासन शुरू हुये हजारों वर्ष हो गये। जिस वर्गके हाथमें आर्थिक साधन तथा सम्पत्ति थी, उसीके हाथमें शासन था और उसने अपनी इसी शक्तिके बल पर निर्बलोंका शोषण और उत्पीड़न किया। इन हजारों वर्षोंमें समाजके तरह-तरहके विकास होते भी हमने जनताकी अधिक संख्याको सारे संसारके भरण-पोषणके भार वहन करते, भूख और दीनताकी चक्कीमें पिसते देखा, जब कि उन्हींके श्रमके बलपर चन्द व्यक्ति बड़े सुख और विलासका जीवन बिताते रहे। इन चन्द व्यक्तियोंने दूसरेके धन, स्त्री या स्वतंत्रताके अपहरणके लिये युद्ध घोषित किया और बहुसंख्यक जन मृत्युके मुँहमें पड़े। इन चन्द व्यक्तियोंने जनोंके लिये कानून बनाये—तुम्हें इस परिस्थितिमें यह काम करना होगा, तुम्हें श्रमके लिये इस तरहसे वेतन मिलेगा, तुम्हें इस तरह सोचना, बोलना और चलना होगा, और वह वैसा करते रहे। उन्होंने हालतक, असह्य होने पर चन्द छोटी-छोटी बगावतोंको छोड़, चुपचाप सारे अत्याचारोंको सहा।

लेकिन, इन हजारों वर्षोंमें बहु-संख्यकों पर होते दारुण अत्याचारोंके विरुद्ध आवाज उठानेवाले, उत्पीड़न-शून्य नये समाजका स्वप्न देखनेवाले भी जरूर पैदा हुये, यद्यपि उनकी संख्या कम थी, उनकी आवाज क्षीण थी, किन्तु शोषण, उत्पीड़नके बढ़ावके साथ-साथ यह क्षीण आजाव भी ऊँची होती गई। मगर, जब तक वह आवाज अवास्तविक तथा आकाशसे आती रही, तब तक उसमें वह ताकत नहीं आई, जो कि ठोस पृथ्वी-तलसे उसके घने वायुमंडलमें गूँजने पर पिछली एक शताब्दीके भीतर देखी गई।

मानव-समाजकी आर्थिक विषमतायें ही वह मर्ज है, जिसके कारण मानव-समाजमें दूसरी विषमतायें और असह्य वेदनायें देखी जाती हैं। इन वेदनाओंका अनुभव हर देश-कालमें मानवता-प्रेमियों और महान् विचारकोंने दुखके साथ

अनुभव किया और उसके हटानेका यथासंभव प्रयत्न भी किया। भारतमें बुद्ध (५६३-४८३ ई० पू०), चीनमें मो-ती (४८०-४०० ई० पू०), ईरानमें मज्दक (५२९ ई०), तिब्बतमें मुने-चुने पाँ (१८४६-४७), यहूदी संतोंमें अमाँ (८०० ई० पू०), इसैया (७४६-७०० ई० पू०), यूरोपमें अफलातूं (४२७-३४७ ई० पू०), सैनेका (ई० पू०-६५ ई०), सवोनरोला (१४५-२६८ ई०), आन्द्रेयाये, पीटर चेम्बरलेंड (१६४६ ई०), वोलूतेर (१६४६-१७७८ ई०), टामस स्पेन्स (१७५०-१८१४ ई०), विलियम् गाडविन (१७९३ ई०), सेन्ट साइमन (१७६०-१८२५), फूरिये (१७७२-१८३७) प्रूधो (१८०६-३५ ई०), चार्ल्स हाल (१८०५ ई०) रार्बट आवेन (१७७१-१८६० ई०) जैसे अनेक विचारक प्रायः ढाई सहस्राब्दियों तक उस समाजका स्वप्न देखते रहे, जिसमें मानव समान होंगे, उनमें कोई आर्थिक विषमता नहीं होगी, लूट-खसूट, शोषण-उर्त्पीड़नसे बर्जित मानव-संसार उस वर्गका रूप धारण करेगा, जिसका लोभ भिन्न-भिन्न धर्म मरनेके बाद देते हैं।

लेकिन, विषमताके हटाने और साम्यवादको स्थापित करनेका स्वप्न देखनेवाले उस साधनको नहीं पा सके, न बतला सके, जिसके द्वारा मनुष्यकी सामाजिक विषमता हटाई जा सके। पूर्वी और पश्चिमी संतोंने इसका उपाय हृदय परिवर्त्तनको बतलाया। पुराने युगके लोगोंकी बात छोड़िये, इस २० वीं शताब्दी में भी गांधीजी जैसे और बहुत पुरुष हृदय-परिवर्तन द्वारा समानताकी स्थापना करना चाहते थे, और गांधी-सम्प्रदायके एक संत विनोबा भावे हृदय-परिवर्तन कर लोगोंसे जमीन दानमें ले समानता स्थापित करनेका स्वप्न देखते गाँव-गाँव पैदल घूम रहे हैं। संतोंकी आड़में अपना उल्लू साधनेवाले भी जोरसे प्रोपेगेंडामें लगे हुये हैं। वह समझते हैं कि कम्युनिज्मसे बचनेका यह बहुत अच्छा उपाय है। उनमेंसे कितने ही यह समझते भी होंगे, कि जिन समस्याओं —रोटी, कपड़े, वासका अभाव—के हलको अब तक दुनियामें कम्युनिज्मको छोड़कर किसीने नहीं किया, और विनोबाका भूदान यज्ञ भी उसके हल करनेमें सहायक नहीं हो सकेगा, लेकिन, वह समझते हैं कि जब तक नैया अभी पूरी तौरसे भरकर समुद्रके गर्भमें चली गई है, तब तक इस प्रोपेगैंडेसे लोगोंकी

आँखोमें धूल तो झोकी जा सकती है। अपनी महँगी जमीनको दान देने वाले पुराने सामन्तो और जमीदारोमें भी बिरले ही मिलेंगे। "उड़ता सत्तू पितरोंको" की कहावत को पूरा करनेवाले भले ही मिल जायें। किसानों के संघर्षसे परेशान कुछ लोग अपने हाथसे पहले ही निकल सी गई भूमिका दान करके पुण्य लूट रहे हैं, कुछ लोग ऐसी भूमिको दे रहे हैं, जिसका आबाद होना असम्भव या अत्यन्त व्ययसाध्य है, कुछ लोग नाम कमानेके लिये भूदानकी घोषणा करके फिर उसे अपनोमें ही वितरण कर देनेकी आशासे वैसा कर कहे हैं। इस तरह की भूमियोको निकाल देने पर कितनी भूमि बच रहती ? यदि उसमें कुछ अच्छी भूमि है, और उसे दलित जातिके बेखेतवाले मजूरोको दे दिया जाय, तो यह अच्छी बात है, इसे कोई नहीं इन्कार करता। लेकिन भूदान-यज्ञ न जमीनके भूखे लोगोंकी समस्या हल कर सकता न अनाजके भूखे लोगोको। उसी जमीन को एक हाथसे दूसरे हाथमें जानेमे कितना छटाँक अधिक अनाज पैदा होगा ?

वैज्ञानिक समाजवादके युगसे पहले यदि कोई हृदय-परिवर्तन या भूदान-यज्ञ जैसी बातोंको करता, तो कोई बात भी थी, लेकिन आज जब साम्यवादका सूर्य मध्यान्हपर पहुँचकर अपनी प्रखर किरणोंको फैला रहा है, उस समय इस तरह की बातें करना या तो निरा बचपन है, या उसके भीतर भारी घोखा छिपा हुआ है।

ढाई हजार वर्षोंसे भिन्न-भिन्न स्वप्नद्रष्टाओने साम्यवादी समाजको लानेके लिये जो भी सोचा-किया था, उसके लिये मौखिक ही नही बहुतोंने क्रियाके रूप मे भी परिणत करना चाहा और भारी बलिदानके साथ। ईरानके मज्दकने अपनी और अपने लाखो अनुयायियो की जानें इसी प्रयत्नमे गँवाई। लेकिन विषमता हटानेकी समस्या वैसीकी वैसी बनी रही। इस समस्याको हल करने का जिसने वैज्ञानिक ढग निकाला, जिसने इस रोगका बारीकीके साथ निदान किया, और उसकी औषधिको भी परख-परखकर देखा, वह मार्क्स वस्तुत: नये युगका विधाता है, नये ससारके निर्माताओंमें वह प्रथम है, और उसकी पैनी सूझ तथा परख उसे दुनियाका सर्वश्रेष्ठ विचारक सिद्ध करती है।

अध्याय २

बाल्य और स्कूली जीवन (१८१८-३५ ई०)

कार्ल मार्क्सका जन्म ५ मई १८१८ ई० को ट्रीर (ट्रेव्स) नगरमें हुआ था, जो पश्चिमी जर्मनीके राइनलैंडके वेस्टफालिया इलाकेमें है। औद्योगिक युगके लिये सभी सामग्री वहाँ मौजूद है, क्योंकि लोहे, कोयले आदिकी बड़ी-बड़ी खानें यहीं पर हैं, इसीलिये आगे चलकर राइनलैंड जर्मनीका हथियारखाना बन गया। १९वीं सदीके प्रथम पादमें सामन्तवादके भारी प्रभावमें होते भी जर्मनी लोहे, कोयले आदिके बारेमें उदासीन कैसे रह सकता था ? इसीलिये राइनलैंड उद्योग-प्रधान होने लगा था, जिसका परिणाम था वहाँ पूँजीवाद और पूँजी-पतियोंकेके प्रभावमें वृद्धि। वर्लिन, लाइप्जिग, कोइनिग्सवर्गके पुराने नगर अब कोलोनसे पीछे पड़ते जा रहे थे, जो औद्योगिक राजधानी होनेसे प्रमुख स्थान ग्रहण करने लगा था। राइनलैंड जहाँ एक ओर जर्मनीका हथियारखाना है, वहाँ वह फ्रांसकी सीमापर पड़ता है, इसीलिये आगे लोहे कोयलेकी यह भूमि फ्रांसके साम्राज्यवादियोंके लिये सिर दर्द का कारण बन गई। इस प्रकार अपनी बाल्य आँखोंसे ही कार्लको नई पूँजीवादी दुनिया के वातावरणमें साँस लेनेका मौका मिला।

कार्ल मार्क्स जातितः यहूदी थे। उनके दादा मार्क्स लेवी ट्रीरके यहूदियों के रब्बी (स्वामी या पुरोहित) थे, जिनका देहान्त १७९८ ई० में हुआ था। कार्लकी दादी इवा मार्क्स मोजेज-परिवारमें पैदा हुई थीं, और वह कार्लके सात वर्ष होनेके समय मरी थीं। दादीका वंश एक शताब्दीसे अधिकसे रब्बी होता आया था। इस प्रकार कार्लका जन्म ऐसे वंशमें हुआ था, जिसे कट्टरपंथी ब्राह्मणका वंश कहा जा सकता है यद्यपि इस कट्टरतासे कार्लका पाला नहीं पड़ा था। मार्क्स लेवी—पीछे लेवी हटा दिया, और उसकी संतानोंने केवल मार्क्सने ही अपने वंशका नाम रक्खा—के दो पुत्र सामुयेल और हर्शल तथा दूसरी कितनी ही संतानें हुई, जिनका विद्या से अधिक सम्बन्ध हुआ। सामुएल कार्लका चचा था, जो १७८१ ई०में पैदा होकर १८२९ ई० में—कार्लकी ११ वर्षकी अवस्थामें

मरा। बापके मरने पर यही ट्रीरका रब्बी बना था। कार्लका पिता हर्शल मार्क्स १७८२ ई०में पैदा हुआ, और कार्ल बीस बरसमे होनेके समय १८३८ ई०में मरा। मार्क्सके होश सँभालते ही (१८२४ ई० मे) हर्शल मार्क्सने यहूदी धर्म छोड ईसाई धर्मको स्वीकार किया, और अब उसका नाम हाइनरिख मार्क्स पड़ गया। हर्शल यह पीछेके हाइनरिखकी पत्नी हेनरिटा प्रेसबुर्ग (हालैंड)के यहूदीकी लडकी थी, जिसके बाप-दादा एक शताब्दीसे अपने यहाँ यहूदी गुरु (रब्बी) होते आये थे। हेनरिटा १८६३ ई० मे मरी, अर्थात् जब कार्ल मार्क्स ४८ वर्ष के हो कर अपने क्रांतिकारी काममें पूरी तौरसे जुट गये थे। यद्यपि वह अपनी बेसरो-सामानीकी जिन्दगीमे माँकी उतनी सहायता नहीं कर सकते थे, लेकिन उसके प्रति ' उनका सदा भारी स्नेह रहा। कार्ल मार्क्सके और भाई बहनें थीं, जिनमे कार्लके अतिरिक्त उनकी तीन बहनो मे, साफी मास्ट्रिख्ट मे श्मालहाउजेन नामक वकीलकी पत्नी मई एमिली ट्रीरके कोनराडी इंजीनियरकी पत्नी, लुइसी दक्षिणी-अफ्रीकामें केपटोनके यूटा नामक व्यापारीकी पत्नीका पता लगता है।

छोटा-बडा व्यापार और पुरोहिती (रब्बीगिरी) आम तौरसे यूरोपसे यहूदियोका व्यवसाय रहा है, लेकिन मार्क्सके पिता हाइनरिख उसे छोड चुके थे। वह ट्रीरके एक अच्छे वकील थे। पिता-माताका जीवन बडा ही शान्ति और सुखका था, इसलिये कार्लका बाल्यकाल बडी स्वतन्त्रता और निश्चिन्ततामे बीता। यद्यपि माँ शिक्षा-दीक्षा और शायद बुद्धिमे भी पिछडी हुई थी—वह जन्मभर टूटी-फूटी ही जर्मन बोल सकती थी—लेकिन पिता-माताका स्नेह और घरकी खुशहाली बालक कार्लको वरासतमें मिली थी। माँ स्वप्न देखा करती थी, कि मेरा लडका आगे चलकर भारी लक्ष्मीपात्र बनेगा, लेकिन पिता लक्ष्मीसे ज्यादा सरस्वतीके भक्त थे। अपने लडकेकी अद्भुत प्रतिभाको देखकर उनकी कल्पना दूसरी ही थी, यद्यपि वह भी यह नहीं चाहते थे कि उनका अद्भुत पुत्र युग-प्रवर्तक होते हुये भी जीवनभर आर्थिक कष्टोंमे पडा प्रतिगामी सरकारों द्वारा उत्पीडित हो दर-दर मारा फिरे। कार्ल मार्क्सका अपने परिवारके लोगों हीसे स्नेह-सम्बन्ध नहीं था, बल्कि अपने मातृकुलके साथ भी वह बहुत घनिष्ठता रखते थे, विशेपकर अपने मामा फिलिप्स (हालैंड) के साथ।

उस समय भी जर्मनीमें युरोपकी और जगहोंकी तरह यहूदियोंकी स्थिति बड़ी दयनीय थी। इस प्रतिभाशाली जातिने कला, ज्ञान-विज्ञानके हरेक क्षेत्रमें अद्भुत प्रतिभाओंको जन्म दिया—युरोपीय दर्शनका पिता स्पिनोजा यहूदी बंशमें पैदा हुआ। आधुनिक और भावी संसारका नव-निर्माता कार्ल मार्क्स भी यहूदी माता-पिताका पुत्र था, आधुनिक संसारका सबसे बड़ा विज्ञानवेत्ता आइन्स-टाइन भी इसी जातिमें पैदा हुआ, लेकिन इतिहासके आरम्भसे ही यहूदियोंको अछूतकी तरह देश-देशमें अधिकार-बंचित और सम्मानरहित होकर मारे-मारे फिरना पड़ा। यहूदी खेती नहीं कर सकते थे, क्योंकि उन्हें खेत मिल नहीं सकते थे। विद्यालयोंमें भी उनके साथ भेद-भाव रक्खा जाता था, इसलिये बुद्धिजीवी तथा सरकारी नौकरियोंमें जाना उनके लिये सम्भव नहीं था। नीच जाति समझ उनके साथ व्याह-शादी करना भी लोग बहुत कम पसन्द करते। लेकिन, यहूदी भी अपनेको इसाइयोंसे कम नहीं समझते थे, इसलिए हमारे यहाँकी तरह उन्होंने भी अपनी अलग-अलग जात बना ली थी, और जातसे बाहर शादी करने-बालोंको पारसियोंकी तरह जाति-बहिष्कृत कर दिया जाता था। दूसरोंके दुर्व्यवहार और अपनी जाति-पाँतकी संकीर्णताने यहूदियोंको केवल नीचा ही नहीं बना दिया था, बल्कि उनके लिये छोटी-मोटी दूकान और व्यापार छोड़कर जीविकाका कोई रास्ता नहीं छोड़ रखा था। इसी जबर्दस्तीका यह फल हुआ, कि इस जातिने व्यापार और उद्योगके क्षेत्रमें आगे चलकर प्रमुखता हासिल की। पर ऐसी प्रमुखता राथ्सचाइल्ड, राकफेलर आदि कुछ इने-गिने परिवारोंको ही हो सकती थी, अधिकांश यहूदी पूर्वी और पश्चिमी युरोपके नगरोंके सबसे गरीब मुहल्लों और कस्बोंमें भारी दरिद्रताकी जिन्दगी बिताते रहे। दूकानके साथ वह पहले हीसे सूदपर रुपया भी लगाते थे, और सूदखोरोंके प्रति लोगोंकी जैसी घृणा सभी देशोंमें देखी जाती है, वही यहूदियोंके ऊपर हो गई। इस प्रकार केवल जात-पाँत, सामाजिक बिलगाव तथा स्ववंशी ईसा मसीहके खूनका अपराध ही युरोपके इसाई जन-साधारणको यहूदियोंके खिलाफ होनेका कारण नहीं बना, बल्कि उनकी सूदखोरी और बनियावृत्ति भी इसमें प्रधान कारण हुई। पीढ़ियोंसे चले आते ऐसे अपमानसे मुक्त होनेका एक ही रास्ता था। यहूदी धर्मको छोड़कर

इसाई धर्मको स्वीकार करना। लेकिन, धर्म-परिवर्त्तनका अर्थ था सभी सगे-सम्बन्धियोसे हमेशाके लिए विच्छेद, तथा अपनी कुलागत परम्पराओं और मान्यताओंका परित्याग। यह भावनाये कितनी शक्तिशाली हैं, इसे हिन्दू अच्छी तरह समझ सकते हैं, ईसाई या मुसलमान होनेपर उनकी क्या गति होती है, इसे वह जानते हैं। यहूदी धर्म छोड़कर इसाई होनेका मतलब केवल यही नहीं था, कि अब एक धर्मके सभी बन्धनोसे आदमी मुक्त हो गया, अब वह सूअरको भी खा सकता है, और दूसरे कालातीत रीति-रवाजोंका भी पाबन्द नहीं, बल्कि इसाई होनेका मतलब था सामाजिक दासतासे मुक्ति—अब वह अपने देशवासी दूसरे ईसाइयोंकी तरह अपने वर्गके अनुसार स्थान पानेका अधिकारी था। उधर यहूदी पुरोहित वर्ग और समाज भी इतना जड था, कि धर्म-ग्रंथो और रीति-रवाजोंमे जरा भी अविश्वास प्रकट करनेपर जातिच्युत कर दिया करता था। कार्ल मार्क्सके पिताका सम्बन्ध वकील होनेसे अब व्यापारियो और रब्बीके समाजसे भिन्न साधारण जर्मन समाजसे अधिक पडता था। हाइनरिख मार्क्सको यहूदी जातिसे अधिक एशियाके प्रति भक्ति थी। वह एशियाके वीरतापूर्ण इतिहास और उसके वीरोको बडी आत्मीयताके साथ देखते थे। यह वह समय था, जब कि कितने ही यहूदी जर्मनीमे अपने बाप-दादोंका धर्म छोड इसाई बन रहे थे। हाइनरिख हाइन (महाकवि), एडवर्ड गाज आदिने भी सामाजिक मुक्ति तथा जन्मभूमिकी साधारण जनतामें मिल जानेके ख्यालसे इसाई धर्मको स्वीकार किया था। इस प्रकार १८२४ ई० मे अपने बेटेकी ६ सालकी उमरमे हाइनरिख मार्क्सका ईसाई बनना बिल्कुल नई घटना नहीं थी। राइनलैंडमे यहूदियोंकी सूदखोरी और बनियापनके कारण लोगोंकी जो अपार घृणा यहूदियोंके प्रति थी, उससे मुक्त होनेका यही सबसे आसान रास्ता था। कार्ल अभी क-ख सीखने लगा था, जब कि यह परिवर्त्तन परिवारमें हुआ। पिता पहले हीसे उदार विचारके थे, उसपर यह धर्म-परिवर्त्तन, फिर यदि मार्क्सको घरमे यहूदी कट्टरताकी गन्ध भी देखनेको न मिली हो, तो आश्चर्य क्या? यहूदी धर्म और उसकी कट्टरताको तो कार्लसे घरके बापने ही विदा कर दी थी। हाइनरिखने अपने प्रतिभाशाली पुत्रको बहुतसे पत्र लिखे थे, जिनमे कहीं भी यहूदीपनकी

गन्ध नहीं मिलती। मार्क्सको आगे बढ़नेके लिये पुराने पक्षपातोंसे उलझने या लड़नेकी जरूरत नहीं थी।

कार्ल ट्रीरके स्कूलमें पढ़ने बैठा दिया गया, शायद उसी समय जबकि परिवारने ईसाई धर्म स्वीकार किया। २५ अगस्त १८३५ ई० को सत्रह सालकी उम्रमें मार्क्सने ट्रीरके कालेजकी अपनी पढ़ाई खतम करके प्रमाणपत्र पाया। इस सत्रह वर्षके जीवनमें कोई ऐसी उल्लेखनीय घटनायें नहीं घटीं, अथवा उन्हें जमा करनेका मौका नहीं मिला, इसलिए मार्क्सके इस जीवनके बारेमें बहुत बातें ज्ञात नहीं हैं। मार्क्सके स्कूलके सहपाठियोंसे भी इस विषयमें सहायता नहीं मिली, जिसका एक कारण यह है, कि लेखकोंने बहुत पीछे, प्रायः मार्क्सकी मृत्युके बाद सामग्री संचय करनेका प्रयत्न किया। ट्रीरके विद्यार्थी-जीवनके बारेमें कहा जाता है, ग्रीक और लातिनके महान् ग्रंथोंके अत्यन्त कठिन वाक्योंको लगा देना कार्लका बाएँ हाथका खेल था। लातिन भाषापर विषय और भाव दोनोंकी दृष्टिसे कार्लका असाधारण अधिकार था। धर्म और इतिहासके प्रति शायद अभी कार्लकी उतनी दिलचस्पी नहीं थी, लेकिन उसके जर्मन निबन्धको परीक्षकोंने दिलचस्प बतलाया था, जिसका विषय था "व्यवसाय चुननेसे पहले एक तरुणके विचार" कार्लने अपने विचार इस विषयपर गतानुगतिक तौरसे नहीं प्रकट किये थे। उसने लिखा था : हम सदा ऐसे पेशेको अख्तियार नहीं कर सकते, जिसके बारेमें हम अपनेको योग्य समझते हैं। हम जब इसके बारेके निश्चय करनेकी स्थितिमें होते हैं, उससे पहले ही समाजके साथ हमारे सम्बन्ध परिपक्व (रूपान्तरित) होने लगते हैं। समाज और उसके सम्बन्धोंके बारेमें इस तरहके परिवर्त्तनका ख्याल बतलाता है, कि तरुणाईके आरंभिक दिनोंमें ही कार्लका दिमाग कितना दूर तक सोच सकता था।

———

अध्याय ३

यूनिवर्सिटी-जीवन (१८३५-४१ ई०)

वकील पिता अपने पुत्रको भी शायद एक सफल वकील बनाना चाहता था, इसलिये ट्रीरकी पढाई समाप्त करनेके बाद पिता की सलाहसे कार्ल मार्क्स १८३५ ई० के शरद्‌मे बोन युनिवर्सिटीमे दाखिल हुआ, जहाँपर वह एक साल तक कानून पढ़ता रहा। बोनके इस विद्यार्थी-जीवनके बारेमें बहुत कम बातें मालूम हैं। पिताकी चिट्ठियोमे इस बातकी शिकायत देखी जाती है, कि कार्ल पैसोंको बरबाद करता है।

१. प्रेम

कार्ल अब अठारह वर्षका था। ऐसे प्रतिभाशाली पुरुषके विचारोका इस अवस्थामे भी अधिक परिपक्व होना स्वाभाविक है। मार्क्स आगे चलकर कभी गतानुगतिक नहीं रहा। उसके इस स्वभावका परिचय इन आरंभिक दिनोमे भी लग सकता था। हाइनरिख मार्क्स वकील और ट्रीरके सामन्त तथा प्रीवी कौंसिलर लुडविग फान बेस्टफालेनका आपसमे घनिष्ठ परिचय था। यह परिवार उन कुलीन सामन्तों या प्रशियाके प्रतापी नौकरशाहोसे सम्बन्ध नहीं रखता था, बल्कि वह अपनी असैनिक सेवाओसे आगे बढ़ा था। लुडविग पहले ब्रुन्सविकके ड्यूक फर्डिनाडका असैनिक-सेक्रेटरी रह चुका था। ड्यूक पश्चिमी जर्मनीकी ओरसे पन्द्रहवें लुईके सातसाला युद्धोमे लडा था, जिसमें फिलिपवेस्टफालेन ड्यूकका चीफ-आफ-स्टाफ़ रहा था। उसकी सेवाओंसे प्रसन्न होकर इगलैंडके राजाने फिलिपको सम्मानित करते हुये सेनाका अडजूटेंट-जेनरल बनाना चाहा, लेकिन उसने उसे स्वीकार नहीं किया। यह मालूमही है, कि फ्रासकी छेडी लडाइयोंमें इगलैंड और जर्मनी (उस समय संयुक्त जर्मनी अभी दूरका सप्न था) एक दूसरेके साथी थे। इगलेंडके इसी सम्बन्धके कारण फिलिपने एक स्काच बैरनकी लडकीसे ब्याह किया था। अपनी सेवाओंके लिये उसे

सामन्ती उपाधि फानवेस्टफालेन मिली थी। फिलिपके पुत्रोंमें एकका नाम लुडविग फानवेस्टफालेन था, जो पिताकी सफलताओंके कारण अब साधारण कुलका न होकर एक छोटा-मोटा सामन्त समझा जाने लगा था। यद्यपि लुडविग धन, प्रभुता और मानमें दूसरे जर्मन सामन्तोंकी स्थितिमें था, लेकिन भिखमंगे युंकरोंका भी दिमाग जैसे आसमानपर रहता है, वह रोग उसे नहीं लगा था। इसी लुडविगकी लड़की जैनी थी, जो साल्जवेडेलमें १२ फर्वरी १८१४ ई० को—अर्थात् कार्ल मार्क्सके जन्मसे चार साल पहले-पैदा हुई थी। उस समय जैनीका पिता साल्जवेडलमें लांडराट (मजिस्ट्रेट, शरीफ) था। दो वर्ष बाद वहाँसे उसकी बदली ट्रीरमें हो गई, और अब वह सरकारका परामर्शदाता था।

राइनलैंड जर्मनीके दूसरे भागोंसे भिन्नता रखता था। वह सामन्तों नहीं, उद्योगपतियोंका प्रदेश बनता जा रहा था। वह जर्मनीके चिरप्रतिद्वंद्वी फ्रांसकी सीमापर पड़ता था, इसलिये वहाँ असाधारण योग्यतावाले ही आदमीको शासक बनाकर भेजा जाता था। प्रशियाके महामंत्री हार्डेनबेर्गकी इसीलिये लुडविग फानवेस्टफालेनपर खास तौरसे नजर पड़ी। लुडविग साधारण सामन्तोंसे कितना विलक्षण था, यह इसीसे मालूम होगा, कि कार्ल मार्क्स जीवनके अन्त तक अपने ससुरका नाम बड़े सम्मान और कृतज्ञतापूर्वक लिया करते थे, और लिखते वक्त उसे प्रिय पितृतुल्य मित्र करके सम्बोधित करते थे। लुडविग सुशिक्षित था, वह होमरकी कविताओंके पृष्ठके पृष्ठ दोहरा सकता था, शेक्सपियरके बहुतसे नाटक उसे कंठस्थ थे—अँग्रेजी और जर्मन दोनोंमें। लुडविगके घरमें विद्या और साहित्यका बड़ा ही सुन्दर वातावरण था। उसके पास पुस्तकोंका अच्छा संग्रह था। कार्ल जैसे प्रतिभाशाली तरुणकी जिज्ञासाओंकी पूर्तिके लिये वह साधन-सम्पन्न था। ऐसी अवस्थामें यदि बचपनसे ही कार्ल मार्क्सका लगाव वेस्टफालेन परिवारसे हो जाय, तो कोई आश्चर्य नहीं। लुडविग इस मेधावी बच्चेको बहुत प्यार करता था। उसकी पुत्री जैनी और कार्ल बचपनसेही साथ खेला करते थे। उन्हें पता नहीं लगा कि कब बचपनका वह स्नेह दो तरुण-हृदयोंके प्रेममें परिवर्तित हो गया। जेनी एक असाधारण सुन्दरी लड़की थी, लेकिन उसका स्वभाव दूसरी सामन्त-कुमारियोंसे बिल्कुल अलग था। उसके चाहनेवाले बहुतसे थे।

वह अपने पिताके कुल और दर्जेके प्रभावसे किसी धनी और प्रभावशाली सामन्त-कुमारसे व्याह करके सुख और विलासका जीवन बिताती। जेनीने यदि अपने ऐसे बालापनके साथी के साथ अपने जीवनका गठबंधन किया, जिसका भविष्य 'खतरेसे भरा और अनिश्चित' (मार्क्सके पिताके शब्दोंमें) था, तो इसे यही कहना चाहिये कि जेनी बिल्कुल दूसरी ही तरहकी लड़की थी। मार्क्सका पिता उसके लिये "देव कन्या जादूगरनी" जैसे शब्द इस्तेमाल करता था और साथ ही वह उसके प्रेमको इतना पक्का समझता था कि कोई राजकुमार भी उसे कार्ल से छीन नहीं सकता था। पिताने मार्क्सके जीवनको जिस तरहका खतरेसे भरा और अनिश्चित समझता था, वह उसके सामने कुछ भी नहीं था, जैसा कि जेनीको भुगतना पड़ा। लेकिन जेनीको इस अद्भुत पुरुषका अखंड प्रेम मिला था, जिसे वह बहुमूल्य समझती थी। मार्क्स-जेनीके बाल्य-प्रेम और उसके परिवारको पैंतालीस वर्ष (१८६३ ई०) की उमरमें भी अत्यन्त मधुर शब्दोंमें याद करता था। वह उस साल अपनी माँकी अन्त्येष्टिके लिये ट्रीर गया था, जबकि लिखा था: प्रतिदिन मैं पुराने वेस्टफालेन भवन (रोमेर स्ट्रास) की तीर्थ-यात्रा करने जाता था। वह सारे रोमन ध्वंसावशेषोंसे भी अधिक मेरे लिये मनोहर मालूम होता था, क्योंकि वह मुझे अपनी तरुणाईके सुखमय दिनोंकी याद दिलाता था, और इसीने मेरी निधिको एक समय अपने भीतर सुरक्षित रक्खा था। प्रतिदिन दाहिने-बायेंसे मुझसे लोग ट्रीरकी अत्यन्त सुन्दरी लड़की, 'नृत्यकी रानी' के बारेमें पूछते थे। एक आदमीके लिये यह अत्यन्त प्रसन्नता-की बात है, कि उसकी पत्नी सारे नगरकी स्मृतिमें 'जादूगर राजकुमारी' के तौर-पर याद की जाती हो। मृत्युके समय तक मार्क्स अपनेसे पहले ही दुनिया छोड़ गई जेनी को अपार स्नेहके साथ याद करता था।

बचपनसे बढ़ते-बढ़ते दोनोंका स्नेह तरुणाईके प्रेममें बदल गया था। ऐसी स्थितिमें दोनों तरुण हृदयोंको विछोह असह्य मालूम होता था, लेकिन पढ़ाई तो पूरी करनी थी। मार्क्स पढनेके लिये जब बोन गया उसी समय बिना अपने माता-पिताओंकी अनुमतिके दोनोंने विवाह-बन्धनसे बँधनेका संकल्प कर लिया। वकील हाइनरिख मार्क्सने लुडविग फानवेस्टफालेनका दर्जा, कुल और मर्यादा

बहुत ऊँची थी लेकिन जब उसे मालूम हुआ, तो उसने बड़ी प्रसन्नतासे स्वीकृति देदी। किंतु इसका यह अर्थ नहीं था, कि दोनोंका ब्याह अभी हो गया। जैनीका पीहर पीछे भी जर्मनीमें बहुत प्रभावशाली था। उसका सौतेला बड़ा भाई फार्डिनेंड फानवेस्टफालेन प्रशियाका गृह-मन्त्री, सामन्तोंका कट्टर पक्षपाती था। वह जैनीसे पन्द्रह वर्ष बड़ा था। जैनीका सगा भाई एडगर फानवेस्ट-फालेन था। वह अपने यशस्वी बहनोईके साथ अच्छा सम्बन्ध रखता था, वैयक्तिक ही नहीं राजनीतिक भी। यद्यपि वह पक्का मार्क्सवादी नहीं बन सका, लेकिन उसने कम्युनिस्ट घोषणापर हस्ताक्षर किये थे। उसके दिलमें अपनी बहन और बहनोईके प्रति सदा स्नेह रहा और इसीके उपलक्षमें बहन और बहनोईने अपने लड़केका नाम एडगर रक्खा था।

२. बर्लिन युनिवर्सिटीमें (१८३६-४१ ई०)

बोनकी पढ़ाई बेटेसे भी अधिक बापको नापसन्द थी। बाप एक प्रशियन देशाभिमानी था और प्रशियाका केन्द्र था बर्लिन। इसलिये, जैसा कि उसने १ जुलाई १८३६ के पत्रमें लिखा था, अपने पुत्रको बर्लिन युनिवर्सिटीमें राज-नीतिक अर्थशास्त्र और कानून पढ़नेके लिये भेजा। शायद पिताको ऐसा करना इसलिये भी जरूरी समझ पड़ा, कि सामन्त कुमारीसे ब्याह करना ठट्ठा नहीं है, उसे सुखी रखनेके लिये कार्लको अधिक धन और पदकी आवश्यकता होगी। जिसके लिये प्रशियाकी राजधानीमें जाकर उसकी शिक्षा और परिचय प्राप्त करना अधिक सहायक होगा। मार्क्स अब अपनी प्रेमिकासे दूर जा रहा था, जोकि उसके लिये प्रिय नहीं था। जहाँ तक मार्क्सका सम्बन्ध था वह राइनलैंडको ज्यादा पसन्द करता था, अधिक सर्द बर्लिन उसे पसन्द नहीं थी। मार्क्सकी प्रार्थनापर दोनोंके पिता-माताओंने जैनीके साथ पत्र-व्यवहार करनेकी उसे अनु-मति दे दी थी, तो भी जैनीका पहला पत्र बर्लिनमें उसे तब मिला, जबकि वहाँ रहते उसे एक साल हो गये।

सन् १८३७ ई०—जबकि वह उन्नीस सालका हो गया था—से मार्क्सके जीवनपर प्रकाश डालनेवाली सामग्री हमें मिलने लगती है, जिसमें उसके अपने

पत्र भी सम्मिलित हैं। १० नवम्बर १८३७ को मार्क्सने घरपर एक पत्र भेजा था। उससे उसके साल भरके बर्लिनके जीवनके बारेमें कितनी ही बातें मालूम होती हैं: उसे ज्ञानकी अपार पिपासा थी। वह अपना सारा समय उसीको तृप्त करनेमें लगाता था। वह अपने उच्च विचारो पर पहुँचनेके लिये अपार मेहनत करनेमें सक्षम होते भी अपनी कड़ी आलोचना करता था। २२ अक्तूबर १८३६ को कार्लने युनिवर्सिटीकी प्रवेशिका परीक्षा पास की। प्रोफेसरोंके लेक्चरोकी वह कोई पर्वा नहीं करता था, और कानूनके अनिवार्य व्याख्यानोंमें ही शामिल होता था। युनिवर्सिटीके प्रोफेसरोमें केवल एडवर्ड गाज ही एक पैसा व्यक्ति था, जिसका प्रभाव मार्क्सके मानसिक विकासपर पड़ा। वह गाज फौजदारी कानून और प्रशियाके दीवानी कानूनके व्याख्यानोको सुनने जाता, और गाज भी अपने विद्यार्थीके मेहनती स्वभावकी प्रशंसा करता था। लेकिन मार्क्सने कानूनके ऐतिहासिक सम्प्रदायकी जितनी कड़ी खबर अपने आरमिक लेखोमे ली थी, उससे ही मालूम होता है कि कानूनके प्रति उसकी आस्था कैसी थी। गाज दर्शनका भी पडित था, वह भी उस सम्प्रदाय का विरोधी था, इस प्रकार स्पष्ट है कि गाजके ऐसे विचारोंका प्रभाव तरुण मार्क्सके ऊपर पड़ा था। मार्क्सके कथनानुसार वह इतिहास और दर्शनके साथ कानूनको केवल सहायक-अनुशासनके तौरपर ही पढ़ता था। अब उसकी इतिहास और दर्शनमें बहुत दिलचस्पी थी, लेकिन युनिवर्सिटीके प्रोफेसरोंके लेक्चर ऐसे नहीं होते थे, जिनसे मार्क्सके हृदयमें कोई आकर्षण पैदा होता। हेगेलकी गद्दीपर अवस्थित गब्लर-के तर्कशास्त्र-सम्बन्धी व्याख्यानोंको अनिवार्य होने हीसे वह सुनने जाता था। गब्लरको वह हेगलका अत्यन्त निकृष्ट अनुयायी मानता था। कार्ल मार्क्स वस्तुतः स्वतत्र विचारका था। उसके दिलमें ज्ञानकी प्यास और लगन भी अत्यधिक थी, लेकिन वहाँके प्रोफेसर उसकी तृप्ति नहीं कर सकते थे। दस वर्षमें युनिवर्सिटी जो उसे नहीं दे सकती थी, वह एक सालके भीतर अपने अध्यवसायसे प्राप्त कर सकता था।

प्रतिभाशाली तरुणके हृदयमें एक बार कविता-कामिनीका प्रेम जरूर पैदा होता है। तरुण कार्ल मार्क्स भी उससे बच नहीं सका। उसने तीन कापियाँ

अपनी कविताओंसे भरली थीं, जिनको मेरी प्यारी और सदाकी प्रियतमा जेनी फान वेस्टफानको समर्पित किया था। दिसम्बर १८३६ में ये कवितायें जेनीके हाथमें थीं, जिसने मार्क्सकी बहन साफीके लेखानुसार हर्ष, विषादके अश्रुओं के साथ उनका स्वागत किया था। लेकिन जान पड़ता है तरुण प्रेमीका प्रेमिकाके वियोगके प्रथम वर्षने कविताकी ओर जो प्रेरणा दी थी, वह आगे सूख गया, क्योंकि उसके एक साल बादके पिताको लिखते हुये अपने पत्रमें उसने अपनी कविताको तीन कौड़ीका बतलाते हुये कहा था : चौरस और आकृतिहीन कल्पना है कोई स्वाभाविकता नहीं, सभी बातें हवाई, अस्ति (है) और भवति (होता), जो है और जो होगा दोनोंमें जबर्दस्त विरोध। कमी कल्पनाकी जगह केवल अलंकारोंकी प्रतिध्वनि। इतने दोषोंके गिनानेके बाद वह इतना स्वीकार करता है कविताकी ज्वालाके लिये अनुभूति और प्रयत्नकी शायद कुछ लालसा। सभी दोषोंके रहते हुये भी इसमें सन्देह नहीं, मार्क्स अलंकारिक भाषाके प्रयोगमें जर्मन साहित्यके महान् निर्माताओंके बराबर पहुँचा था। शायद कवितादेवीकी यह आरंभिक आराधना ही थी, जिसने उसे अपनी गम्भीर लेखनीको कितने ही अंशोंमें सुगम बनानेमें सहायता प्रदान की।

मार्क्सने अपने पत्रमें घरको लिखा था : कविताकी ओर तो मेरी मामूली सी यों ही दिलचस्पी है, मुझे तो दर्शनसे भिड़ना है। वह अब दर्शनकी जो भी पुस्तकें मिलतीं, उनके गम्भीर अध्ययनमें डूबा रहता था।

यूरोपका अद्वितीय दार्शनिक हेगेल (१७७०-१८३१) की कर्मभूमि जर्मनीकी यही नगरी बर्लिन थी। अब भी बर्लिन युनिवर्सिटीमें उसकी मेधाकी प्रतिध्वनि सुनाई पड़ती थी, लेकिन जैसा कि ऊपर बतलाया, अब उसकी गद्दीपर चापलूस तीसरी श्रेणीके आदमी बैठाये गये थे। १८३७-३८ ई० में मार्क्सको कितनी ही बार यह ख्याल आता रहा होगा, यदि मैं छ-सात वर्ष पहले यहाँ आया होता। जर्मन दर्शनके अतिरिक्त वह ग्रीक दर्शनको भी बड़े ध्यानसे पढ़ रहा था। पुस्तकोंके पढ़ते समय उसकी एक आदत यह भी हो गई थी, कि वह उनका सार उतार लेता। मार्क्सने इतिहास, कला और दर्शनकी कितनी ही अपनी पढ़ी हुई पुस्तकोंका संक्षेप कर लिया था। तैकितसकी सारी गेरमानियाँ

को उसने जर्मन भाषामें अनुवाद कर डाला। ग्रीक, लेटिन और जर्मनको पर्याप्त न समझकर उसी समय उसने अँग्रेजी और इतालियन पढ़नेकी भी अवश्यकता समझी और उसके लिये कुछ प्रयत्न भी किया। उस समयके आरंभिक प्रयत्न और सफलताके बारेमें उसने लिखा था : बहुत सी रातें जागते बीती, बहुत सी लड़ाइयाँ लड़ीं और बहुतसी भीतरी और बाहरी प्रेरणायें प्राप्त कीं।

वह जिस तरहसे तन्मय होकर परिश्रम कर रहा था, उसका स्वास्थ्यपर बुरा असर पड़ा और डाक्टरोंकी सलाहसे उसे बर्लिनके पडोसके मछुओंके गाँव स्ट्रालाउ मे जाकर रहना पडा। वहाँ जलदी ही उसका स्वास्थ्य ठीक हो गया। युनिवर्सिटी के दूसरे वर्ष (टर्म) के लिये तैयार होकर वह फिर जुट पड़ा। यद्यपि उसकी जिज्ञासाका क्षेत्र बहुत विस्तृत था, लेकिन धीरे-धीरे उसका ध्यान हेगेलके दर्शनकी ओर विशेष तौरसे केन्द्रित होने लगा। पहले जब हेगेलको उठाया, तो वह उसे बिलकुल पसन्द नहीं आया। लेकिन अस्वस्थ रहनेके समय उसने फिर उसको पढना शुरू किया, और अब उसमे उसे रस आ रहा था। हेगेलके दर्शनकी बारीकियाँ उसे अपनी ओर खींच रही थी।

मार्क्सने घर आनेके लिये पिताकी अनुमति माँगी, लेकिन पिता समझता था, कि जेनीके पास रहनेपर लडकेकी पढाईमे बाधा होगी, इसीलिये उसने अगले वर्षकी ईस्टरकी छुट्टियोमे आनेके लिये कहा। पुत्र कितना ही कहता रह गया, कि मुझे आपसे कितनी ही बातोपर विचार करना है, लेकिन पिता माननेके लिये तैयार नहीं हुआ। १८३७ ई० में अब पिताका स्वास्थ्य भी उतना अच्छा नहीं था। प्रश्न पूछ कर पिताने स्वय मार्क्सकी बर्लिनकी दिनचर्याके बारेमें लिखा था : भगवान् हमें बचाये! कोई व्यवस्था नहीं,। विज्ञानके सभी क्षेत्रोंमें घुसना और घूमना तेलके चिरागके मन्द प्रकाशमें सिर मारना। विद्यार्थियोंके ड्रैसिंग गौनमे बालोंमे विना कंघी किये पाठमें जाना फिर हाथमें बियरका ग्लास लेकर मन परिवर्त्तन करना। सामाजिक मेल-जोल से विमुखता और सभी उचित बातोंका परित्याग, यहाँ तक कि अपने पिताको भी गौण स्थान देना। सामाजिक कलाको एक गन्दी कोठरीमें सीमित करना, जहाँ जेनीके प्रेमपत्र भयकर अस्त-व्यस्त रूपमें पड़े हैं तथा जहाँपर पिताके सदाशयपूर्ण शिक्षा वाले

पत्र, शायद आँसुओंके साथ लिखे गये पिताके पत्र, पाइप जलानेके लिये इस्ते-माल होते हैं इससे कहीं अच्छा है, यदि वह इस अस्त-व्यस्ततामें न पड़ किन्ही तीसरे प्रकारके आदमियोंके हाथमें पड़ जाते। मार्क्सके पिताको पुत्रकी फजूल-खर्चीकी बड़ी शिकायत थी : मेरा लायक पुत्र प्रतिवर्ष सात सौ थालर खर्च करता है, मानों हम पैसेसे बने हों। और वह सभी हिदायतोंके विरुद्ध तथा सभी रवाजोंके खिलाफ, क्योंकि धनीसे-धनी विद्यार्थीको पाँच सौ थालरसे अधिककी जरूरत नहीं पड़ती। यद्यपि पिता यह भी मानता था, कि कार्ल साधारण अर्थोंमें फजूलखर्च नहीं है, बल्कि हरेक आदमीका हाथ लूटनेके लिये कार्लकी पाकिट पर रहता है। इसी पत्रमें पिताने घर आनेकी अनुमति न देते हुये लिखा था: इस वक्त घर आना बेवकूफी होगी। मुझे यह अच्छी तरह मालूम है, कि तुम क्लासके व्याख्यानों—जिनके लिये पैसा देना पड़ता है—की कोई पर्वा नहीं करते, तो भी मैं जोर देता हूँ कि तुम्हें शिष्टाचारको पालन करना चाहिये। अन्तमें पिताने ईस्टरके समय घर आनेकी अनुमति देते लिखा था, वह इच्छा होनेपर दस दिन पहले भी आ सकते हो।

यद्यपि पिता अपने पत्रोंमें अक्सर पुत्रकी हृदयहीनताकी शिकायत करता था, लेकिन वस्तुतः मार्क्सका यह स्वभाव नहीं था। पिता या किसीके साथ भी वह हृदयहीन नहीं हो सकता था। अपने सम्बन्धियोंके साथ तो आजीवन उसका सौहार्द्र रहा। मार्क्स अपने पिताको अपने पत्रोंमें समझानेकी कोशिश करता था। इन पत्रोंकी पंक्तियोंमें उसके नवार्जित ज्ञान और स्वतंत्र प्रतिभाकी भी छाप होती थी, लेकिन शायद अब पिताके लिये उन पंक्तियोंका समझना आसान नहीं था। पिताके लिखनेपर उसी साल नहीं, बल्कि अगले ईस्टरमें भी आनेका ख्याल मार्क्सने छोड़ दिया। वस्तुतः जेनीको छोड़ देने पर बर्लिन-में अब अपनी ओर खींचनेके लिये जितने आकर्षण थे, उतने ट्रीरमें नहीं हो सकते थे। और यह भी कहना मुश्किल है, कि जेनी और विद्या दोनोंके आकर्षणमें कौन अधिक शक्तिशाली है। मार्क्सने अपने निश्चयकी सूचना १० फरवरी १८३८ के पत्र द्वारा दी थी। उस समय अभी-अभी हाइनरिख मार्क्स पाँच सप्ताहकी बीमारीसे उठे थे। लेकिन यह स्वास्थ्य-सुधार देर तक

कायम नहीं रहा। पेटकी बीमारी थी, जो फिर बिगड़ गई और तीन महीने बाद १० मई १८३८ को बूढ़ा पिता चल बसा। वह अपने पुत्रको नहीं समझ सका। उसने विद्यामे तन्मय तथा पैसोंका कोई मूल्य न समझनेवाले पुत्रको हृदय-हीन समझा था, लेकिन असली बात यह नहीं थी, मार्क्सका स्नेह अपने पिताके प्रति सदा रहा।

३. हेगेलका दर्शन

पिताकी मृत्युके बाद भी तीन वर्ष तक मार्क्सने अपने अध्ययनको बर्लिनमें जारी रखा। हेगेलके दर्शनने उसे अपनी ओर इतना खींचा था, कि वह उसके अध्ययनके हरेक साधनको ढूँढनेमे लगा रहता। यद्यपि हेगेलकी गद्दीपर कोई योग्य प्रोफेसर नही था, लेकिन बर्लिनमें तरुण हेगलियोका एक गरोह था, जिसने मार्क्सको जल्दी ही अपनी ओर खींच लिया। उस समय हेगेलका दर्शन प्रशियाका सरकारी दर्शन माना जाता था, और संस्कृति-मन्त्री अल्टेन-स्टाइन और उसके प्रीवी कौंसिलर (निजी पार्षद) योहानेज शुल्जे का उस ओर विशेष ध्यान था। हेगेल राज्यकी बड़ी महिमा गाता था, और कन्फूशींकी तरह व्यक्ति के विरुद्ध राज्यको सर्वोपरि मानना उचित समझता था। ऐसे दार्शनिकका राज्य क्यों न ख्याल करता ? हेगेलने राजतन्त्रको शासनकी सबसे अच्छी व्यवस्था बतलाया था, और यह भी कहता था कि प्रभुताशाली वर्गको शासन करनेमें कुछ अप्रत्यक्ष अधिकार मिलने चाहिये, तो भी राजाकी शक्तिको निर्बल नहीं करना चाहिये। वह आजकलके संविधानोंकी तरह जनताके प्रति-निधियोकी शासन-सभामें जरूरत नहीं समझता था। यद्यपि राजनीतिमे इस तरह वह प्रतिक्रियावादी था, लेकिन जिस द्वन्द्वात्मक दर्शनको वह मानता था, उसकी धारा बिल्कुल दूसरी ओर लेजा रही थी। हेगेलके दर्शनके अनुसार अस्ति (है,भाव) एक चीज है, जिसकी प्रतिद्वद्वी नास्ति है। इन दोनोके विरोधी समागमसे एक तीसरी उच्च धारणा भवति (होती है) निकलती है। उसके अनुसार हरेक चीज उसी एक ही समय "है" भी और "नहीं" भी है क्योंकि हरेक चीज दीपककी लौकी तरह सदा परिवर्त्तनकी स्थितिमें सदा विकास

और पतनकी स्थितिमें है। इस दर्शनके अनुसार विकासकी प्रक्रिया निम्नसे उच्चतर रूपमें निरन्तर परिवर्तित होती रहती है।

हेगेल यद्यपि राजसत्ताका पक्षपाती था, लेकिन उसने धर्मके प्रति उस तरहके भाव नहीं दिखलाये, इसीलिये प्रशियन शोषक धर्मको मुख्य स्थान देनेके लिये तैयार नहीं थे। हेगेलके दर्शनको राजनीतिमें लाकर उसे क्रांतिकारी विचारधाराका रूप देना मार्क्सका काम था, लेकिन उससे पहले ही इस दर्शनने धार्मिक क्षेत्रमें अपनी तोड़-फोड़की नीति शुरू करदी थी। हेगेलने घोषित किया था कि बाइबलकी कहानियोंको भी वैसी ही मानना चाहिये, जैसी दूसरी आम कहानियोंको। उनके लिये सच्चे ऐतिहासिक आधारकी आवश्यकता नहीं है। इस विचारधाराने डेविड स्ट्रास नामक एक तरुणको ईसाकी जीवनी लिखनेकी प्रेरणा दी, जो १८३५ ई० में प्रकाशित हुई। इस पुस्तकके निकलते ही बड़ी खलबली मच गई। उसने ईसाको ऐतिहासिक पुरुष मानते हुये ऐतिहासिक सामग्रीके तौरपर ही इंजीलके कथानकोंकी कसौटीपर रखा। स्ट्रासका इससे कोई भी राजनीतिक उद्देश्य नहीं था, लेकिन बाइबलके विश्वासपर उसे चोट अवश्य पहुँची।

पीढ़ियाँ वहीं नहीं रहना चाहती हैं, जहाँ पर उन्हें पूर्वजोंने ला पहुँचाया। स्ट्रासने यद्यपि अभी धार्मिकक्षेत्रमें ही हेगेलके दृष्टिकोणका उपयोग किया था, लेकिन अब उसे राजनीतिकक्षेत्रमें भी इस्तेमाल करनेवाले पैदा हो गये थे। तरुण हगेलियोंने १८३८ ई० में अपने विचारोंके लिये "हालिशे या रबुखेर" (हाल वर्ष-पत्र) निकाला। जर्मनीमें ऐसे वर्ष-पत्रोंके प्रकाशित करनेकी प्रणाली सी निकल पड़ी थी, जिनमें अनेक लेखोंको संगृहीत कर दिया जाता था। उस वक्त वहाँ सेन्सरकी नादिरशाही चल रही थी, किन्तु वह मासिक-साप्ताहिक-दैनिक पत्रोंके लिये ही थी, इसलिये सेन्सरसे बचनेके लिये वर्ष-पत्र निकालने का रास्ता ढूँढ़ निकाला गया था। इस वर्ष पत्रमें साहित्य और दर्शन-सम्बन्धी लेख निकलते थे। पुराण हेगलीय पुराने बनकर अपना "बर्लिनर यारबुखेर" निकालते थे, जिसके जवाबमें अर्नाल्ड रूगे और फ्योडोर एखटेरमेयर ने तरुण हेगलियोंके इस नये वर्ष-पत्र को निकाला था। १८१५ ई० में—

हेगेलके जीते समय ही—जेनामें "बुरशेन्शाफ्ट" के नामसे बुर्जुआ जनतांत्रिक विद्यार्थियोका आन्दोलन शुरू हुआ था, जो बहुत कुछ अपने समकालीन रूसी दिसम्बरियो जैसी विचारधारा रखता था। रूगेने इस आन्दोलनमे भाग लिया था और परिणामस्वरूप उसे छ वर्ष तक जेलकी हवा खानी पड़ी। आगे चलकर उसके रवैयेमे फर्क हुआ, जब कि व्याहके सम्बन्धसे उसे हाले युनिवर्सिटी में प्रोफेसरका स्थान मिल गया। अब वह प्रशियाकी राजव्यवस्था को स्वतंत्र और न्यायोचित बतलाया था। इससे मालूम है कि रूगेमे न स्वतंत्र विचारोंकी भावना थी, न क्रांतिके लिये लगन। लेकिन, लिखनेकी उसमें शक्ति थी, और अपने पाठकोके लिये हर तरहकी सामग्री उपस्थित करने मे वह कुशल था, इसीलिये "हालिशे यारबुखेर" धीरे-धीरे तरुण पाठक-मंडलीको अपनी ओर खींचनेमें सफल हुआ। रूगेके वर्षपत्रमे "ईसाकी जीवनी" के लेखक स्ट्रासकीकी लेखनी का चमत्कार देखनेमें आने लगा। स्ट्रास बाइबलके निर्भ्रान्त होनेकी कड़ी आलोचना कर रहा था। जब अधिकारियोंका ध्यान इस ओर गया, तो रूगेने यह कहकर समाधान करना चाहा, कि हम "हेगलीय ईसाइयत और हेगलीय प्रशिया" का प्रचार करते हैं। अभी तक रूगेको सरकारकी ओरसे प्रोफेसर पदकी स्वीकृत नहीं मिली थी। मन्त्री आल्डेनस्टाइनको उसकी बातोपर विश्वास नहीं हुआ, इसलिये उसने स्वीकृत नहीं दी। इससे रूगेकी राजभक्ति पर चोट पहुँची, इसमे सन्देह नही।

कार्ल मार्क्सके जीवनके तीन साल बर्लिनके जिन तरुण हेगलियों में बीते, वह सभी रूगेके वर्षपत्रमे लिखा करते थे। उनकी क्लबमें मुख्यतः अध्यापक, लेखक और युनिवर्सिटीके लेक्चर मेम्बर थे। रुटेनबर्ग बर्लिनके सैनिक-विद्यालय में भूगोलका अध्यापक था, जिसका मार्क्सके साथ बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध था। उसे यह कहकर नौकरी से निकाल दिया गया था, कि एक दिन वह शराबमें बेहोश हो मोरीमे पडा था, लेकिन असली बात कुछ और ही थी। उसने पत्रों में कुछ ऐसे लेख लिखे थे, जिसे अधिकारी पसन्द नहीं करते थे। मार्क्स अभी बीस ही सालका था, जब कि वह तरुण हेगलीय क्लबका मेम्बर बना था, और आयुमें उससे बड़े कितने ही मेम्बर उसकी प्रतिभा और लेखनीका लोहा मानते

थे। एडवर्ड मेयेनका सम्बन्ध एक पत्रिकाके साथ था, जो ज्यादा दिन तक जी नहीं सकी। इसी पत्रिका में मार्क्सकी दो कवितायें छपीं—मार्क्सकी कविताओं में सिर्फ यही दो प्रकाशित हो पाईं। क्लबके दो मुख्य मेम्बर थे म्युनिसिपल हाई स्कूलका अध्यापक कार्ल फ्रीडरिख कोप्पेन और बर्लिन युनिवर्सिटीका लेक्चरर ब्रूनो बावर। इन दोनोंका मार्क्सके ऊपर बहुत प्रभाव पड़ा और दोनों दस वर्ष बड़े होने पर भी अपने तरुण मित्रकी प्रतिभाकी श्रेष्ठताको स्वीकार करते थे। मार्क्स बाईस वर्ष हीका था, कि १८४० ई० में कोपेनने प्रशियाके राजा महान् फ्रीडरिककी जन्म-शताब्दीके अवसरपर जो लेख लिखा था, उसे "मेरे मित्र ट्रीरके कार्ल मार्क्स" को समर्पित किया था, जिससे मालूम होगा, कि मार्क्सकी योग्यता अब स्वीकार की जाने लगी थी।

४. कार्ल फ्रीड्रिक कोपेन

कोपेन बड़ा मेधावी विद्वान था, इतिहासमें उसकी भारी गति थी। वर्षपत्र में छपे उसके लेखोंको बड़ी चावसे पढ़ा जाता था। कोपेनने ही पहले पहल फ्रांसकी महाक्रांतिके समयके शासनका ऐतिहासिक तौरसे विवेचन किया था। उसने अपने समसामयिक इतिहास-लेखकोंकी क्रांति-सम्बन्धी गलत धारणाओंका जबर्दस्त खंडन किया, और कितने ही नये क्षेत्रों में ऐतिहासिक खोज की। कोपेन और बावरके घनिष्ठ सम्पर्कमें तरुण मार्क्सको आनेका मौका मिला था, जिससे मार्क्स के विचारोंके आगे बढ़नेमें सहायता मिली थी। इन दोनोंमें भी कोपेन अधिक गम्भीर लेखक और विचारक तथा अपने पथपर दृढ़ रहने वाला व्यक्ति था। कोपेनने नोर्डिक (जर्मन) जातियोंकी पौराणिक परम्पराओंकी एक बड़ी सुन्दर साहित्यिक भूमिका लिखी थी। बुद्धके ऊपर उसने जो ग्रंथ लिखा था, उसकी शोपनहावेरने भी बड़ी प्रशंसा की थी, यद्यपि यह दार्शनिक पुराने हेगेलियोंके साथ कोई सहानुभूति न रखता था। कोपेनने १८ वीं शताब्दीके बुर्जुआ पुनरुज्जीवन-आन्दोलनको और आगे बढ़ाया। रूगेनेर बावर, कोपेन और मार्क्सको इसी आन्दोलनकी उपज बतलाया था। कोपेनने १८ वीं शताब्दी के दर्शनके बारेमें की जाने वाली विरोधियोंको जवाब दिया। पुराण-हेगेलियोंकी

भी कोपेनने विचारोके एकान्तवासी तपस्वी, तर्कशास्त्रके पुराने ब्राह्मणोकी तरह आसन मारकर पुनः तीनो पवित्र वेदोको निरन्तर और एकमात्र जपते रहना, जब-तब मायाकी दुनियाको लोभभरी आँखोसे देखना बतलाया था। उसने इन लोगोको दलदलका मेंढक बतलाया, और यह भी कि यह ऐसे सरीसृप है जिनका न कोई धर्म है, न कोई पितृभूमि है, न कोई विचारधारा है, न आत्मा है, न हृदय है। जो न सर्दी महसूस करते हैं न गर्मी, न सुख न दुख, न प्रेम न घृणा। उनके न ईश्वर है न शैतान। ये अभागे प्राणी नर्कके फाटकोकी चारो तरफ मँडरा रहे हैं, और अत्यन्त नीच होने के कारण उन्हें भीतर जानेकी इजाजत नहीं। फ्रीडरिक महान् जर्मनीका देवता बन गया था, क्योकि उसने जर्मन सैनिक-शक्तिको सगठित और सुशिक्षित करनेमें बडा काम किया था। कोपेनने उसका "बडा दार्शनिक" के तौरपर ही सन्मान किया। यही नही बल्कि उसने यह भी कहा काटसे उलटे हो फ्रीडरिक महान्ने दो प्रकारके तर्कों को स्वीकार नहीं किया: एक सैद्धान्तिक (परमार्थ) जो सन्देहो, विरोधों तथा प्रतिषेधोंको बिलकुल ईमानदारीके साथ और धृष्टतापूर्वक सामने लाता है और दूसरा व्यावहारिक (साव्रतिक), जो कि दूसरेके किये हुये पापोकी लीपा-पोती करता है. साथ हो राजा (फ्रीडरिक) दार्शनिक (काट) से मनु पीछे नहीं था।"

कोपेनकी आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी। बर्लिनके जीवन मे वैसे भी कोई आकर्षण नहीं था। बर्लिनमे उस शक्तिशाली मेरुदंडका अभाव था, जो कि उद्योग-धधोके रूपमें राइनलैंडमे पाया जाता था। वस्तुतः बर्लिन फौजी छावनीवाले एक शहरसे बढकर नही था।

मार्क्स कोपेनके साथ बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध रखता था, यह बतला चुके हैं। इसमें शक नहीं, कि आरभिक विचारोके निर्माण और लेखन-शैलीमे भी कोपेन से उसे सहायता मिली थी। यद्यपि आगे चलकर दोनोके रास्ते दो हो गये, लेकिन वह सदा आपसमे मित्र बने रहे। बीस वर्ष बाद जब मार्क्स बर्लिन गया, तो उसने कोपेनको "सदा जैसा" पाया। दोनो एक दूसरेसे मिलकर बहुत प्रसन्न

हुये और आपसी मेल-मुलाकातमें घंटों बिताये। इसके थोड़े ही दिनों बाद १८६३ ई० में कोपेनकी मृत्यु हो गई।

४. ब्रूनो बावर

कोपेन कई बातोंमें विशिष्टता रखता था, लेकिन बर्लिनके तरुण हेगलियोंका वास्तविक नेता बावरको समझा जाता था। बावरपर राज्यके संस्कृति-मंत्री अल्टेन्सटा की कृपा थी, क्योंकि उसे वह भारी मेधावी तरुण समझता था। ब्रूनो बावर अवसरवादी नहीं सिद्ध हुआ, यद्यपि स्ट्रासने बड़े सम्बन्धोंके कारण इसकी भविष्यद्वाणी की थी। १८३९ ई० के ग्रीष्ममें बावर विरोधी हो गया, जबकि हेंग्स्टेनबर्गने बाइबलके कठोर और क्रोधी यहेबाको इसाइयतका भगवान् बनाना चाहा। अल्टन्सटाइनने उसी सालकी शरदमें उसे बोन युनिवर्सिटीमें इस ख्यालसे भेज दिया, कि वर्षके अन्त तक उसको लेक्चररसे प्रोफेसर बना दिया जायगा। लेकिन राज्यका कृपापात्र रहनेके लिए उसके पास हृदय और योग्यता नहीं थी। स्ट्रासने ईसाकी जीवनीमें इंजीलकी कहानियोंमें इतिहास ढूँढ़नेकी कोशिशकी थी, लेकिन बावरने स्पष्ट कह दिया कि इंजीलकी कहानीमें इतिहासका एक कण भी नहीं है, यह सारी कपोल-कल्पना है। इसाई धर्म ग्रीस-रोमके पुराने संसारपर विश्वधर्मके तौरपर लादा नहीं गया, बल्कि वह दुनियाकी एक स्वाभाविक उपज थी। जिस समय इस तरहके विचार बावरके दिमागमें परिपक्व हो रहे थे, उसी समय उससे नौ वर्ष छोटे कार्ल मार्क्स और बावरका बराबरका साथ था, वे क्षण भरके लिए भी एक दूसरेसे अलग न होनेवाले साथी थे। बोन जानेके बाद बावरकी यह कोशिश थी कि मार्क्स भी वहीं आ जाये। बोनका बौद्धिक जीवन उसे निम्न श्रेणीका मालूम होता था, इसलिए वह मार्क्सको बुलाना चाहता था। बावरके पत्रोंसे मालूम होता है, कि वह काफी क्रान्तिकारी था, लेकिन उसके दिमागमें सदा क्रान्तिसे मतलब था दार्शनिक क्रान्तिका। प्रशियाके होहेंनजोलेर्न राजवंशके प्रति उसकी बड़ी श्रद्धा थी, क्योंकि उसके ख्यालसे इस वंशके उदारमना राजाओंने चार शताब्दियों तक धर्म और राज्यके सम्बन्धोंको ठीक करनेका प्रयत्न किया। इस चापलूसीका यही फायदा

हुआ, कि प्रशियाके नये राजा बावरके संरक्षक अल्टेन्सटा इनको हटाकर उसकी जगह आइखहोर्नको राज्य-मंत्री बनाया, जो कि विज्ञान और दर्शन किसी क्षेत्रमें भी स्वतन्त्रताकी गन्धको बर्दाश्त करनेके लिए तैयार नहीं था। यद्यपि बावर कोपेनसे कहीं अधिक हैगेलीय विचारोंका और दर्शनका पडित था, लेकिन उसमें कोपेन जैसी दृढता नहीं थी।

ग्रीक दार्शनिक सम्प्रदाय ग्रीक जीवनके राजनीतिक विशृंखलनसे पैदा हुए। सन्देहवादी, भोगवादी एपिकुरीय तथा संयमवादी स्तोइक उसीसे अस्तित्वमें आये, जिन्होंने इसाई धर्मके लिये रास्ता साफ किया। ये पीछेके दार्शनिक प्लातोन और अरिस्तातिलके विचारों और ज्ञानकी गम्भीरता तक नहीं पहुँच सके थे। हेगेलने उनको बडी तुच्छ दृष्टिसे देखते हुये उपेक्षित कर दिया था। इन ग्रीक दार्शनिकोंकी कोशिश थी कि व्यक्तिको उसके बाह्य परिस्थिति और वातावरणसे अलग करके अन्तर्मुखी कर दिया जाय, जहाँपर कि उनके विचारोंके अनुसार शान्तिमें वास्तविक सुख मौजूद है—ऐसी शान्ति, जिसका बाल भी बाँका नहीं हो सकता, चाहे सारी बाह्य दुनियामें ध्वंस लीला क्यो न मची हो। यह आत्मचेतन, स्वविज्ञानका ग्रीक दर्शन था, जो कि इसाई धर्मके स्वीकार करनेसे पहले रोमके उच्च वर्गमें सर्वत्र सम्मानित था। ग्रीक दर्शनके इस सिद्धान्त (आत्मचेतना) ने बावर, कोपेन और तरुण मार्क्सको अपनी ओर बहुत आकृष्ट किया था। पुराने ग्रीक दर्शन (आत्मचेतना) ने किसी ऐसे प्रतिभाशाली दार्शनिकको नही पैदा किया, जैसे कि उसके पुराने स्वाभाविक दर्शनने देमोक्रितु और हेराक्लितु अथवा उनसे कुछ पीछेके प्लातोन अरिस्तातिल जैसोंको पैदा करके किया था। तो भी इस आत्मचेतना-दर्शनका एक महत्व भी था। इसने जातीय (हेलनिक) और सामाजिक (दासता-सम्बन्धी) उन सीमाओंको तोड दिया, जिनके तोडनेका ख्याल भी प्लातोन और अरिस्तातिल नहीं कर सकते थे। इस कामने पुराण ईसाई धर्मको आगे बढ़ानेका मौका दिया, जो कि उस समय दलितो और उत्पीडितोंका धर्म था, वह दासो और कमकरोंको अपनी ओर खींच रहा था। इसमे शक नहीं, जब रोमके उच्च वर्गने भी ईसाई धर्मको स्वीकार कर लिया, तो उसका वह पुराना रूप जाता रहा, और वह फिर उन्हीं

पुरानी सीमाओंको पुनः स्थापित करनेमें सहायक होने लगा। फिर सामन्त ऐसे धर्मके लिए धर्म-युद्धोंमें तत्परता क्यों न दिखाते ? युरोपके सभी देशोंमें कबीला-शाहीके अनुकूल पुराने धर्मोंको बलपूर्वक नष्ट करके ईसाई धर्मको फैलानेकी क्यों न कोशिश करते ? ईसाइयत इस तरह भारी बन्धनका कारण बन गई। फिर १८वीं सदीके सामन्त-विरोधी बूर्ज्वा पुनरुज्जीवन-आन्दोलनने ग्रीक दर्शनकी आत्मचेतनाको फिरसे उज्जीवित करना चाहा, जिसमें धर्मके प्रति सन्देहवादियोंके सन्देह, एपिकुरियोंकी घृणाको अपनाया और स्तोइक लोगोंसे गणतन्त्री भावनायें उधार ली गई थीं।

बावर फ्रीडरिक महान्को पुनरुज्जीवन-आन्दोलनके बड़े नायकोंमेंसे मानता था। जिसमें कोपेन भी उससे सहमत था। मार्क्स अपने दोनों पुराने साथियोंके विचारोंसे इतने अंशमें सहमत था, कि ये तीनों दर्शन ग्रीक जीवनके लिए गम्भीर महत्त्व रखते थे। जो समस्या कोपेन और बावरके सामने थी, वह मार्क्सके सामने भी आई, लेकिन उसने इसका जवाब दूसरी ही तरहसे दिया। वह मानवी आत्मचेतनाको ही परम भगवान् कहता, जिसके सामने वह किसी भगवान्को सहन करनेके लिए तैयार नहीं था, चाहे वह धर्मके विकृतकारी दर्पण द्वारा उपस्थित किया जाता, या दार्शनिक अनुभूतिके तौरपर।

अपने पिताके जीवनमें ही मार्क्सने निश्चय कर लिया था, कि अपना भावी जीवन स्वतन्त्रतापूर्वक अध्ययन-अध्यापनमें बिताऊँगा। उस समय तक युनिवर्सिटी और शिक्षा-संस्थान ही ऐसे स्थान थे, जहाँ दर्शन और साइन्सके सम्बन्धमें स्वतन्त्र विचार रखनेवालोंके लिए स्थान था। १८३६ ई० के शरदमें मार्क्सको बर्लिनमें पढ़ते आठ सत्र हो चुके थे। उसे अन्तिम परीक्षा देकर छुट्टी लेनेकी जल्दी नहीं थी। जहाँ तक ज्ञानार्जनका सम्बन्ध था, वह अपने प्रयत्नों द्वारा काफी आगे बढ़ रहा था। मार्क्समें जीवनके अन्तिम क्षणों तक ज्ञानकी पिपासा और विद्याके प्रति असाधारण प्रेम था। उसने बर्लिनके जीवनमें ग्रीक दर्शनका बहुत गहराई तक प्रवेश करके सांगोपांग अध्ययन किया था, और 'आत्मचेतनाके' तीनों दार्शनिक सम्प्रदायोंको खूब पढ़ा। अपनी किसी कल्पनाको भी वह तुरन्त माननेके लिए तैयार नहीं था, और आत्मआलोचनाकी तो सीमा

नहीं थी। जैसे-जैसे विद्याके सूत्रोको पकड़ते वह और गहराईमें उतरता जाता था, वैसे ही वैसे नवीन जिज्ञासा उसके हृदयको अधिकृत करती जाती थी।

ब्रावरके बोन चले जाने और उसके आग्रहपर मार्क्सको भी वहाँ जानेकी इच्छा हुई। लेकिन जल्दी ही मालूम हो गया कि प्रशियामे अब कहीं भी विचार स्वातन्त्र्यके लिये जगह नहीं है। मई १८४० में अल्टेन्सटाइन मर गया, संस्कृति-मन्त्रालयको प्रीवी-कौंसिलर लाडेनबर्गने सँभाला और अपने पुराने अध्यक्षकी भावनाओंका काफी ख्याल रखना चाहा। बावरको उसने स्थायी पदपर नियुक्त करनेके लिये लिख भी दिया, लेकिन थोड़े ही समय बाद आइखहोर्न संस्कृति-मंत्री बना दिया गया। बोनके धर्म-विद्या-विभागने बावरके प्रोफेसरके तौरपर नियुक्तिको माननेसे इन्कार कर दिया। ब्रावर शरद की छुट्टियोमे बर्लिन आया था। वह बोन लौटनेको सोचही रहा था, कि उसको इस घटनाकी खबर लगी। वह निराश न हो इस आशासे लड़ने का मन करके लौटा, कि मार्क्सके भी जल्दी आजानेसे हम दोनो मिलकर कुछ कर सकेंगे। लेकिन यह आशा सफल नहीं हुई। मार्क्स समझता था, कि बावरके मित्र और सहायक होनेके कारण ब्रोनकी गुट्ट-बन्दी मुझे पैर जमाने नहीं देगी, और जहाँ तक ऊपरका सम्बन्ध था, वह आइ-खहार्न या लाडैनबर्गकी सहानुभूति प्राप्त करनेके लिये अपनेको अयोग्य समझता था। जहाँ भी उदार विचारोंको सम्भावना थी, वहाँ आइखहोर्न रूढ़िवादियोंकी नियुक्ति करता जा रहा था। शेलिंगको उसने बर्लिनका रैक्टर (कुलपति) नियुक्त किया, जोकि बुढ़ापेमे अलहाम (भगवान्की ओरसे दिये जानेवाले ज्ञान) पर विश्वास करने लगा था, और स्ट्रासको हाल युनिवर्सिटीमे प्रोफेसर बनानेकी भी कोशिशकी।

ऐसी स्थितिमें मार्क्स जैसे तरुण हेगेलीयको क्या आशा हो सकती थी। उसे यह भी विश्वास नही था, कि बर्लिन युनिवर्सिटी उसे परीक्षामे सफल होने देगी, इसीलिये बर्लिनका ख्याल छोड़कर उसने किसी दूसरी छोटी युनिवर्सिटीमे पी० एच० डी० (दर्शनाचार्य) का निबन्ध पेश करनेका निश्चय किया। अभी भी उसके हृदयमे प्रोफेसर बननेकी आकांक्षा थी, इसीलिये बावरके साथ मिल-

कर पत्रिका निकालनेका ख्याल छोड़ दिया, क्योंकि पत्रिकामें अपने उग्र विचारोंके कारण प्रकट हो जानेके बाद उसे प्रोफेसरी नहीं मिल सकती थी।

६. पी० एच० डी० का निबन्ध (१८४१ ई०)

मार्क्सने अपना पी० एच० डी० का निबन्ध जैना युनिवर्सिटीमें दिया, जिसपर १५ अप्रैल (१८४१ ई०) को उसे डाक्टरकी उपाधि मिली। निबन्धका विषय था दैमोक्रितीय और एपीकुरीय स्वाभाविक दर्शनके भेद। यह कहनेकी आवश्यकता नहीं, कि यह निबन्ध केवल डिग्रीके लिये अध्ययनका परिणाम नहीं था, बल्कि इसके लिये जो परिश्रम मार्क्सने किया था, वह स्वयं उसके तीव्र जिज्ञासाका फल था और उसके द्वारा स्वयं उसके भीतर परिवर्त्तन होता रहा था। ग्रीक दर्शनके गंभीर अध्ययनकी यह भूमिका मात्र थी। मार्क्सको ग्रीक दर्शन और उसके एपिकुरीय, स्तोइक तथा संदेहवादी दर्शनोंके सम्बन्धके बारेमें विस्तृत ग्रंथ लिखने की इच्छा थी। इस निबन्धमें उसने पुराण कल्पना मूलक दर्शनके सम्बन्धमें सिर्फ एक ही उदाहरणका आधार लिया था।

मार्क्सके इस निबन्धकी कुछ बातें निम्न प्रकार हैं :

पुराने ग्रीक स्वाभाविक दार्शनिकोंमें दैमोक्रेतुही ऐसा था, जो कि भौतिकवादसे बहुत घनिष्ठ समीपता रखता था। उसका कहना था अभावसे कोई वस्तु नहीं निकल सकती (न भावो विद्यतेऽभावात्) और किसी वस्तु (भाव) का ध्वंस भी नहीं हो सकता। दुनियाके सारे परिवर्त्तन भिन्न-भिन्न परमाणुओंके संयोग और विभाग मात्र हैं। कोई वस्तु या घटना अकस्मात् नहीं पैदा होती, हरेक घटना किसी कारण या आवश्यकतासे होती है। उसके विचारसे परमाणु और शून्य आकाश छोड़कर दुनियामें और कोई चीज अस्तित्व नहीं रखती, वह केवल कल्पना मात्र है। परमाणु असंख्य और अनन्त रूपमें अनन्त प्रकारके हैं। वह अनन्त आकाशमें निरन्तर गिरते रहते हैं। बड़े परमाणुके पतनका वेग अपेक्षाकृत अधिक होता है, इसलिये वह गिरते वक्त अपनेसे अपेक्षाकृत कम गति रखनेवाले छोटे परमाणुसे टकराते हैं। इस संयोगके कारण जो भौतिक गति और चक्कर शुरू होता है, उसीसे संसारकी सृष्टि आरम्भ होती है। पर-

माणुओंके इस तरहके सयोग-वियोगके असंख्य जगत् एक साथ या बारी-बारीसे बनते और लुप्त होते हैं।

(१) एपिकुरु (३४१-२७० ई० पू०)—एपिकुरुने देमोकितूके परमाणु-वादी दर्शनको लेकर उसमें थोडासा परिवर्त्तन किया। खास तौरका परिवर्त्तन यही था, कि एपिकुरु परमाणुओंके पतनको सीधी रेखामे न मान चक्करदार मानता था। एपिकुरी-दर्शन पुराने जगत्का बडी ही उन्नत भौतिकवाद था, जिसकी रक्षा करके उसे लुकरेतियुकी कविता दे रेरुम नतुराने हमारे पास पहुँचाया। काटने एपिकुरुके परमाणुओंकी कल्पनाका उपहास किया, लेकिन तब भी उसने उसे ऐन्द्रियक दार्शनिकोंमें उसी तरह सर्वोत्तम माना, जैसेकि बौद्धिक दार्शनिकोंमें प्लातोनको। इस प्रकार देमोक्रेतू और एपिकुरु दो महान् भौतिकवादी दार्शनिक थे। मार्क्सने एपिकुरुकी बातोंकी आलोचना करते हुये भी इस बातका उल्लेख किया, कि एपिकुरु केवल इन्द्रियोंके प्रत्यक्षको ही प्रमाण मानता था। देमोक्रितुके लिये जो लक्ष्य था, वह एपिकुरुके लक्ष्यका एक साधन मात्र था। एपिकुरु प्रकृतिका बोध प्राप्त करना नहीं चाहता था, बल्कि प्रकृतिके सम्बन्धमें ऐसे दृष्टिकोणको खोजना चाहता था, जोकि उसके दर्शनका समर्थन करे। यह बतला चुके हैं, कि प्लातोनके बादके ग्रीसमें तीनोही प्रधान दार्शनिक सम्प्रदाय आत्मचेतनावादी थे। हेगेलके अनुसार एपिकुरीय दर्शन आत्माकी वैयक्तिक चेतनाका निराकार सार था। स्तोइक दर्शन उसीका निराकार समष्टिगत चेतना है। दोनों ही एकागी (एकात) कल्पना मात्र हैं, जिनके इसी एकातवादके कारण संदेहवादी उनके विरुद्ध थे।

यह बहुत कुछ भारतीय दर्शनमे सौत्रान्तिकोंके बाह्यार्थवाद, योगाचारोंके विज्ञानवाद पर नागार्जुनके शून्यवादकी तरह दो अन्तों और दोनोंपर सन्देह उत्पादन करते हुये तीसरे वादकी सृष्टि थी।

(२) स्तोइक-दर्शन—एलियातिक जैनो (४६०-४३० ई० पू०) और साइप्रेसी (कुप्री) जैनो (३०४ ई० पू०)। इस दर्शनके बडे-बड़े आचार्य थे। स्तौआ पौइकिले (नुकीली अटारीमे) द्वितीय जैनोने अपना विद्यालय स्थापित किया था, इसीलिये इस सम्प्रदायका नाम स्तौइक पडा। यद्यपि एपिकुरीय और

स्तोइक दोनोंका लक्ष्य एक था, लेकिन जहाँ एपिकुरीय परमाणुवादी और व्यक्ति वादीथे, वहाँ स्तोइक सामान्य (अवयवोंको) सर्वोपरि मानते हुए। कहते थे : अवयव अवयवीके सर्वथा अधीन है। इस प्रकार उनका दर्शन नियति-भाग्यवादकी ओर ले जाता था। राजनीतिक तौरसे वह गणतंत्रके पक्षपाती थे और धार्मिक तौरसे पुराने मिथ्या-विश्वासों और रहस्यवादसे अपनेको मुक्त नहीं कर सके थे। वह दार्शनिक हेराक्लितु (५३५-४७५ ई० पू०)के दर्शन-को अपनाते थे, जोकि बुद्धका समकालीन औरहां विचारोंमें कितनीही समानता रखता था। जैसे एपिकुरीय देमोक्रितूका अन्धा-धुन्ध अनुगमन करनेके लिये तैयार नहीं थे, उसी तरह स्तोइक भी हैराक्लितूके दर्शनको केवल साधनके तौर-पर इस्तेमाल करते थे। इसीलिये व्यक्तिके पृथक् होनेके सिद्धान्तके कारण एपिकुरीय दर्शन नियतिवादसे मुक्त हो प्रत्येक व्यक्तिके इच्छा-स्वातंत्र्यको मानता था और दार्शनिक तौरसे प्रत्येक व्यक्तिको धैर्य-धारी दुखिया स्वीकार करता था। अपने ऊपर शासन करनेवाले अधिकारियोंका अनुसरण करो, इसको कहते हुये भी एपिकुरुने धर्मके बन्धनोंसे स्वतंत्र होनेकी घोषणा की थी।

मार्क्सने इसके बाद दोनों प्राकृतिक दर्शनोंके भेदकी व्याख्याकी। देमो-क्रितू केवल परमाणुओंसे भौतिक अस्तित्व तकही अपनेको सीमित रखना चाहता' था, लेकिन एपिकुरु उससे आगे बढ़कर कल्पना, आकृति तथा उपादान-सामग्री, सार और अस्तित्वके तौरपर भी परमाणुपर विचार करता था। एपि-कुरु बाह्य संसारका केवल भौतिक आधार ही परमाणुको नहीं मानता था, बल्कि यह भी कि परमाणु पृथक्भूत व्यक्तिका प्रतीक, तथा निराकार व्यक्ति (आत्म-चेतना)का साकार नियम भी है। देमोक्रेतूने परमाणुके सरल रेखामें नीचे पतनसे सभी घटनाओंका होना सिद्ध किया, जबकि एपिकुरुने परमाणुओंको सरल रेखा छोड़ चक्कर काटते गिरते हुये मानकर नियतिवादसे मुक्ति प्राप्तिको जैसाकि एपिकुरीय दर्शनके सर्वश्रेष्ठ भाष्यकार लुक्रेतियूने बतलाया है : यदि परमाणुओंकी चक्करदार गति न होती, तो विचार-स्वातंत्र्यकी कहाँ गुंजाइश रहती ? सृष्टि और कल्पना-सम्बन्धी परमाणुके विचारोंके बीचमें जो विरोध देखा जाता है, वह सारे एपिकुरीय दर्शनमें मिलता है। तोभी एपिकुरीय प्राकृ-

तिक दर्शनने भौतिक जडताको त्याग कर दिया। एपिकुरुको मार्क्सने "सर्वश्रेष्ठ ग्रीक विचारक माना है, जिसने धर्मकी स्वेच्छाचारितासे मनुष्यको मुक्त करनेका प्रयत्न किया। मार्क्सने एपिकुरीय मूल विचारधाराको उससे भी अधिक आगे और स्पष्टताके साथ विकसित किया, जितना कि स्वयं एपिकुरुने किया था। हेगेलने एपिकुरीय दर्शनको सिद्धान्तके तौरपर विचारहीन बतलाया था : इसमें शक नहीं कि एपिकुरु स्वनिर्मित पुरुष था, वह अपने विचारोंको जनसाधारण-की भाषामें रखना चाहता था। मार्क्सने एपिकुरुके दर्शनको इतनी हल्की नजरसे नही देखा, बल्कि उसने कहा, कि एपिकुरु अपने द्वंद्ववादी शैलीको बड़े अधिकारपूर्वक इस्तेमाल करता है। हेगेलके शिष्य मार्क्सकी भाषा इस निबन्धमें बडी परिपुष्ट मालूम होती है। वह द्वद्ववादी शैलीको अपनी इस कृतिमे बड़े अधिकारपूर्वक इस्तेमाल करता है, और जहाँ तक इसका सम्बन्ध है, हेगेलके दूसरे अनुयायियोंसे वह कहीं बढ़कर अपने गुरुकी नपी-तुली और भावों भरी भाषाका-उपयोग करता है।

इस समय (१८४६ ई०) तक यद्यपि मार्क्स स्वतन्त्र विचारकके तौरपर कुछ आगे बढ़ा था लेकिन हेगेलीय दर्शनका विज्ञानवादी आधार अब भी उस-पर पूरा छाया हुआ था, जिसका एक परिणाम था देमोक्रितूके विपक्षमे उसकी सम्मति। परमाणुवादको उसने बाहरी तजर्बेका परिणाम बतलाकर एपिकुरीयकी प्रशसा करते हुये उसे परमाणुवादके साइन्सका संस्थापक माना। यद्यपि वास्त-विकता यह है, कि परमाणुवादके प्रथम प्रतिष्ठापक देमोक्रितु था, नकि एपिकुरु। हेगेलके विज्ञानवादका प्रभावही उससे ऐसा करा रहा था। मार्क्सके अपने विचार थे : जीवनका मतलब कर्म करना और कर्म करनेका मतलब सघर्ष है। सघर्ष करनेके लिये शक्ति देनेवाले तत्वकी आवश्यकता थी, जिसे मार्क्स एपि-कुरुके दर्शनमें पा रहा था। उसने धर्मके बन्धनोंको तोडनेके लिये विद्रोह करने-का प्रचार किया : न बिजलीकी कडक-चमकसे न देवताओंके भयसे, न द्यौके वज्रोंकी गरगराहटसे भयभीत हो।

अपने निबन्धके प्राक्कथनको जिसेकि मार्क्स अपने निबन्धके साथ प्रका-

शित करना चाहता था—उसने अपने ससुरको बड़े भावुकतापूर्ण शब्दोंमें समर्पित किया था।

मार्क्सके इस निबन्धकी अन्तिम पंक्तियोंमें उसके भविष्यके कर्मक्षेत्रकी भी कुछ-कुछ झलक मालूम होती है। उसने लिखा थाः जब तक कि विश्व-विजयी और अपराजित हृदयमें एक भी बूँद हरकत कर रही है, तब तक वह एपिकुरुके इन शब्दोंमें शत्रुओंकी सदा अवहेलना करता रहेगाः 'वह अनीश्वरवादी नहीं है, जो कि पामर जन-समूहके देवताओंकी अवमानना करता है, बल्कि अनीश्वरवादी वह है, जो कि जन-समूहके देबताओंके सम्बन्धी रायोंको स्वीकार करता है। प्रोमेथियोंके कथनानुसार: सीधा सत्य यह है, कि मैं सभी देवताओंके प्रति घृणा रखता हूँ। तथा प्रोमेथियोने देवताओंके चाकर हेरमीको जैसा उत्तर दिया था, उन्हीं शब्दोंमें :

निश्चित रहो, तुम्हारी निकृष्ट दासतासे,
मैं अपने दुःखोंको कभी नहीं बदलूँगा।

प्रोमेथियो दार्शनिक जगतका सर्वश्रेष्ठ संत और शहीद है। मार्क्सके इन विचारोंको पढ़कर उसके मित्र बावरको भी बहुत भय लगने लगा। इस द्वितीय प्रोमेथियोके लिये भला अब प्रशिया-राज्यकी युनिवर्सिटीमें जगह कैसे मिल सकती थी? प्रशियनशाही तो हर जगह विचार-स्वातंत्र्यको खतम कर रही थी। १८४१ ई० के वसंतमें आइकहोर्नने ब्रूनो बावरके विरुद्ध बोनके धर्म-विद्या-विभागको इसलिये निर्लज्जतापूर्वक खड़ा किया, कि बावरने इंजीलकी आलोचना की थी।। प्रशियाका नया राजा विल्हेल्म अपनेको स्वतंत्र प्रेस और स्वतंत्र विचारोंका समर्थक कहता था। उसने सेन्सर करनेमें ढिलाई करनेका आदेश निकाला। लेकिन यह बिल्कुल दिखावेकी बात मालूम हुई, जब कि १८४१ ई० के ग्रीष्ममें रूगेको अपनी पत्रिकाको सेन्सर करानेका हुकुम मिला। इससे बचनेके लिये रूगेको १ जुलाई १८४१ ई० से अपनी पत्रिका ड्वाशे यारबुखेर (जर्मन वर्षपत्र) को डेस्डेनसे निकालना पड़ा। इस कड़ाईने मार्क्स और बावरको बतला दिया, कि अपना पत्र निकालनेकी जगह यही बेहतर है, कि रूगेके पत्रोंमें ही लेख दिया जाय।

यद्यपि डाक्टरका निबन्ध युनिवर्सिटीमें स्वीकृत हो गया, लेनिन मार्क्सने शायद प्रेसकी इन्ही कठिनाइयोंके कारण उसे प्रकाशित करनेका ख्याल छोड़ दिया, या कम से कम उसकी जल्दी नही समझी, और आगेके कामोकी तत्परताने फिर उसे वैसा अवसर पानेका मौका नही दिया।

इसी साल्के नवम्बरमें वीगंडने एपिकुरुही नहीं हेगेलको भी पक्का अनीश्वर-वादी बतलाते हुये एक पुस्तक नास्तिक, खीस्ट-विरोधी हेगेलके विरुद्ध न्यायका अन्तिम ट्रम्प प्रकाशित किया। एक गुप्त लेखकके तौरपर वीगंडने अन्तिम ट्रम्प मे अपनेको पक्का धर्मविश्वासी दिखलाते हुये हेगेलकी नास्तिकतापर बाइबलकी भविष्यद्वाणियोंको उद्धृत करते हुये अफसोस प्रकट किया। भाषा और शैली इतनी सुन्दर थी, कि एक बार पठित जनतामें इस पुस्तिकाने बडी सन-सनी फैला दी, और कितने ही धर्मविश्वासी तो सचमुच धोखा खा गये। प्रका-शक वीगेड था, लेकिन पुस्तिकाका गुमनाम लेखक ब्रूनो बावर था। देर नहीं लगी, अन्तिम ट्रम्प के खिलाफ निषेधाज्ञा निकल गई। वीगेडके लिये उसका और प्रकाशित करना कठिन हो गया। इसी समय मार्क्स बीमार हो गया, और उसके ससुर लुडविग फान वेस्ट फालेनकी भी तीन महीना बीमार रहकर ३ मार्च १८४२ को मृत्यु हो गई। ऐसी स्थितिमे मार्क्स कुछ नहीं कर सका। १० फरवरीको उसने एक मामूली लेख सबसे नई राजाज्ञाके बारेमे लिखा। यद्यपि यह लेख सेन्सरकी कठिनाईको हल्का करनेके ख्यालसे लिखा गया था, और उसका उस समय कोई महत्व नहो समझा गया, लेकिन वस्तुतः इसी लेखके द्वारा मार्क्सने राजनीतिक जीवनमे प्रवेश किया। मार्क्सने उस लेखके साथकी चिट्ठीमे लिखा था, यदि सेन्सर मेरे लेखका सेन्श्युर (खडन) न करे तो इस लेखको जितना जल्दी हो सके छाप दें। मार्क्सका अनुमान ठीक निकला। २५ फरवरीको रूगेने लिखा कि ड्वार्श यारबुखेरको सेन्सरके कारण हदसे अधिक कठिनाई हो रही है, इसलिये तुम्हारे लेखका छपना असम्भव है। रूगेने यह भी लिखा, कि सेन्सरने जिस सामग्रीको रद्द कर दिया है, उसमेसे कई सुन्दर चीजे मैंने जमा कर ली हैं, जिन्हें अनेक्डोटा फिलोसोफिका दार्शनिक उपाख्यानके नामसे देशसे बाहर स्वीजलैंडमे छपवाना चाहता हूँ। मार्क्सने

अपने ५ मार्चके पत्रमें इसका बड़े उत्साहके साथ स्वागत किया, क्योंकि इसी समय खिस्तानी कलाके ऊपर लिखे गये उसके निबन्धके छापनेमें सक्सनी प्रदेशके सेन्सरने रुकावट डाल दी थी। यह लेख 'अन्तिम ट्रम्प' के द्वितीय भागके तौरपर निकाला जानेवाला था। मार्क्सने लेखको फिर दोहराया और उसे हेगेलीय प्राकृतिक नियमकी आलोचनाके साथ अनेक्डोटामें छाप देनेके लिये लिखा। हेगेलने प्राकृतिक नियम कहकर राजतन्त्रका समर्थन किया था। उसीका खंडन करते मार्क्सने संवैधानिक राजतंत्रपर आक्षेप करते हुये लिखा था, यह पूर्णतया परस्पर-विरोधी और वर्णसंकरी विचार-धारा है। रूगेने उसे लेना स्वीकार किया था, लेकिन सेन्सर-सम्बन्धी लेखको छोड़कर दूसरा उसे कोई नहीं मिला।

२० मार्चको मार्क्सने बतलाया कि मैं अपने क्रिस्तानी-कला-सम्बन्धी निबंधको "अन्तिम ट्रम्प' की शैली, तथा हेगेलीय परिभाषाओंकी बेकारकी सीमाओंसे मुक्त करके अधिक स्वतन्त्र और व्यापक चाहता हूँ। इस कामको उसने अप्रैलके मध्य तक खतम कर देनेका वचन दे दिया था। २७ अप्रैलको निबन्ध प्रायः समाप्त कर चुका था, और उसने रूगेसे कुछ दिन और ठहरनेकी प्रार्थना करते, यह भी कहा था, कि मैं उसका संक्षेप ही भेज सकूँगा, क्योंकि अब निबन्ध बढ़ते-बढ़ते एक पुस्तकका रूप ले चुका है। २१ अक्टूबरको रूगेने सूचित किया था, कि अनेक्डोटा तैयार हो गया है, और यह जूरिच (स्वीजलैंडमें) 'लितेरारिश्चेस्क कोन्तोर' द्वारा प्रकाशित किया जायगा। उसने अभी भी मार्क्सके निबन्धके लिए जगह छोड़ रक्खी थी; लेकिन वह यह भी जानता था, कि मार्क्स जब किसी काममें लग जाता है, तो उसे आधेपर छोड़ना नहीं चाहता। रूगे मार्क्ससे सोलह वर्ष बड़ा था, लेकिन वह बावर और कोपेनकी तरह ही उसकी प्रतिभा और योग्यताका जबर्दस्त समर्थक था। रूगे बेचारा प्रतीक्षा ही करता रह गया। इसी समय मार्क्सने अपनी दिलचस्पी दर्शनसे भी ज्यादा एक दूसरे क्षेत्रमें दिखलाई, जिससे रूगे संतुष्ट हुआ। सेन्सर-सम्बन्धी लेख द्वारा राजनीतिके क्षेत्रमें प्रवेश करनेके बाद मार्क्स अनेक्डोटामें दर्शनके ताने-बाने बुननेकी जगह अब अपने जीवनके मूल कर्मक्षेत्र राजनीतिमें प्रवेश करनेके लिये तैयार था।

अध्याय ४

प्रथम कर्मक्षेत्र (१८४२ ई०)

१. राइनिश जाइटुंग

राइनलैंड जर्मनीका उद्योग-प्रधान प्रदेश था, जहाँ अबूर्ज्वाजी एक नया वर्ग पैदा हो चुका था। वह सामन्ती निरंकुश शासनको वैसे भी पसन्द करनेके लिये तैयार नहीं था, ऊपरसे फ्रांसकी सीमापर होनेसे फ्रेंच-क्रांतिका प्रभाव उसपर पड़ना जरूरी था। १७८६ ई०की फ्रेंच-महाक्रांति और १८३० ई०की घटनाओंने फ्रांसमे सामन्तवादको खतम कर पूँजीवादी शासनको स्थापित कर दिया था। पड़ोसी बूर्ज्वा वर्गकी तरह राइन-उपत्यकाके जर्मन भी सड़ी सामन्ती व्यवस्थाका विरोध करनेके लिये तैयार हो गये। आम तौरसे निहित स्वार्थवाले वर्गोंका जैसा रवैया है वैसे ही यहाँके कुछ लोगोंने पहले सरकार-समर्थक एक पत्र निकालनेका ख्याल किया, लेकिन उसमें उन्हें सफलता नहीं मिली। सरकारी समर्थक 'कोलनिशे जाइटुंग' वहाँके पत्रोंके क्षेत्रमें अपनेको इजारेदार समझता था, और उसे बर्लिनकी सरकार का समर्थन प्राप्त था। इस इजारेदारीको हटानेके लिये कई पत्रोंने कोशिश की, लेकिन उन्हें अकालमें ही कालके गालमें पड़ना पड़ा। कई मर्तबे असफल होनेके बाद अब कुछ धनी-मानी नागरिकोंने पूँजीका प्रबन्ध करके नये आधारपर एक पत्र निकालनेका निश्चय किया। राइनिश अल्गेमाइन जाइटुंग (१६३६ ई०में स्थापित) को 'राइनिश जाइटुंग' के नामसे निकालनेकी सरकारसे अनुमति मिल गई। कोलोनके बूर्ज्वा प्रशिया-सरकारको दिक करनेकी इच्छा नहीं रखते थे, यद्यपि राइनलैंडके लोग प्रशियनोंको विदेशी जैसा ही मानते थे और कितनी ही मर्तबे वह प्रशियाकी अपेक्षा फ्रांसके साथ अपनी सहानुभूति दिखलाते थे। लेकिन अब उद्योग-धंधेमें बड़ी तेजीसे विकास हो रहा था, और प्रशियन भी राइनलैंडकोंके साथ कुछ रियायत करनेके लिये तैयार थे। राइनवालोंकी माँग थी—राजकीय कोषका

मितव्ययताके साथ प्रबन्ध, रेलवेका विस्तार, कोर्ट-फीस और स्टाम्प-करोंमें कमी करना आदि।

कालोनमें १ जनवरी १८४२ में राइनिश ज़ाइटुंग (राइन समाचार) को विरोधी पत्रके तौरपर ही निकालना पड़ा। जल्दी ही पत्रकी ग्राहक-संख्या आठ हजार तक पहुँच गई, और उसके प्रभावसे सरकार भी आशंकित हो पड़ी। राइनलैंडके कैथलिक पादरियोंको प्रोटेस्टेंट जर्मन, सरकार दबाना चाहती थी। नये पत्रने उनका पक्ष लिया, जो अधिकतर व्यावसायिक दृष्टिसे ही। नये पत्रके सम्पादक-मंडलमें थे तरुण बैरिस्टर जार्ज युंग, तरुण असेसर डागोबर्ट ओपेनहाइन। ओपेनहाइन मोजेज इसके प्रभावमें आकर फ्रेंच समाजवादसे परिचित हो गया था। दोनों सम्पादक तरुण हेगेलियोंसे प्रभावित थे। उनके लिये यह स्वाभाविक था, कि अपने समान विचारके तरुणोंसे लेख लिखवायें। अपने जन्मप्रदेशका पत्र होनेके कारण भी मार्क्सका आरम्भ हीसे राइनिश ज़ाइटुंग के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध था। मार्चके अन्तमें ट्रीरसे कलोन जाना चाहता था, लेकिन वहाँका जीवन मार्क्सको अधिक अशांत मालूम होता था। इस समय तक बावर बोनसे हट चुका था, लेकिन मार्क्स नहीं चाहता था, कि प्रतिक्रियावादी वहाँ चैनकी बंसी बजावें, इसलिये उसने बोनमें रहते कोलोनके नये पत्रके लिये उन लेखोंको लिखना शुरू किया, जिन्हें जल्दी ही सभी लेखोंसे श्रेष्ठ माना जाने लगा।

यद्यपि तरुण हेगेलियोके लेखोंको पत्रमें स्थान देना सम्पादकद्वयके कारण था, लेकिन यह निश्चित ही है, कि बिना भागीदारोंकी अनुमतिके ऐसे उग्र लेख पत्रमें नहीं छापे जा सकते थे। भागीदार समझते थे, कि उनके जैसे प्रतिभाशाली सम्पादक और लेखक जर्मनीमें दूसरे नहीं मिल सकते। मार्क्सकी सिफारिशपर रुटेनबर्गको भी सम्पादकीय-विभागमें लिया गया, जिसे बर्लिन सरकार भयंकर क्रांतिकारी समझती थी और उसपर बराबर खुफिया-विभागकी निगाह रहती थी। मार्च १८४८ में फ्रीडरिक विलियम (विल्हेल्म) चतुर्थ यह समझकर काँप गया, कि उस सालकी क्रांतिका वास्तविक प्रेरक रुटेनबर्ग था। यद्यपि बर्लिन सरकार असंतुष्ट थी लेकिन तो भी वह नहीं चाहती थी,

कि कोलनिशे जाइगको राइनलैंडमें एकच्छत्र राज्य करनेके लिये छोड़ दिया जाय। इस प्रकार राइनिश जाइटुंग जल्दी अकाल कवलित नहीं हो सका। पहले लेखके कुछ ही महीने बाद १८४२ ई० में मार्क्सको पत्रका सम्पादक बना दिया गया। इसीसे मालूम होगा, कि पत्रकारिताके पहले ही प्रयासमें उसने अपनी प्रतिभामे कितना चमत्कार दिखलाया था ! उसने भी इसे सौभाग्य की बात समझी, क्योंकि अब उसके हाथमें जबर्दस्त लेखनीके साथ-साथ एक जबर्दस्त पत्र भी आ गया था।

२. रेनिश डीट (राइन संसद्)

राइनलैंडमे एक अलग प्रादेशिक डीट (डाइट, संसद्) थी। १८४१ ई० में नौ सप्ताह तक उसका अधिवेशन डुसेलडोर्फमें होता रहा। मार्क्सने इसकी कार्यवाइयोपर पाँच लम्बे निबन्ध लिखकर बतलाया कि प्रादेशिक ससदें नपुंसक नकली प्रतिनिधि-सस्थायें हैं, जिन्हें प्रशियाके राजाने १८१५ ई० में संविधान प्रदान करनेवाली प्रतिज्ञाके भगको छिपानेके लिये कायम किया है। इन परिषदों-की बैठकें बन्द कमरेमें होती, और अधिक से अधिक छोटी-छोटी साम्प्रदायिक बातो पर ही बहस करने की उन्हें स्वतंत्रता थी। १८३७ ई० में कोलोन और पोजेनमें केथलिक चर्चसे झगडा हो जानेके बाद से संसद्का अधिवेशन नहीं हुआ था। इन संसदोंके सदस्य वही होते थे, जो जमींदार थे। देहातसे आधे मेम्बर लिये जाते थे, शहरी जमींदारोके एक-तिहाई और हर जमींदारोंके एक-चौथाई। साथ ही यह भी शर्त थी, कि कोई भी निर्णय बिना दो-तिहाई बहुमतके वैध नहीं माना जायेगा। ऐसी संसदोंके प्रति लोगोंकी घृणा क्यों न होती, लेकिन अपनी गद्दीपर बैठनेके बाद १८४१ ई० में फ्रेडरिक विलियम चतुर्थने संसदोंका अधिवेशन करवाया, इस प्रकार वह कर्ज लेनेमे सुभीता प्राप्त करना चाहता था। लेकिन बन्द कमरेमें अधिवेशन होना नागरिकोंको पसन्द नहीं था। कोलोनके हजारों निवासियोंने हस्ताक्षर करके आवेदनपत्र भेज कर कहा, कि ससद्के अधिवेशनमें साधारण जनताको भी जानेका अधिकार हो, उसकी कार्य-वाई रोज प्रकाशित की जाय, बिना काटे-छाँटे सारी रिपोर्ट ससद्की कार्यवाइयोंके

छापी जायँ। संसद् और सभी प्रादेशिक बातों पर प्रेसमें बहस करनेका अधिकार हो, और सेन्सरको, हटाकर एक निश्चित प्रेस-कानून बनाया जाय। संसद्ने नागरिकोंकी माँगोंका समर्थन करनेमें अक्षम हो राजासे केवल यही प्रार्थना की, कि अपने अभिलेखोंमें वक्ताओंके नामों को प्रकाशित करनेकी आज्ञा दी जाय, और मनमानी हटाकर सेन्सर करनेका एक कानून बना दिया जाय। राजाने उनकी विनम्र प्रार्थनाको भी ठुकरा दिया। संसद्के सदस्य कितने प्रतिक्रियावादी थे, यह इसीसे मालूम होगा, कि संसद् सभी प्रतिगामी बातोंका समर्थन करती थी। हाँ, कोलोन और राइनलैंडके आर्थिक ढाँचेमें कितने ही परिवर्तनों के कारण वह ऐसी बातोंको मानना पसन्द करती थी, जो कि नये बूर्जा वर्गके अनुकूल हो। सरकारने भू-सम्पत्ति के बटवारेमें एक सीमा निश्चित करनेका प्रस्ताव रक्खा था, जिसमें कि शक्तिशाली किसान-वर्ग कायम रहें! संसद्ने आठ वोटोंके विरुद्ध ४९ वोटोंसे उसे अस्वीकार कर दिया।

मार्क्सने अपने लेखोंमें संसद्की बड़ी कड़ी आलोचना की: संसद् दिनके उजालेमें मुँह नहीं दिखा सकती। अपनी मंडलीकी गोपनीयता उसके लिए बहुत अनुकूल है। मार्क्सने उसे बकलोल संसद कहा था। मार्क्सने अपने लेखों में अपनी जन्मभूमि राइनलैंडके जलवायु और भूभागका बड़ी भावुकताके साथ नाम लिया था। उन लेखोंमें आज भी राइन तटके द्राक्षाउद्यानों और सुखद धूपका आनन्द और गर्मी मिलती है। इसी समय मार्क्सने लेखकके धर्मके सम्बन्धमें लिखा था: एक लेखकको जीवित रहनेके लिये पैसा कमानेके ख्यालसे लिखना चाहिये, लेकिन उसे पैसा कमानेके लिये जीना और लिखना नहीं चाहिये।...प्रेसकी पहली स्वतंत्रता यह है, कि उसे व्यापारसे मुक्त करना। जो लेखक प्रेसको केवल धन कमानेका साधन बना छोड़ता है, उसे इस आंतरिक दासताका दण्ड मिलना उचित है, बाहरी दासता अर्थात् सेन्सरकी रोक...उसके लिये दंड है। मार्क्सने अपने जीवन भर लेखकके इस धर्मका पालन किया।

मार्क्सने कोलोनके कैथलिक लार्ड पादरीकी गिरफ्तारीको गैर-कानूनी बतलाकर उसकी कड़ी आलोचना की। अभी भी वह मार्क्सके विचार जितने कानून और न्यायकी दृष्टिसे थे, उतने आर्थिक कारणों पर निर्भर नहीं करते थे।

अभी भी वह कानून और राज्यके सम्बन्धमें हेगेलीय दर्शनकी सीमासे बाहर नहीं निकल सका था।

३. संघर्षके पाँच मास

"राइनिश जाइटुंग" जर्मनीके उद्योगप्रधान प्रदेशका पत्र था। यद्यपि पहले उसका उद्देश्य वह नहीं था, लेकिन वह जनताकी सहायतासे ही फूल-फल सकता था, इसलिये जनप्रिय बननेके लिये आवश्यक था, कि वह कुछ गर्म-गर्म भी चीजे दे, इसीलिये उस सालकी गर्मियोमें पत्रमे सम्भवतः मोजेज हेसकी प्रेरणासे, बर्लिनमें आवासोंकी कठिनाइयोके बारेमे एक या दो लेख निकले, जिनमेसे एक वाइटलिगके लेखका उद्धरण था, दूसरा स्ट्रासबुर्गके पंडित काग्रेसकी रिपोर्टके तौरपर था, जिसमे समाजवादी समस्याओका जिक्र करते हुए कहा गया था, कि हीन वर्ग जो मध्यम वर्गकी सम्पत्तिकी ओर ईर्ष्या-की दृष्टिसे देख रहा है, उसकी तुलना १७८९ ई० की फ्रेंच-क्रातिमें सामन्तोंके विरुद्ध मध्य वर्गके संघर्षसे किया जा सकता है, फर्क इतना ही है कि इस समय समस्याका हल शान्तिपूर्वक हो सकता है। लेखमे कोई ऐसी उग्र क्रान्तिकारी बात नहीं थी, लेकिन इसके कारण 'राइनिश जाइटुंगपर' कम्युनिज्म (साम्यवाद) की ओर झुकनेका आक्षेप किया गया। आग्सबुर्गके 'अल्गेमाइन जाइटुंगने' अपने राइनके सहयोगीकी कड़े शब्दोंमें आलोचना की—धनी-मानी व्यापारियोके पुत्र, इस बातका जरा भी ख्याल किये बिना—कि हम इस प्रकार अपने धनमें क्लोनके गिर्जोंमें काम करनेवाले आदमियों या जहाजी कुलियोके सहभागी बना रहे हैं—समाजवादी विचारोंसे बच्चोंकी तरह आगके साथ खेल रहे हैं। 'राइनिश जाइटुङ्गकी' बातको लड़कपन कहते हुए लिखा, कि जर्मनी जैसे आर्थिक तौरसे पिछड़े हुये देशमे मध्य-वर्गकी १७८९ ई० के फ्रासके सामन्तोंके भाग्यसे तुलना करना निरो मूर्खता है। मार्क्सका पहला सम्पादकीय कर्त्तव्य था, इस तरहके आक्षेपोका जवाब देना। यद्यपि तथाकथित समाजवादी विचारोके ऊपर हुये प्रहारके जवाबमें कलम उठानेकी उसकी इच्छा नही होती थी, तो भी उसने कुछ लिखना जरूरी समझा और सविस्तार आलोचनाके लिये अधिक अध्ययनके बाद लिखनेका वादा किया।

मार्क्सने उस समय जो लिखा, उससे उसे सन्तोष नहीं हुआ। वह बड़ी उत्सुकतापूर्वक ऐसे अवसरकी प्रतीक्षा करने लगा, जब कि वह फिर अध्ययनमें लग सकेगा। लेकिन इस समय तो वह 'राइनिश जाइटुङ्गमें' दिलोजानसे, इतना लगा था, कि अपने बर्लिनके पुराने साथियोंसे सम्बन्ध तोड़नेके लिये भी तैयार था। बर्लिनमें अब हेगेलीय क्लबके उसके साथी अब 'मुक्त मानव' समाजवालोंके रूपमें बदल गये थे। मार्क्सको उनकी यह बात पसन्द नहीं आई, क्योंकि उसमें इसे आत्म-विज्ञापन और अहम्मन्यताकी बू आती थी। तब भी अभी बावरपर उसका विश्वास था। बर्लिनके उसके पुराने साथी अब ऐसे लेख भेजते थे, जिनमें कुछको सम्पादक और कुछको सेन्सर काट देते थे। अभी तक रूटेनबर्गका बर्लिनके तरुण लेखकोंके साथ जैसा वर्ताव था, उससे वह समझते थे कि 'राइनिश जाइटुङ्ग' हमारे विचारोंका वाहक है; लेकिन अब सम्पादककी कुर्सीपर मार्क्स बैठा था। मार्क्स और बर्लिनके पुराने साथियोंका सम्बन्ध-विच्छेद नवम्बर १८४२में हुआ। इस समय हेरवेग और रूगे बर्लिन गये। हेरवेग उस समय अपनी सफलतापर फूला नहीं समाता था। क्लोन जानेपर बड़ी जल्दी वह मार्क्सका मित्र बन गया था। ड्रेसडेनमें रूगेसे उसकी मुलाकात हुई, जिसके साथ वह बर्लिन पहुँचा। 'स्वतन्त्र मानव' की कलाबाजियाँ उसको बिल्कुल फीकी और बेकार मालूम हुई। रूगे अपने सहयोगी ब्रूनो बावरसे खासकर "स्वतन्त्र मानवके" इस विचारपर उलझ पड़ा। व्यावहारिक पहलूपर बिना विचार किये हुये राज्य, वैयक्तिक-सम्पत्ति और परिवारको उठा देने जैसी बात वेहूदी है—हेरवेगने जब इस तरहकी नुक्ताचीनीकी, तो उसके विरोधियोंने भी छिद्र ढूँढ़ते राजासे उसकी मुलाकात एवं एक धनी लड़कीसे मँगनीकी बात लेकर आक्षेप किया। अन्तमें दोनों पक्षोंने 'राइनिश जाइटुङ्गका' सहारा लिया। रूगेकी सहमतिसे हेरवेगने एक वक्तव्य लिखकर कहा, कि 'स्वतन्त्र मानव' व्यक्तिके तौरपर बहुत भले आदमी हैं, लेकिन आत्म-विज्ञापनके लिये उनका राजनीतिक रूमानीपन (रोमांचकता) आदि उनके लक्ष्य और स्वतन्त्रताके पक्षको नुकसान पहुँचाता है। मार्क्सने इस वक्तव्यको छाप दिया, इसपर मेंयेनने 'स्वतन्त्र मानवकी' तरफसे खूब कड़े लेख लिखे। पहले मार्क्सने इनका जवाब

बड़ी नर्मीसे दिया और कोशिशकी कि 'स्वतन्त्र मानवका' उपयोगी सहयोगी बना रहे—मैं चाहता हूँ, कि शिकायतोंमें इतनी अधिक अस्पष्टता न हो, शब्दाडम्बर, आत्म-प्रशंसा कम और पतेकी बातें ज्यादा हो, वास्तविक स्थितियोका सविस्तर वर्णन हो और कथनीय विषयके सम्बन्धमें व्यावहारिक ज्ञानका अधिक परिचय दिया जाय। मेरी रायमें यह ठीक नही है, बल्कि इसे नैतिकताके विरुद्ध भी कहा जा सकता है, कि साधारणसी आलोचना आदिमे संसारको एक बिल्कुल नई दृष्टिसे देखनेवाले कम्युनिस्ट और सोशलिस्ट मतवादोको खामखा डाला जाय। अगर कम्युनिज्मपर बहस करनी ही है, तो उसे विस्तारपूर्वक और एक बिल्कुल दूसरे ढंगसे करना चाहिये। मैने उनसे कहा कि अगर धर्मका खण्डन करना है तो उसे दूसरी तरह नहीं बल्कि राजनीतिक स्थितिके साथ खण्डन करना चाहिये, क्योकि ऐसा करना एक समाचारपत्रके अधिक अनुरूप होगा और इससे हमारी जनताकी ज्ञान-वृद्धि होगी। धर्म अपने आतरिक बिल्कुल खूखे स्वर्गके सहारे नहीं, बल्कि पृथ्वीके सहारे जीता है। वह अपने आप लुप्त हो जायगा, जब वह उल्टी वास्तविकता एक बार विलीन हो जायेगी, जिसके विचारोंका वह प्रतिनिधित्व करता है। अन्तमें मैने उनसे यह भी कहा, कि अगर वह दर्शनके सम्बन्धमें कुछ कहना चाहते हैं, तो नास्तिकवादके विचारोंके साथ खेलना कम करें—उनका ऐसा करना उन बच्चोकी याद दिलाता है, जो सुननेके लिये तैयार हो। किसी आदमीसे बड़े ऊँचे स्वरसे कहते हैं, कि हम भूतसे नही डरते। मार्क्सके इस उद्धरणसे मालूम होगा कि अपने सम्पादकके फर्जको अदा करते हुये वह किस नियमपर चलता था।

मार्क्सके उपरोक्त शब्दोंको स्वतत्र मानव क्यों पसन्द करने लगे! उनके प्रतिनिधि मेयेनने बहुत ढिठाईके साथ एक पत्र मार्क्सको लिखा जिसपर मार्क्सने रूगेको लिखा था: यह सब एक हद दर्जेकी अहम्मन्यताको दिखलाता है। वह इस बातको नहीं अनुभव करते, कि एक राजनीतिक मुखपत्रकी रक्षाके लिये हमे बर्लिनकी, इस तरहकी बहकोको छोड़ना होगा, जो कि अपनी गुट्टको, छोड़कर और किसी बातसे सम्बन्ध नहीं रखती।...रोज—रोज सेन्सरकी क्षुद्रता, मन्त्रियोके पत्रो, प्रादेशिक गवर्नरकी शिकायतो, डीट (ससद्) की हाय-तोबा,

शेर-होल्डरों (भागीदारों) के विरोधों आदि-आदिसे काम पड़ रहा है। इसपर भी मैं अपने स्थान को इसीलिये पकड़े हुये हूँ, क्योंकि जहाँ तक हो सके, स्वेच्छाचारियों के इरादोंको निष्फल करना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूँ। तुम समझ सकते हो, कि इस पत्रसे मैं झल्ला उठा, और मेयेनको एक काफी कड़ा जवाब दिया।

अबसे मार्क्सका सदाके लिये स्वतंत्र मानव से सम्बन्ध-विच्छेद हो गया। स्वतंत्र मानव में सबकी गति अन्तमें स्वतंत्रताके मार्गसे भ्रष्ट होनेमें ही हुई। ब्रावर और एडवर्ड मेयेन ऐसे पत्रोंके सम्पादक बने, जिनमें उन्हें मालिकोंकी हाँमें हाँ मिलाते हुये ही कुछ लिखनेका अवसर मिलता था।

१८४२ ई० के शरद्‌में रूटेनबेर्ग, को अब भी सरकार भयंकर आदमी समझती थी। और उसने राइनिश जाइटुंगसे उसे हटानेकी माँग की। सारी गर्मियोंमें सरकार पत्रके लिये कठिनाइयाँ पैदा करती रही, जिनसे वह समझती थी, कि वह अपने आप मर जायेगा। ८ अगस्तको राइनलैंडके गर्वनर फान शापरने ऊपर सरकारको लिखा था, कि पत्रके ८८५ ग्राहक हैं। १५ अक्तूबरको मार्क्सने सम्पादक पदको सँभाला था। १० नवम्बरको शापरने अपनी रिपोर्टमें स्वीकार किया, कि गाहकोंकी संख्या लगातार बढ़ रही है, जो अब १८२० तक पहुँच गई है, पत्रकी नीति सरकारके सम्बन्धमें विरोधी और धृष्टतापूर्ण है। सरकारकी कोपाग्निमें घीका काम करनेके लिये इसी समय राइनिश जाइटुंगने एक अत्यन्त प्रतिक्रियावादी ढंगके विवाह-बिल (विधेयक) की कापी प्राप्त करके उसे अधिकारियोंकी इच्छाके विरुद्ध छाप दिया। इसके कारण प्रशियाके राजाको बहुत गुस्सा आया और उसने माँग की, कि उक्त मसौदा जिससे मिला, उसका नाम प्रकट किया जाय, नहीं तो पत्रको तुरन्त बन्द कर दिया जायेगा। लेकिन राजाके मंत्री राइनिश ज़ाइटुंगको इस प्रकार शहीद बनाना नहीं पसन्द करते थे, इसलिये उन्होंने सिर्फ यही माँग की, कि रूटेनबर्गको हटा कर कोई जिम्मेवार सम्पादक नियुक्त किया जाय। साथ ही डोलेशालकी जगह वीटहाउसको उन्होंने सेन्सर नियुक्त किया। मार्क्सने, जैसा कि ३० नवम्बरके अपने पत्रमें, उसने रूगेको लिखा था, रूटेनबेर्गको खतरनाक आदमी नहीं समझता था। बर्लिनके

स्वतंत्र मानव से जो विरोध चल रहा था, वह इस स्थितिमें और भी उग्र हो चला।

गवर्नर शापरने रूटेन्बेर्गको हटाकर दूसरे सम्पादकको नियुक्त करनेके लिये १२ दिसम्बर तककी मियाद दी। इसी समय आपसी फूटके नये कारण पैदा हो गये। वेर्नकास्टेलके एक संवाददाताने मोजेलके किसानोंकी गरीबी और तकलीफोंके बारेमें दो लेख लिखे, जिनके संबधमे शापरने, दो संशोधन भेजे। संशोधन बिलकुल मद्दे और हल्के थे, लेकिन तब भी पत्रने उन्हें कुछ प्रशंसाके साथ ही प्रकाशित किया। इस बीच काफी सामग्री जमा कर जनवरीके मध्यसे पत्रने पॉच लेख छापे, जिसमें प्रमाणके सहित बतलाया कि सरकारने मोजेलके किसानोकी शिकायतोको बड़ी पाशविक कड़ाईके साथ दबा दिया। गवर्नरको इससे संतोष हुआ कि २१ जनवरी १८४३ को मंत्रिमंडलने राजाकी उपस्थितिमे पत्रको दबा देनेका निश्चय कर लिया है। शेयर होल्डरोंका रुपया लगा हुआ था, और वैयक्तिक सम्पत्ति शोषकों के राज्यमें पवित्र थाती मानी जाती है, इसलिये पत्रको तिमाहीके अन्त तक जारी रखनेकी इजाजत मिली। सरकार द्वारा इस तरह जबर्दस्ती अपने प्रदेशके निर्भीक पत्रका दबाया जाना राइन निवासियोंने पसन्द नही किया। उन्होने एक ओर ग्राहकोकी संख्याको एकाएक ३२०० तक पहुँचाकर अपनी सहानुभूति प्रकट की' और दूसरी तरफ हजारोने हस्ताक्षर करके अपने पत्रकी जान बचानेके लिये राजधानीमे अर्जी भेजी। शेयरहोल्डरोंका प्रतिनिधिमंडल भी राजासे मिलने बर्लिन गया, लेकिन उनको इजाजत नहीं दी गई, और जनताके हस्ताक्षरसे भेजे गये आवेदन पत्रोंको रद्दीकी टोकरी में फेंक दिया गया। शेयर होल्डरोंको अपनी पूँजीका ख्याल था, कहीं वह डूब न जाये, इसलिये उन्होंने पत्रसे अधिक नर्मी बरतनेकी मॉग की, जिसपर १७ मार्चको मार्क्सने इस्तीफा दे दिया। इस्तीफा देनेसे पहले उसने सरकारी सेन्सरको काफी परेशान भी किया।

नया सेन्सर सेन्टपाल एक चेक (बोहेमियन) तरुण था। मार्क्सके नैतिक बल, बुद्धि, प्रतिभाका उसपर बड़ा प्रभाव पडा था। २ मार्चको उसने राजधानीमें रिपोर्ट भेजी कि वर्तमान परिस्थितिमें मार्क्सने "राइनिश जाइटुंगसे"

सम्बन्ध तोड़ने और प्रशियाको छोड़नेका निश्चय किया है। १८ मार्चको सेन्ट पालने रिपोर्ट भेजी : डाक्टर मार्क्स निश्चित तौरसे कल सम्पादक पदसे हट गया और उसकी जगह एक मामूली तथा नर्म विचारोंवाले आदमी ओपेन हाइमने सम्पादक पदको सँभाल लिया। मुझे इससे बड़ी प्रसन्नता हुई, क्योंकि आज लेखोंके सेन्सर करनेमें मुझे मुश्किलसे चौथाई समय लगाना पड़ा। सेन्सरने अपने आकाओंसे सिफारिश की, कि मार्क्सके हट जानेपर अब पत्रको चालू रखनेकी इजाजत दी जाय।

"राइनिश ज़ाइटुंग" के दबानेके २५ जनवरीके सरकारी निश्चयका जैसे ही पता लगा, मार्क्सने रूगेको लिखा था : "मुझे इसके लिये आश्चर्य नहीं हुआ। आरम्भसे ही सेन्सरकी हिदायतोंके बारेमें मेरी क्या राय थी, यह तुम जानते हो। जो कुछ हो रहा है, उसे मैं स्वाभाविक परिणाम ही समझता हूँ। "राइ-निश ज़ाइटुंग" का दबाया जाना मेरी रायमें राजनीतिक चेतनाकी प्रगतिकी सूचना है। मैं अब इस्तीफा दे रहा हूँ। जो भी हो, वातावरण मेरे लिये बड़ा ही पीड़ाकर था। बन्धनमें रहते काम करना बुरी बात है, और स्वतंत्रताके लिये भी तलवारकी जगह सुईसे लड़ना बुरी बात है। मैं अधिकारियोंकी के पाखंड, मूर्खता और पशुता और अपनी आज्ञानुवर्तिता...से ऊब गया हूँ। अब जब कि सरकारने मुझे मेरी स्वतंत्रता लौटा दी...जर्मनीमें मेरे लिये करनेको कुछ नहीं है। आदमी को यहाँ रहकर खोटा बनना पड़ता है।

इस प्रकार मार्क्सके राजनीतिक जीवनका पहला भाग खतम हुआ, जब कि अभी वह अपने पच्चीसवें वर्षमें था।

४. फ्वारबाखके सम्पर्कमें

मार्क्सने रूगेको लिखे उक्त पत्रमें अपनी पहली छपी पुस्तकके प्राप्ति-स्वीकारके बारेमें लिखा था। यह उसके लेखोंका संग्रह अनेकडोटा त्सुर नो एस्टेन ड्वाशेन "फ़िलोसोफ़ी उंट पुब्लिज़िस्टिक" (दो जिल्दोंमें) मार्च १८४३ के आरम्भमें ज़ूरिच (स्वीट्ज़लैंड) में छपा। जुलियस फ्रोबेलने जर्मन सेन्सर द्वारा पीड़ित लेखकोंकी कृतियोंको लिटेरारिशे कोन्टोर नामसे प्रकाशित

करनेका प्रबन्ध किया था। इस संग्रहमें तरुण हेगेलियोंके कितने ही लेख सम्मिलित थे, जिनमें लुड्विग् फ़्वारबाख़का नाम सबसे पहले था। फ़्वारबाख़ने हेगेलके सारे दर्शनको रद्दीकी टोकरीमें फेंकते घोषित किया था, कि यह निष्प्राण विचार है, इसमें धर्म-विद्याकी रोगी आत्माके सिवा और कुछ नही है। दर्शन-सुधारपर प्रारम्भिक निबन्ध में फ़्वारबाख़ने अपने जिन विचारोंको प्रकट किया था, मार्क्सको बिल्कुल नयेसे मालूम हुये। एंगेल्सने पीछे स्वीकार किया, कि मार्क्सके बौद्धिक विकासमे फ़्वारबाख़की अमर कृति ईसाइयत-सार (१८४१ ई० में प्रकाशित)ने बड़ा प्रभाव डाला था। एंगेल्सने भी इस ग्रंथके मुक्तिदायक प्रभावके बारेमे लिखा था : सर्वत्र उत्साह था। हम सभी तुरन्त फ़्वारबाख़के अनुयायी बन गये। लेकिन "राइनिशे जाइटुंगके" लेखोंमें इसका जरा भी चिन्ह नहीं मिलता, कि उस वक्त मार्क्सके ऊपर फ़्वारबाख़का कोई प्रभाव था। तो भी मार्क्सने बड़े उत्साहके साथ फ़्वारबाख़के नये विचारोंका स्वागत किया था। फर्वरी १८४४ मे ड्वाश-फ्रांजोशिशे यारबुखेर (जर्मन-फ्रेंच वर्ष-पत्र) के निकलनेके समय मार्क्सपर जरूर फ़्वारबाख़के विचारोंके प्रभाव को देखा गया। प्रारम्भिक निबन्ध में फ़्वारबाख़के ईसाइयत-सार के विचार सूक्ष्म रूपमें पाये जाते हैं, शायद इसीलिये एंगल्सको भ्रम हुआ और उन्होंने तुरन्त अनुयायी बननेकी बात कही। लुडविग फ़्वारबाख़ (१८०४-७२ ई०) हेगेलका शिष्य था। हेगेलके बाद उसका दर्शन दो शाखाओंमे बँट गया, जिनमें डूरिंग जैसे लोग भौतिकवादके कट्टर विरोधी और हेगेलीय विज्ञानवादको लेकर प्रतिक्रियावादी दर्शनकी धारा चलाने लगे। दूसरी शाखा हेगेलके दर्शनको रहस्यवाद और विज्ञानवादसे छुड़ा उसके वास्तविक लक्ष्य द्वन्द्वात्मक भौतिकवादकी ओर लेजा रही थी। इस दलका अगुवा फ़्वारबाख़ था। इस प्रकार मार्क्सका हेगेलीय दर्शनके इस विशिष्ट रूपके साथ सम्बन्ध स्थापित करनेमें फ़्वारबाख़का हाथ था इसमें सन्देह नही। फ़्वारबाख़को देहातका एकान्त जीवन पसन्द था, लेकिन तब भी वह हथियार डालनेवाला निकम्मा पुरुष नहीं, बल्कि सच्चाईके लिये लड़नेवाला योद्धा था। वह गलेलियोकी तरह नगरको कल्पनाशील दिमागोका जेलखाना मानता था, जब कि देहाती

जीवनकी स्वतंत्रताको प्रकृतिके खुले ग्रंथको पढ़नेका सुन्दर अवसर देनेवाला मानता था। फ़्वारबाख़ जैसे विचारकके लिये नगरके शोर-गुलसे भरे वातावरणसे अलग शान्त स्थानमें रहना शायद इसीलिये पसन्द था, कि उसके एकाग्रतापूर्ण स्वभावके वह अधिक अनुकूल था। एकान्तवासी होते हुये भी फ़्वारबाख़ अपने समयके बड़े-बड़े संघर्षोंमें अगली पाँतीमें रहता था। ईसाइयत, सार में उसने लिखा था, मनुष्य धर्मको बनाता है, धर्म मनुष्यको नहीं। और मनुष्यकी कल्पना जिस उच्चतम सत्ताको बनाती है, वह उसकी अपनी सत्ताका कल्पित प्रतिबिम्ब छोड़ और कुछ नहीं है। जिस समय उसकी यह पुस्तक प्रकाशित हुई, मार्क्सका ध्यान उसी समय राजनीतिक संघर्षकी ओर गया था। इसने मार्क्सके संघर्षमय जीवनमें दृढ़तापूर्वक पैर रखनेमें सहायता की, इसमें शक नहीं। प्रारंभिक निबन्ध ने हेगेलीय दर्शनके प्रतिक्रियावादी रूपको बिल्कुल नंगा और बेकार कर दिया, और अब उसका द्वन्द्वात्मक दृष्टिकोण भौतिकवाद और समाजवादकी सेवाके लिये तैयार था। "प्रारम्भिक निबन्ध" ने मार्क्सके ऊपर भारी प्रभाव डाला। १३ मार्च १८४३ ई० को रूगेको पत्र लिखते समय मार्क्सने घोषित किया था : फ़्वारबाख़की सिर्फ एक बात मुझे पसन्द नहीं है, वह यही कि वह प्रकृतिकी बहुत अधिक पर्वा करता है और राजनीतिसे बहुत कम, यद्यपि राजनीतिसे मित्रता स्थापित करके ही समसामयिक दर्शन सच्चा बन सकता है। लेकिन मैं मानता हूँ, कि इसे वैसा ही होना पड़ेगा जैसा कि सोलहवीं शताब्दीमें प्रकृतिके उत्साही भक्तोंको राज्यके उत्साही भक्तोंके साथ लोहा लेकर करना पड़ा था। मार्क्सका कहना बिल्कुल ठीक था, क्योंकि "प्रारम्भिक निबन्ध" में फ़्वारबाख़ने सिर्फ एक ही बार राजनीतिका नाम लिया है, सो भी गौण रूपसे। मार्क्सने अब हेगेलके विधान-दर्शनकी और राज्य-दर्शनकी पूरी तौरसे परीक्षा करनेका निश्चय किया, जैसे कि फ़्वारबाख़ने उसके प्रकृति-धर्म-दर्शनकी परीक्षा की थी। उसी पत्रमें लिखे दूसरे वाक्यसे भी मार्क्सके ऊपर पड़े फ़्वारबाख़के प्रभावको देखा जा सकता है।

प्रशियन सेन्सरके कारण प्रशियामें रहते हुये कुछ लिखना सम्भव नहीं है, इसीलिये मार्क्सने जर्मनी छोड़नेका निश्चय किया।

५. विवाह (१८४३ ई०)

लेकिन जर्मनीको वह बिना जेनीको लिये छोड़ना नहीं चाहता था। २५ जनवरीको उसने रूगेसे पूछा था, कि हेरवेग द्वारा जूरिचसे भविष्यमें निकाले जानेवाले ड्वाशेरबोटे में कोई काम मिल सकता है या नहीं। पर हेरवेगको स्वय जूरिचसे निकलनेके लिये मजबूर किया गया, जिसके कारण वह वहाँसे पत्र नहीं निकाल सका। इसपर दोनोंके संयुक्त सम्पादकत्वमें यारबुखेर (वर्ष पत्र) के नामसे एक पत्र निकालनेका सुझाव रूगेने रक्खा और कोलनो छोड़ने-के बाद लाइपजिगमें आकर बात करनेके लिये बुलाया। उस समय जर्मनीमें पत्र-पत्रिकाओंके ऊपर सेन्सरका बहुत जोर था, उससे बचनेके लिये वर्षपत्र निकाले जाते थे, जिनमें भिन्न-भिन्न लेखोंका संग्रह रहता, और पत्र-पत्रिकाओमे न सम्मिलित होनेके कारण उसे सेन्सर कराके छपानेकी आवश्यकता नहीं थी। लेकिन मार्क्स जैसे विचार रखनेवाले लेखकोंके लेख वर्षपत्र में भी आसानीसे प्रकाशित होने पाते, इसमें सन्देह था। १३ मार्चके अपने पत्रमे रूगेको मार्क्सने लिखा था : यदि ड्वाशे यारबुखेर को फिर प्रकाशित होनेकी इजाजत मिल जाय, तो अधिकसे अधिक विगत कामोका ही हम हल्का सा अनुकरण कर सकेंगे, जो कि वर्तमानके लिये पर्याप्त नहीं है। पर "ड्वाश-फ्रॉज़ोशिशे यारबुखेर" (जर्मन-फ्रेंच वर्षपत्र) एक सिद्धान्तकी चीज होगी, एक महत्त्वपूर्ण घटना और ऐसा अध्यवसाय होगा, जो कि हमे उत्साहित करेगा। मार्क्सने इस प्रकार जर्मनीके भीतर जर्मन वर्षपत्र न निकाल बाहरसे "जर्मन-फ्रेंच वर्ष-पत्र" निकालनेका प्रस्ताव रक्खा, जिसे १६ मार्चके अपने पत्रमे रूगेने स्वीकार किया।

पिताके मरने और डाक्टरकी डिग्री प्राप्त करनेके बाद जिस समय मार्क्सने अपने राजनीतिक संघर्षमय जीवनको आरम्भ किया था, उसी वक्त उसके सामने कितनी ही घरेलू कठिनाइयाँ भी उपस्थित हुई थीं, लेकिन मार्क्स उनको कोई महत्त्व नहीं देता था। वह मानवजातिके सारे समाजके दुःखोंके हटानेकी चिन्तामें था, जिसके सामने घरेलू कठिनाइयाँ उसके लिये नगण्य सी थीं।

उसने इन कठिनाइयोंका शायद ही कभी जिक्र किया। पहली बार तुच्छ निजी मामले कहते उसके वाक्य उस पत्र द्वारा हमारे पास पहुँचे हैं, जिसे कि ६ जुलाई १८४२ को रूगेको लिखा था : 'अनेकडोटा' के लिये लिखनेका वचन दे कर भी मैं क्यों नहीं कुछ कर सका, "मेरा अवशिष्ट समय अत्यन्त अरुचिकर पारिवारिक झगड़ोंके कारण बरबाद और बेकार गया। यद्यपि वह काफी अच्छी हालतमें है, तो भी मेरे परिवारने मेरे रास्तेमें ऐसी कठिनाई डाली, जिसने मुझे कुछ समयके लिये अत्यन्त परेशान करनेवाली स्थितियोंमें डाल दिया। शायद मैं तुम्हें इन तुच्छ निजी मामलोंका वर्णन करके परेशान करना नहीं चाहूँगा। यह वस्तुतः सौभाग्यकी बात है, कि हमारे सार्वजनिक मामले किसी नैतिक बल वाले पुरुषको घरेलू कठिनाइयों द्वारा परेशान नहीं कर सकते"। इन शब्दोंसे मार्क्सके दृढ़ चरित्रबलका पता लगता है, जो कि उसके कंटकाकीर्ण दीर्घ जीवन पथके लिये हमेशा बहुत बड़ा संबल रहा। उसकी क्या घरेलू कठिनाइयाँ थीं, इसका विवरण कहीं नहीं मिलता है। रूगेको उसने लिखा था : जैसे ही हमारी सारी योजनायें ठीक रूप ले लेंगी, मैं क्रोज्नाख जाऊँगा, जहाँ जेनीकी माँ अपने पतिके मरनेके बाद जाकर रहती थी। व्याह करके मार्क्स अपनी सासके घरमें कुछ समय बिताना चाहता था। मार्क्सके शब्दोंमें "जिसमें कि हमारे काम शुरू करनेसे पहले हमारे पास कुछ सामग्री रहे।...बिना किसी भावुकताके मैं तुम्हें विश्वास दिलाना चाहता हूँ, कि मैं प्रेममें गम्भीरताके साथ पूरी तरह डूबा हुआ हूँ। हम दोनों कुछ अधिक सात वर्षसे मँगनी किये हुये हैं। मेरी भावी पत्नीको मेरे कारण अपने धर्मभीरु सामन्ती सम्बन्धियोंसे संघर्ष करना पड़ा, अपने उन धर्मभीरु सामन्ती सम्बन्धियोंके साथ, जो कि स्वर्गमें पिता और बर्लिनमें सरकारको समान रूपेण पूज्य समझते हैं, और कुछ मेरे अपने परिवारके साथ, जिसपर पुरोहित लोगों तथा मेरे दूसरे शत्रुओंने प्रभाव कायम कर रखा है। इन संघर्षोंने उसके स्वास्थ्यको प्रायः खतरेमें डाल दिया। इसीलिये वर्षों तक मैं और मेरी भावी पत्नी अनावश्यक परेशान करने वाले झगड़ोंमें पड़नेके लिये मजबूर हुये।

यहाँ घरेलू कठिनाइयोंकी कुछ झलक मिलती है। अब मार्क्स देश छोड़नेके

लिये तैयार था और ब्याह करके अपने भविष्यका भी कोई प्रबन्ध करना चाहता था। यह प्रबन्ध आसानीसे हो गया, और मार्क्सको लाइपज़िग जानेकी जरूरत भी नहीं पडी। रूगे अच्छा खासा पैसेवाला आदमी था, उसने लिटेरारिशे कोन्टोरके छ हजार थालर (६ हजार पौंड) का शेयर लेना स्वीकार किया। फ्रोबेलने प्रकाशनका काम अपने ऊपर लिया। यह निश्चय हुआ, कि मार्क्सको सम्पादनके कामके लिये ५०० थालर वार्षिक वेतन दिया जाय।

१६ जून १८४३ के स्मरणीय दिनको जेनीसे ब्याह किया। जेनी विचारोमे पति से अभिन्नता रखती थी, उसका सारा जीवन पुराणवर्णित किसी परम तपस्विनी सती जैसा मालूम पड़ता है।

जर्मन-फ्रेंच वर्षपत्र को छापनेके लिये तीन जगहें सामने थी, ब्रुशेल्स (बेल्जियम) पेरिस (फ्रास) और स्ट्रासबुर्ग (अलसस्की राजधानी)। मार्क्स दम्पती स्ट्रासबुर्गको अधिक पसन्द करते, लेकिन रूगे और फ्रोबेलके पेरिस और ब्रुशेल्स के देख आनेके बाद पैरिसको ही अधिक अनुकूल समझा गया। यद्यपि ब्रुशेल्समें पैरिसकी अपेक्षा कानूनी कडाइयाँ कम थी, लेकिन पैरिस जर्मन जीवनके नजदीक पडता था, और रूगेने यह भी लिखा कि वहाँपर मार्क्स तीन हजार फ्रांक या कुछ कममें भी आरामसे रह सकता है।

मार्क्सको मधुमास बितानेके लिये कुछ महीने मिले, जिन्हें उसने अपनी सासके घरमें बिताया। फिर २५ वर्षके मार्क्स और २६ वर्षकी जेनीने वहाँसे उठकर पैरिसमें डेरा डाला। जर्मनीके इस जीवनके सम्बन्धमे मार्क्सका आखिरी लेख जो मिलता है, वह २३ अक्तूबर १८४३ को फ्वारबाखके नाम लिखा एक पत्र है, जिसमें उसने जर्मन कवि शेलिंगकी आलोचनाके सम्बन्धमे अपने वर्ष पत्रके प्रथम अकके लिये एक लेख माँगा था। फ्वारबाखने ईसाइयतसारके दूसरे संस्करणमें जो भूमिका लिखी थी, उसे पढ़कर मार्क्सको ख्याल आया, कि फ्वारबाख शायद इस कामके लिये अपनी कलम उठाये। उसने पत्रमें लिखा था हेरशेलिगने कितनी चतुराईसे फ्रासीसियोंको ठगा: पहले दिल और दिमागके निर्बल कूजिनको और बादमे चमत्कारी लारूको। पियर लारू और उसके सहकारी अब भी शेलिंगको एक ऐसा आदमी समझते हैं, जिसने अतिलौकिक विज्ञान-

वादके स्थानपर बुध्यनुसारी यथार्थवाद, निराकार विचारोंकी जगहपर रक्त-मांसके विचारोंको बाहरी दर्शनकी जगह विश्वदर्शनको स्थापित किया।... इसलिए आप हमारे प्रकाशन तथा सत्यकी भारी सेवा करेंगे, अगर आप हमारे प्रथम अंकके लिये शेलिंगकी रूपरेखाको प्रदान करें। आप ही इस कामके लिये उचित पुरुष हैं, क्योंकि आप शेलिंगसे बिल्कुल उलटे हैं। जहाँ तक शेलिंगका सम्बन्ध है, अपनी तरुणाईके ईमानदार विचारोंके कारण वह हमारा सबसे अच्छा प्रतिद्वन्द्वी कहा जा सकता है। अपने इन विचारोंके लिये उसके पास कल्पना छोड़ कोई दूसरे साधन नहीं, अहम्मन्यता छोड़ कोई दूसरी शक्ति नहीं, अफीम छोड़ कोई प्रेरणादायक बल नहीं, स्त्रैण ग्रहणक्षमता के अनुकुसपनके सिवा कोई ज्ञान-साधन नहीं। उसके पास तरुणाईके स्वप्नसे बढ़कर कभी कुछ नहीं थे, लेकिन तुम्हारे भीतर वह सत्य, वास्तविकता और पौरुषपूर्ण गम्भीरता बन गये...इसीलिये मैं आपको प्रकृति और इतिहासकी यमल शक्तियों द्वारा नियुक्त शेलिंगका आवश्यक और स्वाभाविक प्रतिद्वन्द्वी मानता हूँ। इन पंक्तियोंसे फ्वारबाखके प्रति मार्क्सके उस समयके भाव प्रकट होते हैं। लेकिन फ्वारबाखने मार्क्सकी प्रार्थनाको स्वीकार करनेमें आनाकानी की। उसने पहले रूगेको सहायता करनेका वचन दिया था, लेकिन पीछे इन्कार कर दिया। इसका यह अर्थ नहीं समझना चाहिये, कि फ्वारबाख पलायनवृत्तिवाला आदमी था। लेकिन, इस समय उसके पास काफी हिम्मत नहीं थी, कि जर्मनीके घोर प्रतिक्रियापूर्ण वातावरणमें फिर अपनी लौह लेखनी लेकर लड़नेके लिये तैयार हो जाता। उसने मार्क्सको यद्यपि बड़े सौहार्द्रपूर्ण शब्दोंमें जवाब दिया, लेकिन, वह इन्कार छोड़ और कुछ नहीं था।

अध्याय ५

पैरिसमें (१८४३-४५ ई०)

१. "जर्मन-फ्रेंच वर्षपत्र"

मार्क्सने बड़े उत्साहके साथ वर्षपत्रके सम्पादनको अपने हाथमें लिया, लेकिन पत्रका केवल एकही अंक दोहरी जिल्दोंमे फरवरी १८४४ ई० के अन्तमे प्रकाशितहो सका। यही उसका आदिम और अन्तिम अंक था। जैसा कि नामसे मालूम होता है, इस पत्र द्वारा फ्रास और जर्मनी दोनो देशोंके मनीषियोंके बौद्धिक सहयोगकी आशाकी गई थी। जर्मनीकी विशेषता थी उसका हेगेलीय दर्शन, जोकि फ्रांसीसियोको केवल विज्ञानवादकी धुन्धमें भटकनेको प्रोत्साहन दे सकता था, और फ्रांसकी जर्मनीको विशेष देन हेगेलीय दर्शन के तीक्ष्ण तटकी और कोई दिलचस्पी नहीं थी। वह निश्चयही अध्यात्म और रहस्य-वादकी मरुभूमिमें भटकानेमें सहायक होता। रूगेने फ्रासके तत्कालीन मनीषियों लामारतीन लामेने, लुई ब्लाकं, लारू, प्रूधोंसे इसके बारेमें बातचीत की थी। केवल लारू और प्रूधों जर्मन दर्शनके बारेमें कुछ जानकारी रखते थे, उनमें भी एक पैरिससे बाहर रहता था, और दूसरेने लीनोटाइप मशीनके आविष्कारमें दिमागको खपाते अपनी लेखनीको विश्राम दे रखा था। अराजकतावादी लुई ब्लाक और दूसरोंने किसी तरहके सहयोग देनेसे इन्कार कर दिया। इस प्रकार जहाँ तक फ्रेंच लेखकोंका सम्बन्ध था, वर्षपत्रको निराश होना पड़ा। लेकिन जर्मन लेखकोंके सहयोगमें जरूर सफलता मिली। सम्पादकोंके अतिरिक्त कवि हाइने, हेरवेग, और योहान याकोबी जैसे प्रथम श्रेणीके लेखकोंने अपने लेख भेजे, द्वितीय श्रेणीके लेखकोंमें मोजेज-हेस, पलाटिनेटके तरुण वकील फ० सी० बैर्नेज, तथा सबसे तरुण लेखक फ्रेडरिक (फ्रीडरिख) एंगेल्स जैसोंके सुन्दर लेख मिले। एंगेल्सने कई तरहके लेखनक्षेत्रमें घूमते हुये अब प्रथम बार पूरा हथियारबन्द होकर राजनीतिक क्षेत्रमें पैर रक्खा था। यद्यपि वर्षपत्रका उद्देश्य

क्रांतिकारी विचारधाराका समर्थन करना था, लेकिन अब भी वह हेगेलीय दर्शन की कक्षामें ही घूमना चाहता था।

प्रथमग्रास मक्षिकापातः हुआ, वर्षपत्रके युगल नम्बरके निकलते देर नहीं हुई, कि झगड़ेका बीजारोपण हो गया। वर्षपत्रमें पत्र-व्यवहार छपा था, जो रूगे, फ्वेरबाख, बकुनिनके पत्र-व्यवहारसे शुरू हुआ था। बकुनिन तरुण रूसी क्रांतिकारी था, जो ड्रेसडेनमें रूगेके साथ आकर रहने लगा था। पत्र-व्यवहारमें आठ चिट्ठियाँ थीं, जिनमें लेखकोंके हस्ताक्षर-संकेत दर्ज थे, जिनसे मालूम होता है कि उनमेंसे तीन-तीन पत्र मार्क्स और रूगेके थे और बकुनिन तथा फ्वेरबाखके एक-एक। पीछे रूगेने दावा किया, कि पत्र-व्यवहार सारा मेरा लिखा हुआ है और केवल जहाँ-तहाँ ही वास्तविक पत्रोंसे उद्धरण लिये गये हैं: लेकिन वस्तुतः पत्र उन्हींके लिखे हुये थे, जिनके हस्ताक्षर-संकेत उनपर मिलते हैं।

वर्षपत्रके सम्बन्धमें कुछ उत्साहवर्द्धक सन्देश भी मिले थे, लेकिन उनका स्वागत वैसा नहीं हुआ। पहले तो फ्रेंच मनीषियोंका सहयोग न होनेसे उसका जर्मन-फ्रेंच वर्षपत्र नाम ही उचित नहीं मालूम होता। मार्क्सने तब भी कहा था, "इसमें कुछ उल्लेखनीय बातें हैं, जो कि जर्मनीमें सनसनी पैदा करेंगी।" लेकिन सनसनी पैदा करनेसे पहला काम यह हुआ, कि संचित निधि जल्दीही खतम हो गई। फ्रोबलने साफ कह दिया, कि जब तक और पैसा नहीं मिलता, मैं कुछ नहीं कर सकता। इसके बाद वर्षपत्रके प्रकाशित होतेही प्रशियाकी सरकारने उसके विरुद्ध जहाद बोल दी। उसने बाहरके राज्योंपर भी दबाव डालना चाहा, लेकिन उसमें सफलता नहीं हुई। फिर अपने सभी प्रदेशोंके गवर्नरोंको १८ अप्रैल १८४४ को सूचित किया, कि यारबुखेरमें देशद्रोह और राजनीतिक अपराधवाली बातें हैं; साथही गवर्नरोंको यह भी हुक्म दिया, कि बिना हल्ला-गुल्ला किये जैसे ही प्रशियाकी सीमाके भीतर आवें उनके कागज-पत्रोंको जब्त करके रूगे, मार्क्स, हाइने और बुर्नेको गिरफ्तार कर लिया जाय। सीमान्तपर भी सावधानी रखनेके लिये राजाज्ञा निकाली गई और जैसेही वर्षपत्र भीतर आया, उसे ज़ब्त कर लिया गया। राइन नदीके एक स्टीमरसे वर्षपत्रकी सौ

कापियाँ जब्तकी गईं और बेर्गजाबेर्नके पास फ्रांसीसी सीमान्तपर दो सौसे अधिक कापियाँ हाथ लगीं। यह आर्थिक चपत सीमित साधनोवाले प्रकाशकोंके बर्दाश्तसे बाहरकी बात थी।

पहले ही रूगेने मार्क्सको लिखा था : यारबुखेर मर गया और हेगेलीय दर्शन अब अतीतकी चीज है। आओ पैरिसमें ऐसे एक पत्रका प्रबन्ध करें, जिसमें हम पूर्ण स्वतंत्र और निर्भीक हो, ईमानदारीके साथ अपनी और जर्मनी की पूर्णतया आलोचना कर सकें। लेकिन मार्क्सही वर्षपत्र जैसे प्रयत्नके मुख्य केन्द्र थे। सोचनेवाले स्वतंत्र दिमागोके लिये एक नये केन्द्रकी आवश्यकता वह मानते थे। यद्यपि अतीतके बारेमें सन्देहकी गुंजाइश नही थी, लेकिन वही बात भविष्यके बारेमें नहीं कही जा सकती थी। मार्क्सके शब्दोंमे : सुधारकोंमें आम अराजकता और फूट पडी है। वह सभी यह स्वीकार करनेके लिये मजबूर हैं, कि भविष्यके बारेमें उनके पास कोई यथार्थ विचार नहीं है। तो भी नये आन्दोलनको यही एक बड़ा सुभीता है, कि हम नई दुनियाको रूढिवश पहलेसे कल्पित करना नहीं, बल्कि उसे पुराणकी आलोचनामें खोजना चाहते हैं। अब तक पहेलियोंके हलको दार्शनिक अपने लिखनेकी मेजपर तैयार रक्खे पाते थे, सारी बाहरी मूर्ख दुनियाको बस यही करना था, कि आँखोंको मूँद ले, और पकी-पकाई परम-साइन्सकी पूड़ीको लेनेके लिये मुँह खोल दे। फिलासफीने अपनेको वाद-निष्पन्न कर लिया है, जिसका सबसे बड़ा सुबूत यही है, कि दार्शनिक चेतनाने सिर्फ ऊपरी तौरसे नहीं, बल्कि पूरी तौरसे युद्धकी ज्वालामे अपनेको डाल दिया है। हमारा कार्य यह नहीं है, कि पहले हीसे भविष्यको निर्माण करें और सभी समयकी सभी समस्याओका हल तैयार करें; बल्कि निश्चय ही हमारा काम है साथ ही वर्तमान दुनियाकी निष्ठुरतापूर्वक आलोचना करना भी। निष्ठुरतासे मेरा मतलब यही है, कि न हम अपने निष्कर्षोंसेही लोहा लेनेमें भय खायें और न वर्तमान राज्य-शक्तियोंसे लोहा लेनेमें।

यहाँ मार्क्सका वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपने भविष्यके कृत्योंके बारेमें स्पष्ट है। वह काबेत, देजामी और वाइटलिंगकी तरह पहलेसे पके-पकाये साम्यवाद (कम्युनिज्म) की तरहके किसी वादका झंडा फहरानेकी इच्छा नहीं रखते।

ऐसे सोशलिस्टोंकी विचारधारा मार्क्सको बिल्कुल पसन्द नहीं थी, जोकि साम-यिक राजनीतिक प्रश्नोंको तुच्छ समझते थे। वह मानते थे कि राज्यके पारस्परिक विरोध आदर्श और व्यावहारिक कल्पनाओंके संघर्ष द्वारा सब कहीं सामाजिक सत्यको खोज निकाला जा सकता है। इसलिये हमें राजनीतिकी आलोचना—राजनीतिके वास्तविक संघर्षमें-भाग लेनेसे अपनेको रोकना नहीं चाहिये। इस तरीकेसे हम दुनियाके सामने सिद्धान्तशास्त्रीके रूपमें पेश होनेसे अपनेको बचा सकेंगे। 'यह सत्य है, सिर नवाओ और इसकी पूजा करो' कहते एक नये सिद्धान्तको दुनियाके सामने उपस्थित करनेसे हम अपनेको बचा सकेंगे। हमें दुनियाके लिये नये सिद्धान्त (नियम) उसके पुराने सिद्धान्तोंसे निकालकर विकसित करने होंगे। हमें दुनियाको यह नहीं कहना है : 'अपने झगड़ोंको छोड़ो, वह मूर्खतापूर्ण हैं। हमारी बात सुनो, क्योंकि हमारे पास वास्तविक सत्य है।' इसकी जगह हमें दुनियाको यह दिखलाना है, कि क्यों तुम्हें संघर्ष करना पड़ता है, इस तरहकी चेतनाको चाहे दुनिया पसन्द करे या न करे उसे प्राप्त करना होगा। संक्षेपमें मार्क्सने अपने नये पत्रके सामने प्रोग्राम रक्खा था : संघर्षों और आकांक्षाओंको अनुभव करनेमें युगको सहायता देना।

मार्क्स इस बातको अनुभव करने लगे थे, लेकिन रूगे अभी वहाँ नहीं पहुँचा था। मार्क्स वस्तुत: चालक थे और रूगे चालित, वर्षपत्रके निकालनेके समय यही बात साफ़ देखी गई। रूगे वैसे भी पैरिसमें पहुँचनेके बाद बीमार हो जानेसे सम्पादकीय कामोंमें अधिक भाग नहीं ले सका, और सारा काम मार्क्सके ऊपर पड़ा। रूगे वर्षपत्रके बारेमें उन बातोंको नहीं कर सका, जिन्हें उसने सोच रक्खा था, तो भी उसने प्रथम अंकसे असंतुष्ट होकर कहा "कुछ उल्लेखनीय बातें इसमें हैं जो जर्मनीमें सनसनी पैदा करेंगी।"

पैसोंके अभावके कारण वर्षपत्रको आगे निकालना सम्भव नहीं था। रूगे और मार्क्समें मतभेद हो जानेके समय पैसेकी बात आई। पैसोंके सम्बन्धमें मार्क्सकी सदा उपेक्षा रही, जबकि रूगे एक-एक पैसेके लिये मरता था। उसने मार्क्सके वेतनमें पैसेकी जगह वर्षपत्रकी कापियाँ देनी चाही, लेकिन मार्क्सको

उस व्यापारका कोई अनुभव नहीं था। मार्क्सने रूगेको व्यर्थ ही समझाना चाहा, कि पहलीही असफलतापर हथियार छोड़ बैठना नहीं चाहिये।

रूगेके अनुसार इस झगड़ेका तुरन्त कारण था हेरवर्गके बारेमे मार्क्सका विशेष पक्षपाती रूगे उसे बदमाश कहता था, जब कि मार्क्स उसे बड़ा होनहार समझते थे। रूगेके विचार आगे चलकर अधिक सत्य साबित हुये। तो भी इसका यह अर्थ नहीं, कि मार्क्स हेरवेगसे पूर्णतया प्रसन्न थे। कुछ भी हो, ज्यादातर पैसे और वर्षपत्रकी असफलताने रूगे और मार्क्सको सदाके लिये एक दूसरेसे अलग कर दिया।

२. दो लेख

मार्क्सने 'जर्मन-फ्रेंच वर्षपत्रमें' अपने दो लेख प्रकाशित किये थे, जिनमें एक था 'हेगेलीय विधान-दर्शनकी आलोचनाकी भूमिका' और दूसरा था यहूदी समस्यापर ब्रूनो बावर द्वारा प्रकाशित दो पुस्तकोंपर टिप्पणी। यह दोनो ही लेख मार्क्सके जीवनके उषाकालकी प्रगतिशील विचार-धारापर प्रकाश डालते हैं।

(१) वर्ग-संघर्षकी दार्शनिक रूपरेखा—मार्क्सके पहले लेखमे सर्वहारा वर्ग-सघर्षकी दार्शनिक रूपरेखा पेश की गई है, जब कि दूसरे लेखमे समाजवादी समाजकी दार्शनिक रूपरेखा दी गई है। मार्क्सने बतलाया, कि दर्शनका भौतिक हथियार सर्वहारा है, उसी तरहसे सर्वहाराका बौद्धिक हथियार दर्शन है—यहाँ दर्शनसे मार्क्सका मतलब है द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी दर्शन। जनसाधारणमें जब इस दर्शनकी गहरी जड़ जम जायेगी, तो जर्मनोकी मानवके रूपमें मुक्ति होगी। जर्मनोकी मुक्ति मनुष्यकी मुक्ति है। दर्शनकी अनुभूति सर्वहारा वर्गके समाप्त किये बिना नहीं हो सकती और सर्वहारा बिना दर्शनकी अनुभूतिके अपनेको समाप्त नहीं कर सकता। तरुण मार्क्सका यह लेख महत्त्वपूर्ण है, यद्यपि दर्शनपर उनका काफी जोर है, जिसका अर्थ है हेगेलका प्रभाव अभी पूरी तौरसे हटा नहीं है।

(२) यहूदी समस्या—जर्मन-फ्रेंच वर्षपत्रमें ब्रूनो बावरकी इस विषयकी दो पुस्तकोंके सम्बन्धमें यह लेख मार्क्सने लिखा, जिसमें इस समस्याको द्वन्द्वात्मक

दृष्टिसे देखनेकी कोशिश की गई है। मार्क्सने कहा, कि विशेष आर्थिक स्थितिमें पड़े रहनेके कारण यहूदी लोग सूदखोर और बनिये बननेके लिये मजबूर हुये। फ्रेडरिक महान्‌ने ईसाई बैंकरों (महाजनों) को प्राप्त सुविधायें पैसेवाले यहूदियोंको दीं, जिन्होंने पैसा पैदा कर उससे अपने मेहरबान राजाकी सहायता की। यहूदी बड़े खुश थे, जब नई रोशनीके लोगोंने ईसाई धर्मकी आलोचना करनी शुरू की, क्योंकि यहूदी हमेशा ईसा और उसके धर्मको अच्छी नजरसे नहीं देखते थे। विचारस्वातंत्र्यकी उनकी माँग केवल दूसरोंके लिये थी, जहाँ तक अपना सम्बन्ध था, वह यहूदी मनोवृत्तिको छोड़नेके लिये तैयार थे। लेकिन तरुण हेगेलियोने ईसाई धर्म तक ही अपनी आलोचनाको सीमित नहीं रक्खा। फ्वारबाखने यहूदी धर्मको अहंताका धर्म बतलाया—यहूदी अपनी खास विशेषताओंको आज तक कायम रखे हुये हैं। उनका सिद्धान्त, उनका ईश्वर संसारका व्यावहारिक सिद्धान्त है, अर्थात् धर्मके रूपमें अहंता। अहंता मनुष्यको अपने भीतर केन्द्रित रखती है, साथ ही वह उसके सैद्धान्तिक दृष्टिकोणको सीमित कर देती है, क्योंकि जो भी चीज उसके अपने हितसे सीधे सम्बन्ध नहीं रखती, उसके प्रति वह उदासीन रहता है। बावर यहूदी समस्याको केवल धर्म-विद्याके चश्मेसे देखना चाहता था। वह कहता था, कि इसाइयोंकी तरह ही अपने धर्मको बराबर यहूदी भी स्वतन्त्रता प्राप्त करते हैं। बावरकी रायमें यहूदियोंको पहले इसाइयत और हेगेलीय दर्शनका अध्ययन करना चाहिये, फिर स्वतन्त्र होनेकी बात सोचनी चाहियें। मार्क्स बावरके इस विश्लेषणको दोषपूर्ण समझते थे। उनका कहना था—यहूदियों, ईसाइयों या सभी धार्मिक मनुष्योंकी राजनीतिक मुक्तिका अर्थ है राज्यको यहूदी धर्म, ईसाई धर्म और सभी धर्मोंसे मुक्ति, राज्यके तौरपर वैयक्तिक सम्पत्तिका प्रतिषेध करना। उत्तरी अमेरिकाके राज्योंकी तरह जहाँ मतदानमें धनकी योग्यताको उठा दिया गया है—उसका यही अर्थ हो सकता है, कि राज्यने जन्म, सामाजिक स्थिति, शिक्षा और पेशेके भेदभावको छोड़, सार्वजनिक मताधिकार देकर वैयक्तिक सम्पत्ति आदिको हटा दिया है, लेकिन तो भी वह वैयक्तिक सम्पत्ति रखनेकी इजाजत देता है। शिक्षा और पेशेको भी उसने वैयक्तिक सम्पत्ति, वैयक्तिक शिक्षा और वैयक्तिक पेशेके तौरपर कायम

रक्खा है। इन भेदोंको हटानेकी बात तो अलग राज्यका अस्तित्व पहले हीसे इन्हें मान लेता है। बूर्ज्वा राज्यमें जिसे पूर्णतया विकसित राजनीतिक राज्य कहते हैं, उसका भी प्रभाव भौतिक जीवनमें विरोधके साथ मानवजातिके सामाजिक जीवन तक ही सीमित रहता है। राज्यके क्षेत्रसे बाहर अहंता भरे इस जीवनकी सारी बातें बूर्ज्वा-समाजके गुणोंके रूपमे बनी रहती हैं। राजनीतिक राज्यका सम्बन्ध अपनी कल्पनाओंके साथ—चाहे वह कल्पनायें (सिद्धान्त) भौतिक तत्त्वों सम्बन्धी हों, जैसे कि वैयक्तिक सम्पत्ति, अथवा विचारिक तत्त्वो सम्बन्धी जैसे कि धर्म वस्तुतः सार्वजनिक और वैयक्तिक हितोके बीचका विरोध ही है। अपने राज्यकी नागरिकताके साथ मनुष्य किसी खास धर्मके अनुयायी होनेके कारण एक विशेष सम्प्रदाय या धर्मके अनुयायीके तौरपर दूसरे आदमियोसे जो विरोध रखता है, वह राजनीतिक राज्य और बूर्ज्वा-समाजके बीचका भेद भर है। बूर्ज्वा-समाज आजकलके राज्यका आधार है, जैसे कि प्राचीन समाजका आधार तत्कालीन दास-प्रथा थी। आधुनिक राज्य अस्तित्वमे आनेके साथ मनुष्यके आम अधिकारोंकी घोषणा करता है, जिनके भोगनेके लिये यहूदियोको भी उतना ही अधिकार है, जितना दूसरोको। मनुष्यके आम अधिकारकी यह स्वीकृति अहंतापूर्ण बूर्ज्वा-व्यक्ति और बौद्धिक तथा भौतिक तत्वोंकी अबाध गतिको स्वीकार करता है। यही बौद्धिक और भौतिक तत्त्व समसामयिक बूर्ज्वा-समाजके साथ उसके जीवनके सार हैं। वह मनुष्यको धर्मसे मुक्त नहीं करते, बल्कि उसे धार्मिक स्वतन्त्रता प्रदान करते हैं; वह मानवको सम्पत्तिसे स्वतन्त्र नहीं करते, बल्कि सम्पत्ति रखनेकी स्वतन्त्रता प्रदान करते हैं। वह उसे व्यापारकी क्षुद्रतासे स्वतन्त्र नहीं करते, बल्कि उसे व्यापारकी स्वतन्त्रता देते हैं। राजनीतिक क्रान्तिने सामन्तवादी व्यवस्था, तथा सभी शिल्पी सघों, सभाओं, परिषदोंके—जो कि जनताके बिलगावके भिन्न भिन्न बाह्य रूप थे—पेवन्दोको नष्ट करके बूर्ज्वा समाजको पैदा किया।

मार्क्स उपसहारमें लिखता है—राजनीतिक मुक्तिका अर्थ है मानवको बूर्ज्वा-समाजके एक मेम्बरके रूपमें परिणत करना, उसे एक ओर अहंतापूर्ण स्वतन्त्र व्यक्ति तथा दूसरी ओर राज्यका नागरिक—एक नैतिक प्राणीके—रूपमें

परिणत करना। मानवता तभी पूर्णतया मुक्त हो सकेगी, जब कि वास्तविक, वैयक्तिक मानवके रूपमें राज्यका निराकार नागरिक बदल जायेगा और अपने प्रायोगिक जीवनमें वैयक्तिक मानव, अपने वैयक्तिक काम, अपनी वैयक्तिक स्थितियोंमें एक सामाजिक प्राणी बन जायेगा, जब कि मनुष्य सामाजिक शक्तिके तौरपर अपनी निजी शक्तियोंको स्वीकार और संगठित करेगा, जिसके कारण सामाजिक शक्तिको राजनीतिक शक्तिके रूपमें अपनेसे अलग नहीं रखेगा।

यहूदियोंके बारेमें मार्क्स पूछते हैं—यहूदी धर्मका धर्म-निरपेक्ष कौन सा आधार है? व्यावहारिक आवश्यकता, स्वार्थ। यहूदियोंका धर्म-निरपेक्ष कौन-सा सम्प्रदाय है? खरीदना और बेचना। उसका धर्म-निरपेक्ष कौन सा ईश्वर है? पैसा। इसके बाद मार्क्स कहते हैं—तो बहुत अच्छा—बेचने-खरीदनेसे पैसेसे मुक्ति अर्थात् व्यावहारिक, वास्तविक यहूदियतसे मुक्ति हमारे समयमें है यहूदियोंकी आत्म-मुक्ति। समाजका जो संगठन बेचने-खरीदनेकी आवश्यक स्थितियों अर्थात् बेचने-खरीदनेकी सम्भावनाको उठा देगा, वही यहूदीपनको असम्भव कर देगा। मार्क्सका यहूदियतके बारेमें विचार था, कि ऐतिहासिक विकार तथा स्वयं यहूदियोंके उत्साहपूर्ण सहयोगके कारण साधारण यहूदियतका सामयिक समाज-विरोधी तत्त्व आजकी ऊँचाई तक पहुँचा। इस ऊँचाईपर उसे अवश्य अपनेको समाप्त करना होगा। मार्क्सने अपने इस लेखमें बतलाया, कि आजकी धार्मिक समस्याएँ सामाजिक विशेष समस्यासे अधिक कुछ नहीं हैं। उन्होंने यहूदियतके विकासको धार्मिक कल्पनाओं और मतवादमें नहीं, बल्कि औद्योगिक और व्यापारिक क्षेत्रमें दिखलाया, जिसका विचित्र प्रतिबिम्ब यहूदी धर्ममें पाया जाता है। यद्यपि मार्क्सने इस लेखमें सामाजिक और व्यावहारिक कारणोंको बतलाकर नीचे उतरनेकी कोशिश की है, लेकिन अभी भी वह दार्शनिक क्षेत्रके सैर करनेसे बाज नहीं आये। मेरिंगके शब्दोंमें जर्मन-फ्रेंच वर्षपत्रमें मार्क्स अभी भी दार्शनिक खेतको जोत रहे हैं, लेकिन उनके हल्के-पैने फालसे जो हराई बनी है, उसका पहला अंकुर है इतिहासकी भौतिक धारणा, जो कि फ्रेंच सभ्यताके उष्ण सूर्यके नीचे जल्दी ही फूलने लगा।*

* Mehring, p. 73.

३ फ्रेञ्च सभ्यता

जर्मनी दर्शन विज्ञानवादी दर्शनकी भूमि समझी जाती थी क्योंकि उसने काट और हेगेल जैसे एकसे एक महान् दार्शनिक पैदा किये। उसी तरह फ्रांस सामाजिक क्रान्ति, समाजवाद और भौतिकवादी दर्शनकी भूमि समझा जाता था। मार्क्स और एगेल्सने हेगेलके दर्शनसे द्वन्द्वात्मकताको लिया और फ्रांससे भौतिकवाद और समाजवादको। इसलिये फ्रांसकी राजधानीमें पहुँचकर मार्क्सका और भी इस ओर ध्यान जाना स्वाभाविक था। महान् फ्रेंच-क्रान्तिने फ्रांसमें समाजवादकी स्थापना नहीं की, लेकिन तब भी उसने सामन्तवादको खतम कर उसकी जगह बूर्ज्वावाद या पूँजीवादकी स्थापना करके समाजवादके लिये सम्भावनायें जरूर पैदा कर दीं। विचार-क्षेत्रमें तो इस क्रान्तिने और भी जबर्दस्त प्रभाव डाला। जिस समय मार्क्स पेरिसमें पहुँचे, उस समय पूँजीवादी (बूर्ज्वा) सभ्यताकी अगुआ सचमुच ही पैरिस थी। यद्यपि १७८९ ई० में ही बूर्ज्वा-वर्ग अधिकारारूढ होने लगा था, लेकिन उसे पूर्ण सफलता १८३० ई० की जुलाईवाली क्रांतिमें हुई। अधिकार प्राप्त कर अब बूर्ज्वा-वर्ग आरामके साथ विश्राम ले रहा था। जब वहाँ बौद्धिक (विचारों)का संघर्ष अनवरत चल रहा था, उसी समय जर्मनीमें बौद्धिक मृत्युकी नीरवता दिखाई पड़ती थी। मार्क्सके बारेमें १८४४ ई० में रूगेने फ्वारबाखको सूचित किया था : वह बहुत भारी परिमाणमें ग्रंथोंको पढता घोर परिश्रम कर रहा है। मार्क्सने सचमुच ही अपने दूसरे कामोंको छोड़कर बार-बार किताबोंके अनन्त समुद्रमें डुबकी लेनी शुरू की थी। कभी-कभी तीन-तीन, चार-चार रात वह चारपाईका सहारा नहीं लेते और लगातार अध्ययन में लगे रहते। ऐसे समय उनके स्वभावमें चिड़चिड़ापन पाया जाना अचरजकी बात नही थी। हेगेलके दर्शनकी आलोचना मार्क्स लिखना चाहते थे, लेकिन फ्रेंच महाक्रांतिके ऐतिहासिक महत्वोंके भीतर जितना ही वह भीतर घुसते जाते थे, उतना ही उसकी ओरसे उनकी उपेक्षा होती गई। फ्रेंच क्रांतिके अध्ययनके बाद वह बूरबों-वंशकी पुनःस्थापना-सम्बन्धी साहित्यके ऊपर पड़े। फ्रांसके इतिहासको पीछेकी ओर ११ वीं शताब्दी तक पढ़नेके बाद उन्होंने देखा, कि

फ्रेंच इतिहास लगातार होते वर्ग-संघर्षोंका एक प्रवाह है। इसके बाद वर्गोंके आर्थिक ढाँचेका अध्ययन किया, जिसमें रिकार्दोंकी ओर उन्होंने विशेष तौरसे ध्यान दिया। आज कम्युनिस्टों मार्क्सवादियोंको वर्ग-संघर्षके सिद्धान्तका आरंभक माना जाता है, जिसका अर्थ है, कि यह मार्क्सका आविष्कार था। लेकिन, मार्क्सने इसका श्रेय लेनेसे हमेशा इन्कार किया। हाँ, मार्क्सने यह जरूर किया, कि वर्ग-संघर्षके लिये ऐतिहासिक प्रमाण जमा करके उसे अकाट्य बना दिया। मार्क्सने पता लगाया कि 'फ्रेंच तृतीय राज्य'ने १८ वीं शताब्दीमें शासक-वर्गके विरुद्ध जिस जबर्दस्त हथियारोंको सबसे ज्यादा इस्तेमाल किया; वह भौतिक-वादका दर्शन था। मार्क्सने पेरिसमें रहते समय इस दर्शनका विशेष तौरसे अध्ययन किया, हेलवेसियो, होलबाखने किस तरह भौतिकवादको सामाजिक जीवनके साथ जोड़ा और मानव बुद्धियोंकी स्वाभाविक समानता, बुद्धि और उद्योगकी प्रगतिके बीच अनिवार्य एकता, मानवताकी स्वाभाविक भले होने और शिक्षाकी सर्वशक्तिमत्ताका तत्व समझाया। मार्क्सने उनकी शिक्षाको वास्तविक मानवतावाद कहा, जैसाकि उन्होंने फ्वेरबाखके दर्शनके बारेमें कहा था। भेद इतना ही था, कि हेलवेसियो और होलबाखका भौतिकवाद साम्यवादका सामा-जिक आधार बन गया, जबकि फ्वेरबाखके दर्शनमें यह क्षमता नहीं थी।

पेरिसमें मार्क्सको साम्यवाद और समाजवादके अध्ययनके लिये सभी तरहके सुभीते प्राप्त थे। वहाँ एकसे एक प्रतिभाशाली पुरुष उस वक्त मौजूद थे, उसका वातावरण समाजवादके कीटाणुओंसे भरा हुआ था। लेकिन जो अनेक तरहके समाजवाद पेरिसमें लोगोंको अपनी ओर खींचते देखे जाते थे, उनमें सबसे बड़ा दोष यह था, कि वह अपनी सफलताके लिये सम्पत्तिवाले वर्गोंकी शुभेच्छा और अपनी युक्तिप्रवीणतापर विश्वास करते थे। वहाँके समाजवादी विचारक अपने सामाजिक सुधारों या क्रांतिकी सफलताके लिये शान्तिपूर्ण प्रचार द्वारा स्वामियों-को मनवा लेना भर पर्याप्त समझते थे। क्रांतिकर-करके भी सफलताका मुँह न देख अब वह वस्तुतः निराश से हो गये थे, और नहीं समझते थे, कि फिर उस तरहका कदम उठानेसे कुछ हाथ लगेगा। वह दुखोत्पीड़ित जनसाधारणकी सहायता करना चाहते थे, क्योंकि जनता अपने आप अपनेको उबारनेके लिये

कुछ करनेमें असमर्थ थी। १८३० ई० में कमकरोंके विद्रोहके असफल होनेसे उनके नेता सामाजिक क्रांतिके लिये कोई सफल साधन नहीं देख पा रहे थे।

लेकिन, मजूर-आन्दोलन और भी तेजीसे बढ़ता ही गया, कभी जर्मन कवि हाइनरिख हाइनेके शब्दोंमें : फ्रांसमें सम्मानके योग्य केवल कम्युनिस्ट ही एक दल है। मैं वही भाव सेंट-साइमनके अवशिष्ट अनुयायियों...या फूरियेवादयोंके बारेमें भी रखता हूँ।—फूरिये अब भी जीवित तथा सक्रिय है। लेकिन यह लोग केवल शब्दसेही प्रेरित होते हैं...यह परम विश्वात्मा द्वारा नियतिबद्ध गुलाम उसके विराट निर्णयोंको पूरा करनेवाले दास नहीं हैं। देर या जल्दीमे सेंट साइमनकी सारी बिखरी सेना और फूरियेवादियोंका सारा जेनरल-स्टाफ साम्य-वादकी बढ़ती हुई सेनाकी ओर चला जायगा। हाइनेने उसी साल इन पंक्तियों-को लिखा था, जिस साल कि मार्क्स पेरिसमें पहुँचे। राइनिशे जाइटुंग का सम्पादन करते समयही मार्क्स फ्रांसके दो प्रसिद्ध विचारकों लारू और प्रूधोसे परिचित थे, ये दोनों ही मजूरवर्गके आदमी थे। उसी वक्त मार्क्सने उनकी कृतियों को अच्छी तरह पढ़नेका निश्चय कर लिया था। दोनो लेखक इसलिये भी मार्क्स को अपनी ओर आकृष्ट करनेमें समर्थ हुये, क्योंकि वह जर्मन दर्शनको अपने उद्देश्योंके साथ सम्मिलित करना चाहते थे, यद्यपि उन्हें जर्मन भाषामेंही मौजूद उस दर्शनको पढ़नेमे बहुत कठिनाइयाँ थी। मार्क्सने हेगेलीय दर्शनका परिचय करानेके लिये प्रूधोंके साथ घंटो बिताये। कभी-कभी दोनों विचारमे एक-दूसरेके साथ हो जाते, लेकिन फिर जल्दी ही मतभेद हो जाता। प्रूधोके मरनेके बाद मार्क्सने स्वीकार किया, कि प्रूधोने मजूर-आन्दोलनको जबर्दस्त प्रेरणा दी, और उसके द्वारा स्वयं मार्क्सको भी उसने प्रभावित किया। प्रूधोंकी पहली कृतिको मार्क्सने आधुनिक सर्वहाराकी प्रथम वैज्ञानिक घोषणा (मेनिफेस्टो) बतलाया। मार्क्सने फ्रेंच-क्रांति और उसके पीछेकी विचारधाराका अध्ययन किया। फ्रेंच समाजवादका ऊहापोह किया, फिर उन्होने सर्वहाराका अध्ययन आरम्भ किया।

इस प्रकार फ्रेंच सभ्यताका अध्ययन मार्क्सने हल्के दिलसे नहीं, बल्कि बड़ी तत्परता, गम्भीरता के साथ सारी शक्ति लगाकर किया।

४ पेरिसके अन्तिम मास और निष्कासन

(१) प्रथम सन्तान—पैरिसमें रहते समय मार्क्स और जेनीकी पहली सन्तान पैदा हुई, जिसे अपने सम्बन्धियोंको दिखलाने वह जर्मनी गये। कोलोन-के पुराने मित्रोंका अब भी मार्क्सके साथ वैसा ही घनिष्ठ और सुन्दर सम्बन्ध था। उनके लिए एक हजार थालरोंके कारण मार्क्सको पेरिसमें निश्चिन्त रहकर अध्ययन करनेका बहुत सुभीता हुआ। हाइनरिख हाइनेसे मार्क्सका घनिष्ठ सम्बन्ध था। १८४४ ई० में मार्क्ससे जो प्रेरणा हुई, उससे प्रभावित हो कविने जर्मन निरंकुश शासकोंके व्यंगके रूपमें अपनी महत्वपूर्ण कृति हेमन्ती कहा-नियाँ, जुलाहोंको गीत लिखी। यद्यपि देर तक दोनों एक साथ नहीं रहे, लेकिन मार्क्स हमेशा हाइनेके समर्थक रहे। मार्क्सने स्वयं तरुणाईमें कवि बननेकी चेष्टा की थी, यद्यपि जल्दी ही अपने क्षेत्रसे बाहर समझकर उस प्रयासको छोड़ ही नहीं दिया, बल्कि अपनी उन रचनाओंको भी नष्ट होने दिया; लेकिन मार्क्सकी सहानुभूति आजन्म कवियोंके साथ रही। वह मानते थे, कि कवि एक विशेष प्रकारके मनुष्य हैं, जिन्हें साधारण मनुष्योंके गजसे नहीं नापना चाहिये। अगर हम उनसे गीत चाहते हैं उन्हें कड़ी आलोचनासे परास्त करना नहीं बल्कि उनकी चाटुकारिता करनी होगी। लेकिन जहाँ तक हाइनेका सम्बन्ध था, उसे मार्क्स कविसे और भी अधिक समझते थे। हाइने प्रतिभा-शाली कविके साथ-साथ योद्धा था; दीनों, दुखियों, सर्वहारोंके पक्षमें वह प्रभु-ओंसे लोहा लेनेके लिये तैयार था, ऐसे सोनेमें सुगन्धवाले कविके साथ मार्क्सकी घनिष्ठता क्यों न होती? १८३४ ई० में ही—जब कि मार्क्स अभी सोलह वर्षके विद्यार्थी थे—हाइनेने घोषित किया था, "हमारे शिष्ट (क्लासिकल) साहित्यमें जो स्वतंत्रताकी भावना व्याप्त है, वह हमारे विद्वानों, कवियों और साहित्यिक पुरुषोंमें उससे कहीं कम सक्रिय है, जितनी कि हमारे शिल्पियों और कमकरोंकी साधारण जनतामें। मार्क्स दस साल बाद जिस वक्त पेरिसमें थे, हाइनेने फिर कहा था: वर्तमान स्थितिके विरुद्ध संघर्ष करनेमें सर्वहारा प्रगति-शील आत्माओं, महान् दार्शनिकोंको अपने नेताके तौरपर पानेकी माँग कर

सकते हैं। मार्क्स और हाइनेको आपसमें घनिष्ठ बनानेके लिये कारण थे जर्मन दर्शन, फ्रेंच समाजवाद, और वह घृणा जो कि उस झूठे ट्यूटनवादके प्रति थी, जो कि जर्मन बेवकूफीके पुराने चोगेको उग्रवादी वाक्यों द्वारा नवीन बनाना चाहता था।

(२) फोरवेड्र्स—आरम्भमें रूसी सामन्ती वर्गका मिखाइल बकुनिन रूगेका कृपापत्र था। जब मार्क्स और रूगेमें मतभेद पैदा हुआ, तो उसने मार्क्सका पक्ष लिया। १८४४ ई० के नवम्बरसे फोरवेड्र्स के नामसे एक अर्ध-साप्ताहिक पत्र पेरिससे निकलने लगा था। "जर्मन फ्रेंच वर्षपत्र" के निकलने-का स्वागत "फोरवेड्र्स" ने गालियोंसे किया, इसीसे मालूम हो सकता है, कि उसकी नीति क्या थी। इस पत्रने प्रशियन सरकारके कृपापात्र बननेकी बड़ी कोशिश की, लेकिन अपने अन्धेपनके कारण सरकारने पत्रकी बिक्री देशमे निषिद्ध कर दी थी। पत्रको भी रुख बदलना पड़ा। बेर्नेज नामके एक तरुण लेखकने अपना एक गर्मागर्म लेख भेजा। इसका इतना स्वागत हुआ, कि कुछ समय बाद बेर्नेज सम्पादक बना दिया गया। इसी पत्रमें एक प्रशियन के नामसे रूगेने प्रशियन सरकार के खिलाफ शराबी राजा और लँगड़ी रानी जैसे शब्दोंका उपयोग करते कई कड़े लेख लिखे। रूगे प्रशियन नहीं था, वह ड्रेस्डेन नगर परिषद्का एक सदस्य था, और बवेरियावासी बेर्नेज—राइन-लैंड-वेस्टफालियासे आया था। दूसरा लेखक बोर्नस्टाइन हम्बर्गका था। ऐसी परि स्थितिमें फोरवेड्र्स के इस लेखके लेखक मार्क्स ही समझे जा सकते थे। रूगेका सम्बन्ध मार्क्ससे कितना खराब हो गया था, यह उसके मार्क्सके प्रति इस्तेमाल किये पूरी तौरसे दुष्ट, ढीठ यहूदी जैसे शब्दोंसे ही मालूम होगा। दो साल बाद उसने प्रशियाके गृह-मन्त्रीके पास क्षमा-प्रार्थना करते हुये पेरिसके अपने निर्वासित साथियोंके का भेद खोलकर विश्वासघात किया था, इसीलिये बिल्कुल सम्भव है, कि रूगेने जान-बूझकर लेखको मार्क्सको बदनाम करनेके लिये प्रशियन के नामसे छपवाया हो।

(३) सर्वहाराका पक्षपात—१८४४ ई० में सिलेसियाके बुनकरोंने विद्रोह कर दिया। मार्क्स सर्वहाराको ही क्रांतिका असली वाहक समझते

थे, इसलिये वह सर्वहाराकेकिसी संघर्षको महत्त्व दिये बिना नहीं रह सकते थे। लेकिन, रूगे कोई महत्त्व नहीं देता था। उसका कहना था: इसमें कोई राजनीतिक आत्मा नहीं है, और बिना राजनीतिक आत्माके कोई सामाजिक क्रांति सम्भव नहीं है। मार्क्सने बतलाया कि बूर्ज्वा और सर्वहाराकी मुक्तिमें गहरा भेद है। बूर्ज्वा-मुक्ति सामाजिक कल्याणकी भावनासे उत्पन्न होती है, जब कि सर्वहाराकी मुक्ति सामाजिक वेदनाओंके कारण पैदा होती है। बूर्ज्वा-क्रांति राजनीतिक राज्य और कामनवेल्थ (समान राज) से अलग रहकर होती है, जब कि सर्वहारा क्रांति मानवता और मानवताके वास्तविक कामनवेल्थ (समान राज्य) से बिलगावके कारण होती है। मानवतासे बिलगाव उससे कहीं अधिक गहरा, कहीं अधिक असह्य, कहीं अधिक भयंकर और कहीं अधिक सहज विरोधी है, जितना कि राजनीतिक कामनवेल्थ से बिलगाव, और इसीलिये इस बिलगावको खतम करने की भावना चाहे आंशिक रूपसे ही क्यों न हो, सिलेसियाके बुनकरोंके बिद्रोह में है, अतएव वह कहीं अधिक जबर्दस्त घटना है। इस प्रकार रूगेसे मार्क्सके दृष्टिकोणका भेद होना स्वाभाविक है। मार्क्सके शब्दोंमें: बुनकरोंके केवल गीतको ले लो। कैसे विलक्षण, जबर्दस्त, निष्ठुर और शक्तिशाली तरीकेसे सर्वहारा वैयक्तिक सम्पत्तिवाले समाजके प्रति अपने विरोधके नारेको पेश करता है। सिलेसीय विद्रोह वहाँ आरम्भ होता है, जहाँ फ्रेंच और अंग्रेज विद्रोह (क्रांतियाँ) खतम हुईं; वहींसे एक वर्गके तौरपर सर्वहारा-चेतनाके साथ सिलेसियाके बुनकरोंका विद्रोह आरम्भ होता है। इसकी सारी कार्रवाई इस विशेषताको रखती है। इन विद्रोहियोंने केवल मशीनों और कमकरोंके प्रतिद्वन्द्वियोंको ही नहीं नष्ट किया, बल्कि व्यापारियोंके बहीखातों और उनके सम्पत्तिके दस्तावेजोंको भी नष्ट कर दिया। कमसे कम आरम्भमें सभी दूसरे आन्दोलन केवल उद्योगपतियों, दिखाई देनेवाले शत्रुओंके विरुद्ध हुये, लेकिन यह आन्दोलन अदृश्य शत्रु बैंकरोंके विरुद्ध भी है। अन्ततः सबसे बड़ी बात यह है, कि कोई भी अंग्रेजी विद्रोह इतनी हिम्मत, इतनी दृढ़ता और इतनी लगनके साथ नहीं किया गया था।

इसी सम्बन्धमें मार्क्सने वाइटलिंगके चमत्कारपूर्ण लेखोंका भी जिक्र किया,

जो कि अपने सैद्धान्तिक विचारोंमें प्रूधोंसे भी बढ़-चढ़कर था, यद्यापि जहाँ तक क्रियाका सम्बन्ध है, वह उससे पीछे रहा। मार्क्सने कहा : अपने दार्शनिको और लेखकोको लेते क्या बूर्ज्वाजी अपनी मुक्ति, राजनीतिक मुक्तिके सम्बन्धमें कोई ऐसी कृति पेश कर सकती है, जिसकी तुलना वाइटलिंगके हारमनी (स्वरसता) और स्वतंत्रताकी गारंटियों से की जा सके ? इस जर्मन कमकरकी सराहना करते हुये मार्क्सने बतलाया, कि इसके सामने दूसरा जर्मन राजनीतिक साहित्य बिल्कुल दरिद्र सा मालूम होता है, और यह भी, कि युरोपीय सर्वहारोंमें जर्मन सर्वहारा उसी तरह सिद्धान्तवादी है, जैसे कि अंग्रेज सर्वहारा अर्थशास्त्री और फ्रेंच सर्वहारा राजनीतिज्ञ। मार्क्सका सिलेसियाके बुनकरोंके विद्रोहका मूल्यांकन अति रंजित कहा जा सकता है, लेकिन इसमें तो शक नहीं, कि वह उस शक्ति-स्रोतको पकड़नेमे समर्थ हुये थे, जो कि अन्तमें वास्तविक सामाजिक क्रांति करके समाजवादकी स्थापना करनेमें समर्थ होगा। समाजवादी दिमाग और सर्वहाराके शस्त्रबलपर हुई रूसी क्रांतिने इसी बातको प्रमाणित किया।

पेरिसमें "न्यायी संघ" (लीग आफ दी जस्ट) के नामसे कुछ कमकरोंने अपना एक संघ स्थापित किया था, जो कि १८३० ई० के बादवाले सालोंमें उनके १८३६ ई० में अन्तिम पराजयके बाद फ्रांसीसी गुप्त सभाओंसे पैदा हुआ था। संगठनके लिये यह पराजय अच्छी साबित हुई, क्योंकि उसके बाद संघके मेम्बर अपने विचारोंके लिये पेरिस ही नही इंगलैंड और स्वीट्जलैंडके दूसरे केन्द्रोंमें बिखर गये, जहाँ पर उन्होने अपनी शाखायें कायम कीं। पैरिसके संगठनका नेता डन्जिग-निवासी हेरमान इवेरबेक था। वह कैबेतके उटोपियन सिद्धान्तोंके जालमे फँसा था, जिनका उसने जर्मन भाषामें अनुवाद भी किया था। वाइटलिंग स्वीट्जलैंडमें आन्दोलनका नेता था और वह इवेरबेकसे बुद्धि-में कहीं बढ़-चढ़कर था। लीगकी लन्दन-शाखाके नेता थे घड़ीसाज जोजेफ मोल, मोची हाइनरिख बावर और भूतपूर्व जंगलातका विद्यार्थी कार्ल शापर, जो कि लन्दनमें प्रेसमें कम्पोजीटर और कभी भाषाओंका शिक्षक रहकर अपनी जीविका चलाता था। मार्क्सने इन तीनों "वास्तविक मनुष्यों" के बारेमें एंगेल्ससे सुना, जब कि इंगलैंड जाते समय सितम्बर १८४४ मे पेरिसमें वह मार्क्ससे मिले,

और उन तीनोंका जिक्र बड़े आदरसे किया। उस बार एंगेल्स दस दिन तक पैरिसमें रहे, और उन्होंने अपना सारा समय मार्क्सके साथ बिताया। दोनोंने अपनी समान विचारधारा पर बहुत देर तक विचार किया और विचारोंमें दूर तककी एकता स्थापित करनेमें सफल हुये। इसी समय उनका पुराना मित्र ब्रूनो बावरने मार्क्स और एंगेल्सके नये विचारोंका जबर्दस्त समालोचक बन उस पर एक पुस्तिका प्रकाशित की। इसी समय पता लगने पर दोनोंने जवाब देनेका निश्चय किया। एंगेल्सने तुरन्त बैठकर उसके बारेमें लिख डाला। मार्क्सने उस काममें हाथ लगा, अपने स्वभावसे मजबूर होकर और गहराईमें गये बिना नहीं रह सकते थे, इसलिये कई महीना लगाकर उन्होंने तीन सौ पृष्ठोंका एक ग्रंथ लिख डाला, जिसकी समाप्ति जनवरी १८४५ ई० में हुई, और उसीके साथ मार्क्सका पेरिसका निवास भी समाप्त हो गया।

फोरबेड्र्ससे रुष्ट होकर बर्लिनकी सरकारने फ्रांसकी सरकारसे पत्रको दबानेके लिये कहा, लेकिन मंत्री गुइज़ो उसे माननेके लिये तैयार नहीं था। प्रशियन निरंकुशता अक्खड़ और असंस्कृत थी, जब कि फ्रांसके बूर्ज्वा-शासक काफी सभ्य और संस्कृत थे, इसलिये गुइजोने बर्लिनको संतुष्ट करनेके लिये ऐसा कोई कदम उठाना पसन्द नहीं किया। लेकिन, जब मैयरं श्चेख़ने तत्कालीन प्रशियन राजा फ्रेडरिक विलियम चतुर्थके ऊपर जुलाई १८४४ ई० में हत्याके उद्देश्यसे हमला किया, जिसके लिये स्टोरकौके मेयेर हाइनरिख लुडविग श्चेख़को उसी साल फाँसी पर चढ़ाया गया, तो जर्मन निर्वासितोंकी कार्रवाइयाँ उपेक्षापूर्वक नहीं देखी जा सकती थीं। गुइजोके मंत्रिमंडलने निश्चय किया, कि "फोरवेड्र्स" के खिलाफ दो कामोंके लिये कार्रवाई की जाय : जिम्मेवार सम्पादक पर पर्याप्त पैसा अधिकारियोंके पास न जमा करनेके और राजाकी हत्याके लिये भड़कानेके अपराधमें मुकदमा चलाया जाय।

बेर्नेजको ज़मानत न जमा करनेके लिये दो महीनेकी सजा और २०० फ्रांकका जुरमाना हुआ, लेकिन तुरन्त ही "फोरवेड्र्स" ने घोषित कर दिया, कि भविष्यमें अब वह पत्र मासिक निकला करेगा। अब उस पर जमानतका कानून लागू नहीं हो सकता था। बर्लिन फिर भी पेरिस पर दबाव डालती रही और

अन्तमें गुइजोको उक्त पत्रके सम्पादकों और लेखकोंको फ्रांससे निष्कासित करने-की बात माननी पड़ी। एंगेल्सने जेनी मार्क्सकी अर्थीके समय जो भाषण दिया था, उसमें बतलाया था, कि गुइजोने अलेक्जेंडर फान हमबोल्टकी बातमें पड़कर ऐसा किया था, जिसका कि ब्याह द्वारा प्रशियाके वैदेशिक मन्त्रीके साथ सम्बन्ध था। बर्लिन सरकार हाइनेसे खास तौरसे नाराज हुई थी, क्योंकि कविने प्रशिया-की स्थिति पर खास करके उसके राजाके ऊपर बहुत कड़े ग्यारह व्यंगपूर्ण लेख लिखे थे। हाइने सारे युरोपमें प्रसिद्ध कवि था। फ्रेंच लोग भी उसे करीब-करीब एक राष्ट्रीय कविके तौर पर मानते थे। ऐसे आदमीके साथ गुइजो—जो कि स्वयं भी साहित्यमें दखल रखता था—बर्लिनके आदेशके अनुसार बर्ताव नहीं कर सकता था, इसलिये कवि पत्रके सम्पादकीय विभागका सदस्य नहीं है, यह कहकर उसने छुट्टी ले ली।

हाइनेको यद्यपि छुट्टी मिल गई। ११ जनवरी १८४५ को "फोरवेर्ट्स" से सम्बन्ध रखनेके सन्देहमें कितने ही निर्वासितोको देश निष्कासनका हुक्म मिला, जिनमें मार्क्स, रूगे, बकुनिन, बोर्नस्टाइन और बेर्नेज भी थे। बोर्नस्टाइनने "फोरवेर्ट्स" के प्रकाशनको बन्द कर देनेका वचन देकर छुट्टी ले ली। रूगे अपनेको राजभक्त साबित करनेकी कोशिश करता रहा। मार्क्स ऐसा कुछ भी करनेके लिये तैयार नहीं था, क्योंकि समाजवाद, सर्वहाराकी मुक्ति और सामा-जिक क्रांतिकी सेवाका संकल्प उन्होंने हलके दिलसे नहीं किया था। इस प्रकार एक सालसे कुछ अधिक पेरिसमें रहनेके बाद मार्क्सने ब्रुसेल्स जानेकी तैयारी की। यह अवसर मार्क्सके लिये और समाजवादके लिये बड़ा महत्वपूर्ण साबित हुआ। इससे उनके अनुभव और ज्ञानकी बड़ी वृद्धि हुई। इस समयका उन्होंने पूरा उपयोग किया, इसमें शक नहीं। साथ ही उन्होंने इसी समय अपने कितने ही आजन्म साथियोंको प्राप्त करनेमें भी सफलता पाई।

अध्याय ६

फ्रीडरिख़ एंगेल्स

मार्क्स और एंगेल्सका पारस्परिक सम्बन्ध—वैयक्तिक और क्रांतिकारी जीवन-दोनों का ही—असाधारण था। एंगेल्स मार्क्ससे दो वर्ष बाद २८ नवम्बर १८२० को जर्मनीके बर्मेन शहरमें पैदा हुये थे, लेकिन वह जमल भाईसे भी बढ़कर थे। विचारोंमें, भावोंमें और पारस्परिक स्नेहमें इतना मेल और एकता दुनियामें शायद ह. कभी दिखाई पड़ता हो। मार्क्सकी सारी जीवनीमें एंगेल्स साथ-साथ आते हैं। यहाँ एंगेल्सके अब तकके जीवनके बारेमें हम कुछ कह देना चाहते हैं।

१. बाल्य शिक्षा—एंगेल्सका पिता धनी और एक कारखानेका मालिक था, इसलिये मार्क्ससे भी अच्छी हालतमें बाल्य-जीवनके बितानेके लिये वहाँ सारे साधन मौजूद थे। मार्क्सके पिताकी तरह उदार विचारोंके वातावरणमें पलनेका एंगेल्सको मौका नहीं मिला, इसलिये धार्मिक संस्कारोंसे अपनेको मुक्त करनेमें एंगेल्सको काफी मेहनत करनी पड़ी। साधारण पढ़ाईके बाद एंगेल्स एल्बरफेल्टके कालेजमें दाखिल हुए, जहाँ एक वर्ष रहकर अपनी पढ़ाई खतम करके वह पिताके कारबारमें शामिल हो गये। बहुत वर्षों तक लगे रहे, लेकिन उसमें उनका मन लग नहीं सकता था, क्योंकि वह सर्वहाराके मुक्तिका रास्ता ढूँढ़ रहे थे। एंगेल्सके १८ वर्षकी उमरमें लिखे पत्रसे मालूम होता है, कि वह शराबको पसन्द करते थे और शराबका प्रेम उनका आजीवन रहा, यद्यपि वह हाईनेकी तरह पीकर बदमस्त हो गाने नहीं लगते थे।

मार्क्सकी तरह एंगेल्सने भी तरुणाईमें कविता-सरस्वतीकी आराधना शुरू की, लेकिन अपने ज्येष्ठ साथीकी तरह उन्हें भी जल्दी ही मालूम हो गया, कि वह अधिकारसे बाहरकी चीज है। जर्मन महाकवि गोथेकी तरह तरुण कवियों की 'सलाहको' एंगेल्सने पसन्द किया, जिसकी अन्तिम पंक्तियाँ थीं:

तरुण लिखनीचन्द, ध्यान दो उन क्षणोंमें,
जब हृदय और आत्मा दोनों हर्षोत्फुल्ल हैं,
कि सरस्वती हो सकता है तुम्हारे साथ जाये,
लेकिन वह कभी तुम्हारी पथ-प्रदर्शिका नहीं होगी।

एंगेल्सने गोथेकी सीख भविष्यके लिये मन मान ली, लेकिन अपनी एक कविताको प्रकाशित किये बिना नहीं रहे, क्योंकि दूसरे पट्ठे, जो कि मुझ जैसे या अधिक बड़े गदहे (ऐसा करते) हैं इस तरह मैं जर्मन साहित्यके तलको न उठा सकता हूँ, न गिरा सकता हूँ। फिर अपनी कविताको प्रकाशित करनेमें क्या हर्ज? एंगेल्सने खिस्तान पुराण के नामसे चार सर्गोंमें अपनी कविताको उसी समय प्रकाशित किया था, जिस समय कि ब्रूनों बावरको प्रोफेसरीसे निकाला गया। यह व्यंगपूर्ण खंड काव्य खिस्तान पुराण जूरिचके पास नो मुन्स्टर (स्वीट्जलैंड) में प्रकाशित किया गया। इसकी कुछ पक्तियोंमें एंगेल्सने अपने और मार्क्सके बारेमें भी लिखा है। उस समय तक अभी मार्क्सके साथ एंगेल्सका साक्षात परिचय नहीं हुआ था :

किन्तु जो लम्बी टाँगवाला बायें बहुत दूर तक नाचता है,
वह ओसवाल्ड है जिसकी कोट मटमैली और बीचस् काली मिर्चके रंगकी है,
मिर्च बाहर और मिर्च भीतर घोटनाटवाला ओसवाल्ड।
खोपड़ीसे एडी तक पूरा अत्यंत उग्रवादी,
वह एक हथियार छोड़ता है, जो गिलोटिन है,
और उसके तारों पर वह कवाटीन गाता।
सदा नारकीय गीत बजाता, रुककर चिल्लाता
बनाओ तुम बटालियन।
कौन बेपर्वा हो अपने रास्तेपर आक्रमण करता है?
ट्रीरका एक काली भौंवाला, एक पक्का टट्टू,
जो न चलता न फुदकता, बल्कि ऐड़ी लगानेपर कूदता है,
और अपने हाथोंको हवामें ऊपर तानता है,
मानों उसका गुस्सा तुरंत पकड़ लेगा,

स्वर्गके प्रतापी खेमेको और उसे धरतीपर फाड़ फेंकेगा
मुट्ठी बाँधे भयदायक मुक्केसे वह बिना रुके धमकाता है,
मानों दस हजार शैतान उसकी छातीपर नाच रहे हों।

१० जनवरी १८३६ के एक पत्रसे मालूम होता है, कि १६ वर्षकी उमरमें अब यह प्रतिभाशाली तरुण "तरुण जर्मनी" के उथले साहित्यसे ऊब गया था। उसने उस समयके फैशनेबल कवियों और साहित्यकारोंका मजाक उड़ाते हुये कहा था : यह पट्ठा थ्योडोर मुंडट सुन्दरी तेगलियोंनके बारेमें कूड़ा-करकट काफी परिमाणमें लिपिबद्धकर रहा है, जो कि गोथेकी कविताकी व्याख्याके रूपमें नृत्य करती है। वह अपनेको गोथे, हाइने, राहेल और स्टीगलिट्जसे उधार लिये हुये सूक्ष्म पद्योंसे अलंकृत करता है। बुटिनाके बारेमें बड़ी कीमती मूर्खताओंको लिखता है। और हाइनरिख लौबे। यह पट्ठा एकके बाद एक अविद्यमान पात्र और ऐसी यात्राकी कहानियाँ लिखता है जो कि यात्रा-कहानियाँ नहीं हैं, मूर्खता के ऊपर मूर्खताको बिलोता जा रहा है। यह भयंकर है।

बर्मीन धर्मभीरुताका गढ़ है, इसलिये एंगेल्सको उसके फन्देसे निकलनेमें काफी मेहनत करनी पड़ी, जैसा कि तरुण एंगेल्सके एक पत्रके निम्न उद्धरणोंसे मालूम होता है : मैं प्रतिदिन, बल्कि प्रतिदिन, बल्कि प्रायः सारे दिनभर सत्यके लिये प्रार्थना करता हूँ, और यह तबसे बराबर करता आ रहा हूँ, जबसे कि मेरे भीतर सन्देह उत्पन्न होने लगा, लेकिन तब भी भगवान मैं तुम्हारे विश्वासकी ओर लौट नहीं सकता।.. इन पंक्तियोंके लिखते समय आँसू निकल रहे हैं। मेरे हृदयमें गहरा मन्थन हो रहा है, लेकिन मैं अनुभव करता हूँ, कि मैं खोया नहीं गया हूँ। मैं जरूर उस भगवानका रास्ता पाऊँगा, जिसको कि मैं अपने सम्पूर्ण हृदयसे चाहता हूँ।

एंगेल्सके मनमें जब इस तरहके संघर्ष चल रहे थे, उसी समय अपने सन्देहोंको दूर करनेके लिये वह धार्मिक नेताओंकी पुस्तकोंको पढ़ने लगे, जिससे वह डेविड स्ट्रॉसके विचारों तक पहुँचे। स्ट्रासने जरूर प्रभाव डाला। दलदलसे निकलनेकी पहली सूचना उनके एक पत्रसे मिलती है : "मैं अब हेगेलीय होने

वाला हूँ। मुझे नहीं मालूम, मै वह हो सकूँगा यह नहीं, लेकिन स्ट्रॉसने मेरे लिये हेगेलपर प्रकाश डाला है। वह बहुत युक्तियुक्त मालूम होता है। पट्ठेका इतिहास-दर्शन जो भी हो, मुझे वह बिलकुल अपने हृदयके अनुकूल मालूम होता है।"

इस प्रकार स्ट्रॉसने एगेल्सको धार्मिक नास्तिकतामें लाकर छोड़ दिया, लेकिन फिर एगेल्सको राजनीतिक नास्तिकतामें घुसनेमे देर नहीं हुई। वह राजतंत्र और प्रशियाके राजाके सम्बन्धमें भी नास्तिक हो चले, जैसा कि उन्होंने प्रशियाके राजाकी प्रशसा करते हुये किसीको सुनकर कहा था : "मै केवल उसी राजासे कुछ भली चीज की आशा रखता हूँ, जिसका दिमाग अपनी जनताके घूसेसे घायल हो गया और जिसके महलके जंगले क्रातिके पत्थरोंसे भर भहराकर गिर रहे हैं।"

अक्तूबर १८४१ से अक्तूबर १८४२ तक एक साल मे एंगेल्स बर्लिनमें तोपखानेमें सैनिक सेवा करते कुप्फरग्रावेनकी बारिकोमे रहते थे, जो उस घरसे नातिदूर था, जिसमे कभी हेगेल रहता और वह अन्तमे मरा। वहाँसे कितनी ही बार एगेल्सने "ड्वाशे या रबुखेर" (जर्मन वर्षपत्र) और "राइनिशे जाइटुन्ग" में लेख भेजे। फौजी वर्दीमें वह खुलकर अपना नाम कैसे दे सकते थे ! इसलिये यह लेख फ्रीडरिख ओसवाल्डके नाम से छपे थे। ६ दिसम्बर १८४२ को एगेल्सकी कड़ी आलोचनाके पात्र एक लेखकके साथ सहानुभूति दिखलाते हुये गुजकोफने लिखा था : "फ्र० ओसवाल्डको साहित्यक्षेत्रमें प्रवेश करनेकी कुसेवाकी जिम्मेवारी दुर्भाग्यसे मेरे ऊपर है। सालों गुजरे, जबकि एगेल्स नामक एक तरुण व्यापारीने ब्रेमेनसे वुप्पेर्ल्टलकी स्थितिके बारेमे पत्र भेजे थे। मैंने उसको शुद्ध किया, बहुत ज्यादा भड़कानेवाली पंक्तियोंको काटकर उसे छाप दिया। इसके बाद उसने और भी मामूली चीजे भेजीं, जिन्हें मुझे सदा फिरसे लिखना पड़ता। फिर एकाएक उसने संशोधन करनेसे मना कर दिया। हेगेलको पढ़ने और दूसरे पत्रोंमें अपने लेख भेजने लगा। तुम्हारी आलोचना जब निकली, उससे थोड़े ही पहले मैंने बर्लिनमें उसके पास पन्द्रह थालर (पौंड) भेजे थे। हमेशा इन जवान पट्ठोंका ढंग है : सोचने और

लिखनेको सीखना हमारी मददसे फिर उनका पहला स्वतंत्र काम होता है बौद्धिक पितृहत्या। निश्चय ही, वह बुराई इतना अधिक नहीं फूल-फल सकती थी, यदि राइनिश जाइटुंग और रूगेका पत्र उसके लिये न होते।"

एंगेल्स आफिसमें व्यापार के सम्बन्धमें एक योग्य कर्मी थे, और बैरकमें भी वह एक योग्य सैनिक रहे। उस दिनसे अपने जीवनके अन्त तक सैनिक विज्ञान का अध्ययन एंगेल्सका दिलचस्प विषय था। बर्लिनके सैनिक सेवावाले समयमें एंगेल्सका सम्बन्ध "स्वतंत्र मानवों" से हुआ। अभी स्वतंत्र मानव उतने ज्यादा कुढ़मग्ज नहीं बने थे। उनके विवादोंमें एंगेल्सने भी एक दो लेख लिखे थे। अप्रैल १८४२ में (२२ वर्षकी उमरमें) एंगेल्सकी एक ५५ पृष्ठोंकी पुस्तिका "लाइपजिग" में लेखकके नामके बिना प्रकाशित हुई, जिसका नाम था, "शेलिंग और भगवद्-ज्ञान"। कवि शेलिंगको बुढ़ापेमें पैगम्बर बननेका शौक चर्राया था, और उसे भगवान्‌की ओरसे प्रेरणा तथा ज्ञान मिलने लगा था। शेलिंगने स्वतंत्र दर्शनपर आक्षेप करते हुये पुरानी बातोंका समर्थन करना शुरू किया था। वह चाहता था, कि बर्लिनमें युनिवर्सिटीसे हेगेलीय दर्शन हटे और उसकी जगह मेरे सम्बन्धी विश्वासोंको पढ़ाया जाय। एंगेल्सकी पुस्तिकाको रूगेने बकुनिनकी समझा था और उसने होनहार तरुणकी प्रशंसा भी की थी। इसी समय ब्रूनो बावरको प्रोफेसरीसे हटाया गया, जिसपर एंगेल्सने "खस्तान पुराण" के नामसे चार सर्गका खंड-काव्य लिखा, जिसके बारेमें हम पहले बतला चुके हैं।

सालभरकी सैनिक सेवा खतम हो जानेके बाद १८४२ के सितम्बरके अन्त में एंगेल्स अपने घर लौटे, लेकिन दो महीनेके बाद ही वह इंगलैंडके लिये रवाना गये, हो एरमेन और एंगेल्स नामक कताई मिलमें क्लर्कका काम करने लगे— इस मिलमें उनके पिता भागीदार थे और पिताके कारबारको सँभालनेका यह आरम्भ था। १८४२ ई० में इसी यात्राके समय वह कोलोनमें जाकर पहले पहल मार्क्सके साक्षात सम्पर्कमें आये। वैसे "राइनिश जाइटुंग" में उनके लेख पहले निकले थे। मार्क्स कठोर यथार्थवादी दिमागके पुरुष थे। वह सहसा किसी की लम्बी-चौड़ी बातोंमें नहीं आते थे, विशेषकर मध्यवर्गके ऊपर उनकी

आस्था बहुत कम थी। इसीलिये इस पहली मुलाकातमें मार्क्सने भावी सारे जन्मके साथी के साथ उत्साह नहीं दिखलाया। मार्क्स अब "स्वतंत्र मानवों" से ऊब चुके थे और उनसे सम्बन्धविच्छेद करने वाले थे और बावर-बन्धुओंके पत्रोंके कारण एंगेल्सके प्रति अच्छे भाव नहीं रखते थे।

२ इंगलैंडमे

इगलैंडमें २२ वर्षके तरुण एंगेल्सने पहली बार २१ मास बिताये। इस प्रवासका एंगेल्सके जीवन और विचारोपर वैसा ही प्रभाव पड़ा, जैसा कि मार्क्स-पर पेरिसके निवासका। पेरिस यदि भौतिकवादी दर्शन और फ्रेंच-क्रातिकी भूमि थी, तो इगलैंडने भी जबर्दस्त औद्योगिक क्राति की थी, जिसके कारण बूर्ज्वा-वर्गके आरम और विकासका वहाँ अच्छी तरह अध्ययन किया जा सकता था। इगलैंडने औद्योगिक-क्राति फ्रेंच-क्रातिसे एक शताब्दी पहलेकी थी, जिसके कारण उसे समाजकी अल्प-विकसित अवस्थामें ही अपनी क्राति करनी पड़ी थी। यदि अधिक विकसित स्थितियोंमें क्रामवेलके नेतृत्वमें सामतवादी व्यवस्थापर प्रहार हुआ होता, तो शायद यहाँ भी सामन्तवादके अवशेष न रह जाते। समय से पहले होने के कारण इगलैंडके बूर्ज्वा-वर्गने सामन्तो और उनके मुखिया-राजासे समझौता किया था। अंग्रेज मध्यमवर्गको राजा और सामन्तोसे उतना तीव्र और लम्बा संघर्ष नहीं करना पडा जैसा कि फ्रासमे "तृतीय राज्य" को करना पडा। "तृतीय राज्य" का संघर्ष वर्ग-संघर्ष था—यह फ्रेंच ऐतिहासिको को बहुत पीछे पता लगा, लेकिन इंगलैंडमें वर्ग-संघर्षके विचारोका ख्याल तब हुआ, जब कि सर्वहाराने १८३२ ई० के सुधारविधेयक (बिल) के समय शासकवर्ग से संघर्ष छेड़ा।

एंगेल्सने अब हेगेलीय दर्शन और द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी दृष्टिकोणके अध्ययन के बाद इस स्थितिमे थे, कि इंगलैंडकी औद्योगिक-क्रान्तिके इति-हासके भीतर छिपे तत्वोको समझ सकते। इंगलैंड और फ्रान्समें से एकमें गगा-जमुनी सामन्तवादी-पूँजीवादी ढाँचा रहना और दूसरेमें सामन्तवादी प्रभावसे मुक्त शुद्ध पूँजीवादी व्यवस्थाका कायम होना अवश्य किन्हीं कारणों

से था। इसका एक कारण यह था, कि इंगलैंडमें बड़े पैमानेके उद्योगका विस्तार उससे कहीं अधिक गहराईके साथ हुआ था, जितना कि फ्रान्समें। अपने उद्योगका विकास करते समय इंगलैंडने पुराने वर्गों—सामन्तों-जमींदारों—को नष्ट करके उनकी जगह नये वर्ग की सृष्टि की। आधुनिक बूर्ज्वा-समाजका भीतरी ढाँचा जितना इंगलैंडमें स्पष्ट दिखाई देता था, उतना फ्रांसमें नहीं। एंगेल्सने इंगलैंडके उद्योगके स्वरूप और इतिहासका अध्ययन करते हुये जाना, कि आर्थिक तथ्य ही वहाँ निर्णायक ऐतिहासिक शक्ति थे, जिनके आधारपर वर्त्तमान वर्ग विद्वेष विकसित हुआ। बड़े पैमानेके उद्योगके विकासके कारण राजनीतिक दलों और राजनीतिक संघर्षोंका विकास हुआ, इस प्रकार आर्थिक तथ्य ही इंगलैंडके सारे राजनीतिक इतिहासके आधार ठहरे।

एंगेल्सका इंगलैंडकी औद्योगिक विकासके अध्ययनकी ओर दिलचस्पीका एक कारण यह भी था, कि वह स्वयं अपने बापके मिलमें काम करते समय नजदीकसे उद्योगको देख रहे थे। "जर्मन-फ्रेंच वर्षपत्र"में मार्क्सने जहाँ विधानके दर्शनकी आलोचना की थी, वहाँ एंगेल्सने अपने लेखमें राष्ट्रीय अर्थनीतिकी आलोचना की थी। यद्यपि वह लेख अभी २३-२४ वर्षके तरुणकी लेखनीसे निकला था, लेकिन उसमें अपरिपक्वता नहीं दिखाई पड़ती थी। जर्मन कुछ बड़ी नाकवाले लेखक इस लेखको बिल्कुल विशृंखलित और अस्त-व्यस्त कहते थे, तो मार्क्सने उसे चमत्कारिक रेखांकन घोषित किया था। रेखांकन मात्र तो था ही, क्योंकि एंगेल्स अपने इस लेखमें राष्ट्रीय अर्थनीतिके बारेमें बहुत विस्तार और गहराईमें नहीं जा सके थे। बूर्ज्वा-अर्थशास्त्रके विरोधोंका असली कारण वैयक्तिक सम्पति है, इसे बतलाते हुये तरुण एंगेल्स प्रूधोंसे भी आगे बढ़ गये थे। प्रूधों वैयक्तिक सम्पत्तिसे उसकी अपनी भूमिपर लड़ते रहे। एंगेल्सने अपने इस लेखमें पूँजीवादी होड़के अमानुषिक परिणामों, मालथसकी की जनसंख्याकी थ्योरी (वाद) पूँजीवादी उत्पादनके सदा बढ़ते प्रवाह, झोंक, व्यापारिक-संकट, मजूरी-कानून, साइन्सकी प्रगतिकी विवेचना की। साइन्सके बारेमें उन्होंने कहा, कि वैयक्तिक सम्पत्तिके शासनसे मानवताकी मुक्ति आदिके साधन होनेकी जगह वह मानवताकी दासताकी कड़ियोंको मजबूत करने-

का साधन बन गया है। उनके इसी लेखमें वैज्ञानिक साम्यवाद का बीज आर्थिक क्षेत्रमें देखा गया। साम्यवादको ठोस आर्थिक आधार प्रस्तुत करने सम्बन्धी प्रथम प्रयत्नका श्रेय एंगेल्सको दिया जाना चाहिये। लेकिन एंगेल्स अपने ज्येष्ठसे इतने प्रभावित और उनके प्रति इतने अनुरक्त थे, कि उन्होने अपनी महान् देनोंका कोई ख्याल नहीं किया। वह घोषित करते : मेरे आर्थिक लेखोंको अन्तिम आकार देनेका श्रेय मार्क्सको है, कभी लिखते : "मार्क्स अधिक महान् और अधिक दूर तक देखनेवाले थे। वह हम सबोंसे अधिक जल्दी तत्वों को देख लेते थे, और कहीं बची-खुची अपनी देनको भी यह कहकर नगण्य कर देते : हमने जिसे पता लगाया, उसे मार्क्स भी पता लगा लिये होते। लेकिन वास्तविकता यह है, कि आर्थिक क्षेत्रमें वैज्ञानिक साम्यवादकी प्रथम भूमि तैयार करनेवाले एंगेल्स थे। यह हमें मालूम ही है, कि पुराने समाजवादियों और साम्यवादियोंकी यही निर्बलता थी, कि वह साम्यवादकी स्थापना दिमागी सघर्ष और हृदय-परिवर्त्तन द्वारा करना चाहते थे। मार्क्सके वैज्ञानिक समाजवादने उस निर्बल नीवको छोड़ आर्थिक शोषणके आधारपर प्रहार करते संघर्ष करनेका रास्ता निकाला। आर्थिक शोषणके कारण जब कुछ मुट्ठी भर शोषकोंको छोड़ जनताका सबसे अधिक भाग अपनी रोटी, जीविका और भविष्यकी चिन्तामें चौबीस घंटे परेशान रहता हो, तो वह संघर्ष भावुकतापूर्ण सोडेकी बोतलकी उफानकी तरह क्षणिक नहीं हो सकता, उस सघर्षकी प्रत्येक असफलता उसके भावी वेग और शक्तिको बढ़ानेवाली तथा प्रत्येक असफलतासे शिक्षा लेनेका अवसर देनेवाली होती है। एंगेल्सने जिस तत्वको बीजरूपेण अपने इस लेखमें दिखलाया था, इसमें शक नहीं, उसे चरम सीमा तक विकसित करना मार्क्सका काम था। इसमें सन्देह नहीं, कि मार्क्स एंगेल्सकी अपेक्षा अधिक दार्शनिक गति रखते थे, मार्क्सका दिमाग इन गहन तत्त्वोंके भीतर घुसकर परिणामपर पहुँचनेके लिये अधिक प्रशिक्षित और क्षमता रखता था।

वर्षपत्रमें छपे एंगेल्सके दूसरे लेखमें भी अभी पुराने दार्शनिक दृष्टिकोण का प्रभाव दिखलाई पड़ता है कि उन्होंने इंगलैंडकी परिस्थिति पर विवेचना करते हुये घोषित किया, कि सारे वर्षकी साहित्यिक फसलमें यही पढ़ने लायक

है। फ्रांस की साहित्यिक समृद्धिके मुकाबिलेमें एंगेल्सने अंग्रेजी साहित्यको बहुत दरिद्र बतलाया। अंग्रेज उस समय तक हिन्दुस्तानके राजा हो चुके थे। १८५७ ई० के स्वतंत्रता-युद्धमें अभी बारह-तेरह वर्षोंकी देरी थी। उस वक्तके शिक्षित अंग्रेजोंका मूल्यांकन करते हुये एंगेल्सने अपना विचार प्रकट किया था: वह सारी दुनियामें अत्यन्त घृणास्पद दास हैं, और पक्षपातों, विशेषकर धार्मिक दृष्टिके पक्षपातोंसे भरे हुये हैं: "अंग्रेज समाज का केवल एक ही भद्र भाग है, जिसे युरोपमें मजूर कहते हैं, और जो इंगलैंडका परिया (अछूत) गरीब है, चाहे वह उसमें कितना ही मोटा-झोटा और भीरु हो। इंगलैंडको मुक्तिकी आशा इन्हींसे हो सकती है। वह अशिक्षित हैं, लेकिन उनमें पक्षपात नहीं है, शिक्षा के वह अच्छे पात्र हैं। उनमें अब भी एक बड़े राष्ट्रीय आन्दोलनके लिये पर्याप्त जीवट है, उनके पास अब भी भविष्य है।" एंगेल्सने शिक्षित अंग्रेजोंकी कूड़-मग्जीकी बानगी दिखलाते हुये लिखा था, कि स्ट्रासके ईसाके जीवन को किसी भद्र अनुवादकने अंग्रेजीमें अनुवादित करनेकी हिम्मत नहीं की, और न किसी प्रसिद्ध प्रकाशकेने उसे प्रकाशित करनेका साहस दिया। एक समाजवादी लेक्चरर ने उसका अनुवाद किया है। लन्दन, बर्मिङ्घम और मेन्चेस्टरके मजदूरोंमें वह बिक रही है।'

इंगलैंडका शिक्षित-वर्ग जहाँ इस तरह मूढ़तामें पड़ा हुआ था, वहाँ जर्मनी में फ्वारबाख कहता था: "अब तक सदा यही सवाल उठाया जाता था, कि भगवान् क्या है? जर्मन-दर्शनने हमें उत्तर दिया है: भगवान् मनुष्य है, मनुष्य-को अपने आपका साक्षात्कार, अपने आपके प्रति जीवनकी सभी स्थितियोंका नापना, अपने स्वरूपके अनुसार उनके बारेमें फैसला करना, अपने निजी स्वभावकी माँगों के अनुसार पूरी तौरसे मानवी फेशनसें दुनियाको बनाना है, बस उसने हमारे युगकी पहेली हल कर दी।" मार्क्सने तुरन्त फ्यूअरबाखके "मानव" की मनुष्य, राज्य, समाजके तौरपर व्याख्या की, और एंगेल्सने मनुष्यके स्वभावकी उसके इतिहासके रूपमें समझा।

मार्क्स और एंगेल्सकी विचारधाराओंमें असाधारण समानता थी। कभी-कभी एक ही विचार दोनोंके दिमागमें काम करते थे, इसमें हेगेलीय द्वन्द्वात्मक दर्शन

और समाजवादी दृष्टिकोण मुख्य कारण था, इसमें कोई सन्देह नहीं। इन्हीं साधनोंसे सम्पन्न होकर मार्क्स फ्रेंच-क्रांति और वहाँके भौतिकवादके गम्भीर समुद्रमें गोता लगा रहे थे और एंगेल्स अंग्रेजी उद्योग-धन्धेके विकास और नये आर्थिक सम्बन्धकी विवेचनामें संलग्न थे। मार्क्सने मानवके अधिकारोंके आधार पर यह निष्कर्ष निकाला, कि बूर्ज्वा-समाजका स्वभाव अराजकतापूर्ण, व्यवस्था-हीन है। एंगेल्सने प्रतियोगिता (होड़) के बारे मे कहा : "यह अर्थशास्त्रियों-का मुख्य पदार्थ, उसकी प्रिय कन्या है।...ऐसे कानूनके बारेमें हम क्या सोचे, जो कि व्यापारिक संकटोंसे समय-समयपर होनेवाली क्रांतियोंके परिणामस्वरूप हो काम करता है? यह सीधा-सादा स्वाभाविक कानून है, जो कि अपने सम्बन्धित दलोंके आत्मचेतनाहीन अवस्थापर आधारित है।"

३. "पवित्र परिवार"

मार्क्स और एंगेल्सने मिलकर सबसे जिस पहली कृतिको लिखा, वह यही पुस्तिका थी। ब्रूनों बावर और उसके दो भाइयों एडगर और एगबेर्टने दिसम्बर १८४३ मे अपने ऐसे दार्शनिक विचारोंको प्रकाशित किया, जो अब मार्क्स और एंगेल्सकी दृष्टिसे प्रतिगामी थे। ब्रूनो बावर अपनेको दार्शनिक आकाशमें विच-रण करनेवाला गरुड समझता था, मार्क्सके राजनीतिमे प्रवेश और उसके सम्बन्धमें क्रांतिकारी विचारोंसे उसकी कोई सहानुभूति नही थी। बावरके विचार-से मुक्तिका रास्ता केवल शुद्ध दर्शन, शुद्ध थ्योरी (वाद) और शुद्ध समालोचना है। जिस जनताके ऊपर मार्क्स और एंगेल्सका पूर्ण विश्वास था, वह समझते थे कि मुक्तिका युद्ध सफलतापूर्वक इन्हींके द्वारा लडा जा सकता है; उसके बारेमें ब्रूनो बावरके विचार थे : "अब तक इतिहासके सभी बड़े-बड़े आन्दोलन पथ-भ्रष्ट और प्रारम्भ हीसे असफल होनेके लिये मजबूर थे; क्योंकि जनसाधारण उसमें दिलचस्पी रखते या बड़े उत्साहके साथ उसके पक्षमें थे; अथवा वह इसलिये बडी बुरी तरह खतम हो गये, क्योंकि जिस विचारपर वह केन्द्रित थे, उसके लिये बिल्कुल ऊपरी समझ-बूझसे अधिक की आवश्यकता नहीं थी, और इसीलिये जनसाधारण उसके बारेमे अपना हर्ष प्रकट कर सकता था। बुद्धि

और जनसाधारण इन दोनोंका विवाद बावरके दिमागको परेशान किये हुये था। ज्ञानके लिये बावरके वही विचार थे, जो कि रूढ़िवादी गीताके निम्न शब्दों में मिलता है :

"नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।"

बावरकी तरह की धारणा हमारे यहाँके ज्ञानवादी आज भी रखते हैं। सभी जन-आन्दोलनोंको बावर घृणाकी दृष्टिसे देखता था, चाहे वह इसाइयत, यहूदी धर्म जैसे धार्मिक क्षेत्रोंमें हो, चाहे समाजवाद, फ्रेंच-क्रांति या अंग्रेजी औद्योगिक क्रान्तिके रूपमें सामाजिक क्षेत्रमें हो। ज्ञानको पवित्रतम माननेवाले अभी भी हमारे यहाँ अरविन्दों, रमण महर्षि या किसी दूसरे रूपमें सन्त और भगवान् बनकर पूजे जाते हैं, और कितने ही दर्शनके प्रोफेसर उनकी चरण-धूलि ललाटमें लगाकर अपनेको धन्य समझते हैं। लेकिन, ज्ञान (विज्ञान) वादी हेगेलीय दर्शन और उसके अनुयायियोंकी आलोचना करते हुये एंगेल्सने बहुत नर्मी दिखलाते हुये भी, आजसे १०६ वर्ष पहले लिखा था : इस (ज्ञानवाद) का सड़ा-गला हेगेलीय दर्शन उस बूढ़ी डाइन जैसा है, जिसका शरीर सूखकर अपने पहले रूपसे घृणाजनक ढाँचेके रूपमें बदल गया है, लेकिन वह अब भी अपनेको आभूषित और अलंकृत करती प्रेमी पानेकी आशासे चक्कर लगाती है। जब हेगेलने घोषित किया, कि परमविज्ञान सृजनात्मक दुनिया विश्वात्मा है जो पीछे केवल दार्शनिकमें ही सचेतन हुआ, तो उसका अर्थ यही था, कि परमविज्ञानने आपाततः कल्पनामें इतिहास बनाया। उसने स्पष्ट तौरसे इस गलतीको पहले ही कह दिया, कि दार्शनिक व्यक्ति स्वयं ही परमविज्ञान है।

मार्क्स और एंगेल्सने बावरकी आलोचनाका नाम "आलोचनात्मक आलोचनाकी आलोचना" नाम रक्खा था, लेकिन पीछे प्रकाशकके सुझाव-पर उसे पवित्र परिवार नाम दिया गया। मार्क्सके विस्तार और गम्भीरतामें जानेके स्वभावके कारण यह पुस्तक भी ३०० पृष्ठसे अधिककी हो गई। लेखकोंने समझा था, कि इसके अधिकांश में साधारण जनताकी उतनी दिलचस्पी नहीं होगी। लेकिन उनका यह ख्याल ठीक नहीं साबित हुआ। इस ग्रंथमें समालोचना संबन्धी सूक्ष्म बुद्धिका ही परिचय नहीं मिलता, बल्कि लेखकोंकी अद्भुत प्रतिमा

शैलीपर पूर्ण अधिकार और भाषाकी अति सुसंबद्धता पाई जाती है, जिसके कारण मार्क्सकी कृतियों मे यह श्रेष्ठ मानी जा सकती है।

बावरने लिखा था, कि यह राज्य ही है, जो कि बूर्ज्वा-समाजके अलग-अलग कणोंको इकट्ठा करके रक्खे हुये है। मार्क्सने इसका जवाब दिया : वह इसलिये इकट्ठा पकड़कर रक्खे हुये है, क्योंकि वह कण केवल दिमागमें है, अपनी दिमागी उड़ानके स्वर्गमें है। किन्तु वस्तुतः वह कणोंसे भारी भेद रखते हैं, अर्थात् वह दिव्य अहंतावादी नहीं, बल्कि हंवावाले मानव-प्राणी हैं। "आज केवल राजनीतिक महामूढ ही यह कल्पना कर सकते हैं, कि बूर्ज्वा-जीवनको राज्य एकताबद्ध करता है।" बावर ऐतिहासिक ज्ञानमें उद्योग और प्रकृतिको महत्व देनेपर नाक-भौं सिकोड़ता था, जब कि मार्क्स उनके बिना ऐतिहासिक ज्ञानको भ्रान्त धारणा मात्र मानता था, जब तक कि ऐतिहासिक ज्ञान मनुष्यके प्रकृति, प्राकृतिक विज्ञान और उद्योगके प्रति अपने सैद्धान्तिक और व्यावहारिक मनोभावको ऐतिहासिक आन्दोलनसे अलग करता रहेगा :

"बावर जैसोंका ऐतिहासिक विचार जैसे अनुभूतिसे चिंतनको, शरीरसे आत्माको अलग करता है, वैसे ही वह इतिहासको प्राकृतिक विज्ञान और उद्योग-धन्धेसे अलग करता है, इतिहासकी जन्मस्थान पृथिवीकी भौतिक उपज कच्चे मालकी अपेक्षा स्वर्गके अस्पष्ट बादलोंकी बनावटोंको मानता है।"

जिस प्रकार मार्क्सने आलोचनात्मक आलोचनाका खंडन करते हुये फ्रेंच-क्रांतिका समर्थन किया, वैसे ही फौशेरके विचारोंको खंडन करते हुये एंगेल्सने इंगलिश इतिहासका समर्थन किया और औद्योगिक-क्रांतिने वहाँ जिन नई व्यवस्थाओंको लानेका प्रयत्न किया, उनके ऐतिहासिक औचित्यका समर्थन किया।

पवित्र परिवारके लिखनेके समय (१८४४ ई०) अभी मार्क्स और एंगेल्स पुरानी दार्शनिक विचारधारासे पूर्णतया मुक्त नहीं हो सके थे। अभी भी वह फ्वेरबाखकी देनोंको जरूरतसे ज्यादा महत्व देते थे। "पवित्र परिवार" में फूरियेकी उटोपियन विचारधाराका भी प्रभाव देखा जाता है। फूरियेने ऐतिहासिक विकास और स्वतंत्र मजदूर-आन्दोलनके महत्व पर जोर दिया था।

एडगर बावरेके तर्कका जवाब देते हुये एंगेल्सने कहा था : "आलोचनात्मक आलोचना" कुछ नहीं निर्माण कर सकती, जब कि मजूर सब कुछ निर्माण करते हैं।...अंग्रेज और फ्रेंच मजूर इसके प्रमाण हैं। एडगर बावरने प्रूधोंके विचारों पर आक्षेप किया था, इसपर मार्क्सने प्रूधोंका जबर्दस्त समर्थन किया था, यद्यपि कुछ सालों बाद मार्क्सने प्रूधोंकी कड़ी आलोचना भी की। मार्क्सने आर्थिक क्षेत्रमें प्रूधोके प्रारंभिक प्रयत्न और सफलताकी सराहना की, और उसकी अपूर्णताको मानते हुये बतलाया, कि यह वैसी ही अपूर्णता है, जैसी कि बूनों बावरकी धर्मविद्या-सम्बन्धी अपूर्णतायें।

"पवित्र परिवार"का अधिकतर सम्बन्ध यद्यपि दर्शन और दार्शनिक तत्वोंसे है, लेकिन मार्क्सने यहाँ अपने भौतिकवादी विचारों और वैज्ञानिक समाजवाद के सम्बन्धमें भी कितनी ही बातें कही हैं। फ्रेंच समाजवादी प्रूधों बूर्ज्वाके आर्थिक-व्यवस्थाके आन्तरिक विरोधके आधार पर सम्पत्तिकी व्यवस्था करता है, जब कि मार्क्सने घोषित किया : वैयक्तिक सम्पत्ति धनके तौर पर अपनी सत्ता रखते हुये अपने विरोधी सर्वहाराको कायम रखनेके लिये मजबूर है। यह विरोधका धनात्मक पक्ष है। वैयक्तिक सम्पत्ति अपने आपमें पर्याप्त है। लेकिन सर्वहाराके तौरपर वह अपनेको कायम रखने नहीं बल्कि खतम करनेके लिये मजबूर है, और उसी समय अपने प्रतिरोधीको भी, जो कि उसे सर्वहारा बनाता है। सर्वहारा उस विरोधका ऋणात्मक (अभावात्मक) पक्ष उसका ध्वंसमान पक्ष है, जो कि नष्ट होता है और स्वयं नष्ट होते हुये वैयक्तिक सम्पत्तिका भी विलोप करता है। अतएव इस विरोधके भीतर सम्पत्तिका स्वामी स्थिति-स्थापक है और सर्वहारा ध्वंसकः एकका काम है विरोधको कायम रखना और दूसरेका उसे नष्ट करना। अपनी आर्थिक गतिमें वैयक्तिक सम्पत्ति अपने ध्वंसकी ओर बढ़ती है।...जब सर्वहारा विजयी होता है, तो वह समाजका अखंड (परम) पक्ष नहीं बन जाता, क्योंकि वह तभी विजयी हो सकता है, जब कि वह अपने और अपने प्रतिनिधि दोनोंको विलोप कर दे। इसके साथ सर्वहारा केवल अपने हीको नहीं, बल्कि अपने प्रतिरोधी-वैयक्तिक सम्पत्तिको भी विलुप्त करता है।

मार्क्सने अपने सर्वहारा प्रेमको उसके प्रति देवताओं जैसी भक्तिके रूपमें

नहीं दिखलाना चाहा, बल्कि सर्वहाराके सारे दोषोंके रहते हुये भी उसकी दुर्दम्य क्रांतिकारिणी और सृजनात्मक शक्तिको देखकर ही उनमें यह पक्षपात पैदा हुआ।

४. इंगलेण्डके मजूर

१८४४ ई० में एंगेल्सने अपने ग्रंथ "इंगलेंडमें मजूर वर्गकी स्थिति" को समाप्त किया, जो कि १८४५ ई० के ग्रीष्ममें लाइपजिगमें विगाट द्वारा प्रकाशित हुआ। विगाट ही "ड्वाशे यारबुखेर" (जर्मन-वर्षपत्र) का भी प्रकाशक था। एंगेल्सकी यह पुस्तक एक मौलिक समाजवादी कृति है। इस पुस्तकमें एंगेल्सने अपने प्रत्यवेक्षण और सूझके अनुसार अंग्रेज मजूरोंकी दयनीय दशाका वर्णन करते बतलाया है कि उत्पादनके पूँजीवादी ढंगने किस तरह वहाँ घोर दरिद्रताको फैलाई। मजूरोंकी दुरवस्थाका वर्णन कितने ही अंग्रेज लेखक कर चुके थे, जिन्हें एंगेल्सने जगह-जगह उद्धृत किया है। असह्य दरिद्रताका वर्णन करके पाठकोंके हृदयमें शोषकोंके प्रति क्रोध और शोषितोंके प्रति सहानुभूति पैदा की जा सकती है, लेकिन भावुकतासे उस दुखका निवारण नहीं हो सकता। इसीलिये एंगेल्सने दुखके निदानकी ओर विशेष तौरसे ध्यान दिया है। २४ वर्षके तरुण लेखकने अपने इस ग्रंथ द्वारा दिखलाया कि उत्पादनके पूँजीवादी ढंगकी आत्माको वह कितना अच्छी तरह समझता है। उसने केवल बूर्ज्वाके उत्पादक ही नहीं, बल्कि उसके पतनकी, सर्वहाराके दुखकी ही नहीं, बल्कि उसकी मुक्तिकी भी सफलतापूर्वक व्याख्या की है। बतलाया है, कि कैसे बड़े पैमानेके उद्योगने आधुनिक मजूर-वर्गको पैदा किया, शरीरसे जीर्ण-शीर्ण बुद्धिसे भ्रष्ट और चरित्र-बलमें पशुताके नजदीक पहुँचे अमानवीकृत आधुनिक मजूर-वर्गको पैदा किया, और कैसे ऐतिहासिक द्वन्द्ववाद—जिसके कानूनोंको एंगेल्सने विस्तारपूर्वक यहाँ खोलकर दिखलाया है—की प्रक्रियाकी सहायतासे मजूर-वर्ग विकसित हो रहा है और वह अनिवार्यतया वहाँ तक विकसित होगा, जब कि वह अपने विधाता (पूँजीवादी उत्पादन व्यवस्था) को उखाड़ फेंकेगा। एंगेल्सने बतलाया कि इंगलेंडमें सर्वहाराका शासन मजूर-आन्दोलनके समाजवादके साथ विलयनके

परिणामस्वरूप होगा। एंगेल्सकी यह पुस्तक समाजवादकी दृढ़ आधारशिला बनी। इसकी शैली और गम्भीरताको देखकर कुछ लम्बी नाकवाले पंडितोंने भावोद्रेकमें घोषित किया, कि इस पुस्तकने समाजवादको युनिवर्सिटीके योग्य बना दिया। इतिहासकी प्रगतिको द्वन्द्वात्मक कार्य-कारण प्रक्रियासे विश्लेषण करते हुये मार्क्स और एंगेल्स भविष्यकी ओर भी दूर तक देख सकते थे। यह कोई ज्योतिषियों और योगियोंकी भविष्यवाणी भविष्यद्दृष्टि नहीं थी, यदि वह भविष्यके बारेमें भी कुछ कहते थे। उनका अनुसन्धान और दृष्टि कभी गलती नहीं देखी गई, लेकिन कालके बारेमें वह भविष्यद्वाणियाँ कितनी ही बार गलत साबित हुईं। एंगेल्सके कथनानुसार इंगलैंडमें सामाजिक क्रान्ति तुरन्त तो क्या अभी तक नहीं हुई। इसे एंगेल्सने अपनी पुस्तकके लिखनेके पचास वर्ष बाद स्वयं तरुणाईका उत्साह कहा था। एंगेल्सकी इस कृतिको पूर्ण और प्रकाशित हुआ देखनेके लिये मार्क्स बहुत अधीर थे। उन्होंने अपने एक पत्रमें जोर देते हुये लिखा था: अपनी अर्थशास्त्रीय कृतिको अन्ततः पूरा कर ही डालो, चाहे तुम उससे पूरी तरह संतुष्ट न हो। इसकी कोई पर्वा नहीं। लोगोंके दिमाग इस-वक्त तैयार हैं। हमें इसी समय प्रहार करना चाहिये, जब कि लोहा गरम है।...समय जोर दे रहा है, इसलिये ऐसी कोशिश करो कि अप्रेल तक तुम उसे समाप्त कर सको। वही करो जैसा कि मैं करता हूँ: एक ऐसी तारीख निश्चित करलो, जब कि तुम अवश्य उसे समाप्त कर दोगे, फिर इसकी कोशिश करो, कि जितना हो सके उतना जल्दी छप जाये। अगर वहाँ वह नहीं छप सकती; तो मान्हाइम डर्मस्टाट या और कहीं कोशिश करो, लेकिन सबसे बड़ी चीज यह है, कि वह जल्दी प्रकाशित हो।

मार्क्स जिस तरह एंगेल्सकी कृतियोंकी अधीर होकर प्रतीक्षा करते थे, वही बात मार्क्सके बारे में एंगेल्सकी भी थी। दोनों मित्रोंकी इस तरह पत्र द्वारा बातचीत हो रही थी, इसी समय बर्मेनमें खबर आई कि मार्क्सको पेरिससे निष्कासित कर दिया गया। एंगेल्सने तुरन्त पैसा जमा करना शुरू किया और मार्क्सको सूचित करते इसमें सफलता होगी कहते बतलाया: मैं नहीं जानता, कि यह पैसा तुम्हारे ब्रुसेल्स-निवासको ठीकठाक करनेके लिये पर्याप्त होगा। लेकिन,

मैं साथही इस बातका उल्लेख करना चाहता हूँ, कि मेरी पहली अंग्रेजी किताबसे जल्दी ही जो पारिश्रमिक मिलनेवाला है, उसे मैं बड़ी खुशीसे कमसे कम अंशतः आपके कामके लिये रखता हूँ। जो भी हो वर्तमानमे मुझे उसकी आवश्यकता नहीं,...शत्रु अपने दुष्कृत्योंके परिणामस्वरूप आपको पैसेकी कठिनाइयाँ पैदा करनेकी प्रसन्नता नहीं प्राप्त कर सकेंगे।" एंगेल्सने एक पीढ़ी तक इसीलिये अथक परिश्रम किया, कि शत्रु मार्क्सको पैसोकी परेशानीमे डालकर खुशी न मनाये।

अध्याय ७

ब्रुशेल्समें निर्वासित (१८४५-४८ ई०)

११ जनवरी १८४५ को फ्रांसकी सरकारने जर्मन क्रांतिकारियोंको देशसे निकल जानेका हुकुम दिया, जिनमें मार्क्स भी थे। मार्क्सने पेरिस छोड़ परिवारको ले ब्रुशेल्सका रास्ता लिया। एंगेल्सको शंका थी कि बेल्जियममें भी मार्क्सको चैनसे रहने नहीं दिया जायेगा। जल्दी ही यह आशंका सत्य सिद्ध हुई। हाइनेको लिखे अपने पत्रमें मार्क्सने बतलाया था, कि ब्रुशेल्स पहुँचनेके तुरन्त ही बाद मुझे बुलाकर इस शर्त पर हस्ताक्षर करनेके लिये कहा गया, कि मैं बेल्जियमकी राजनीतिपर कोई बात नहीं छापूँगा। मार्क्सने इस शर्तको स्वीकार कर लिया, क्योंकि वैसे किसी काम करनेकी उनकी न इच्छा थी और न सम्भावना थी। लेकिन प्रशियन सरकार बेल्जियम सरकारके ऊपर मार्क्सको निष्कासित करनेके लिये दबाव डाल रही थी। मार्क्स अब भी प्रशियाके नागरिक थे। इस दबावसे बचनेके लिये उन्होंने यही अच्छा समझा और १ दिसम्बर १८४५ को प्रशियन नागरिकताका परित्याग कर दिया। उस समय और उसके बादमें भी मार्क्स किसी देशके नागरिक नहीं बने, यद्यपि १८४८ ई० के वसन्तमें फ्रेंच गणराज्यकी अस्थायी सरकारने उन्हें बड़े सम्मानके साथ फ्रेंच नागरिकता प्रदान की थी। लेकिन वह सरकार स्वयं अधिक दिनों तक टिक नहीं सकी। फ्राइलिग्राथ, कुछ दूसरोंके पीछे मार्क्सको भी इंगलैंडमें निर्वासित जीवन बिताते समय वहाँके स्वाभाविक निवासी होनेके दस्तावेजको लेनेमें एतराज नहीं हुआ।

१८४५ ई० के वसन्तमें ही एंगेल्स ब्रुशेल्स आये। फिर दोनों मित्र साथ ही अध्ययनके उद्देश्यसे छ हफ्तेके लिये इंगलैंड गये। पेरिसमें रहते समय मेकक्लोच (Macculloch) और रिकार्डोके अर्थशास्त्रका मार्क्सने अध्ययन किया था। अब उसने इंगलैंडके अर्थशास्त्रीय साहित्यमें गहरी डुबकी लगाई, यद्यपि इस समय अभी वह उन्हीं पुस्तकोंको देख सके, जो कि एंगेल्सके निवास-

स्थान मेन्चेस्टरमे मिल सकती थी, तथा जिनके नोट एंगेल्सने ले रक्खे थे। अपने इंगलैंडके प्रथम निवासके समय एंगेल्सने राबर्ट ओवेन* (१७७१-१८६० ई०) के पत्र The New Moral World (नव नैतिक विश्व) तथा चार्टिस्टोके पत्र (The Northern Star) (उत्तरी तारा) में लेख लिखे थे। दोनों मित्रोने अबकी यात्रामे इंगलैंडके चार्टिस्टों और समाजवादियोसे नये सम्पर्क स्थापित किये।

१. "जर्मन-विचारधारा" (१८४५-४८ ई०)

हेगेलके दर्शनके तौरपर अभी भी जर्मन-विचारधारा दोनों बन्धुओका पीछा कर रही थी। इस यात्रासे लौटनेके बाद मार्क्सने अपनी एक नई सम्मिलित कृतिके आरम्भ करनेके बारेमें लिखा था: "हमने एक साथ मिलकर जर्मन दर्शनकी सम्मतियों और विचारधाराओंके विरुद्ध अपने निजी दृष्टिकोण पर काम करनेका निश्चय किया। वस्तुतः यह अपनी पहलेकी दार्शनिक चेतनासे लोहा लेना था। हमने इसे पीछेके हेगेलीय दर्शनकी समालोचनाके रूपमें किया। अक्टेव आकारकी दो बडी-बडी जिल्दोमें पुस्तककी हस्तलिपि वेस्टफालियाके एक प्रकाशकके हाथमे दी जा चुकी थी, जबकि हमें सूचना मिली, कि बदली हुई परिस्थितिके कारण उसका प्रकाशित करना सभव नहीं है। इसपर हमने अपने हस्तलेखको चूहोंके कुतरनेकी आलोचनाके लिये त्याग दिया। ऐसा करनेमे हमे कोई अफसोस नहीं हुआ, क्योंकि हमारा जो मुख्य उद्देश्य था, वह सफल हो गया था—अपने साथ हमारा समझौता हो गया था।" मार्क्सकी बात ठीक थी, क्योंकि हस्तलेखपर चूहोने सचमुच ही अपने दाँत साफ किये, और जो कुछ उसका बचा-खुचा भाग रह गया, उससे पता लग जाता है, कि क्यो ग्रथकर्ता-युगल हस्तलेखके इस प्रकार नष्ट होनेसे उदास नहीं हुये। यह दोनों जिल्दे बडे आकारके ८०० पृष्ठोमें थीं, जिनके दर्शनके साथ, उसीके हथियारों द्वारा लोहा लिया गया था। पुस्तकका नाम था "जर्मन विचारधारा, आधुनिक जर्मन दर्शन और उसके प्रतिनिधियो फ्वेरबाख, ब्रूनों बावर और

---

* ओवेनके बारेमें देखो लेखक का "मानव समाज" तृतीय संस्करण पृ० ३८७-४१०

स्टर्नरकी आलोचना एवं जर्मन समाजवाद और उसके भिन्न-भिन्न पैगम्बरोंकी आलोचना।" एंगेल्सने पीछे अपनी स्मृतिसे कहा था, कि स्टर्नरका खंडन उसकी अपनी पुस्तकसे कम बड़ा नहीं था। फ्वेरबाख द्वारा हेगेलीय दर्शनका प्रभाव अभी तक मार्क्सके ऊपर काफी चला आया था, लेकिन अब वह उससे मुक्त थे। मार्क्सने फ्वेरबाख सम्बन्धी एक-दो सूत्र १८४५ ई० में नोट किये थे, जिन्हें कुछ दशाब्दियों बाद एंगेल्सने प्रकाशित किया था। मार्क्सने फ्वेरबाखके भौतिकवादमें एक कमी जो पाई थी, वह थी "शक्तिदायक तत्व" का अभाव। अपने डाक्टरेटकी थेसिस (निबन्ध) में देमोक्रितूके दर्शनके बारेमें भी मार्क्सकी यही शिकायत थी। मार्क्स और एंगेल्सने इस बातकी कोशिश की, कि फ्वेरबाख अपने भौतिकवादी दर्शनमें कुछ और आगे बढ़े, ताकि उसकी विचारधारामें "शक्तिदायक" तत्व प्रविष्ट हो। लेकिन फ्वेरबाखके लिये अब वैसा करना सम्भव नहीं रह गया था। उसके शिष्य क्रीगेने यद्यपि अटलान्टिक पार कम्युनिस्ट प्रचार करनेमें हाथ बँटाया था, लेकिन न्यूयार्कमें उसने कम्युनिस्टोंके भीतर गड़बड़ी पैदा करनेमें ही सफलता पाई।

२. "सच्चा-समाजवाद" (१८४५-४६ ई०)

उसी ग्रंथमें जर्मन समाजवाद और उसके भिन्न-भिन्न पैगम्बरोंकी भी खबर लेनेकी योजना बनाई थी। इसमें उन्होंने मोजेज हेस, कार्ल ग्रन, ओटो लूनिंग, हेरमान पुटमान आदि लेखकोंकी आलोचना की थी, जिन्होंने कि पत्र-पत्रिकाओं में छपे अपने लेखों द्वारा समाजवादक संबंधी एक अच्छा साहित्य तैयार किया था। कार्ल ग्रुनने इस समाजवादको "सच्चा समाजवाद" नाम दिया था, जिसे मार्क्स और एंगेल्सने व्यंगके तौरपर इस्तेमाल किया। इतने मेहनतसे ताना-बुना गया "सच्चा समाजवाद" बहुत भंगुर साबित हुआ, और १८४८ ई० तक लोग इसे भूल भी गये, यद्यपि वह १८४५ और १८४६ ई० में ही अधिकतर तैयार हुआ था। मार्क्सके बौद्धिक विकासमें इसका कोई हाथ नहीं था। कम्युनिस्ट घोषणामें उन्होंने इसकी कड़ी आलोचना की। एंगेल्सका इस समाजवादके प्रति और भी कठोर विचार था। हेसके साथ मार्क्स और एंगेल्सका अपने लेखों द्वारा सहयोग रहा, ब्रूशेल्सके निवासके समय भी उनका सम्बन्ध बना रहा

और कुछ समय तो ऐसा मालूम होता था, कि हेसने दोनोंके विचारोंको स्वीकार कर लिया। मार्क्स और एंगेल्सने "वेस्टफालिशे डम्फूबूट" (१८४५ ई० में प्रकाशित) पत्रमें अपने कई लेख दिये थे। इसी पत्रमें जर्मन विचारधाराका दूसरा अनुच्छेद प्रकाशित हुआ था, इस प्रकार इस ग्रंथ का यही अंश चूहोंके कुतरनेसे बच गया। मार्क्स और एंगेल्स भी हेगेलीय दर्शनसे आगे प्रगति करके अपने वैज्ञानिक समाजवाद तक पहुँचे थे और नवीन समाजवाद वाले भी हेगेलीय दर्शन की ही आगेकी उपज थे। लेकिन, दोनोंमें अन्तर यह था, कि मार्क्स और एंगेल्सने फ्रेंच-क्रांति और अंग्रेजी उद्योगके इतिहासके गम्भीर अध्ययनसे अपने निष्कर्षपर पहुँचे थे, जब कि "सच्चे समाजवादी" समाजवादी सूत्रों और नारोंके आधारपर दिमागी कल्पनासे इस विचारधाराको तैयार करनेमे सफल हुये थे। मार्क्स और एंगेल्सकी कसौटी थी सर्वहारा और जनसाधारणके हित और क्षमता, जबकि "सच्चे समाजवादी" उनसे दूर रह कर समाजवादी समाजकी सृष्टि करना चाहते थे।

"सच्चे समाजवादियों" की ईमानदारीके बारेमें सन्देह करनेकी बहुत कम गुंजाइश है। जर्मनीमें क्रांतिके फेल होनेके बाद जो भीषण आतंक मचा था, उसमें कोई ऐसा कमजोर सच्चा समाजवादी नहीं मिला, जो शत्रुकी ओर चला गया हो। साथ ही उनके दिलमें मार्क्स और एंगेल्सके विषयमें भारी सम्मान था। जब "सच्चा समाजवादी" उनकी दृष्टिमें गिर गया था, तब भी सच्चे समाजवादी अपने साहित्यको बड़ी खुशीसे दोनों मित्रोंको दिया करते थे। वस्तुतः मतभेदका कारण कोई छिपी दुर्भावना नहीं थी, बल्कि सच्चे समाजवादी अपनी पुरानी धारणाओंको छोड़नेकी समझ नहीं रखते थे, सादे तौरसे उनके दिलोंमें बावर, रूगे और स्टर्नरके प्रति खास कोमल भाव थे। लेकिन इनमें से कुछ मार्क्सके दृष्टिकोणको अपनानेमें समर्थ हुये, जिनमें जोजेफ वेडेमेयर भी था। वेडेमेयर लूनिंगका सम्बन्धी था। वह प्रशियन तोपखानेमें लफ्टनेंट था, लेकिन अपने राजनीतिक विचारोंके कारण उसने सेनाकी नौकरी त्याग दी। फिर वह "ट्रीरशे जाइटुंग" का उप-सम्पादक बना, जहाँ कार्ल ग्रुनके प्रभावमें आकर सच्चा समाजवादी हो गया। १८४६ ई० के बसन्तमें वह ब्रुसेल्स गया, जहाँ उसकी

मार्क्स और एंगेल्ससे मुलाकात हुई, और जल्दी ही वह उनका अनुयायी बन गया। वेडेमेयर कभी एक असाधारण लेखक नहीं बन सका। जर्मनी लौटने पर उसने रेलवेकी सर्वेयरकी नौकरी करली, फिर बाकी समयमें 'वेस्टफालिशे डम्पबूट'के सम्पादनमें सहयोग देता रहा। वेडेमेयरने मार्क्सके ग्रंथोंके प्रकाशनके लिये बहुत कोशिश की थी, और "जर्मन विचारधारा" उसीके प्रयत्नसे प्रकाशकके पास पहुँची थी, जिसका अवसान किस प्रकार हुआ, उसके बारेमें हम बतला चुके हैं।

३. कवि और स्वप्नद्रष्टा

यह कहनेकी आवश्यकता नहीं, कि तीस वर्षकी उमर तक पहुँचते-पहुँचते मार्क्सके परिचितोंकी संख्या भी बहुत अधिक हो गई थी। उनके प्रभावमें जितने लोग आये, वह सभी बराबरके साथी नहीं हो गये। तरुणाईमें आदमीमें आसक्ति कम और अपने आदर्शोंके प्रति उत्साह अधिक रहता है। उमरके ढलनेके बाद दुनिया और परिवारकी दूसरी चीजें उसको घेर लेती हैं, और अक्सर तरुणाईके क्रांतिकारी यदि पथभ्रष्ट नहीं होते, तो शिथिल तो जरूर हो जाते हैं। मार्क्सके जीवनमें हम ऐसे बहुतसे लोगोंको पाते हैं। लेकिन जिनकी नियतमें कोई दोष नहीं, और जिनका काम एक हद तक आदर्शके अनुरूप रहा, उनके लिये मार्क्सके दिलमें भी सद्भावना रही।

(१) वाइटलिंग—वाइटलिंग सर्वहारा वर्गमें पैदा हुआ था। प्रतिभा और नैतिकबल दोनोंमें बहुत मजबूत था। सम्मान और साधन प्राप्त करने पर भी वह अपने वर्गके हितसे उसी तरह विचलित नहीं हुआ था, जिस तरह फ्रेंच समाजवादका आचार्य प्रूधो। दोनों ही शरीरसे बहुत हट्टे-कट्टे, कर्मठ और आगे चलकर जीवनके सभी अच्छी चीजोंको पानेमें समर्थ हुये थे, लेकिन उन्होंने सुखका मार्ग छोड़ दुखका मार्ग अपनाया और दुख भी पराकाष्ठा का। वाइट-लिंगकी कोठरीमें कभी-कभी तीन आदमी रहते, एक मामूली खाट पड़ी थी, एक लड़कीका तख्ता लिखनेकी मेजका काम देता था। जब-तब काली काफीका प्याला वह पी लेता था। वह ऐसा जीवन उस समय बिता रहा था, जब कि दुनियाकी विभूतियाँ उसकी आवाज सुनकर काँपती थीं। प्रूधों भी पैरिसमें इसी

तरह रहता था, जिस तरह वाइटलिंग। देहमें मोटे ऊनका बुना जाकेट और पैरोंमे लकड़ीके तलेका खटखटाता चप्पल। वाइटलिंग एक फ्रांसीसी अफसरका लड़का था। काफी उमर हो जानेपर उसने पैरिसमे फ्रेंच समाजवादका गम्भीर अध्ययन किया। समाजवादका आन्दोलन करने वह स्वीजलैंड पहुँचा। उसके बाद १८४६ ई० के आरम्भमे ब्रुशेल्समे था। लेकिन वहाँ भी उसे अधिकारियोने चैनसे रहने नहीं दिया और वह लन्दन चला आया, जहाँ न्यायी लीगके सदस्योंसे उसकी नही पटी। यद्यपि उस समय इगलैंडमे चार्टिस्ट-आन्दोलन बड़े जोरोंपर था, लेकिन निराश सा वाइटलिंग अब दूसरी ही धुनमे लगा था। वह एक विश्व-भाषाके निर्माणका प्रयत्न कर रहा था, जिसके लिये कि उसके पास बौद्धिक साधन नही थे। एक ओर अपने वर्गसे विच्छेद हो जानेसे उसकी शक्तिका स्रोत टूट गया था, और दूसरी ओर यह निरर्थक प्रयास। अच्छा ही किया, जो वह ब्रुशेल्ससे लन्दन चला आया, क्योंकि मार्क्स भी वहाँ पर थे। मार्क्सने उसका बड़े प्रेमसे स्वागत किया, और कोशिश की कि उसकी प्रतिभाका उपयोग किया जाय। ३० मार्च १८४६ को ब्रुशेल्समे कम्युनिस्टोंकी एक बैठकमें दोनोंका उग्र मतभेद हो गया। वाइटलिंग मार्क्सको बहुत चिढने दिया। उसने निराधार ही मार्क्सपर आक्षेप किया, कि उन्होने मेरे आमदनीके रास्ते—अनुवाद कार्य में भाँजी मारी। पर मार्क्सने जहाँ तक हुआ वाइटलिंगकी सहायता करनेसे हाथ नहीं खींचा।

(२) प्रूधों—प्रूधों फ्रान्सके उस स्वतंत्र बरगडी प्रदेशमे पैदा हुआ, जिसे चौदहवे लुईने अपने राज्यमें मिला लिया। उसके साथी कहा करते थे, कि वह जर्मनो जैसा मोटे सिरवाला है। जो भी हो, उद्बुद्ध प्रूधोंको जर्मन दर्शनने अपनी ओर खींचा। वाइटलिंगकी तरह वह जर्मन दार्शनिकोंको धुंध फैलानेवाला नहीं मानता था। वाइटलिंग स्वप्न उटोपियन (स्वप्नद्रष्टा) समाजवादी लेखकोंको बड़े सम्मानकी दृष्टिसे देखता था, लेकिन उनके प्रति प्रूधोंकी जरा भी आस्था नही थी। दोनो ही इस बातके सबूत थे, कि प्रतिभा और कर्मठता केवल उच्च और मध्यम वर्गकी बपौती नहीं है, बल्कि सर्वहारा वर्ग भी उसको पैदा कर सकता है। मार्क्सका सर्वहारा वर्गके प्रति असाधारण

विश्वास और असीम पक्षपात था, इसलिये इन दोनों प्रतिभाशाली फ्रेंच विचारकोंके प्रति अपने कार्यके आरम्भमें केवल प्रशंसाके ही शब्द थे। सब कुछ होने पर भी वाइटलिंग एक जर्मन कारीगरसे अधिक विकसित नहीं हो सका और न प्रूधों फ्रेंच निम्न-मध्यमवर्गीय पुरुषसे अधिक। दोनोंको मार्क्ससे विचार-विनिमयका काफी मौका मिला था, लेकिन आयुके अनुसार जब एक मर्तबे आदमीकी धारणा पक्की हो जाती है, तो उसे छोड़ना उसके लिये मुश्किल हो जाता है। मई १८४६ में प्रूधोंका मार्क्सके साथ बिलगाव नजदीक आ गया। इस समय कम्युनिस्ट विचारधाराको फैलानेके लिये कई देशोंमें मार्क्सने पत्र-व्यवहारके केन्द्र बनाये थे। क्रीगको इसी कामके लिये अमेरिका भेजा, जहाँ वह २० वीं सदीके भारतीय स्वामियोंकी तरह अपनी महंती जमानेका प्रयत्न करने लगा, जिसका मार्क्सको विरोध करना पड़ा। पैरिसमें प्रूधोंको इस कार्यमें सहयोग देनेके लिये मार्क्सने लिखा था। १७ मई १८४६ को प्रूधोंने लियोंसे जवाब देते हुये मार्क्सके प्रस्तावको स्वीकार किया था, लेकिन साथ ही यह भी कहा था, कि मुझसे अधिक लिखना-पढ़ना नहीं हो सकेगा। इसी पत्रमें उसने मार्क्सको एक उपदेश भी दे डाला था, जिससे पता लग गया कि दोनोंके मतभेदकी खाइयाँ सँकरी होनेकी जगह और बढ़ गई हैं। मार्क्स विचारोंकी गड़बड़ीको नहीं पसन्द करते थे, इसलिये वह सहिष्णुता और लीपा-पोती द्वारा उसको भुला देनेको कार्यके लिये बाधक समझते थे। प्रूधों इस विषयमें उदारता दिखलाना चाहता था। उसने मार्क्सको उपदेश देते हुये लिखा था: "हमें एक नई गड़बड़ी पैदा करके मानवजातिको नया कार्य नहीं देना चाहिये। हमें मानव जातिको बुद्धिमत्ता और दूरदर्शितावाली सहिष्णुताका उदाहरण पेश करना चाहिये। चाहे वह तर्क और बुद्धिका ही धर्म क्यों न हो, लेकिन हमें एक नये धर्मके प्रचारकका पार्ट नहीं अदा करना चाहिये।" इस प्रकार सच्चे समाजवादियोंकी तरह प्रूधों भी सहिष्णुता और उदारताके पथका पथिक बन गया था। लेकिन सर्वहारा-आन्दोलन और क्रान्ति हवाई संघर्ष नहीं है। उनमें ठोस धरतीके परस्पर-विरोधी हितोंको लेकर संघर्ष करना पड़ता है, जहाँ पर विचारोंकी इस लीपा-पोतीसे काम नहीं चल सकता।

इसीलिये मार्क्स साम्यवादके वास्तविक प्रचारके लिये विचारोंकी गड़बड़ीको खतम करना सबसे आवश्यक समझते थे। क्रान्तिका पक्षपाती प्रूधो विचारोंमें अब ज्ञान मार्गी बनकर कहता था : "मेरी रायमें फ्रान्सके हमारे सर्वहारोंको ज्ञानकी इतनी प्यास है, कि यदि हम खून छोड़कर और कुछ पीनेके लिये नहीं देते, तो हमारा स्वागत बुरी तौरसे होगा।" प्रूधोके व्यवहारसे मालूम हो गया, कि पैरिसके काम को उसके ऊपर छोड़ा नहीं जा सकता, इसलिये अगस्त १८४६ मे वहाँका तमाम काम सँभालनेके लिये एंगेल्सको पैरिस जाना पड़ा। महा-क्रान्ति जैसी अनेक क्रान्तियों की भूमि और यूरोपीय सभ्यताका सबसे बड़ा केन्द्र होनेके कारण साम्य-वादी प्रचारके लिये भी पैरिसका बड़ा महत्व था। आरम्भमे एंगेल्सने वहाँसे जो रिपोर्ट भेजी, वह काफी आशाजनक थी, लेकिन बादमें कुछ नही बना।

(३) ऐतिहासिक भौतिकवाद—प्रूधोंका दिमाग अब दूसरी ओर मुड़ गया था। उसने सहिष्णुता अर्थात् हृदय-परिवर्त्तनके दर्शनकी ओर मुँह फेर लिया था, फिर दरिद्रताके प्रति भी उसके दृष्टिकोणमे परिवर्त्तन होना जरूरी था। उसने आर्थिक विरोधोंकी व्यवस्थाके नामसे एक पुस्तक लिखी, जिसका दूसरा नाम "दरिद्रताका दर्शन" भी था। *प्रूधोंका फ्रासके सर्वहारो पर बहुत प्रभाव था, इसलिये वह जो कुछ भी ऊल-जलूल लिखता, उसका प्रभाव उन पर पड़े बिना नहीं रहता। मार्क्सने "दरिद्रताका दर्शन"के खंडनमे अपनी पुस्तक "दर्शनकी दरिद्रता" फ्रेंच भाषामे लिखी, जिसका उद्देश्य था कि प्रूधो स्वयं अपने विचारोंकी आलोचना अच्छी तरह देख सके तथा उसके फ्रेंच अनु-यायियोंको भी अपनी कमजोरीका पता लगे। लेकिन, प्रूधोंका प्रभाव हटानेमें मार्क्सको सफलता नहीं मिली। तो भी पुस्तकका मूल्य समय बीतनेके साथ सभी देशोंके लिये बढ़ता गया। इसी पुस्तक द्वारा पहले पहल मार्क्सने ऐतिहासिक भौतिकवादको वैज्ञानिक ढंगसे विकसित किया। ऐतिहासिक भौतिकवादके विचार मार्क्सके पहले ग्रंथोमें भी जब-तब छिट-फुट आये थे, लेकिन उन्होंने यहाँ सुव्यवस्थित ढंगसे उसका प्रतिपादन किया। ऐतिहासिक भौतिकवाद

* "Systeme des contradictions economiques on philoso-phic de la misere" (Caris 1846)

मार्क्सकी सबसे बड़ी देन इतिहास सम्बन्धी विज्ञानोंमें उसी तरह है, जिस तरह प्राकृतिक विज्ञानोंमें डारविनका विकासवाद। इस पुस्तक के लिखनेमें एंगेल्सने भी सहायता की थी, यद्यपि अपनी स्वाभाविक विनम्रताके कारण वह उसमें अपना अंश बहुत कम करके बतलाना चाहते हैं। एंगेल्सने इस महान् सिद्धान्तके जन्म लेनेके समयका वर्णन करते हुये लिखा है: जब मैं १८४५ ई० के वसन्तमें ब्रुशेल्स गया, तो मार्क्सने ऐतिहासिक भौतिकवाद-के मूल विचारोंको अन्तिम विकसित रूपमें मेरे सामने रक्खा जो थे: प्रत्येक ऐतिहासिक युगमें आर्थिक उत्पादन और उसका अवश्य अनुगामी सामाजिक ढाँचा उस युगके राजनीतिक और बौद्धिक इतिहासके आधार होते हैं, और इसीलिये सारा इतिहास वर्ग-संघर्षोंका इतिहास रहा है—सम-सामयिक विकासकी भिन्न-भिन्न मंजिलोंमें शोषितों और शोषकोंके बीच, शासितों और शासकवर्गोंके बीचका संघर्ष। यह संघर्ष अब ऐसे स्थानपर पहुँच गये हैं, जहाँ-पर शोषित और उत्पीड़ित वर्ग—सर्वहारा, शोषक और उत्पीड़क वर्ग—बूर्ज्वाजी (पूँजीपति)—से अपनेको तब तक मुक्त नहीं कर सकता, जब तक कि साथ ही सारे समाजको सदाके लिये शोषण और उत्पीड़नसे मुक्त नहीं कर देता। प्रूधोंके विचारोंको खंडन करते दरिद्रताके दर्शनकी धुंधको दूर करते समय मार्क्स-का दिमाग इस गम्भीर सत्यपर पहुँचा, जिसके आधारपर उन्होंने प्रूधोंके दर्शनकी दरिद्रता को दिखलाते हुये दरिद्रताके वास्तविक निदान और उपायको बतलाया। पुस्तककी शैली बहुत ही स्पष्ट और गम्भीर है। इसमें पाठकोंके दिमागको थका देनेवाली शैलीका पता नहीं लगता, जो कि बावर और स्टर्नरके जवाबमें लिखते वक्त मार्क्सने इस्तेमाल किया था। वहाँ दर्शनका जवाब दर्शनकी भूमिपर उसीकी भाषामें मार्क्सने दिया था, जब कि यहाँ ऐतिहासिक भौतिकवादके दर्शनको सर्वहाराकी सबसे अधिक संख्याके लिये सुगम बनाना था। इस पुस्तकके दो भाग हैं: पहले भागमें मार्क्स अपनेको समाजवादी अर्थात् अर्थशास्त्रीके रूपमें दिखलाते हैं, और दूसरे भागमें अर्थशास्त्री हेगेलके रूपमें। मार्क्सने सामाजिक विकासका वर्णन करते हुये लिखा है: "सभ्यताके आरम्भके साथ उत्पादन, व्यवसाय, सामाजिक स्थिति और प्रतियोगिता (विरोध), एवं अन्तमें संचित

और प्रत्यक्ष श्रमके प्रतियोगोके ऊपर निर्मित होने लगा। बिना प्रतियोगके प्रगति नहीं हो सकती : सभ्यताने शुरूसे लेकर आज तक इस कानूनको माना है। आज तक उत्पादक-शक्तियोंका विकास वर्ग-विरोधकी प्रधानताके आधारपर हुआ है।" मार्क्सने आगे प्रूधोके विचारांका खंडन करनेके बाद बतलाया, कि उत्पादक शक्तियोंका विकास (जिसने कि अंग्रेज मजूरोंको १७७० ई० की अपेक्षा १८४० ई० में सत्ताईस गुनेसे भी अधिक उत्पादन बढ़ानेमें समर्थ बनाया) वर्ग विरोधों पर आधारित ऐतिहासिक स्थितियों के ऊपर अवलम्बित है : वैयक्तिक पूँजीका जमा होना, आधुनिक श्रम-विभाग, अराजकतापूर्ण होड़ और मजूरी व्यवस्था। अतिरिक्त श्रमके उत्पादनके लिये एक ऐसे वर्ग की आवश्यकता है, जो कि लाभ प्राप्त करे और दूसरा वर्गके लाभको हाथसे खोये।

साम्यवादके अन्तिम लक्ष्यकी ओर संकेत करते हुये मार्क्सने बतलाया थां, कि माँग और पूर्तिके बीच ठीक तौरसे संतुलन उसी समय सम्भव हो सकता था, जब कि उत्पादनके साधन सीमित थे, जब कि विनिमय बहुत थोड़ी सी सीमाके भीतर होता था, जबकि पूर्ति माँगपर अवलंबित थी, और उत्पादन उपभोगपर। बड़े पैमानेके उद्योग-धंधेके विकासके साथ ऐसा होना असम्भव हो गया, क्योंकि बड़े पैमानेका उद्योग केवल हथियारोंके कारण ही इसके लिये मजबूर हुआ, कि माँगकी प्रतीक्षा किये बिना बराबर बढ़ते हुये परिमाणमे उत्पादन करता जाये, जिसके कारण उसे अनिवार्यतया आवश्यक और इसके बाद एक लगातार समृद्धि और अवसाद, संकट और अवरोध, नई समृद्धि इत्यादिका सामना पड़ेगा। आजके समाजमें, जब कि उद्योग वैयक्तिक विनिमय, उत्पादन-सम्बन्धी अराजकता—जो कि बहुत सी बुराइयोंके स्रोत हैं—पर आधारित होते हुये साथ ही सभी प्रगतियोंका कारण है, इसीलिये उसके सामने विकल्प हैं : आदमीको हमारे अपने समयके उत्पादन-साधनों द्वारा पहली शताब्दियोके ठीक अनुपानमें प्राप्त करनेकी कोशिश करना, ऐसा सोच करनेवाला प्रतिगामी और उटोपियन (स्वप्नचारी) दोनों है; अथवा उसे अराजकताको हटाकर प्रगति करनेका प्रयत्न करना होगा। "ऐसी अवस्थामें उत्पादक शक्तियोको कायम रखनेके लिये वैयक्तिक विनिमयको छोड़ना पड़ेगा।"

मार्क्सने एक जगह लिखा है : "मेशिये प्रूधों आत्म-प्रशंसा करते समझते हैं, कि मैंने अर्थशास्त्र और साम्यवाद दोनोंका खंडन कर दिया, लेकिन वस्तुतः वह दोनोंसे बहुत नीचे रहा : अर्थशास्त्रियोंसे नीचे इसलिये रहा, क्योंकि एक दार्शनिकके तौरपर अपने पाकेटमें जादूका मन्तर रक्खे हुये वह सोचने लगा, कि मुझे अर्थशास्त्रमें विस्तारके साथ जानेकी आवश्यकता नहीं। समाजवादियोंसे नीचे इसलिये, कि उनके पास न पर्याप्त अन्तर्दृष्टि है और न उसके लिये पर्याप्त हिम्मत है, कि अपनेको बूर्ज्वा क्षितिजके ऊपर कल्पनाके क्षेत्रमें उठा सके। वह दोनोंका संवाद करना चाहता है, लेकिन वस्तुतः वह सम्मिलित प्रमादके सिवा और कुछ नहीं कर पाये। वह एक साइन्सवेत्ताके तौरपर बूर्ज्वा और सर्वहारा दोनोंके ऊपर मँडरानेकी इच्छा रखता है, लेकिन वस्तुतः वह निम्न मध्यमवर्गके व्यक्तिके सिवा और कुछ नहीं हैं, जो कि यहाँ-वहाँ पूँजी और श्रमके बीच अर्थशास्त्र और समाजवादके बीच लुढ़कते दिखाई देते हैं।" मार्क्सकी इस कड़ी आलोचनासे यह न समझना चाहिये, कि वह प्रूधोंकी क्षमता अस्वीकार करते थे। उन्हें इस बातका अफसोस था, कि प्रूधों निम्न मध्यम वर्गीय समाजकी सीमासे आगे क्यों नहीं बढ़ता।

मार्क्सने समस्याको साफ तौरपर रखते हुये लिखा है : "अगर सामन्तवादी उत्पादन का ठीक तौरसे मूल्यांकन करना है, तो उसे विरोधपर आधारित उत्पादनके ढंगके तौरपर समझना होगा; यह देखना होगा, कि कैसे इस विरोध-के भीतर धन-वैभव पैदा किये गये, किस तरह उत्पादक शक्तियाँ वर्गोंके संघर्षके साथ-साथ विकसित हुईं, और किस तरह तब तक इन वर्गोंमें बुरा पक्ष—सामाजिक बुराई-लगातार उन भौतिक स्थितियोंमें पढ़ता गया, जब तक कि उसकी मुक्तिके लिये भौतिक स्थितियाँ परिपक्व नहीं हो गईं।" इसी तरह मार्क्सने बूर्ज्वाजी (पूँजीवादी) व्यवस्थामें भी उत्पादनके विकासको दिखलाते हुये बल बतलाया। जिन उत्पादन सम्बन्धोंमें अब यह विकास होने लगा, उनका स्वरूप सीधा-सादा और एक-सा नहीं, बल्कि दोहरा है—उन्हीं स्थितियोंमें, जिनमें कि वैभव पैदा होता है दरिद्रता भी होती है, जैसे-जैसे पूँजीवादका विकास होता है, वैसे ही वैसे उसी परिमाणमें सर्वहाराकी भी वृद्धि होती है, जिसके परिणामस्वरूप

इन दोनों वर्गोंमें संघर्ष होता है। अर्थशास्त्री पूँजीवादियोंके शास्त्रकार हैं और कम्युनिस्ट तथा सोशलिस्ट सर्वहाराके। वह कम्युनिस्ट-सोशलिस्ट उटोपियन (स्वप्नचारी-अव्यावहारिक) हैं, जो कि उत्पीड़ित वर्गोंकी आवश्यकताओंको पूरा करनेके लिये चिकित्सा-विज्ञानको ढूँढने तथा शास्त्रप्रणालियोंको तैयार करते हैं। लेकिन यह तभी तक, जब तक कि सर्वहारा स्वयं एक वर्गके रूपमें काफी तौरसे विकसित नहीं हो जाती, और बूर्ज्वा समाजकी उत्पादक शक्तियाँ जब तक इतनी पर्याप्त विकसित नहीं हो जातीं कि वह सर्वहाराकी मुक्ति और नये समाजके निर्माणके लिये आवश्यक भौतिक स्थितियोंको प्रकट कर दे। लेकिन जितने परिमाणमें इतिहास और उसके साथ सर्वहाराका सघर्ष आगे बढ़ता है, उतने परिमाणमें उनके लिये आवश्यक नहीं रहता, कि अपने दिमागमें साइंसको ढूँढे। तब उन्हें बस सिर्फ यही करनेकी आवश्यकता होती है, कि जो कुछ उनकी आँखोंके सामने हो रहा है, उसका लेखा-जोखा लगायें, और अपनेको उसका हथियार बनायें। जब तक वह अभी अपने दिमागमें साइसकी खोज करते शास्त्रोंकी रूपरेखा बना रहे हैं, जब तक वह अपने सघर्षके केवल आरम्भमें ही हैं, तब तक वह केवल दुःख (दरिद्रता) ही देखते हैं और उन्हें उस दुःखका वह क्रातिकारी पहलू नहीं दिखाई पड़ेगा, जो कि पुराने समाजको उखाड़ फेंकेगा। इस क्षणसे साइंस ऐतिहासिक आन्दोलन (गति) की सचेतन उपज हो जाता है। यह अब शास्त्र और वाद न रहकर क्रांतिकारी बन जाता है।'

मार्क्सने अर्थशास्त्रीय तत्त्वोंको सामाजिक सम्बन्धोंका ही निराकार अथवा शास्त्रीय नाम बतलाते हुये कहा है—'हमारे सामाजिक सम्बन्ध उत्पादक शक्तियों-के साथ घनिष्ठतया सम्बद्ध हैं। नई उत्पादक शक्तियोंके पा लेनेके बाद मानव-जाति अपने उत्पादनके तरीकेको बदल देती है। जिस तरीकेसे मानवजाति अपनी जीविकाको प्राप्त करती है, उसीके अनुसार वह उसके अपने सामाजिक सम्बन्ध बदल देती है।...'

मार्क्सके अनुसार श्रमका विभाग प्रूधोंके कथनानुसार अर्थशास्त्रीय तत्त्व नहीं है, बल्कि यह एक ऐतिहासिक तत्त्व है, जो कि इतिहासके भिन्न-भिन्न रूप लेता रहा है। बूर्ज्वा अर्थशास्त्रके अनुसार फैक्टरी पूँजीवादके अस्तित्वका कारण

है, लेकिन फैक्टरी-मजदूरोंके बीच मित्रतापूर्ण समझौतेके आधारपर अथवा पुराने शिल्पी-संघोंकी गोदमें नहीं पैदा हुई। आजकलकी फैक्टरियोंके मालिक पुराने शिल्पी-संघोंके स्वामी नहीं बने, बल्कि व्यापारियोंने उन्हें उद्योगपति बन करके सँभाला। इसी तरह होड़ और इजारेदार भी प्राकृतिक नहीं, बल्कि सामाजिक तत्त्व हैं। होड़ औद्योगिक महत्वाकांक्षाके कारण नहीं, बल्कि व्यापारिक महत्वाकांक्षाके कारण होती है। इसका सम्बन्ध उत्पादनसे नहीं, बल्कि लाभ-शुभसे है। यह मानवकी आत्माके लिये आवश्यक नहीं है, जैसा कि प्रूधों मानते हैं, बल्कि यह १८ शताब्दीमें उत्पन्न होनेवाली ऐतिहासिक आवश्यकताका परिणाम है, जो कि ऐतिहासिक कारणोंसे १६ वीं सदीमें लुप्त भी हो सकती है।

प्रूधोंकी तरह विचार रखनेवालोंका ख्याल था, कि भू-सम्पत्तिका आरम्भ ऐतिहासिक नहीं बल्कि वह मनोवैज्ञानिक और नैतिक विचारोंपर आधारित है, धनके उत्पादनसे उसका बहुत दूरका सम्बन्ध है। जमीनकी लगान प्रकृतिके साथ अधिक घनिष्ठताके साथ मनुष्यको जोड़ती है। इसका खंडन करते हुये मार्क्सने कहा—'हरेक युगमें सम्पत्तिका विकास भिन्न-भिन्न तरह तथा भिन्न-भिन्न सामाजिक सम्बन्धोंके अनुसार होता है। इसीलिए बूर्ज्वा-सम्पत्तिकी व्याख्या इसके सिवा और कोई नहीं है, कि बूर्ज्वा-उत्पादनके सभी सामाजिक सम्बन्धोंकी व्याख्या की जाय।' भूमिकी लगान पूँजीके लाभकी प्रचलित दर और पूँजीके सूदको लेते हुए उत्पादनके व्ययके काट देनेके बाद कृषिकी उपजका अतिरिक्त मूल्य निश्चित सामाजिक सम्बन्धोंके बीच आरम्भ हुआ और वह केवल उन्हीं निश्चित सामाजिक सम्बन्धोंके भीतर ही आरम्भ हो सकता था। खेतकी लगान बूर्ज्वा रूपमें जमींदारी है, अर्थात् बूर्ज्वा उत्पादनकी स्थितियोंके अधीन सामन्ती सम्पत्ति है।

अन्तमें मार्क्स मजूर-संघों और हड़तालोंके ऐतिहासिक महत्त्वको सिद्ध करते हैं, जिन्हें कि प्रूधों माननेसे इन्कार करता है। बूर्ज्वा अर्थशास्त्री और समाजवादी भी यद्यपि भिन्न-भिन्न कारणोंसे मजूर-संघों और हड़तालों जैसे हथियारोंको इस्तेमाल करनेका विरोध करते हैं, लेकिन मजूर-संघ और हड़तालें बड़े पैमानेके उद्योगके विकासके साथ-साथ और समानान्तर अवश्य आगे बढ़ती रहेंगी।

होड़के कारण अपने हितोंमे बिलगाव रखते भी, सभी मजदूरोंको अपनी मजदूरी कायम रखना एक सा जरूरी है; जिसपर, कोई भी चोट पहुँचनेपर उन सबके भीतर प्रतिरोधकी भावना पैदा होती है। इसके कारण वह अपनी मजूर-सभाओंमे सगठित होते हैं; जो भावी संघर्षके लिए उपयोगी सभी गुणोंको अपने भीतर रखती है, ठीक उसी तरह, जिस तरह कि सामन्ती राजाओं और ठाकुरोंके विरुद्ध पूँजीवादियों (बूर्ज्वाजी) ने एक वर्गके तौरपर अपनेको संगठित किया था और जिसके बलपर उन्होंने सामन्तवादी समाजको पूँजीवादी बूर्ज्वा समाजमे रूपान्तरित किया। बूर्ज्वाजी और सर्वहाराके बीचका विरोध एक वर्गका दूसरे वर्गके साथका संघर्ष है—ऐसा संघर्ष, जो कि अपने चरम उत्कर्षपर पहुँचकर पूर्ण क्रान्तिका रूप लेगा। सामाजिक आन्दोलन अपनेसे राजनीतिक आन्दोलनको अलग नहीं कर सकता, क्योंकि कोई भी ऐसा राजनीतिक आन्दोलन नहीं है, जो कि साथ ही साथ सामाजिक आन्दोलन न हो। राजनीतिक आन्दोलनके परिणामस्वरूप पुरानी सामाजिक व्यवस्था टूटती है, यह आज हम भारतवर्षकी रियासतोंमें देख रहे हैं, जहाँ सामन्तवादी स्वार्थोंको—जागीरोंके निरंकुश शासन, विलास—को उठाकर अब सेठोंकी सरकार अपना आधिपत्य कायम कर रही है, जिसके फल-स्वरूप सामन्तोंका ही रूपरंग नहीं खतम हो रहा है, बल्कि उनके पीछे जीनेवाले लाखों लग्गू-भग्गुओंमे जबर्दस्त सामाजिक परिवर्त्तन हो रहा है। रानियाँ और ठकुरानियाँ अब पुराने विचारोंको रखते भी पुराने जीवनको चालू नहीं रख सकतीं। एक समयके परमस्वतन्त्र अन्नदाता अब ग्राम पंचायतोंके सरपंच बनकर दूसरे पचोंके साथ दरियोंपर बैठ रहे हैं। मार्क्सने बतलाया कि उसी समाजका सामाजिक विकास राजनीतिक क्रान्ति नहीं रहेगा, जिसमें वर्गपद नहीं है। जब तक वर्गहीन समाज आ उपस्थित नहीं होता, तब तक सभी आम सामाजिक परिवर्त्तनोंके समय सामाजिक साइंसका नारा होगा—'विजय या मृत्यु। खूनी युद्ध या कुछ नहीं। यही समस्याका निर्दय रूप है।' मार्क्सने जार्जसैंडके इन शब्दोंको उद्धृत करते हुए प्रूधोंके उत्तरको समाप्त किया।

मार्क्सने इस पुस्तकमें अनेक दृष्टियोंसे ऐतिहासिक भौतिकवादकी विवे-चना और विकास किया और साथ ही वह जर्मन-दर्शनकी भी खबर लेते

हुये हेगेल तक पहुँचकर फ्वारवाखसे आगे बढ़ गये। उन्होंने बतलाया कि हेगेलीय सम्प्रदाय अब निश्चय ही दिवालिया बन गया है। फ्वारवाखके दर्शनमें 'शक्तिदायक सिद्धान्त' के अभावकी उन्होंने फिर शिकायत की।

मार्क्सने अपने इस ग्रंथमें यह बतलाया कि हम उक्त निष्कर्षपर 'शुद्ध चिन्तन' द्वारा नहीं पहुँचते (बल्कि धर्मकीर्त्तिके शब्दोंमें 'यदिदं स्वयमर्थानां रोचते तत्र के वयम्'—(जब पदार्थों और वास्तविकताका निष्ठुर फैसला यही है, तो हम उससे इन्कार करनेवाले कौन?) इस प्रकार मार्क्सने भौतिकवादको ऐतिहासिक द्वन्द्वात्मक शैली प्रदान की, और साथ ही एक 'शक्तिदायक सिद्धान्त' को भी जो कि समाजकी केवल व्याख्या कर छुट्टी नहीं ले लेता, बल्कि सर्वहाराकी नई शक्ति द्वारा उसके रूपांतरित करनेका रास्ता दिखलाता है।

४ 'ड्वाशे ब्रूसेलेर जाइटुङ्ग' (१८४७ ई०)

अपने इस महत्वपूर्ण ग्रन्थको प्रकाशित करनेमें मार्क्सको कम कठिनाइयोंका सामना नहीं करना पड़ा। ब्रूशेल्स और पेरिस दोनोंमें किसी प्रकाशकके न तैयार होनेपर छपाईका दाम उन्हें अपनी पाकिटसे देना पड़ा। १८४७ ई० की गर्मियों (वर्षा) में जब पुस्तक प्रकाशित हुई, तब 'ड्वाशे ब्रूसेलेर जाइटुङ्ग' नामका एक पत्र भी निकाला, जिसके द्वारा वह अपने विचारोंको लोगोंके सामने रख सकते थे। १८४७ ई० के आरम्भमें अडेलवेर्ट फान-बोर्नस्टेटके सम्पादकत्वमें यह पत्र सप्ताहमें दो बार निकलने लगा। बोर्नस्टेट पहले पेरिसमें 'फोरवार्ड्स' का सम्पादन करता था और बाहरसे उसका रूप चाहे राजनीतिक निर्वासितका था, लेकिन वह आस्ट्रिया और प्रशिया दोनोंकी सरकारोंके लिए खुफियाका काम करता था, जिसका पता बहुत पीछे बर्लिन और वीनाके अभिलेख-संग्रहोंसे लगा, यद्यपि अभी भी वह स्पष्ट नहीं हो सका, कि ब्रुशेल्समें रहते हुए भी वह इस कामको कर रहा था या नहीं। ब्रुशेल्समें रहनेवाले प्रशियाके राजदूतने उसके पत्रकी निन्दा बेल्जियम सरकारसे की, इससे कमसे कम इस कालमें उसके खुफिया होनेमें सन्देह पैदा हो जाता है। लेकिन यह लोगोंकी आँखोंमें धूल झोंकनेके लिए भी हो सकता था। लोगोंको सन्देह था, पर जो उपयोगी काम

वह उस वक्त कर रहा था, उसके कारण मार्क्स इस सन्देहको महत्व नहीं देता था। इस पत्रमें मार्क्स और एंगेल्सके कई महत्वपूर्ण लेख प्रकाशित होते रहे। भारतमें भी हिन्दू या मुसलमान समाजवादके गीत गानेवालोका अभाव नही है। उनका यह प्रयत्न समाजवादके हित नहीं, अहितके लिए ही जाने या अनजाने होता है। कोलोदसे निकलनेवाले 'राइनिशर व्योवाख्तेर' पत्रने भी ईसाई समाजवादका गुन गाते हुये साम्यवाद (कम्युनिज्म) को अनावश्यक बतलाया था, जिसका जवाब देते हुए मार्क्सने लिखा था—'ईसाइयतके सामाजिक सिद्धान्तोंके प्रयोग के लिए अठारह सौ वर्ष मिले थे, जिनमें उन्हें विकसित किया जा सकता था, अब उन्हें प्रशियन धार्मिक-कमिश्नरोंके हाथों आगे विकसित होनेकी आवश्यकता नहीं है। ईसाइयत (हिन्दू धर्म और इस्लामको भी ले लीजिये) के सामाजिक सिद्धान्त पुराने युगमे दास-प्रथाको उचित बतलाते थे, मध्ययुगमे वह किसानोंकी अर्धदासताकी प्रशसा करते थे और आवश्यकता पड़नेपर आज भी वह सर्वहाराके उत्पीड़नको उचित कहनेके लिये बिल्कुल तैयार हैं।...ईसाइयतके सामाजिक सिद्धान्त शासक और उत्पीड़ित वर्गको कायम रहना आवश्यक बतलाते हैं, और उत्पीड़ित वर्गको वह जो कुछ दे सकते हैं वह यही कि शासक वर्गको उनके प्रति दया दिखलानी चाहिये। ईसाइयतके सामाजिक सिद्धान्त सभी पापोंकी क्षतिपूर्तिको स्वर्गराज्यमे स्थानातरित करते हैं, और इस प्रकार पृथ्वीपर इन पापोंके बने रहनेको उचित बतलाते है। ईसाइयतके सामाजिक सिद्धान्त घोषित करते हैं, कि उत्पीड़ितोंके विरुद्ध उत्पीड़कोंके सारे आततायी कृत्य या तो मूल या किसी दूसरे पापके उचित दड हैं, या ईश्वर अपनी अगम बुद्धिसे वैसा दुःख देना पसन्द करता है। ईसाइयतके सामाजिक सिद्धान्त कायरता, कमीनेपन, त्याग, आत्मसमर्पण और वशंवदता—संक्षेपमे आततायीके सभी गुणोंका उपदेश करते हैं, लेकिन सर्वहारा आततायीके तौरपर अपने साथ व्यवहार होने देनेके लिए तैयार नहीं हैं, और उसे अपनी राजकी रोटीसे भी अधिक साहस, आत्म-विश्वास, स्वाभिमान और स्वतन्त्रताकी आवश्यकता है। ईसाइयतका सामाजिक सिद्धान्त वचना और पाखण्डसे भरे हुए हैं, जब कि सर्वहारा क्रान्तिकारी है।'

अध्याय ८

कम्युनिस्ट लीग (१८४७-४८ ई०)

१८४७ ई० में ब्रुशेल्समें कम्युनिस्टोंकी संख्या काफी हो गई थी, यद्यपि यह कहनेकी आवश्यकता नहीं, कि मार्क्स और एंगेल्सकी तुलनामें वहाँका कोई नेता नहीं आ सकता था। मोजेज हेस, और विलहेल्म वोल्फ इस समय वहीं रहते थे और उनके लेख भी "ड्वाशे ब्रुसेलेर जाइटुंग" में निकला करते थे। हेस अपने पुराने दर्शनके जालसे बाहर नहीं निकल पाया था, और "कम्युनिस्ट घोषणा पत्र" के निकलनेके समय तक वह मार्क्ससे बिल्कुल दूर हो गया था। विलहेल्म वोल्फ १८४६ के वसन्तमें ब्रुशेल्स आया। इस प्रकार उसकी मार्क्स-एंगेल्ससे मित्रता बहुत पीछे शुरू हुई, लेकिन वह उसके मरनेके समय तक वैसी ही बनी रही। वोल्फ स्वतंत्र-चेता नहीं था, लेकिन लोकप्रिय शैलीमें लिखनेवाला वह एक सिद्धहस्त लेखक था। वह सिलेसियाके किसानोंमें पैदा हुआ था, और बड़ी कठिनाइयोंसे संघर्ष करते युनिवर्सिटी में पहुँचा था, जहाँ उसे अपने वर्गके उत्पीड़कोंके प्रति अपार घृणा पैदा हो गई, जिसमें महान् विचारकों और कवियोंकी कृतियाँ भी सम्मिलित थीं। कितने ही वर्षों तक वह सिलेसियाके एक गढ़ीसे दूसरी गढ़ीमें घसीटा जाता रहा। फिर वह किसीके यहाँ घरेलू अध्यापक बन गया, लेकिन उस समय भी वह नौकरशाही तथा सेन्सरके खिलाफ छिट-फुट संघर्ष करता रहा। अन्तमें जब उसे फँसाकर प्रशियाके जेलमें सड़नेकी नौबत आई, तो वह देश छोड़नेके लिये मजबूर हुआ। ब्रेस्ला (सिलेसिया) में रहते समय लासलके साथ उसकी मित्रता हो गई थी। वोल्फ बड़े सुन्दर स्वभावका पुरुष था। उसे कोई भी प्रलोभन नहीं था, वह आजीवन एक निःस्वार्थ निर्भीक क्रांतिकारी योद्धा रहा।

ब्रुशेल्समें मार्क्स और एंगेल्सकी मंडलीमें फर्डिनेंड वोल्फ भी था, यद्यपि उसके साथ दूसरे वोल्फ जैसी मार्क्सकी, घनिष्ठता नहीं थी। इसी तरह एर्न्स्ट

ड्रोके, जार्ज वीर्थ भी थे। वीर्थ एक वास्तविक कवि था। वह तरुणाईमे ही मर गया। उसके गीतोंको किसीने जमा नही किया, जिनमें लड़ाकू सर्वहारा की आत्मा बोल रही थी। ब्रुसेल्स पूँजीवादी बेल्जियमकी राजधानी थी, जहाँका राजतन्त्र भी बूर्ज्वा था। इस वक्त अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध स्थापित करनेके लिये युरोपमे वह सबसे उपयुक्त स्थान था, क्योंकि पैरिसमें प्रतिक्रियावादने अपना आधिपत्य जमा रक्खा था। बेल्जियमकी १८३० ई० वाली क्रांतिमे भाग लेने-वालोंके साथ मार्क्स और एंगेल्सका अच्छा सम्बन्ध था। जर्मनीमें खास कोलोन में भी मार्क्सके नये और पुराने मित्र काम कर रहे थे। पेरिसमें एंगेल्सने जनतान्त्रिक समाजवादी पार्टीसे, विशेषकर उसके साहित्यकार लुई ब्लाक और फर्दिनान्द फ्लोंकोनसे सम्बन्ध स्थापित किया था—फ्लोकोन पार्टीके मुखपत्र "रिफार्म" (सुधार) का सम्पादक था। इगलैडके चार्टिस्ट-आन्दोलनके कार्यकर्त्ताके जुलियन हर्नें (नार्दन स्टार सम्पादक) और एर्नेस्ट जान्स से उनका घनिष्ठ सम्बन्ध था।

१. लीग का काम

जनवरी १८४७ ई० मे कम्युनिस्ट लीगने एक और महत्वपूर्ण कदम आगे बढाया, जब कि उसने बिखरे हुये लोगो और संगठनोंको अधिक सुव्यवस्थित करनेका प्रयत्न किया। "न्यायी लीग" के बारेमें हम पहले बतला चुके हैं, जिसकी नीतिको मार्क्स पसन्द नही करते थे। उन्होंने घटनाओंके दस वर्ष बाद "न्यायी लीग" के बारेमें कहा था : "एंग्लो-फ्रेंच समाजवाद तथा जर्मन-दर्शन की माजून (सम्मिश्रण) के खिलाफ हमने कितने ही छपे या लिथोग्राफ किये पम्फ्लेटों को निकालकर लीगकी नीतिकी निष्ठुर आलोचना की। और, उसकी जगह एकमात्र स्थायी आधारके तौरपर बूर्ज्वा आर्थिक ढाँचेके भीतर वैज्ञानिक अन्तर्दृष्टि रखते लोगोके लिये उसकी सुगम शैलीमे व्याख्या की और यह समझाया, कि उटोपियन व्यवस्थाके लिये काम करनेकी आवश्यकता नहीं है, बल्कि हमारी आँखोंके सामने सामाजिक परिवर्त्तनकी जो प्रक्रिया हो रही है, उसीमें सजग होकर हाथ बँटाना चाहिये।"

जनवरी १८४७ ई० में लीगने अपनी केन्द्रीय कमेटीके एक सदस्य घड़ी-साज जोजेफ मालको ब्रुशेल्स भेजकर मार्क्स और एंगेल्ससे प्रार्थना की, कि आप हमारे संगठनमें शामिल हों, क्योंकि हम आपके विचारोंको स्वीकार करना चाहते हैं। मार्क्सने इसे उन्हीं पम्फलेटोंका प्रभाव समझा था, जिनमेंसे आज कोई भी कालकी गतिसे बचकर हमारे पास नहीं पहुँचा। सरल भाषा और शैलीमें लिखे होनेसे मार्क्सके इन पम्फ्लेटोंका महत्व उसी समय नहीं, बल्कि आजके लिये भी हो सकता था। "न्यायी लीग" की शाखायें इंगलैंड, फ्रांस, जर्मनी आदि कई देशोंमें थीं, जिनमें लन्दनकी लीग ज्यादा सजीव और सचेष्ट थी। जूरिच और पेरिसके वातावरणमें उसको उतनी सफलता नहीं मिली थी। "न्यायी लीग" की स्थापना यद्यपि भिन्न-भिन्न देशोंमें बिखरे जर्मन कमकरोंके लिये हुई थी, लेकिन लन्दनमें इसने और जातियोंके कमकरोंसे मिलकर अन्त-राष्ट्रीय रूप ले लिया था। सभी देशोंके राजनीतिक निर्वासितोंसे इसका सम्बन्ध था। शापर, बावर और मोल जैसे पुराने नेताओंके अतिरिक्त सूक्ष्म चित्रकार कार्ल पफांडर हाइलब्रोन और थुरिंगिया का दर्जी जार्ज एकारियस भी इसमें शामिल थे।

मोलने लीगकी ओर अपने उद्देश्योंकी घोषणा तैयार करनेके लिये ब्रुशेल्स जाकर मार्क्सको और पीछे पेरिसमें जा एंगेल्सको अधिकार दिया। यह अधिकार २० जनवरी १८४७ में शापेरके हाथों लिखा गया था। इसमें मोलको सभी महत्वपूर्ण विषयोंपर सविस्तार सूचना देने तथा लीगकी स्थिति बतलानेके बारेमें कहा गया था, लेकिन मोल वह नहीं कर सका। उसने मार्क्ससे यही प्रार्थना की, कि आप लीगमें शामिल हों, और उनके पहलेके आक्षेपोंको हटाते हुये यह सूचित किया, कि लीगकी काँग्रेस मार्क्स और एंगेल्सके आलोचनात्मक विचारों को स्वीकार करने और उसे लीगके सिद्धान्तोंके तौर पर एक सार्वजनिक घोषणा-के रूपमें सम्मिलित करनेके ख्यालसे लन्दनमें होने जा रही है। उसने मार्क्स और एंगेल्सको जोर देकर लीगमें शामिल होनेके लिये कहा, कि इसीसे पुराने विचारोंको हटाया जा सकता है। लीगकी प्रार्थना स्वीकार कर मार्क्स और एंगेल्स उसमें शामिल हो गये। १८४७ ई० के ग्रीष्ममें लीगकी जो काँग्रेस हुई वह

गुप्त रीतिसे काम करनेके लिये मजबूर एक जनतान्त्रिक संगठनसे अधिक कुछ नहीं थी। यद्यपि उसने सभी तरह के षड्यंत्रोंकी भावना छोड़ दिया था। लीगका संगठन कमूनों (संगतों) पर आधारित था, जो कमसे कम तीन और अधिकसे अधिक दस सदस्योंके चक्करों, मुख्य-चक्करो, केन्द्रीय नेतृत्व और कॉंग्रेसके रूपमें संगठित थी। इसका लक्ष्य था बूर्ज्वाजीको खतम करना, सर्वहारा के शासनको स्थापित करना, वर्ग-विरोधोंपर आधारित पुराने समाजको नष्ट करना और बिना वर्ग और बिना वैयक्तिक सम्पत्तिवाले एक नये समाजका निर्माण करना।

अबसे "न्यायी" लीगका नाम कम्युनिस्ट लीग हो गया। उसके नियमों-उप-नियमोंको प्रत्येक कम्यूनके पास पहिले वाद-विवादके लिये भेजा गया, जिसका अन्तिम निर्णय द्वितीय कॉंग्रेसके ऊपर छोड़ा गया, जो कि उसी सालके अन्तमें बुलाई जानेवाली थी, और जिसे ही लीगके नये प्रोग्रामपर विचार करना था। प्रथम काग्रेसमे मार्क्स मौजूद नहीं थे, लेकिन पेरिसके कम्युनिस्टोंके प्रतिनिधिके तौरपर एंगेल्स और बुशेल्सके प्रतिनिधिके तौरपर विलहेल्म वोल्फ उसमें शामिल हुये थे।

लीगने सबसे पहले बुशेल्समें जर्मन कमकरोंकी शिक्षण सभायें कायम कीं, क्योंकि इसके द्वारा खुली तौरसे प्रचार करने का अवसर मिलता और साथ ही वहाँसे कामके लिये आगे कार्यकर्ता मिलते। इन सभाओंके काम करनेका ढंग था: हफ्तेमे एक दिन वाद-विवादके लिये था, और दूसरा दिन सामाजिक मेल-मिलापके लिये, जिसमें गायन, कविता-पाठ आदि होते थे। सभाओंने सब जगह पुस्तकालय खोले थे, जहाँपर कि कमकरों कम्युनिज्म (साम्यवाद) के प्रारंभिक सिद्धान्तोंकी शिक्षा भी दी जाती थी।

इसी योजनाके अनुसार उस साल अगस्तके अन्तमें ब्रुशेल्समें जर्मन-कमकर सभा कायम की गई। मोजेज हेस और वालौ इसके दो अध्यक्ष थे और विल. हैल्म ओल्फ सेक्रेटरी। जल्दी ही इसके एक सौसे अधिक सदस्य हो गये और बुध और शनिवारकी शामको उसकी बैठकें हुआ करतीं: बुधको सर्वहाराके हित सम्बन्धी महत्वपूर्ण प्रश्नोंपर बहस होती और शनिवारको वोल्फ सप्ताहकी घट-

नाओंकी राजनीतिक आलोचना करता। २७ सितम्बर (१८४७ ई०) को सभा ने दूसरे देशोंके मजदूरोंके साथ अपने भाईचारेके भावोंको प्रदर्शित करनेके लिये एक अन्तर्राष्ट्रीय दावत दी। उस समय सार्वजनिक सभाओंमें पुलिसके हस्तक्षेपका डर रहता था, जिससे बचनेके लिये इस तरहकी दावतें दी जाती थीं। लेकिन, उक्त दावतका विशेष उद्देश्य था मार्क्स और एंगेल्सके प्रभावको कम करना। उसी समय एंगेल्स ब्रुशेल्समें मौजूद थे, जिसके कारण दावतके संगठकोंको अपने उद्देश्यमें सफलता नहीं मिली। एंगेल्सको सभाने अपने दो उप-सभापतियोंमेंसे एक निर्वाचित किया। १२२ अतिथि इस दावतमें शामिल हुये थे, जो जातिके तौरपर बेल्जियम, जर्मन, स्विस, फ्रेंच, पोल, इतालियन और एक रूसी भी था। दावतमें कितने ही भाषण हुये और निश्चय हुआ कि लन्दनके बिरादरी जनतांत्रिकों (Fraternal Democrats) की तरह बेल्जियम सुधार-मित्र-संघ बनाया जाय। संगठनके लिये जो कमीशन नियुक्त हुआ, उसमें एंगेल्स भी चुने गये, लेकिन उन्हें जल्दी ही ब्रुशेल्स छोड़ना पड़ा, जिसपर उन्होंने योट्रेंडसे सिफारिश की, कि मेरी जगह मार्क्सको ले लिया जाय और यह भी बतलाया कि अगर २७ सितम्बरकी सभामें मार्क्स मौजूद होते, तो निस्सन्देह उन्हें निर्वाचित किया गया होता : "इसलिये ऐसा करनेका मतलब यह नहीं होगा, कि कमीशनमें मेरा स्थान मार्क्स ले रहे हैं, बल्कि इसके विरुद्ध असली बात यह है, कि सभामें वह उनका प्रतिनिधित्वकर रहा था।" अन्तमें जब सार्वदेशिक एकताके लिये जनतांत्रिक सभा ७-१५ नवम्बरको बनाई गई, तो इम्बेर्ट और मार्क्स उप-सभापति चुने गये, मेलिनेट आनरेरी सभापति और जोट्रेंड कार्यकारी सभापति। सभाकी नियमावलीपर बेलजियन, जर्मन, फ्रेंच और पोल सब मिलाकर करीब ६० आदमियोंके हस्ताक्षर थे। जर्मन हस्ताक्षर करनेवालोंमें मार्क्स मोजेज हेस, जार्ज वीर्थ, दोनों वोल्फ, स्टिफन बोर्न और बोर्नस्टेट भी थे।

नई सभा (एसोसियेशन) ने सबसे पहली जो बड़ी मीटिंग २६ नवम्बर (१८४७ ई०) को पोल-क्रांतिके वार्षिकोत्सव मनानेके लिये की। जर्मन सदस्यों की ओरसे फन बोर्नने भाषण दिया, जिसपर लोगोंने बड़ी हर्षध्वनि की। मार्क्स उस समय वहाँ मौजूद नहीं थे, वह बिरादरी जनतांत्रिक सभाके प्रतिनिधिके

तौरपर लन्दन गये हुये थे, जहाँपर भी पोल-क्राति मनानेके लिये ही सभा हो रही थी। इस समय जो व्याख्यान उन्होंने दिया था, उसमे उन्होंने सर्वहाराकी बात और क्रातिकारी स्वरमें कहा था : "प्राचीन पोलेंड लुप्त हो गया और हम उसके पुनः लौट आनेकी इच्छा नही रखते। किन्तु यह केवल पुराने पोलैंडकी ही बात नहीं, बल्कि पुराने जर्मनी, पुराने फ्रास और पुराने इगलैड वस्तुतः सभी पुराने लुप्त समाजके लिये यही बात है। तो भी पुराने समाजका लुप्त होना उनके लिये कोई अर्थ नहीं रखता, जिनका उसके साथ कुछ लुप्त नही होता, और सभी देशोंके लोगोंकी बहुसख्याकी यही स्थिति है। मार्क्सने इस व्याख्यान-में बतलाया, कि बूर्ज्वाजीके ऊपर सर्वहाराकी विजय होनेपर सभी उत्पीड़ित जातियोको स्वतत्रता मिलेगी। अंग्रेज सर्वहाराकी अग्रेज बूर्ज्वाजीपर विजय सभी उत्पीडकोके ऊपर सभी उत्पीडितोकी विजय होगी। पोलेड पोलेण्डमे मुक्त नहीं होगा, बल्कि इगलेडमे। अगर चार्टिस्ट अपने देशमें अपने शत्रुओंको हरा सके, तो वह सारे बूर्ज्वा समाजको हरायेंगे।

जो अभिभाषण मार्क्सने बिरादराना जनतात्रिकोंके हाथमें दिया था, उसका स्वागत भी उसी तरह हुआ था : "आपके प्रतिनिधि, हमारे मित्र और भाई मार्क्स आपको बतलायेंगे, कि हमने पढे जानेपर उसका कितने उत्साहके साथ स्वागत किया। सभी आँखे आनन्दसे चमकने लगीं, सभी कठ स्वागतके लिये बोल उठे, और आपके प्रतिनिधिकी ओर बिरादराना तौरसे सभी हाथ आगे बढ़े।...राजाओंके षड्यत्रोंका जवाब हमें लोगोके षड्यत्र द्वारा देना होगा। .. हमारा दृढ विश्वास है, कि अब हमे वास्तविक जनता, सर्वहाराको सम्बोधित करना है—उन मनुष्योंको जो कि रात-दिन वर्तमान सामाजिक व्यवस्थाके भार-के नीचे दबे खून-पसीना एक कर रहे हैं—अगर हम आम भ्रातृत्व पैदा करना चाहते हैं। . .हम जल्दी ही देखेंगे, बल्कि इसी वक्त देख रहे हैं, कि भाईचारेके झडाबरदार, मानवजातिके मनोनीत वीर इसी सडक द्वारा झोपडो, मिस्त्रीखानो, हलों, अहरेनो और फैक्टरियोंसे आ रहे हैं। इसके बाद बिरादराना जनतात्रिकोंने सितम्बर १८४८ में ब्रुशेल्समे एक आम जनतात्रिक काग्रेस करनेका प्रस्ताव किया —सितम्बर १८४७ में वहांपर पूँजीपतियोने अपनी मुक्त व्यापार काग्रेस की थी।

इस सभाके अतिरिक्त मार्क्सके लन्दन जानेका एक और भी उद्देश्य था। जिस हालमें पौल-क्रांतिका वार्षिकोत्सव मनाया गया था, उसीमें कम्युनिस्ट-कमकर-शिक्षा-लीगका हेडक्वार्टर था, जिसे १८४० ई० में शापेर, बावर, मोलने स्थापित किया था। पोल-क्रांति वार्षिकोत्सवकी बैठकके बाद इसी जगह कम्युनिस्ट लीगकी दूसरी कांग्रेस हुई, जिसमें नई नियमावलोंको निश्चित तौरसे स्वीकार करके नये प्रोग्रामपर बहस करनी थी। एंगेल्स भी इस कांग्रेसमें मौजूद थे। २७ नवम्बरको उन्होंने पैरिस छोड़ा और बैल्जियमके बन्दरगाह ओस्टेंडमें मार्क्ससे मिलकर दोनों साथ खाड़ी पार कर इंगलैंड गये। कांग्रेसमें दस दिनों तक वाद-विवाद और विचार-विनिमय होता रहा। इसके बाद मार्क्स और एंगेल्सको कम्युनिज्म (साम्यवाद) के मौलिक सिद्धान्तोंको एक सार्वजनिक घोषणा पत्रके तौरपर तैयार करनेका काम सौंपा गया।

२. कम्युनिस्ट घोषणा पत्र

कम्युनिस्ट लीग की द्वितीय कांग्रेसने इस प्रकार उस अमर घोषणाको तैयार करने का निश्चय किया, जो सर्वहाराकी अन्तिम विजय तक पथ-प्रदर्शनका काम देता रहा और रहेगा, तथा साथ ही जिसमें भविष्यके नव-निर्माणका मार्ग भी निर्दिष्ट है। दिसम्बरके मध्यमें मार्क्स ब्रुशेल्स लौट आये और एंगेल्स ब्रुशेल्स होते पेरिस चले गये। दोनों ही घोषणा तैयार करनेमें जल्दीका ख्याल नहीं कर रहे थे, उनके पास दूसरे काम भी थे; लेकिन, कम्युनिस्ट लीगकी केन्द्रीय कमेटी देर करनेके लिये तैयार नहीं थी। उसने २४ जनवरी १८४८ को ब्रुशेल्सको जिला कमेटीको कड़ाईके साथ सावधान करते हुये कहा, कि हम नागरिक मार्क्सके खिलाफ कदम उठानेके लिये मजबूर होंगे, यदि उन्होंने कम्युनिस्ट पार्टीके घोषणा पत्रको—जिसे तैयार करनेकी जिम्मेवारी उन्होंने अपने ऊपर ली है—१ फरवरी तक तैयार करके केन्द्रीय कमेटीके हाथमें नहीं दे देते। लेकिन सारी धमकीके बाद भी घोषणापत्र एक महीनेमें तैयार नहीं हो सका। देर होनेका कारण मार्क्सका स्वभाव हो सकता था, क्योंकि वह किसी कामको आधे दिलसे करना नहीं जानते थे। यह भी हो सकता है, कि एंगेल्स उस समय

उनके पास नहीं थे। लेकिन, उधर लन्दनमें केन्द्रीय कमेटी अधीर हो गई, जब उसने सुना कि मार्क्स बुशेल्समें प्रचारमें बडे जोर-शोरके साथ लगे हुये हैं।

६ जनवरी १८४८ को जनतान्त्रिक सभामें मार्क्सने मुक्त व्यापारपर एक व्याख्यान दिया। इस व्याख्यानको वह ब्रुसेल्सकी मुक्त-व्यापार-कांग्रेसमें देना चाहते थे, लेकिन उनको बोलनेका अवसर नही दिया गया। उन्होंने मुक्त व्यापारियोंकी धोखे-धडीका पर्दाफाश किया, जो कि कमकरोंके हितकी बात मौके-बेमौके किया करते हैं। मार्क्सने बतलाया कि मुक्त व्यापार कमकरोंकी नही, बल्कि पूँजीकी मुक्ति है, जो कि राष्ट्रोंकी इस सीमाओंको तोड फेंकना चाहती है, क्योंकि वह उसकी शक्तियोंको स्वेच्छापूर्वक काम करनेमें बाधा देती हैं। मुक्त व्यापार राष्ट्रोंका ध्वंस करता है, और बूर्ज्वाजी तथा सर्वहारा (प्रोलैतारियत) के बीचके विरोधको और तीव्र बनाता है, और इस प्रकार वह सामाजिक क्रांतिकी गतिको तेज करता है। इस क्रांतिकारी अर्थमें मार्क्स मुक्त व्यापारके पक्षमे थे। एंगेल्स-की तरह मार्क्स रक्षित व्यापारके विरुद्ध मुक्त व्यापारके प्रश्नको शुद्ध क्रांतिकारी दृष्टिसे देखते थे। मार्क्सके इस भाषणका जनतान्त्रिक सभाके सदस्योंने बडा स्वागत किया और उन्होंने उसे फ्रेंच और फ्लैमिश भाषाओंमें अपनी ओरसे छापनेका निश्चय किया।

उक्त व्याख्यानसे भी अधिक तथा सदाके महत्वका एक व्याख्यान, उसी समय जर्मन-कमकर-सभामें मार्क्सने दिया था, जिसमें मजूरी-श्रम और पूँजीकी व्याख्या की थी। इस भाषणमें मार्क्सने बतलाया कि मजूरी अपने द्वारा उत्पा-दित मालमें मजूरोंका हिस्सा नहीं है, बल्कि वह उस वक्त भी वर्तमान मालोंका वह हिस्सा है, जिससे कि पूँजीपति उत्पादक श्रम-शक्तिकी कुछ मात्राको खरी-दता है। उन्होने समझाया, कि श्रम-शक्तिका दाम दूसरे पण्योंके दामकी तरह इस बातपर निर्भर करता है, कि उसके उत्पादनमें कितना खर्च हुआ। मामूली श्रम-शक्तिके उत्पादनका खर्च है : अपने अस्तित्वको कायम रखने तथा अपनी जाति (सन्तान) को जारी रखनेमें समर्थ होनेके लिये आवश्यक साधनोंको कमकरोंके लिये प्रस्तुत करनेपर जो खर्च आता है। इन्हीं खर्चोंका दाम है मजूरी। दूसरे सभी पण्यों (सौदों) के दामोंकी तरह यह दाम भी बाजारकी

तरह प्रतियोगिताके उतार-चढ़ावके अनुसार खर्चसे कभी ऊँचा कभी नीचा होता है। लेकिन इन उतार-चढ़ावोंकी सीमाके भीतर रहते यह प्रायः निम्नतम मजूरी के करीब होता है।

इसके बाद मार्क्सने पूँजीको लिया। बूर्ज्वा अर्थशास्त्री कहते हैं, कि पूँजी संचित-श्रमका ही नाम है। मार्क्सने पूछा : "एक (हब्शी) दास क्या है? रंगवाली जातिका एक मानव। एक व्याख्या उतनी ही अच्छी है, जितनी दूसरी। नीग्रो एक नीग्रो है, लेकिन कुछ परिस्थितियोंमें वह दास बन सकता है। कपास कातनेवाली मशीन कपास कातने के लिये एक मशीन है, वह निश्चित स्थितियों में ही पूँजीका रूप लेती है। बिना उन परिस्थितियोंके वह उसी तरह पूँजी नहीं बन सकती, जिस तरह कि सोना सिक्का या चीनी-चीनीका दाम।" "पूँजी एक सामाजिक उत्पादक साधन, बूर्ज्वा समाजका एक उत्पादक सम्बन्ध है। सौदेकी एक मात्रा, विनिमय मूल्यकी मात्राका एक परिमाण पूँजीका रूप लेता है, जबकि वह स्वतंत्र सामाजिक शक्तिके रूपमें प्रकट होता है। अर्थात् जब समाजके एक भागके तौरपर प्रकट होता है, और सीधे सजीव श्रम-शक्तिके साथ विनिमय द्वारा अपनेको बढ़ाता है।" पूँजीके अस्तित्वके लिये एक ऐसे वर्गका वहाँ मौजूद होना आवश्यक है, जिसके पास श्रम (मेहनत) करनेकी क्षमताके सिवा और कोई चीज न हो। सीधे सजीव श्रम-शक्तिके ऊपर संचित, अतीत, वहिस्थापित श्रमकी शक्ति पहले पहल पूँजीके रूपमें श्रमको इकट्ठा करती है। पूँजी इसे नहीं कहते, कि संचित श्रम आगे और उत्पादन करनेके लिये साधनके तौरपर सजीव श्रम-शक्तिकी सेवा-सहायता करता है। पूँजी इस रूपमें है, कि संचित श्रमके विनिमय-मूल्यको कायम रखने और बढ़ानेके साधनके रूपमें उसकी सजीव श्रम-शक्ति सेवा-सहायता करती है। पूँजी और श्रम-शक्ति एक दूसरेपर अवलंबित, एक दूसरेको परस्पर उत्पादित करती है।

मार्क्सने पूँजीवादी अर्थशास्त्रियोंकी इस बातको भी गलत बतलाया, कि पूँजीके विस्तार और विकासके साथ मजूरोंकी भी हालत बेहतर होती है। उन्होंने कहा कि यह कोई आवश्यक नहीं है, कि पूँजीके साथ मजूरी भी जरूर बढ़े। यह कहना सच नहीं है, कि पूँजी जितनी ही मोटी-तगड़ी होती जायगी, वह

अपने दासको भी उसी तरह खूब खिलाये-पिलायेगी। उत्पादक पूँजीकी वृद्धिसे पूँजीका संचयन और केन्द्रीकरण बढ़ता है। उसके केन्द्रीकरण द्वारा श्रमका और भी विभाजन होता है और भी अधिक मशीनोंका इस्तेमाल बढ़ता है। श्रमका विभाजन जितना ही अधिक होता है, उतना ही अधिक कमकरोंका अपना विशेष कौशल अनावश्यक होकर नष्ट हो जाता है। जब इस विशेष कौशलके स्थानपर श्रमको यह मशीन द्वारा ऐसे रूपमें पेश किया है, जिसमें कि कोई भी आदमी उस कामको आसानीसे कर सकता है, तो इसके कारण कमकरोंमें होड बढ़ जाती है। यह होड और भी जोर पकड़ती है, जब कि श्रम-विभाजन एक मजदूरको पहले तीन मजदूरों जितना काम करने योग्य बना देता है। मशीन इस बातको और अधिक इस परिणामको पैदा करती जाती है। उत्पादक पूँजीकी वृद्धि औद्योगिक पूँजीपतियोंको इसके लिए मजबूर करती है, कि वह और अधिक विकसित यन्त्र-साधनोंसे काम लें। अपने इस काम द्वारा वह छोटे-छोटे उद्योगपतियोंको दिवाला निकालनेके लिए मजबूर कर उन्हें सर्वहारोंकी जमातके भीतर फेंक देते हैं। पूँजीका सचयन जितना ही अधिक बढता जाता है, उतनी ही सूदकी दर गिरती जाती है, जिसके कारण छोटे-छोटे शेयर-होल्डर (भागीदार) अपने मिलनेवाले सूदपर जीवित नहीं रह सकते और वह काम ढूँढनेके लिये उद्योगपतियोंके पास जानेके लिए मजबूर होते हैं। इस प्रकार ये शेयर-होल्डर भी सर्वहाराकी जमातको बढ़ाते हैं।

अन्तमें मार्क्सने बतलाया, कि उत्पादक पूँजी जितनी अधिक बढ़ती है, उतनी ही अपने पैदा किये हुये मालके लिये ऐसा बाजार कायम करनेको मजबूर होती है, जिसकी आवश्यकताओंका उसे पता नहीं। फिर उपज माँगसे आगे बढ जाती है, पूर्ति माँगको मजबूर करनेकी कोशिश करती है, लेकिन जब उसमें सफल नहीं होती, अर्थात् मालकी उपज माँगसे कहीं अधिक हो जाती है, तब अर्थ-संकट (बाजारकी मन्दी) पैदा हो जाता है, जो वह औद्योगिक भूकम्प है, जिसमें अपनी उपजके एक भागकी बलि नहीं, बल्कि स्वय उत्पादक शक्तियोंके भी एक भागकी बलि पाताल लोकके काले देवताओंको चढ़ा व्यापार जगत् अपनेको बचानेकी कोशिश करता है। ये भूकम्प आगे और बार-बार और भयंकर होते

जाते हैं। पूँजी केवल श्रमपर ही जीवन धारण नहीं करती, बल्कि एक सामन्त या बर्बर सरदारकी तरह वह अपने दासोंकी लाशोंको भी अपने साथ कब्रमें घसीट ले जाती है—पूँजीके इस भूकम्पमें बहुतसे कमकर भी बेकार हो भूखे और बरबाद होते हैं। निष्कर्ष निकालते हुये मार्क्सने कहा—'अगर पूँजी वेगके साथ बढ़ती है, तो मजदूरोंके बीचमें होड़ और तेजीके साथ बढ़ती है, अर्थात् मजूरोंके जीवन और काम-काजके साधन अपेक्षाकृत कम हो जाते हैं। तो भी, पूँजीकी तेजीके साथ वृद्धि मजूरी-श्रमके लिये अत्यन्त अनुकूल स्थिति है।

मार्क्सने ब्रुशेल्समें जर्मन मजूरोंके सामने जो व्यवस्था दिया था, उसका अपूर्ण अंश ही हमारे पास तक पहुँचा। लेकिन इससे यह पता लग जाता है, कि मार्क्स किस तरह प्रचार कर रहे थे। उनका व्याख्यान क्षणिक आवेश और उत्साह पैदा करनेके लिए नहीं होता था, बल्कि वह वैज्ञानिक तथ्योंको रखकर हरेक चीजकी तहमें पहुँचनेके लिए पथ-प्रदर्शनका काम देता था। लेकिन मार्क्सके व्याख्यानों और उनके महत्वको समझनेके लिए मार्क्सीय दृष्टिकी आवश्यकता थी, नहीं तो उन्हें आसानीसे अरण्यरोदन कहा जा सकता है।

ऐसी क्रान्तिकारी बकुनिनने पोल-क्रान्तिके वार्षिकोत्सवपर व्याख्यान दिया था, जिसके कारण उसे फ्रांससे निकल जानेका हुकुम हुआ और वह उसी समय ब्रुशेल्स पहुँचा था, जब कि मार्क्सने मजूर-श्रम और पूँजीके ऊपर उक्त कई लेक्चर दिये थे। बकुनिनने २८ दिसम्बर १८४७ को अपने एक रूसी मित्रको लिखा था—'मार्क्स अब भी अपनी उन्हीं पुरानी फजूलकी कार्यवाइयोंमें लगा हुआ है, और उसके द्वारा मजूरोंमेंसे तर्क-बूकनेवाले बनाकर उन्हें खराब कर रहा है। यह वही पुरानी पागलपनका सिद्धान्त छोड़ना और अतुष्ट आत्मतुष्टि है।' बकुनिन पीछे जार-भक्त बना, उसने वह सभी पाप किये, जो कि पतित भूतपूर्व क्रान्तिकारी किया करते हैं। लेकिन अपने इस तरहके विचारोंसे वह मार्क्सके स्थानपर अपने देशका पथ-प्रदर्शक और निर्माता कैसे बन सकता था? उसने हेरवेगको पत्र लिखते हुए मार्क्स और एंगेल्सके ऊपर और भी कठोर वाग्बाण फेंकते हुए कहा था—'संक्षेपमें झूठ और मूर्खता, मूर्खता और झूठ। उनके साथ रहते हुए स्वतन्त्र वायुमंडलमें साँस लेना असम्भव है। मैं उनसे

अलग रहता हूँ और मैंने उन्हें बिल्कुल साफ तौरसे कह दिया है कि मैं तुम्हारे कम्युनिस्ट शिल्पकार समूहमें शामिल नहीं हूँगा, मुझे उससे कुछ लेना-देना नहीं है।'

'कम्युनिस्ट घोषणा-पत्र' जैसी अमर सजीव कृतिके अस्तित्वमें आना जो संक्षेपमें है—मार्क्स और एंगेल्सने ब्रुशेल्समें पहुँचकर 'कमकर शिक्षा लीग' की स्थापना की। फिर ब्रुशेल्ससे उन्होंने जर्मनी, लन्दन, पेरिस और स्वीजर्लेंडके कम्युनिस्ट हलकोंके साथ सम्बन्ध स्थापित किया, जहाँपर उनके और उनके सहायकों द्वारा संचालित 'पत्र-व्यवहार कमेटियाँ' बनाई गईं। इसी सम्बन्धमें मार्क्सने प्रूधोंको भी लिखा था। १८४६ ई० मे केन्द्रीय पत्र-व्यवहार ब्यूरो ब्रुशेल्समे था, जहाँ मार्क्स स्वय उसका नेतृत्व करते थे। पेरिसके ब्यूरोके सञ्चालक एंगेल्स और लन्दनके ब्यूरोके सञ्चालक बावर, शापेर और मोल थे। २० जनवरी १८४३ को मोलने लन्दन पत्र-व्यवहार कमेटीके प्रतिनिधिके तौरपर आकर ब्यूरोके बारेमें रिपोर्ट दी। इसी मुलाकातका परिणाम लन्दनमे एक अन्तर्राष्ट्रीय कॉंग्रेस बुलानेके रूपमें हुआ। इसी काँग्रेसमे कम्युनिस्ट लीग कायम की गई, जिसमे ब्रुशेल्सके सङ्गठनके प्रतिनिधिके तौरपर विलहेल्म वॉल्फ शामिल हुआ था। जैसा कि पहले बतलाया, मार्क्स पहली कॉंग्रेसमें शामिल नहीं थे। वह नवम्बर १८४७ की दूसरी कॉंग्रेसमें भी नहीं उपस्थित हो सके। कम्युनिस्ट लीगकी कॉंग्रेसके निश्चयानुसार कम्युनिस्ट घोषणा-पत्रके तैयार करनेका काम उनको सौंपा गया, जो कि १८४८ के फरवरीके उत्तरार्धमें प्रकाशित हुआ—यह स्मरण रखनेकी बात है, कि पहले दो संस्करणोंमें इस घोषणका नाम 'कम्युनिस्ट पार्टीका घोषणा-पत्र' था। इससे यह मालूम होगा कि यह घोषणा-पत्र यों ही दिमागसे नहीं निकला, बल्कि उसके पहले कम्युनिस्ट सङ्गठन अस्तित्वमे आ चुके थे, जिनके पथ-प्रदर्शनके लिए इसे तैयार करनेकी जरूरत पड़ी।

कम्युनिस्ट घोषणा-पत्रके मसौदेको तैयार करनेमें मार्क्स और एंगेल्सके अतिरिक्त मोजेज हेसने भी हाथ बॅटाया था। प्रारम्भिक मसौदेका रूप कैसा था, इसे मार्क्सको लिखे एंगेल्सके २४ नवम्बर १८४७ (द्वितीय कॉंग्रेससे कुछ ही समय पहले) के पत्रसे मालूम होता है—'विश्वास-स्वीकारके ऊपर जरा सा

विचारो। मैं समझता हूँ कि सिद्धान्त प्रश्नोत्तरीके ढंगको छोड़कर इसे कम्युनिस्ट घोषणा-पत्र कहना अच्छा होगा। चूँकि कुछ इतिहासकी बातें भी इसमें लानी हैं, इसलिए मैं समझता हूँ, इसका वर्तमान रूप ठीक नहीं होगा। जो कुछ मैंने इसके बारेमें किया है, इसे मैं अपने साथ लाया हूँ। यह एक सीधे-सादे वर्णनात्मक ढंगमें है, लेकिन बड़ी बुरी तरहसे सम्पादित है। मैंने अत्यन्त जल्दी-जल्दीमें इसे तैयार किया है।' एंगेल्सने अपने इस पत्रमें यह भी सूचित किया था, कि मैंने मसौदेको पेरिसकी शाखाओंके सामने पेश नहीं किया है। लेकिन मुझे आशा है, कि एक-दो छोटी-मोटी बातोंके सिवा इसे स्वीकार कर लिया जायगा। एंगेल्सने पहला मसौदा पच्चीस प्रश्नों और उनके उत्तरोंके रूपमें तैयार किया। लेकिन, उन्हें प्रश्नोत्तरीका ढंग नहीं पसन्द आया, और चिरस्थायी महत्व देनेके लिये उस शैलीमें करनेका सुझाव रक्खा, जिसमें कि घोषणापत्र हमारे सामने आज मौजूद है। घोषणापत्र एक बिल्कुल स्वतन्त्र और मौलिक कृति है, लेकिन जहाँ तक विचारोंका सम्बन्ध है, उसमें कोई ऐसे विचार नहीं, जिसके ऊपर मार्क्स और एंगेल्सने पहले न लिखा हो। जहाँ तक शैलीका सम्बन्ध है, उसका अन्तिम रूप देनेमें सबसे अधिक हाथ मार्क्सका है, लेकिन जिन समस्याओंका वर्णन इसमें आया है, उसमें एंगेल्सका भी मार्क्ससे कम हाथ नहीं है। जिस समय घोषणापत्र तैयार हुआ वह समय था, जब कि यूरोपीय प्रतिक्रियावादका चरम सबसे बड़ा समर्थक रूस कर रहा था। यह वह समय था, जब कि यूरोपीय सर्वहाराके फाजिल आदमियोंको युक्तराष्ट्र अमेरिका अपने भीतर हजम कर रहा था। अमेरिका और रूस दोनों ही देश यूरोपको कच्चा माल देते थे, और बदलेमें वह यूरोपकी औद्योगिक उपजकी बाजार बने हुए थे। इस प्रकार दोनों ही यूरोपीय सामाजिक व्यवस्थाके उस समय अंग नहीं थे।

कम्युनिस्ट घोषणापत्रमें १८४७ ई० तकके ऐतिहासिक विकासको ही लिया गया था, लेकिन उसमें जो निष्कर्ष निकाले गये हैं, वह सदाके लिए एकसे हैं। 'दुनियाके सर्वहारो, एक हो जाओ।' इस मन्त्रने तबसे न जाने कितनी विजयोंके नारेका रूप लिया।

१८४८ ई० के आरंभमें घोषणापत्र जर्मन मूल और फ्रेंच अनुवादके रूपमें प्रकाशित हुआ। अंग्रेजीमें उसका अनुवाद दो साल बाद १८५० ई० में छपा। प्रथम विश्वयुद्धके समय तुर्की भाषामे जब घोषणा प्रकाशित हुई, तो सुल्तानकी पुलिसने कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एगेल्स नामक राजद्रोहियोंको गिरफ्तार करनेका वारट निकाला था। मानव-इतिहासके सारे राजनीतिक निबन्धोमें यह घोषणा सबसे महान्, सबसे स्पष्ट, सबसे व्यापक अर्थ और प्रेरणावाली कृति है। इसके चारों भागो का साराश है :

(१) पहले भागमे पूँजीपति और सर्वहारा (प्रोलेतारी) इन दोनों वर्गोंके उत्थान और विकासका संक्षिप्त विवरण है। पूँजीपति सामाजिक-सामूहिक रूपसे होते उत्पादनके साधनों—कलकारखानों—का स्वामी है। सर्वहाराके पास उत्पादनके अपने साधन नहीं है। काम करके जीनेके लिये मजदूरी पर अपना श्रम बेचनेके सिवाय उसके वास्ते कोई चारा नहीं है।

दुनियाका लिखित इतिहास वर्ग-संघर्षोंका इतिहास है। दासता तथा सामन्तशाही युगमें उत्पीडक और उत्पीडितके बीच ये संघर्ष, कभी छिपे, कभी प्रकट चलते रहे। इनका अन्त या तो समाजके क्रान्तिकारी पुनर्निर्माणके रूपमे हुआ, या दोनो प्रतिद्वन्द्वी वर्गोंके नाशके साथ।

अमेरिकाके आविष्कार, एसियाके द्वारके खुलने और इनके साथ संसारके बाजारके विस्तारसे पूँजीवादका प्रादुर्भाव हुआ। इसके बाद बाजारकी माँगोको पूरा करने और अधिकसे अधिक लाभ उठाने के लिये भापसे चलनेवाले कल-कारखानो, यातायातके लिये भापकी रेलों और जहाजोका प्रचार हुआ।

पूँजीवादके बढनेके साथ सामन्तशाहीसे उसकी टक्कर हुई और अन्तमे उसने सामन्तशाहीको परास्त कर अपनी प्रधानता स्थापित की। उत्पादनकी शक्तियोको उसने इतना बढ़ाया, जितना उससे पहिले कोई ख्यालमे भी नही ला सकता था। पूँजीवादने एक और काम किया—कच्चे और तैयार मालके दान-आदान द्वारा उसने संसारको एक दूसरेके आश्रित कर दिया। पहले उत्पादन बिखरे हुये थे। उन्हें इसने केन्द्रित किया। पूँजीवादियोकी शक्ति बढती ही गई और शासन-यन्त्रपर भी उनका अधिकार बढा।

सामन्तशाही समाजने उत्पादनकी वह शक्तियाँ पैदा कीं, जिनपर उनका नियंत्रण नहीं हो सकता था। व्यापारको बढ़ा कल-कारखानोंको प्रारम्भ कर उसने पूँजीवादको जन्म दिया। पूँजीने उत्पादनके जबर्दस्त साधन तैयार किये। उसके वितरण और विनिमयके तरीके भी कम आश्चर्यकारी नहीं हैं। लेकिन उसने उत्पादन और वितरणका सामंजस्य नहीं कर पाया। उत्पादन ज्यादा, किन्तु उसे खरीदनेके लिये जो पैसा चाहिये, उसमें अतिरिक्त-मूल्यके बहाने कटौती की गई। जिससे सभी पण्योंके खरीदनेके लिये पैसा नहीं रहा। इसका ही परिणाम है, समय-समयपर होती रहनेवाली मन्दियाँ, उत्पादित धनका जान-बूझकर संहार। इस प्रकार उसके अपने नाशके लिये हथियार आ मौजूद हुआ।

पूँजीवादने अपने मारनेके लिये हथियार ही नहीं तैयार किया, बल्कि वह आदमी भी तैयार किये, जो हथियारको इस्तेमाल कर सकते हैं, यह हैं उनके अपने कारखानेके मजदूर—सर्वहारा।

मध्यम वर्ग—व्यापारी, शिल्पकार, किसान धीरे-धीरे नीचे गिरते जा रहे हैं। इन्हींमेंसे सर्वहारा फौजके रंगरूट भरती हो रहे हैं। आत्मरक्षा—जीवका-रक्षा—के लिये मजदूर संगठित हो रहे हैं, और उनके हितोंका पथ-प्रदर्शन करनेके लिये उनका राजनीतिक दल—मज़दूर पार्टी बन रही है। दूसरी श्रेणियोंमें भी सर्वहारापन बढ़ रहा है, किन्तु मजदूर ही वह श्रेणी है, जो क्रान्ति लानेकी क्षमता रखती है। दूसरे पीड़ित-वर्ग अपने वर्तमान नहीं, भविष्यमें मिलनेवाले स्वत्वके लिये लड़ना चाहते हैं, किन्तु सर्वहारा वर्तमानके लिये लड़ रहे हैं। मजदूर-आन्दोलन अल्पमतोंका नहीं, इतिहासमें पहले-पहल एक भारी बहुसंख्या-का आन्दोलन है। मजदूरोंकी हालत दिनपर दिन गिरती जा रही है, मजदूरीमें कमी के साथ बेकारी बढ़ती जा रही है।

पूँजीवादी खुद अपनी कब्र खोदनेवाले इन मजदूरोंको तैयार कर चुके हैं।

(२) घोषणा पत्रके दूसरे भागके एक अधिकरणमें मजदूरोंका कमूनिस्तोंके साथ क्या सम्बन्ध है, इसे बतलाया गया है। कमूनिस्ट मजदूर वर्गके अंग हैं, इसलिये उससे अलग-थलग रहने का ख्याल बहुत बुरा है। "(१) मजदूर-वर्गकी दूसरी पार्टियोंके खिलाफ कमूनिस्टोंकी कोई अलग पार्टी नहीं है। (२)

सर्वहारा वर्गके सारे स्वार्थोंसे अलग उनका अपना कोई स्वार्थ नहीं है। (३) सर्वहारा आन्दोलनको खास रूपमें ढालनेके लिये वह अपना कोई मतवाद नहीं इस्तेमाल करना चाहते।"

"कमूनिस्त प्रत्येक देशके मजदूर-वर्गका बहुत ही अग्रगामी और दृढ़मनस्क भाग है। यह वह भाग है, जो दूसरोको आगेकी ओर ढकेलता ले जाता है। दूसरी ओर, सिद्धान्त समझनेमें, सर्वहारा भारी जनसमूहसे वह इस बातमें विशेषता रखता है, कि वह कूचके रास्ते, सर्वहारा-आन्दोलनके अन्तिम साधारण परिणाम और स्थितियोंको साफ तौरपर समझता है।...कमूनिस्तोंका नजदीकका उद्देश्य है—सर्वहारा को एक वर्गमे बद्ध करना, पूँजीवादी प्रधानताको उलटना और सर्वहारा द्वारा शासन-शक्तिपर अधिकार जमाना।"

कमूनिस्तोंका सिद्धान्त (निष्कर्ष) किसी विश्व-सुधारकके आविष्कृत विचारोंपर नहीं, बल्कि हमारी आँखोंके सामने चलते ऐतिहासिक आन्दोलनपर आधारित है।

दूसरे भागके बाकी अंशमें कमूनिस्तोंके ऊपर किये गये आक्षेपोंका उत्तर दिया गया है। साम्यवाद किसी आदमीको समाजके द्वारा उत्पादित पदार्थोंके उपभोग करनेके अधिकारसे वंचित नहीं करना चाहता। वह सिर्फ इतना ही चाहता है, कि इस तरहके उपभोग द्वारा दूसरेके श्रमपर काबू पानेकी कोशिश न की जाय। पूँजीवादी हायतोबा मचाते हैं, कि मजदूरोंके राजसे संस्कृतिका खात्मा हो जायगा, किन्तु पूँजीवादियोंकी संस्कृति आदमीको मशीन-की तरह काम करने की शिक्षाके अतिरिक्त है ही क्या ! कमूनिस्त स्त्रियोंपर साझा अधिकार नहीं चाहते, वह सिर्फ इतना ही कहते हैं, कि स्त्रियोंकी अर्ध-दासता खतम होनी चाहिये, गुप्त और प्रकट सब तरहकी वेश्यावृत्ति बन्द होनी चाहिये और स्त्रीको समाजमें हर तरहसे समान स्थान मिलना चाहिये।

कमूनिस्त स्वदेश और राष्ट्रीयताके भावको मिटाना चाहते हैं, इस आक्षेपका उत्तर यह है, कि "मजदूरका अपना कोई देश नहीं। जो उनके पास है ही नहीं, उसे हम उनसे छीनेंगे कैसे ! सर्वहाराको राजनीतिक प्रधानता प्राप्त करनी है, राष्ट्रका मुख्य वर्ग बनना है, यह खुद एक राष्ट्रीय काम है। "लेकिन जिस बूर्ज्वा राष्ट्रीयताका मतलब है, एक राष्ट्रका दूसरे राष्ट्रके ऊपर झपट्टा

मारना, लगातार लड़नेकी तैयारी करते रहना, वैसी राष्ट्रीयता जरूर कमूनिस्त नहीं चाहते। वर्गोंके आपसके विरोध जितनी ही मात्रामें खतम होंगे, उतनी ही मात्रामें एक जातिका दूसरी जातिसे वैमनस्य भी लुप्त होगा।

कमूनिस्त-प्रोग्रामके बारेमें कहा गया है—"क्रान्तिमें पहिला काम जो मजदूर-वर्गको करना है, वह है अपनेको शासक-वर्गके रूपमें परिणत करना, जनतंत्रता के युद्धको जीतना। सर्वहारा अपनी प्रभुताको इस्तेमाल करेंगे...बूर्ज्वा वर्गसे सभी पूँजीको अपने हाथमें ले लेनेके लिये, उत्पादनके सभी साधनोंको केन्द्रित करने, राज्य—शासक वर्गके तौरपर संगठित सर्वहारा (प्रोलेतारी)—को हाथमें लेने और सम्पूर्ण उत्पादन-शक्तियोंको जितनी शीघ्रतासे हो सके, उतनी शीघ्रता से बढ़ानेके लिये।"

नजदीकके प्रोग्राम हैं: ज़मीनकी मिल्कियतको उठा देना तथा सभी तरहके जमीनसे लिये जानेवाले करोंका सार्वजनिक कामके लिये व्यय करना। एक भारी और आमदनीके अनुसार बढ़ते हुये इन्कम-टैक्स द्वारा वरासतके सभी अधिकारोंका बन्द करना। भगोड़ों और विद्रोहियोंकी सम्पत्तिको जब्त करना। राज्यकी पूँजी लगाकर राष्ट्रीय यातायातके साधनोंको राज्यके हाथमें केन्द्रित करना। राज्यके द्वारा उत्पादनके साधनों और फैक्टरियोंको बढ़ाना। परती जमीनको जोतमें लाना और सम्मिलित योजनाके अनुसार जमीनके साधारण उपजाऊ-पनको बढ़ाना। श्रमके लिये सबको जिम्मेवार बनाना, औद्योगिक सेनाको स्थापित करना—खासकर खेतीके लिये। खेतीकी कल-कारखानेके उद्योगसे घनिष्ठता स्थापित करना। देशमें अधिकाधिक समान वितरण करके दीहात और शहरके अन्तरको उठा देना। सार्वजनिक पाठशालाओंमें सभी बच्चोंकी निःशुल्क शिक्षा, आजके जैसे लड़कोंका फैक्टरीमें काम करना बन्द करना, शिक्षा और औद्योगिक उत्पादनको एक दूसरेसे मिलाना, आदि।

मजदूर-वर्ग खुद अपनी प्रधानताको अन्तमें उठा देगा। जब विकासके पथ-पर चलते-चलते वर्ग-भेद मिट जायगा और सारा उत्पादन सारे राष्ट्रके विशाल संगठनके हाथमें जमा हो जायगा, तो राजनीतिक शक्ति (राज्य) अपने राज-नीतिक रूपको खो देगी। राजनीतिक शक्ति, वस्तुतः एक वर्गकी दूसरे वर्गके

उत्पीड़नके लिये संगठित की हुई शक्ति मात्र है। "सर्वहारा की राज-शक्तिके द्वारा सारे उत्पादनको अपने हाथमे ले शोषक वर्गका अन्त कर देगा और वर्ग विद्वेषके भावोको हटा एक वर्ग बना, एक वर्गके तौरपर प्राप्त की गई अपनी प्रधानताको छोड़ देगा। अब पुराने बूर्ज्वा-समाज, उसके वर्गों और वर्ग-विरोधो की जगह एक ऐसा सगठन होगा, जिसमें सबके विकासके साथ-साथ प्रत्येकका स्वतंत्र विकास होगा।"

(३) तीसरे भागमे दूसरे समाजवादोंका खंडन है। "वर्तमान समाजके प्रत्येक कायदे-कानून पर उटोपियन समाजवादियोंका प्रहार मजदूरवर्गकी आँख खोलनेके लिये अत्यन्त मूल्यवान् चीज थी।" लेकिन सभी वर्गोंको और शासकवर्गको खास तौरसे, हृदय-परिवर्त्तनकी उनकी अपील गलत चीज थी। जब लोगोने वर्ग-स्वार्थपर सगठित समाजकी बुराइयोंको देख लिया, तो वह उस वर्ग-युक्त समाजको कैसे वाछनीय समझ सकते हैं ! समझाने-बुझानेसे शासक-वर्गके हृदय-परिवर्त्तनका यह विश्वास ही था, जिसने उटोपियनोको सभी तरहकी राजनीतिक जद्दोजहद—खासकर क्रान्तिकारी कार्रवाइयो—के खिलाफ कर दिया। वह अपने उद्देश्यको शान्तिमय तरीकेसे पूरा करनेकी चाह रखते थे और अवश्य असफल होनेवाले छोटे-छोटे प्रयोगो द्वारा नये सामाजिक सिद्धान्तकी सच्चाई साबित करना चाहते थे।

(४) कमूनिस्त सभी जगह वर्त्तमान सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्थाओं के विरुद्ध होनेवाले प्रत्येक क्रान्तिकारी आन्दोलनकी सहायता करते हैं। "सभी जगह वह सभी देशोंकी जनतान्त्रिक पार्टियोकी एकता और मेल-मिलापके लिये कोशिश करते हैं।"

"कमूनिस्त अपने विचारों और उद्देश्योंके छिपानेको बुरा समझते हैं। वह साफ तौरसे घोषित करते हैं, कि हमारा उद्देश्य सभी वर्त्तमान सामाजिक अवस्थाओंको बलपूर्वक उठा फेकनेसे ही पूरा हो सकता है। शासक-वर्गको साम्य-वादी क्रान्तिसे काँपते रहने दो। सिवाय अपनी बेडियोंके, सर्वहाराके पास खानेके लिये है ही क्या ? और पानेके लिये एक संसार है।"

सभी देशोंके सर्वहारो एक हो जाओ।

अध्याय ६

क्रांति और प्रतिक्रांति (१८४८ ई०)

कम्युनिस्ट घोषणा पत्रके प्रकाशित होते ही मार्क्स और युरोपके जीवनमें एक संघर्षमय जीवन आरम्भ हुआ। जगह-जगह क्रान्तियाँ शुरू हुई और मार्क्स को उनमें भाग लेने का फिर उत्साह होने लगा। इस समय मार्क्स तीस साल के थे।

१. फ्रेंच-क्रांति (१८४८ ई०)

१७८९ ई० की फ्रेंच-क्रान्ति यद्यपि सामन्ती-व्यवस्थाको कितने ही अंशोंमें उखाड़नेमें सफल हुई, लेकिन वहाँ बूर्ज्वाजीको पूरी तौरसे शक्ति हाथमें करनेमें चालीस वर्ष लगे। यद्यपि फ्रांससे राजतंत्र फिरसे स्थापित हो गया, किन्तु यह कहनेकी आवश्यकता नहीं, कि वह बूर्ज्वाजीकी छत्रछायामें ही। शोषण और उत्पीड़नने अब सामन्ती रूपकी जगह पूँजीवादी रूप ले लिया। शोषित और उत्पीड़ित कब तक चुप रहते ? २४ फरवरी १८४८ को बूर्ज्वा राजतन्त्रको उखाड़ फेंका गया। पैरिसकी इस सफल क्रांतिकी प्रतिध्वनि युरोपके और देशोंमें भी हुये बिना नहीं रह सकती थी। सबसे पहिले फ्रेंच राजा बोनापार्त के दामाद बेल्जियमके राजा लियोपोल्दपर बीतनेको हुई, लेकिन लियोपोल्द अपने ससुरसे कहीं अधिक चतुर था। उसने तुरन्त घोषित किया, कि यदि राष्ट्र चाहता है, तो मैं तुरन्त सिंहासन छोड़नेके लिए तैयार हूँ। वह लोगोंको फँसाने-भुलवानेमें सफल हुआ। बूर्ज्वा राजनीतिज्ञ उदारवादी मन्त्री देपुती (पार्लियामेंट सदस्य) और नगरोंके मेयर उसके पक्षमें हो गये और उन्होंने विद्रोहकी भावनाओंको तुरन्त दबा दिया। राजाने अब उत्साहित हो सार्वजनिक सभाओंको छिन्न-भिन्न करनेके लिए सैनिकोंको इस्तेमाल करना शुरू किया और परदेशी निर्वासितोंको सबकी जड़ समझकर पुलिसको उनके पीछे लगा दिया। मार्क्सके साथ खास तौरसे बुरा वर्ताव किया गया। सिर्फ उन्हींको नहीं, बल्कि उनकी बीबीको भी

पुलिस गिरफ्तार कर ले गई—जेनी मार्क्सको एक रात बन्दीखानेमें साधारण वेश्याओंके साथ रहना पड़ा। पीछे जिम्मेवार पुलिस अफसरको उसके पदसे हटा दिया गया। गिरफ्तारीका हुकुम भी लौटा लिया गया, यद्यपि देश-निकालने-की आज्ञा नहीं हटाई गई। यह बिल्कुल कमीनापन था। क्योंकि मार्क्स ब्रुशेल्स छोड़ पेरिस जाने ही वाले थे।

क्रांतिके फूट निकलनेके तुरन्त बाद ही लन्दनमें कम्युनिस्ट लीगके केन्द्रीय पदाधिकारियोंने अपने कार्यालयको ब्रुशेल्सके जिला-प्रतिनिधियोंके हाथमें परिवर्तित कर दिया था, लेकिन अब ब्रुशेल्सकी अवस्था भी खराब हो गई। वहाँ मार्शल-ला जारी हो गया था। इसलिये ब्रुशेल्सके पदाधिकारियोंने इस अधिकारको मार्क्सके हाथमें इस हिदायतके साथ सौप दिया, कि वह पेरिसमे नया केन्द्रीय नेतृत्व बनायें। पेरिसमें क्रांतिके सफल होते ही वहाँकी अस्थायी सरकारने मार्क्सको बहुत सम्मानके साथ अपने यहाँ आनेके लिए निमंत्रित करते हुये सरकारके एक मुख्य सदस्य फ्लोपाके (१ मार्च) पत्र द्वारा मार्क्सको लिखा था : "वीर और ईमानदार मार्क्स! फ्रेंच गणराज्यकी भूमि सभी स्वतन्त्रताप्रेमियोंके लिए शरण-स्थान है। अत्याचारियोंने तुम्हें निर्वासित किया, लेकिन स्वतन्त्र फ्रांस तुम्हारे लिए अपना दरवाजा खोलता है—तुम्हारे और उन सभीके लिए, जो कि सभी जातियोंके भाईचारेके पवित्र उद्देश्यके लिए लड़ते रहे हैं। फ्रेंच सरकारका हरेक अफसर इस अभिप्रायके लिए अपने कर्त्तव्यको समझे। पेरिसमें पहुँचकर मार्क्सने कम्युनिस्ट लीगके कितने ही सदस्योंको इकट्ठा किया। जर्मन निर्वासितोंकी एक बडी सभामें ६ मार्च १८४८ को भावी प्रोग्रामके बारेमें बतलाते हुये उन साथियोंका जबर्दस्त विरोध किया, जो कि सशस्त्र आदमियोंको लेकर जर्मनीमें क्रांति करनेके लिये जाना चाहते थे। इस योजनाका बनानेवाला बोर्नस्टेट था, जिसने हेरवेगको भी अपनी ओर करनेमें सफलता पाई थी। बकुनिन भी इस योजनाके पक्षमें था, लेकिन पीछे उसने उसके लिए अफसोस जाहिर किया। फ्रांसकी अस्थायी सरकार भी योजनाका समर्थन करनेके लिए तैयार थी, लेकिन उसका उद्देश्य दूसरा ही था—वह बहुत से परदेशी कमकरोंसे इस बेकारीके जमानेमें पिंड छुडाना चाहती थी। उसने जर्मन-क्रांतिकारियोंको

अपनी बारकें दे दीं और जब तक सीमांत तक नहीं पहुँच जाते तब तक पचास सांतीम (आधा फ्रांक) रोजाना भी दिया।

२. जर्मनी में क्रांति (१८४८-४६ ई०)

मार्क्सने इस बेवकूफी और दुस्साहसका विरोध किया। इसी समय १३ मार्चको वीनामें और १८ मार्चको बर्लिनमें क्रान्ति हो गई। क्रान्तिकी शक्तियों-को ठीक तरहसे संगठित करके काम करनेके लिये पेरिसमें मार्क्सने एक नया नेतृत्व स्थापित किया, जिसमें वह स्वयं, एंगेल्स और बुशेल्ससे वोल्फ एवं लन्दनसे बावर-मोल तथा शापर सम्मिलित थे। इस संगठनने जर्मन सर्वहारा, निम्न मध्यमवर्ग और किसानोंके हितके लिये सत्रह माँगें रक्खी, जिनमें कुछ थीं : जर्मनीको एक अविभाज्य गणराज्य घोषित करना, लोगोंको हथियारबन्द करना, राजाओं और सामन्तोंकी तालुकदारियों-जमींदारियोंका राष्ट्रीकरण करना, खानों यातायातोंका राष्ट्रीकरण, राष्ट्रीय मिस्त्रीखानोंकी स्थापना, राज्यके खर्चसे अनि-वार्य शिक्षाका आम प्रबन्ध करना, इत्यादि। ये माँगें पूरी की जानेवाली नहीं थीं, यह मार्क्स भी जानते थे, लेकिन प्रचारके लिये इनका महत्व था। कम्यु-निस्त लीग उस समय कमजोर हो चुकी थी, लेकिन मजूर वर्गके पास क्रांतिके दूसरे साधन थे। इसी समय मार्क्सने पेरिसमें एक जर्मन कम्युनिस्ट क्लब कायम की और उसके सदस्योंको उन्होंने जोर देकर कहा, कि हेर्वेगके गुरिल्लोंसे अलग रहकर क्रांतिकारी आन्दोलनको बढ़ानेके लिये जर्मनीमें अकेले-अकेले जायँ। इस प्रकार सैकड़ों जर्मन मजूर जर्मनीके भीतर दाखिल होनेमें सफल हुये, फ्रेंच अस्थायी सरकारने इसमें मार्क्सकी मदद की। कम्युनिस्ट लीगके अधिकांश सदस्य अब जर्मनीके भीतर चले गये थे और उन्होंने जो काम वहाँ किया, उसने बतला दिया, कि कम्युनिस्ट लीगने कितना क्रांति स्कूलका काम किया था। जहाँ-कहीं भी आन्दोलनमें गर्मी दिखलाई पड़ती, वहीं लीगके सदस्य संग-ठन और नेतृत्वके लिये तैयार मिलते। शापर नसावमें था, वोल्फ ब्रेस्लोमें, स्टिफेन बोर्न बर्लिनमें। बोर्नने मार्क्सको चिट्ठी लिखते हुये ठीक ही कहा था : "लीगका अस्तित्व नहीं रहा, लेकिन तो भी उसका अस्तित्व सर्वत्र है।"

इसी समय मार्क्स अपने घनिष्ठ साथियोके साथ राइनलैंडमें पहुँचे, जोकि उद्योग-धन्धे तथा नेपोलियन कानून* के अधीन होनेके कारण जर्मनोका सबसे प्रगतिशील भाग था। बर्लिनमें प्रशियन दीवानी-संहिता (जाब्ता दीवानी) चलती थी। कोलोन शहरमें जनतान्त्रियो और कम्युनिस्टोंने एक दैनिक पत्र निकालनेकी तैयारी की, तथपि यह काम आसानीसे नहीं हुआ। पत्रके लिये शेयर बेचनेकी कोशिश की गई। एंगेल्स उस समय बर्मेनमें थे, जहाँसे २५ अप्रैल १८४८ ई० को लिखे पत्रमें उन्होंने मार्क्सको कोलौनमें लिखा था : "यहाँ शेयरोके बेंचनेकी कोई आशा नहीं!...लोग सामाजिक प्रश्नोंके बारेमे बात-चीत करनेसे प्लेगकी तरह कतराते हैं, वह इसे भड़काना कहते हैं।...मेरे बूढे भद्रपुरुषसे कुछ मिलनेकी आशा नहीं। वह समझता है, कि कोलिनिशे जाइ-टुंग' भड़कानेके लिये चरम साधन होगा, और वह मदद देनेके लिये एक हजार थालर देनेकी जगह हमें खतम करनेके वास्ते एक हजार गोलियाँ देना ज्यादा पसन्द करेगा।" यह लिखनेके बाद भी एंगेल्स पन्द्रह शेयर बेंचनेमें सफल हुये। १ जून १८४८ को "नौये राइनिशे जाइटुंग" (नवीन राइन पत्र) का पहला अंक निकला। इसके मुख्य सम्पादक मार्क्स तथा सम्पादकीय विभागमे एंगेल्स ड्रोन्के वीयर्थ और दोनों वोल्फ थे।

मार्क्सने फिर अपने पत्र द्वारा जनताकी मुख्य शक्तियोका संगठन और पथ-प्रदर्शन करना शुरू किया। पत्रको जनतान्त्रिकताका मुखपत्र कहा गया था, लेकिन उसका अर्थ नरम ढगकी जनतंत्रता ही था। उसने घोषित किया, कि गण-राज्यकी स्थापनाके बाद हमारा वास्तविक विरोधीपक्षीय काम शुरू होगा। मार्चमें वीनामें जो सफलता मिली थी, उसका आधार जूनमें हाथसे चला गया, क्योंकि वहाँ वर्ग-विरोध अभी उतना विकसित नहीं हुआ था। बर्लिनमें बूर्ज्वाजी इस बातकी फिकरमें थी, कि किस तरह क्रांतिको सर्वहाराके हाथमें जानेसे बचाया जाय। अनेक बड़ी-छोटी रियासतोंमें बॅटी जर्मनीमें उदारवादी मन्त्री अपने पूर्वा-धिकारी सामन्तोसे कोई भेद नहीं रखते थे। वह उसी तरह अपने राजाओंके

---

* Code Napoleon.

सामने घुटने टेककर सम्मान प्रदर्शित करते थे। १८ मईको फ्रांकफुर्त (माइनपर) राष्ट्रीय सभाका पहला अधिवेशन हुआ। इसका काम था अपने सर्वप्रभुत्व-सम्पन्न होनेके कारण जर्मन एकताको स्थापित करना। लेकिन वह भी बात बनानेसे आगे नहीं बढ़ सकी। पहले ही अंकमें मार्क्सके पत्रने इसकी बड़ी आलोचना की। जिसपर पत्रके बहुतसे शेयर-होल्डर साथ छोड़कर भाग गये, यद्यपि पत्रने कोई बहुत बढ़-चढ़ कर राजनीतिक माँगें नही पेश की थीं। फ्रांकफुर्तकी राष्ट्रीय सभाके फेडरल गणराज्यकी आलोचना करते हुये मार्क्सने लिखा था, कि छोटी-छोटी रियासतोंके एक गणराजी सरकारके अधीन बननेको संयुक्त जर्मनीके अन्तिम संविधानके तौरपर नहीं माना जा सकता : "हम कोई उटोपियन (अव्यावहारिक, स्वप्नचारी) और अविभाज्य एक जर्मन गणराज्यके तुरन्त स्थापित करनेकी माँग नहीं पेश करते हैं, लेकिन यह माँग जरूर करते हैं, कि तथाकथित उग्रवादी जनतांत्रिक पार्टी संघर्ष और क्रान्तिकारी आन्दोलनकी प्रथम मंजिलको अपना अन्तिम लक्ष्य समझनेकी गलती न करे। जर्मन-एकता और जर्मन-संविधान केवल उसी आन्दोलनके परिणामस्वरूप प्राप्त होगा, जो कि घरेलू द्वन्द्वों और पूर्व (रूस) के साथ युद्धके परिणामस्वरूप एक निर्णय पर पहुँचनेके लिये मजबूर हो। एक निश्चित संविधानकी घोषणा नहीं की जाती, बल्कि वह उस आन्दोलनके परिणामस्वरूप पैदा होगा जिसका कि तजर्बा नहीं हुआ। इसलिये यहाँ इस या उस राजनीतिक विचारके पूरा करने या इस और उस रायको पकड़ रखनेका सवाल नहीं है, बल्कि सवाल है विकासके आम झुकावको समझनेका। राष्ट्रीय सभाको तुरन्त सम्भव व्यावहारिक कदम उठाने चाहिये।"

लेकिन राष्ट्रीय सभाने दूसरा ही कदम उठाया। उसने आस्ट्रियन आर्कड्यूक योहानको राइख़ (राज्य) का रीजेंट निर्वाचित किया, जिसका अर्थ था राजाओंके हाथमें खेलना। फ्रांकफुर्त संयुक्त जर्मनीकी राजधानी होनेका सपना देख रहा था, जहाँपर राष्ट्रीय सभा हो रही थी, लेकिन बर्लिनकी घटनायें उससे कहीं महत्त्व रखती थीं। जर्मनीके भीतर क्रान्तिका सबसे खतरनाक शत्रु प्रशियन राज्य था। १८ मार्चकी क्रान्तिने प्रशियन राज्यको उलट दिया, लेकिन उसका फल पहले

बूर्ज्वाजीके हाथमें पड़ा और बूर्ज्वाजीने क्रांतिके साथ तुरन्त विश्वासघात करना शुरू किया। जिन शक्तियोंको क्रान्तिने मुक्त कर दिया था, उनकी बाढ़को रोकना जरूरी था और उसके लिये सबसे अच्छा उपाय यही था कि उन्हें मीठी लोरियाँ सुनाकर सुला दिया जाय। काम्पहाउजेन हांजेमानके मन्त्रिमण्डलने संयुक्त-डीट (संसद्) की बैठक बुलाकर उसे एक बूर्ज्वा संविधान बनानेका काम सौंपनेका निश्चय किया। प्रशियाकी संयुक्त-डीट सामन्तोंसे भरी हुई थी। उससे किसी बूर्ज्वा-सविधानकी भी आशा नहीं हो सकती थी। पर बूर्ज्वाजीको डर लग रहा था, कि यदि कमकरोंको और आगे बढ़नेका मौका मिला, तो सामन्तोंके हितोंके साथ-साथ कहीं हमारे हितोंका भी सर्वनाश न हो जाय। संयुक्त-डीटने ६ और ८ अप्रैलको दो कानून (विधान) पास किये, जिनके द्वारा नये, संविधानके आधार पर भिन्नभिन्न बूर्ज्वा-अधिकार स्थापित किये गये और सार्वजनिक गुप्त और अप्रत्यक्ष मताधिकारके अनुसार निर्वाचित एक नई विधान-सभाके बनानेका निश्चय किया जिसका काम था मुकुट (राजा) की सम्मतिसे एक संविधान बनाना। राजा सामन्तोंके सामन्त राजाको अपनी जगहपर अक्षुण्ण रहने दिया गया, और यह क्रान्तिके एक ही महीने बाद। १८ मार्चको प्रशियन गारदको हराकर बर्लिनके सर्वहारोंने जो विजय प्राप्त की थी, उसका फल इस प्रकार सर्वहारा के हाथोंसे छीन लिया गया। सविधान-सभाकी बातको जब तक मुकुट न स्वीकार करे, तब तक वह कोई संविधान नहीं बना सकती थी। अब जब तक एक दूसरी क्रान्ति न हो जाये, कोई आशा नहीं थी और दूसरी क्रान्ति न होने देनेके लिये काम्पहाउजेन-हाजेमान मन्त्रिमण्डल हर तरहसे कोशिश कर रहा था। २२ मईको सभा बैठी। कहीं राजतन्त्रको हटाकर गणराज्य न कायम कर दिया जाय, इसलिये उसने नेताहीन क्रान्ति-विरोधियोंको इगलेंडसे बुला प्रशिया-राजकुमारोंको नेता प्रदान किया। प्रशियाका युवराज १८ मार्चकी क्रान्तिमें भागकर इंगलेंड चला गया था। लेकिन १४ जूनको फिर बर्लिनके जनसाधारणने ज्योग हाउज (उन्टेर डेन लिंडेन सड़कपर अवस्थित सैनिक इमारत) को हमला करके ले लिया और मुकुटके प्रति इस प्रकार अपने विरोधी भावोंको प्रकट किया। इस पर काम्पहाउजेनने इस्तीफा दे दिया, लेकिन हाजेमान अब भी अपने पदसे चिपका

रहा। काम्पहाउज़ेन अपेक्षाकृत अधिक प्रगतिशील बूर्ज्वा-विचारधारा रखता था, जब कि हांज़ेमान बूर्ज्वाजीके हितोंके लिए निर्लज्जतापूर्वक नंगा नाचनेके लिए तैयार था। वह इसके लिये राजा और युंकरों (सामन्तों) की हर तरहकी खुशामद करके सभाके लोगोंको घूस-रिश्वत या जैसे भी हो अपने पक्षमें रखने तथा जनसाधारणको अधिक और अधिक उत्पीड़नके लिये तैयार था। "नोवे राइनिश जाइटुंग" ने इस भयंकर स्थितिको रोकनेकी बड़ी कोशिश की। उसने बतलाया कि काम्पहाउज़ेन बूर्ज्वाजीके हितके लिये प्रतिक्रियाका बीज बो रहा रहा है, लेकिन इसका फायदा सामन्ती दल उठायेगा। उसने हांजेमान-मंत्रि-मण्डलके बड़े बुरे अन्तकी भविष्यद्वाणी भी की और बतलाया—"बिना सारी जनताको अस्थायी तौरसे अपना सहायक बनाये और कम या बेसी जनतान्त्रिक भावोंको स्वीकार किये बिना बूर्ज्वाजी अपने प्रभुत्वको स्थापित नहीं कर सकती।" ...१८४८ ई०की बूर्ज्वाजी (पूँजीपति वर्ग), निर्लज्जता और बेइज्जतीके साथ किसानोंके साथ विश्वासघात कर रही है, यद्यपि किसान उसके स्वाभाविक सह-योगी, उसके अपने मांस और खून हैं, और बिना किसानोंके समर्थनके वह सामन्त-वर्गके विरुद्ध कुछ भी करनेमें असमर्थ है।" मार्क्सने कहा कि १८४८ ई० की जर्मन-क्रान्ति १७९८ ई०की फ्रेंच-क्रान्तिकी झूठी नकल है।

जिस समय बर्लिनमें हांजमेन-मंत्रिमंडल इस प्रकार अपनी जड़ें खोद रहा था, उसी समय सभी बूर्ज्वा वर्गों और पार्टियोंने मिलकर पेरिस की सड़कोंमें चार दिनकी भयंकर लड़ाइयोंके बाद वहाँके सर्वहारोंको हरा दिया।

जर्मनीमें जो घटनायें घट रही थीं, उनके बारेमें अपने पत्रमें लिखते हुए मार्क्सने बतलाया कि बूर्ज्वाजी और सर्वहाराके बीच होनेवाले वर्ग-संघर्षमें जन-तन्त्रताको किसका पक्ष लेना चाहिए—'वह हमसे पूछेंगे, कि क्या हमारे पास राष्ट्रीय गारद, चल-गारद, गणराजी गारद और लाइनकी पल्टनोंके उन शहीदोंके लिए आँसू, हाय या अफसोसके शब्द नहीं हैं, जिन्होंने कि जनताके क्रोधके सामने प्राण गँवाये। राज्यकी ओरसे उनकी विधवाओं और अनाथ बच्चोंका ध्यान रक्खा जायेगा। उनके यशोगानके लिए बड़ी भड़कीली घोषणायें घोषित-की जायेंगी, और उनके शरीरावशेषोंको बड़े संयत और नम्र जलूसों द्वारा कब्रि-

स्थानमें पहुँचाया जायगा। सरकारी प्रेस उन्हें अमर घोषित करेगा, और पूर्वसे-पश्चिम तकके युरोपीय प्रतिगामी उनकी प्रशंसा करते नहीं थकेंगे। लेकिन दूसरी ओर जनतान्त्रिक प्रेसका यह खास हक है, कि वह गरीबोंकी उन झुकी हुई गर्दनों-के ऊपर अपनी पूजाकी माला रखें, जो कि भूखसे पीड़ित हैं, सरकारी प्रेस जिनके प्रति घृणा प्रकट करता है, डाक्टर जिनकी सुध लेनेके लिये तैयार नहीं हैं; सभी इज्जतदार नागरिक, जिनको चोर, बदमाश और कमीना कहकर गाली देते हैं, जिनकी स्त्रियाँ और बच्चे और भी अधिक कष्टमें डाले जा रहे हैं और जिनके बचे हुये लोगोंमें से सबसे अच्छे व्यक्ति समुद्रपार निर्वासित हो चुके हैं।

इस लेखके लिखनेके बाद पत्रके बचे-खुचे शेयर-होल्डरोंमें से भी कितने ही साथ छोड़कर भाग गये।

हाजेमान-मंत्रिमंडलको सभी प्रतिगामियोंकी तरह कानून और व्यवस्थाका सबसे अधिक ख्याल था, क्योंकि सर्वहाराके गुस्सेसे उन्हें अपनी थैलियोंके लिए हमेशा भय लगा रहता था। कानून और व्यवस्था कायम रखनेके लिए 'अराज-कताकी शक्तियों' के विरुद्ध 'राज्यशक्ति' को मजबूत करनेकी जरूरत थी, जिसके लिये उन्हें पुराने प्रशियन सेना, पुलिस और नौकरशाहीके हाथमें खेलना जरूरी था। सर्वहारा द्वारा घुटने टेकनेके लिए मजबूत हुई प्रतिगामी शक्तियाँ अब फिर सिर उठानेकी तैयारी करने लगीं। बर्लिन सभा (एसेम्बली) को यह और मंत्रिमण्डल द्वारा बर्लिनके पास सेना जमा करनेकी बातें खतरेसे खाली नहीं मालूम हुईं। उसने साहसपूर्वक युद्ध-मंत्रीसे माँग की, कि वह सभी सैनिक अफ-सरोंको प्रतिक्रियावादी कार्रवाहियोंमें भाग न लेनेका जबर्दस्त आदेश दे, और जिन अफसरोंको यह मंजूर न हो, उन्हें इस्तीफा देनेके लिए कहो। मंत्रीके ऐसा करनेका भी वहाँ क्या प्रभाव होनेवाला था? पुरानी और नई दो ही शक्तियाँ थीं, बीचकी बूर्ज्वा नपुंसकता कुछ करनेमें असमर्थ थी। यदि जनताकी शक्तिसे भय खाकर उसे दबाना है, तो प्रशियन सामन्तवादके हाथमें खेलना छोड़ और कुछ नहीं हो सकता था। परिणाम यही हुआ, कि हाजेमानके बूर्ज्वा मंत्रिमंडलको बेइज्जती-के साथ इस्तीफा देना पड़ा और उसकी जगह जेनरल प्फुयेलने एक शुद्ध नौकर-शाही मंत्रिमडल स्थापित किया। बर्लिनकी विधान-सभाकी भी वही गति हुई।

३. कोलोन जनतांत्रिकता—सितम्बरमें बर्लिन और फ्रांकफुर्तमें जो कुछ हुआ, उसका जबर्दस्त प्रभाव कोलोनपर भी पड़ना जरूरी था। राइनलैंड मजूरों का गढ़ था। हाथमें रखने के लिये उसे पूर्वी प्रदेशों में भरती किये गये सैनिकों-से भर दिया गया। एक तिहाई प्रशियन सेनाको राइनलैंड और वेस्टफालियामें रक्खा गया। ऐसी स्थितिमें छोटा-मोटा विद्रोह बेकार था। इस वक्त जरूरत थी सारी जनतांत्रिक शक्तियोंको संगठित और अच्छी तरह अनुशासनबद्ध करने की।

इससे पहले ही जूनमें फ्रांकफुर्तमें ८८ संगठनोंने एक काँग्रेस की, जिसमें जनतांत्रिक संगठनोंको मजबूत करनेका निश्चय किया। लेकिन, निश्चय के अनुसार सब जगह काम नहीं हो सका, केवल कोलोनमें ही उसकी मजबूत नींव पड़ी। शेष जर्मनीमें जहाँ-तहाँ छिटफुट काम होता रहा। कोलोनकी जनतांत्रिकताकी तीन बड़ी-बड़ी सभायें थीं, जिनमेंसे हरेकके हजारों मेम्बर थे : (१) जनतांत्रिक एसोसियेशन, जिसके नेता मार्क्स और एडवोकेट स्नाइडर थे, (२) कमकर एसोसियेशन जिसके नेता मोल और शापर थे, और (३) मालिक नौकर एसोसियेशन, जिसका नेता तरुण बैरिस्टर हेरमान बेकर था। जब फ्रांकफुर्तकी कांग्रेसने कोलोनको राइनलैंड और वेस्टफालियाका केन्द्र निश्चित किया, तो इन एसेसियेशनोंने अपनी एक संयुक्त केन्द्रीय कमेटी बनाई, जिसने राइनलैंड-वेस्टफालियाके सभी जनतांत्रिक एसोसियेशनोंकी कांग्रेस अगस्तके मध्यमें कोलोनमें बुलाई। इस कांग्रेसमें सत्रह एसोसियेशनोंके ४० प्रतिनिधि सम्मिलित हुये और उन्होंने कोलोनके तीन जनतांत्रिक एसोसियेशनोंकी संयुक्त केन्द्रीय कमेटियों को राइनलैंड-वेस्ट-फालियाकी प्रदेश-कमेटी मान लिया। इस संगठनके बौद्धिक नेता मार्क्स थे। उनमें नेतृत्वके गुण जितने ऊँचे परिमाणमें मौजूद थे, इससे कोई इन्कार नहीं कर सकता था, लेकिन कुछ नीच-भावनावाले जनतांत्रिक नहीं चाहते थे, कि सारा नेतृत्व मार्क्सके हाथमें चला जाय।

१९ वर्षीय विद्यार्थी कार्ल शुर्जने पहली बार मार्क्सको कोलोन-कांग्रेसमें देखा था। पीछे उसने अपनी स्मृतिसे इस महापुरुषके बारेमें लिखा था : "उस समय मार्क्स तीस सालका था, और समाजवादी विचारधाराका नेता माना जा चुका था। उसका शरीर गठीला, ललाट प्रशस्त और आँखें काली तथा चमकीली थीं।

उसके कोयले जैसे काले बाल और घनी दाढ़ी तुरन्त लोगोंका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती थी। अपने क्षेत्रमें बहुत बड़े विद्वान् होनेकी उसकी प्रसिद्धि थी, और सचमुच वह जो कुछ कहता, वह तर्कसम्मत, वजनदार और स्पष्ट बात होती लेकिन अपने जीवनमें मैंने कभी ऐसे किसी आदमी को नहीं देखा, जिसका बर्ताव इस तरहका चोट पहुँचानेवाला तथा असह्य अभिमान का हो।" मार्क्स के मुँहसे "बूर्ज्वा" शब्द ऐसे निकलते थे, जैसे कि वह घृणाके साथ उसपर थूक रहा हो। मार्क्सको उनके पिताने भी "हृदयहीन" कहा था, लेकिन उस हृदयमें कितना स्नेह भरा था, इसे जाननेवाले लोगोंकी कमी नही थी। जब वह पूर्ण एकाग्रतासे किसी बड़े काममें लगे होते, उस समय अपने हृदयको बात-बातमें खोलकर दिखाते रहना अपने काममें बाधा पैदा करनेके सिवाय और कुछ नहीं हो सकता था। इसी तरह फजूलकी बातों और आदमियोंके लिये समय बरबाद करनेके वास्ते भी उनके पास समय नहीं था, जिसके कारण कितने ही जब-तब मिलनेवाले उन्हें रूखे स्वभावका समझते थे। कोलोनके कुछ वर्षों बाद लफ्टनेंट तेचोफने मार्क्ससे वार्तालाप करनेके बाद लिखा था: "मार्क्सकी सिर्फ अपनी साधारण बौद्धिक श्रेष्ठताने ही नहीं, बल्कि उसके काफी बड़े व्यक्तित्वने भी मुझ-पर असर डाला। अगर उसका हृदय उतना ही बड़ा होता, जितना उसका दिमाग, उसका प्रेम उतना ही बड़ा होता, जितनी उसकी घृणा, तो मैं उसके साथ आग-पानी में कूदनेके लिये तैयार रहता। यद्यपि उसने कई बार मेरे बारेमें तुच्छ राय प्रकट की और अन्तमें बिल्कुल साफ-साफ कह भी दिया। किंतु, वह हमारे बीच पहला और अकेला व्यक्ति है, जिसमें महत्वहीन विवरणोंमें बिना अपनेको खोये किसी बड़ी परिस्थितिपर अधिकार प्राप्त करनेकी योग्यता है।"

१८४८ ई० में फूरियेका अमेरिकन शिष्य अलबर्ट ब्रिस्बेन "न्यूयार्क-ट्रिब्यून" का संवाददाता बनकर कोलोन आया। उसके साथ पत्र-प्रकाशक चार्लस डाना भी था। ब्रिस्बेनकी राय मार्क्सके बारेमें दूसरी ही थी: "मैंने जन-आन्दोलनके नेता कार्ल मार्क्सको देखा। उस वक्त उसका सितारा अभी-अभी ऊपर उठ रहा था। वह करीब तीस वर्षका आदमी था। शरीरसे हट्टा-कट्टा चेहरा अच्छा, और घने काले बाल। उसके चेहरेसे बड़ी शक्तिका पता लगता था और उसकी

नरमी तथा संजीदगीके पीछे साहसपूर्ण आत्माकी जबर्दस्त आग जलती दीख पड़ती थी।"

राइनलैंडकी उस स्थितिमें कोई सशस्त्र कार्रवाई बेकार होती, इसलिये मार्क्स-ने वैसा करनेको रोका था। लेकिन, प्रशियन सरकार चाहती थी, कि लोग कुछ ऐसी बेवकूफी करें, जिससे खूनकी नदी बहानेका मौका मिले और वह इस प्रकार लोगोंके जोशको दबा दे। खूनी कार्रवाईका मौका न मिलनेपर अब उसने जनतांत्रिक प्रदेश-कमेटीके मेम्बरों और "नोये राइनिशे जाइटुंग" के सम्पादकोंके खिलाफ कानूनी और पुलिसकी कार्रवाई शुरू की। लेकिन, उसके लिये भी सबूत नहीं मिल सका। मार्क्सने अपने लोगों तथा राज्यको भी सावधान करते हुये लिखा था : इस समय कोई ऐसा बड़ा सवाल नहीं है, जो कि सारी जनता-को संघर्ष करनेके लिये मजबूर करे, इसलिये बलवेका कोई भी प्रयत्न असफल होगा। इस समय कोई विद्रोह करना व्यर्थसे भी बुरी बात होगी, क्योंकि आसन्न भविष्यमें हो सकता है, बड़ी घटनायें घटें। इसलिये जनतंत्रियों को चाहिये, कि युद्धके दिन आनेसे पहले अपनेको निहत्था न बनायें। मुकुट (राजा) अगर क्रांति-विरोधको संगठित करनेकी हिम्मत करेगा, तो जनताकी ओरसे एक नई क्रान्तिकी घड़ी आ मौजूद होगी।"

सब-कुछ सावधानी रखने पर भी कुछ मामूली झगड़े हुये ही, जब कि २५ सितम्बरको बेकेर, मोल, शापर और विल्हेल्म वोल्फ गिरफ्तार किये गये। जब खबर उड़ी कि सेना एक सार्वजनिक सभा को भंग करनेके लिये आ रही है, तो लोगोंने सड़कोंपर मोर्चे बाँध लिये। लेकिन, अभी प्रशियन सेनाको इतनी हिम्मत कहाँ थी ! जब लोगोंका जोश अधिक ठंडा हो गया, तो सैनिक कमान्डर-ने कोलोनमें मार्शल-ला घोषित कर दिया। उसने "नोये राइनिशे जाइटुंग" को बन्द करनेका हुकुम निकाला और २७ सितम्बरसे वह बन्द हो गया। फ्युयेल-मंत्रिमंडलने कुछ दिनों बाद मार्शल ला उठा दिया, लेकिन "राइनिशे जाईटुङ्ग" को इतनी जबर्दस्त चोट लगी थी, कि वह १२ अक्टूबरसे ही फिर निकलनेमें समर्थ हुआ।

पत्रके सम्पादकमंडलके बहुत से सदस्योंके ऊपर गिरफ्तारीके वारंट थे,

इसलिये उन्हें जेलमें बन्द होनेसे बचनेके लिये सीमा पार भाग जाना पड़ा : डोंके और एंगेल्स बेल्जियम चले गये और विलहेल्म वोल्फ़ पलाटिनेको। उन्हें वहाँसे लौटनेमे कुछ देर लगी। १८४९ की जनवरीके आरंभमें एंगेल्स अभी भी बेर्न (स्वीजर्लेंड) में थे। वह बेल्जियमसे फ्रांस होते वहाँ पहुँचे थे, जिसमें बहुत सा रास्ता उन्होंने पैदल तै किया था। एक ओर पत्रके लिये आदमियोंकी कमी थी, दूसरी तरफ़ आर्थिक दशा भी खराब थी। शेयर-होल्डरोंके छोड़कर भाग जानेपर, पत्र अपने बढ़े हुये ग्राहकोंके बलपर जीता रहा, लेकिन मार्शल-लाके हमलेसे अब वह डूबने ही वाला था। इसी समय मार्क्सने पितासे दाय-भागमें मिली जो कुछ थोड़ी-बहुत सम्पत्ति थी, उसे उसमें लगा दिया। मार्क्सने इसके बारेमें कभी एक भी शब्द किसी से नहीं कहा, लेकिन बीबीके पत्रों और उनके मित्रो ने जो बातें बतलाई, उससे मालूम है, कि मार्क्सने सात हजार थालेर (७ हजार गिन्नियाँ या प्रायः १ लाख रुपया) पत्रको जीवित रखनेके लिये लगाया था। यहाँ पैसेके परिमाणका उतना महत्व नहीं है, जितना कि इस बातका कि मार्क्सने झंडेको ऊँचा रखने के लिये अपने सर्वस्वका त्याग किया।

मार्क्सने प्रशियन नागरिकताको त्याग दिया था। इस वक्त वह कोलोनमे नागरिकताके अधिकारोंसे वंचित होकर रह रहे थे, जिसके कारण उन्हें आसानी-से बाहर निकल जानेका हुकुम दिया जा सकता था। इससे बचने को एक ही उपाय था, कि वह नागरिकताके अधिकारको फिरसे प्राप्त करते। अप्रैल १८४८ में मार्क्सने कोलोनकी नगर-परिषद्को इसके लिये अर्जी दी। जब मार्क्सने कहा, कि बिना इसके मै अपने परिवारको ट्रीरसे कोलोन नहीं ला सकता तो वहाँके पुलिस-अफसर मुलेरने आशाके अनुरूप जवाब भी दिया। इसी बीच "नोये राइनिशे जाइटुङ्ग" फिर निकलने लगा था, और उसके लेखोंसे असंतुष्ट हो पुलिस प्रेसीडेंट गेजरने अपने ३ अगस्तके पत्रमें सूचित किया : अभी कोई निश्चय नहीं किया जा सकता, मार्क्सको अपने लिये विदेशी समझना चाहिये। २२ अगस्तको गृह-मंत्रीके पास मार्क्सने अपील की, लेकिन उसने भी उसे खारिज कर दिया। भविष्य अनिश्चित था, लेकिन मार्क्सका अपनी पत्नी और

बच्चोंके साथ असाधारण प्रेम था, इसलिये वह परिवारको कोलोन ले आये। परिवारकी संख्या भी अब काफी बढ़ गई थीं। पहली लड़की मई १८४४ में पैदा हुई थी, जिसका नाम माँके ऊपर जेनी रक्खा गया था। उसके बाद दूसरी लड़की लौरा सितम्बर १८४५ में पैदा हुई और उसके बाद एकमात्र पुत्र एडगर पैदा हुआ, जो भी माता-पिताको अधिक दिनों तक प्रसन्न रखनेके लिये नहीं आया था। प्रथम पेरिसके निवासके समयमें भी ही मार्क्सके परिवारमें हेलेन डेमुथ सम्मिलित हो गई थी, जो कि आजीवन परिवारके सभी दुःखों और कष्टोंमें साथ रही। मार्क्सके स्वभावमें नहीं था, कि वह हरेक नये परिचित को तुरन्त भाई या मित्र घोषित कर दें। लेकिन, अपने मित्रोंके साथ उनका सम्बन्ध बहुत स्थायी और दृढ़ होता था।

४. दो साथी

एंगेल्सको मार्क्सका न साथी कह सकते हैं, न मित्र ही। वह तो उनकी युगल आत्माके थे। निर्वासनके समय ही मार्क्सको दो और ऐसे साथियोंसे घनिष्ठता प्राप्त करनेका अवसर मिला, जिनकी मित्रता बराबर एकरस न रहते भी अन्त तक कायम रही।

(१) फर्डीनंड फ्राइलीग्रथ*

यह जर्मन कवि मार्क्ससे आठ वर्ष बड़ा था। ब्रुशेल्सके निर्वासनके दिनोंमें फ्राइलीग्रथका परिचय मार्क्ससे हुआ। परिचयके आरंभिक दिनोंमें मार्क्सने उसके बारेमें लिखा था: "भला आदमी है, अच्छा पट्ठा, बर्तावमें दिलचस्प और सादा।" १८४८ ई० के राइनके संघर्षोंके समय यह परिचय घनिष्ठ मित्रतामें परिणत हो गया। एक पत्रमें मार्क्सने फ्राइलीग्रथके बारेमें वेडेमेयरको लिखा था: "वह वास्तविक क्रान्तिकारी और पूरी तौरसे ईमानदार आदमी है। इस तरहके प्रशंसाके शब्द मैं बहुत कम आदमियोंके लिये कह सकता हूँ।" साथ ही मार्क्सने वेडेमेयरको लिखा था: कविको ज़रा श्लाघा भी देनी चाहये, सभी कवियोंको इसकी आवश्यकता पड़ती है, तभी वह अपनी बढ़िया कृतियोंको प्रदान कर

---

* Freiligrath.

सकते हैं। मार्क्स उन आदमियोंमें नहीं थे, जो कि जरा भी गलतफहमीसे आदमीके गुण और कार्यक्षमताको भूल जाते हैं। उन्होने एक समय कविको लिखा था : "मै तुमसे साफ कहना चाहता हूँ, कि कुछ मामूली गलतफहमियोके कारण मै ऐसे एक मित्रको खोनेके लिये तैयार नहीं हूँ, जिसेकि सच्चे अर्थोंमें मित्र कहा जा सकता है।" एंगेल्सको छोडकर फ्राइलीग्रथ जैसे मार्क्सका पक्का दोस्त सबसे जबर्दस्त कठिनाइयोंके समय कोई नही था। फ्राइलीग्रथ क्रान्तिकारी बना था अपनी नैसर्गिक सूझ और कविकी भावनासे। वह वैज्ञानिक विचारों द्वारा क्रान्तिकारी नहीं बना था। वह मार्क्सको क्रान्तिका अग्रदूत और कम्युनिस्ट लीगको क्रान्तिकारी हरावल मानता था, लेकिन कम्युनिस्ट-घोषणापत्रमें जो ऐतिहासिक युक्तियाँ दी गई थीं, वह उसे कभी समझमे नहीं आई। वह इन बारीकियोमे घुसकर माथापच्ची करनेके लिये तैयार नहीं था।

(२) फर्डिनेंड लाजेल*—लाजेल मार्क्ससे सात वर्ष छोटा था। वह एक तरुण वकीलके तौरपर पतिके बुरे बर्ताव और अपनी जातिके विश्वासघातसे बचनेके लिये कौंटेस (ठाकरानी) हर्ट्जफेल्टकी दर्दनाक स्थितिको देखकर दिलो-जानसे जुट गया। इस मुकद्मेमें उसने इतनी योग्यताका परिचय दिया, कि वह एक प्रसिद्ध वकील बन गया। फर्वरी १८४८ मे उसको इसलिये गिरिफ्तार किया गया, कि उसने कौंटेसकी एक डीड-बक्स (दस्तावेजकी पेटी) को चुरानेकी प्रेरणा दी थी। लेकिन, ११ अगस्तको कोलोनकी जूरीने उसे इस अपराधसे मुक्त करके छोड दिया। इस समय भी तरुण लाजेल ने अपनी अनुपम तर्क-शक्तिका परिचय दिया था। इसके बाद वह क्रान्तिकारी संघर्षोंमें अपना अधिक और अधिक समय देने लगा। इसी समय वह मार्क्सके प्रभावमें आया। मार्क्सकी तरह लाजेल ने भी हेगेलीय दार्शनिक विचारधाराका अच्छी तरह अध्ययन किया था। अपनी पेरिसकी एक यात्रामे उसे फ्रेंच-समाजवादसे परिचय प्राप्त करनेका मौका मिला। मार्क्सकी तरह लाजेल भी यहूदी सन्तान था। उसके माता-पिता धर्मसे यहूदी होनेके कारण उसके मनमें स्वतंत्र विचारोंके अकुरित

---

* Ferdinand Lassalle.

होनेमें बाधा उपस्थित करते रहते थे। लाज़ेलमें फ्राइलीग्रथ जैसी सादगी और विनम्रता नहीं थी। सात वर्ष बाद मार्क्सने उसके बारेमें कहा था : लाजेल अपनेको विश्वविजयी समझता है, क्योंकि उसने एक वैयक्तिक जंजालमें निष्ठुरतापूर्वक सफलता प्राप्त की थी। मानो इस तरहके महत्त्वहीन काममें अपने जीवनके दस सालोंकी बलि दे देना आदमीमें वास्तविक नैतिकबल पैदा कर सकता है। कई शताब्दियों बाद एंगेल्सने कहा था, कि लाज़ेलके प्रति मार्क्सके मनमें सदा विरोधी भावना बनी रही। मार्क्सकी इस भावनामें एंगेल्स और फ्राइलीग्रंथ भी शामिल थे। लेकिल यह सब होते हुये भी मार्क्स लाज़ेलके गुणों और योग्यताके महत्त्वको कम नहीं करते थे।

१२ अक्तूबर (१८४८ ई०) में जब "नोये राइनिशे ज़ाइटुंग" फिर निकलने लगा, तो उसके सम्पादकमंडलमें फ्राइलीग्रंथ भी शामिल हो गये। ६ अक्तूबर-को वीनामें फिर क्रान्ति हो गई। मार्क्स स्वयं २८ अगस्तसे ७ सितम्बर तक लोगोंमें प्रचार करनेके लिये वीना जा कर रहे थे, जिसमें उन्हें उतनी सफलता नहीं मिली थी, क्योंकि अभी ऐतिहासिक भौतिकवादकी सच्चाइयों तक पहुँचना वीनाके कमकरोंके बससे बाहरकी बात थी। हुंगरीकी क्रान्तिको दबानेके लिये जब वीनासे सेनायें भेजीजाने लगीं, तो कमकरोंने अपनी क्रान्तिकारी नैसर्गिक बुद्धिके कारण उसका विरोध किया। इसके लिये सेनाकी गोलियाँ हुंगरीके सामन्तोंके खिलाफ खर्च होनेकी जगह कमकरोंपर पड़ीं। लेकिन, हुंगरीके सा-मन्त इसके लिये क्यों कृतज्ञ होने लगे? क्रान्ति-विरोधियोंने वीनाको चारों ओर-से घेर लिया। अक्तूबरके अंतमें बर्लिनमें जनतांत्रिक कांग्रेस हुई। उसने वीनाके कमकरोंके पक्षमें एक अपील निकाली, जो आँसू बहाने और उपदेश देनेसे बढ़-कर कुछ नहीं थीं। लेकिन, वीनाके घिरे हुये कमकरोंके पक्षमें एक जबर्दस्त लेख मार्क्सने गद्यमें और फ्राइलीग्रथने बड़े सुन्दर और शक्तिशाली पद्यमें निकाल-कर बतलाया, कि वीनाके कमकरोंकी सच्ची सहायताका केवल एक ही उपाय है, और वह है जर्मनीके क्रान्ति-विरोधियोंका खातमा करना। वीनाकी क्रान्ति केवल कमकरोंके बलपर सफल नहीं हो सकती थी। यद्यपि कमकरोंने, विद्यार्थियों और निम्न मध्यमवर्गके एक भागको साथ करके बड़ी वीरताके साथ लड़ाई लड़ी,

किन्तु बूर्ज्वाजी और किसान उनके साथ धोखा देनेके लिये तैयार थे। इस प्रकार ३१ अक्तूबरकी शामको सेना नगरमें घुसनेमें सफल हुई, और १ नवम्बर को सेंट स्टिफन गिर्जाके मीनार-पर क्रान्ति-विरोधियोंका काला-पीला झंडा फहराने लगा।

युरोपके एक भागमें सफल हुये क्रांति-विरोधियोंका प्रभाव दूसरी जगह पड़ना जरूरी था। बर्लिनमें प्फुयेलका नौकरशाही मंत्रिमंडल टूटा और उसकी जगह शुद्ध सामन्तशाही ब्रांडेनवर्ग-मंत्रिमण्डल आया, जिसने बर्लिन-एसेम्बलीको ब्राडेन-वर्गके कस्बेमें जाने और जेनरल रेंगलको गारदकी सेनाओंके साथ बर्लिनपर कूच करनेका हुकुम दिया। हो हेनजोलर्न वंशका अवैध पुत्र ब्रांडेनवर्ग अभिमान मे फूला नहीं समाता था और समझता था, कि मैं वह हाथी हूँ, जो कि क्रान्तिको अपने पैरोंतले रौंदकर चूर्ण-चूर्ण कर सकता है। "नोये राइनिशे ज़ाइटुंग" ने इस पर कहा था : "दोनो आदमी 'ब्रान्डेनवर्ग और रेंगल' बिना सिर, बिना हृदय और बिना सिद्धान्तके हैं। वह भड़कीली मूछोंके सिवाय और कुछ नहीं हैं।"

प्रशियन सामन्तवादने अब क्रान्तिकारी शक्तियोंको पूरी तौरसे दबानेका निश्चय कर लिया। उसने नागरिकोंके गारदको खतम कर, मार्शल-ला घोषित कर दिया। बर्लिनमें जिस वक्त इस तरह तानाशाही नंगा नाच कर रही थी, उस समम "नोये राइनिशे जाइटुंग" का मुँह खुला था। उसने घोषित किया : "वह घड़ी आ गई है, जबकि प्रति-क्रान्तिको द्वितीय क्रान्तिसे मुकाबिला करना होगा। जनताको चाहिये, कि सरकारकी हिंसाका विरोध हर तरहसे संभव हिंसात्मक तरीकोंसे करे। निष्क्रिय-प्रतिरोध को अपने आधारके तौरपर सक्रिय-प्रतिरोधकी आवश्यकता है, नहीं तो वह कसाईके सामने भेड़के संघर्षकी तरह बिल्कुल बेकार साबित होगा : प्रशियन-मुकुट पूरी तौरसे अपने अधिकारके भीतर है, जबकि वह अपनी परमप्रभुत्वको एसेम्बली (विधान-सभा) के ऊपर इस्तेमाल करता है, और एसेम्बली गलत रास्तेपर है, क्योंकि वह मुकुटके प्रति एक परम-प्रभुत्व सम्पन्न एसेम्बलीके तौरपर काम नहीं करती।... पुरानी नौकरशाही बूर्ज्वा-जीका सेवक बननेकी इच्छा नहीं रखती, क्योंकि अब तक वह बूर्ज्वाजीके लिये निरंकुश स्कूल-मास्टर रही है। सामन्ती-दल बूर्ज्वाजीकी वेदी-पर अपने हितों

और विशेषाधिकारोंकी बलि चढ़ाना नहीं चाहता। और अन्ततः मुकुट (राजा) अपने वास्तविक और जन्मजात सामाजिक आधारको पुराने सामन्ती समाजके तत्वोंमें पाता है, जिस समाजका कि सर्वोच्च रूप मुकुट (राजा) के रूपमें मौजूद है। साथ ही वह बूर्ज्वाजीको एक विदेशी और कृत्रिम आधार समझता है, जो कि स्वयं जीर्ण-शीर्ण होनेपर ही मुकुटको बर्दाश्त कर सकती है"।

(३) मार्क्सपर मुकदमा—बर्लिन-एसेम्बलीने सामन्तोंके स्वेच्छाचारका जवाब टैक्स उगाहनेके अधिकारसे सरकारको वंचित करके दिया। उस समय कोलोनमें जनतांत्रिक प्रदेश-कमेटीने मार्क्स, शापर और स्नाइडरके हस्ताक्षर द्वारा १८ नवम्बरको एक अपील निकालकर माँग की, कि राइनलेंडके जनतान्त्रिक एसोसियेशनोंको तुरन्त निम्न कामोंको हाथमें लेना चाहिये: अधिकारी अगर बलपूर्वक कर उगाहनेका कोई प्रयत्न करें, तो सभी संभव उपायसे उसका मुकाबिला करना चाहिये, दुश्मनसे मुकाबिला करनेके लिये सब जगह तुरन्त नागरिक गारद संगठित किये जाने चाहिये। म्युनिसिपेलिटीके कोष और चन्दोंके पैसोंसे हथियार और गोला-बारूद खरीद उसे गरीबोंमें बाँट देना चाहिये। यदि सरकार एसेम्बलीके निर्णयोंको माननेसे इन्कार करे, तो सब जगह सार्वजनिक सुरक्षा कमेटियाँ निर्वाचितकी जायें, जहाँ संभव हो, यह काम म्युनिसिपेलिटीकी सम्मतिसे किया जाय। जो म्युनिसिपेलिटियाँ एसेम्बलीका विरोध करें, उन्हें सार्वजनिक वोटोंसे पुनः निर्वाचित किया जाये। राइनलेंडके जनतान्त्रिक एसोसियेशनने जो काम किया, यदि वह काम बर्लिन एसेम्बलीने किया होता, तो सभी सामन्तशाहीके होश उड़ गये होते, लेकिन, बर्लिन-एसेम्बलीके वचन बहादुरोंमें इतनी हिम्मत कहाँ थी? उन्हें अपनी सम्पत्तिका डर लगने लगा, और वह भाग-भागकर अपने क्षेत्रोंमें जा एसेम्बलीके निर्णयको काममें न लानेके लिये प्रयत्न करने लगे। उनकी इस निर्बलताको देखकर सरकारको हिम्मत हुई, और उसने ५ दिसम्बरको एसेम्बली तोड़ एक नये मताधिकारको लोगोंपर लादा।

इस प्रकार बर्लिन-एसेम्बलीके विश्वासघातके कारण राजधानीसे निश्चिन्त हो अब सरकारका ध्यान राइनलेंडकी ओर गया। वहाँ उसने भारी संख्यामें सेनायें भेजीं। २२ नवम्बरको लाज़ेल डुज़ेलडोर्फमें गिरफ्तार हुआ—लाज़ेलने

कोलोनकी अपीलका स्वागत किया था, लेकिन कोलोनमें गिरफ्तार करनेकी हिम्मत नहीं हुई। सरकारी वकीलने अभियोग चलाया। ८ फरवरीको अपीलपर हस्ताक्षर करनेवाले कोलोनकी जूरीके सामने पेश हुये। उनपर सरकारके विरुद्ध, और राजाकी सेनाके विरुद्ध सशस्त्र प्रतिरोध करनेका इल्जाम लगाया गया। मार्क्सने एक जबर्दस्त भाषण द्वारा सरकारी वकीलके बयानके चिथड़े-चिथड़े उड़ा दिये : जिन्होने सफलतापूर्वक क्रान्ति की थी, उनके लिये यही युक्ति-युक्त था, कि वह अपने विरोधियोंको फाँसीपर चढ़ा देते, न कि उन्हें अपने ऊपर जज बनाकर बैठाते। तुम अपने पराजित शत्रुओंसे इस तरह पिंड छुड़ा सकते हो, लेकिन उनपर अपराधीके तौरपर मुकदमा नहीं चला सकते। एसेम्बलीने ठीक किया या मुकुट (राजा) ने यह एक ऐतिहासिक प्रश्न है, जिसका फैसला केवल इतिहास ही दे सकता है जूरी नहीं। मार्क्सने साथ ही ६ और ८ अप्रैलके कानूनोंको माननेसे इन्कार करते हुये बतलाया, कि मुकुटको—जिसने कि मार्चके संघर्षोंमें अपनी पराजय स्वीकार की थी—बचानेके लिये जिस संयुक्त डाँटने उन्हें गढ़ा था, वह आधुनिक बूर्ज्वा-समाजका प्रतिनिधित्व करनेवाली सभा थी। सामन्तवादी सभाके कानूनों द्वारा उसका निर्णय नहीं किया जा सकता। यह सिद्धान्त नहीं निरीह कानूनी गप है, कि समाज कानूनपर आधारित है। इसके विरुद्ध वस्तुतः कानून समाजके ऊपर आधारित है : मेरे हाथमे कोड नेपोलियन (नेपोलियन विधान संहिता) है। यह बूर्ज्वा-समाजको नहीं उत्पन्न करती, बल्कि इसके विरुद्ध इसे बूर्ज्वा-समाजने पैदा किया है, जिसने कि अठारह शताब्दीमें विकसित होते इस कोड (विधान-संहिता) के रूपमें अपना कानूनी स्वरूप प्रकट किया; इसके सिवाय यह और कुछ नहीं है। जैसे ही यह कोड सामाजिक सम्बन्धोंको सच्चाईके साथ प्रकट करनेमे असफल हुई, वैसे ही वह एक रद्दीके टुकड़ेसे अधिक हैसियत नहीं रखेगी। तुम पुराने कानूनोंको नये समाजका आधार उसी तरह नहीं बना सकते, जैसे कि पुराने कानूनोंको पुराने समाजका बनाया जा सकता है।"

बर्लिन-एसेम्बलीने गैर-कानूनी तौरसे कोई काम नहीं किया, अगर उसने करोंके उगाहनेसे इन्कार कर दिया, यह बतलाते हुये मार्क्सने कहा : "अगर

करोंका उगाहना गैर-कानूनी घोषित कर दिया गया, तो यह मेरा कर्तव्य हो जाता है, कि इस गैर-कानूनी कार्रवाईको कार्यरूपमें परिणत करनेके लिये जो भी प्रयत्न किया जाय, उसका विरोध करूँ, जरूरत पड़नेपर बलपूर्वक भी।" यद्यपि जिन लोगोंने टैक्स अदा करनेसे इन्कार करनेकी घोषणा की, उन्होंने अपने चमड़ेको बचानेके लिये क्रान्तिकारी पथ ग्रहण करनेसे इन्कार कर दिया, लेकिन जनसाधारण इस घोषणाको कार्यरूपमें परिणत करनेके लिये मजबूर है। एसेम्बलीका बर्ताव जनताके लिये निर्णायक नहीं है: "एसेम्बलीका अपना कोई निजी अधिकार नहीं है, जनताने सिर्फ अपने अधिकारों की प्रतिरक्षाका कार्य एसेम्बलीको सौंपा था। जब एसेम्बली इस कार्यको पूरा करनेमें असफल हुई, तो उसके अधिकार खतम हो गये और तब जनता अपने निजी अधिकारोंसे सीधी कार्रवाई करनेके लिये अखाड़ेमें उतरी। अगर मुकुट (राजा) प्रतिक्रान्ति संगठित करता है, तो नई क्रान्ति द्वारा उसका जवाब देना जनताको उचित है। मार्क्सने अपने भाषणको समाप्त करते हुये बतलाया, कि अभी नाटकका पहला ही अंक खेला गया है, अन्तिम अंक इसका या तो होगा प्रति-क्रांतिकी पूर्ण विजय, या और नई विजयी क्रांति, यद्यपि विजयी क्रांति प्रति-क्रांतिकी पूरी विजय हो लेनेके बाद ही शायद सम्भव होगी। निर्भीक क्रांतिकारी भाषणको सुननेके बाद जूरीने सभी अपराधियोंको मुक्त कर दिया और जूरीके मुखियाने मार्क्सको शिक्षादायक भाषणके लिये धन्यवाद दिया।

५. प्रति-क्रान्ति

वीना और बर्लिनमें प्रति-क्रान्तिकी विजयने फैसला कर दिया, कि जर्मनीमें क्रान्तिने जो भी सफलतायें प्राप्त की थीं, वह हाथसे जाती रहेंगी। उसके चिन्ह-स्वरूप अब फ्रांकफुर्त एसेम्बली—सारी जर्मनीकी संयुक्त पार्लामेन्ट—बच रही थी, लेकिन, उसका राजनीतिक महत्व कबका खतम हो गया था और अब वह कागजी-संविधानके बहस-मुबाहिसेमें पड़ी हुई थी। उसका अन्त बस या तो प्रशियाकी संगीनोंसे होनेवाला था, या आस्ट्रियाकी।

इंगलैंडमें चार्टिस्ट-आन्दोलन अब शक्तिशाली नहीं रह गया, इसलिये

वहाँकी बूर्ज्वा-सरकार कहीं भी अपने घातक शत्रुओ—मजदूरोंके विद्रोहको दबाने के लिये मुक्त थी। जून (१८४८ ई०) के सघर्षोंमें फ्रेंच-मजदूरोंको इतनी चोटें लगी थीं, कि वह अभी किसी नये विद्रोह करनेके योग्य नहीं थे। प्रति-क्रान्तिने पेरिससे अब क्रान्तिके दूसरे स्थानोपर धावा बोलना शुरू किया था। वहाँसे वह फ्राकफुर्त, वीना होते बर्लिन पहुँची। यूरोपकी क्रान्तिकी लहरोंके दबनेकी सूचनाके रूपमें १० दिसम्बर (१८४८ ई०) को फ्रेंच गणराज्यका राष्ट्रपति नकली-बोनापार्ट निर्वाचित किया गया। केवल हुगरीमें अभी भी क्रान्ति-की ज्योति जग रही थी। एगेल्स इसी बीच कोलोन लौट आये थे। जर्मन राइख (राज्य) की घोषणाओंने प्रेसका गला घोट दिया था, इसलिए "नोये राइनिश जाइटुङ्ग" का पथ कंटकाकीर्ण हो गया था। सघर्षके समयमे भी इस पत्रने जर्मन कमकरोंकी कार्रवाइयोंको विस्तारपूर्वक नहीं छापा था, लेकिन उसका यह अर्थ नहीं कि उसका भाग उसमे नगण्य था। उसने सारे जर्मनीमें अपना हाथ फैलाया था, जिसमें पूर्वके एलबियन युंकरोंकी भूमि भी सम्मिलित थी—जहाँ सामन्तवाद नंगा नाचता आया था। मजूरोंकी अपनी कॉग्रेसें, अपने सगठन, अपने अखबार थे, स्टिफन बोर्न जैसा योग्य नेता उनके पास था, जो पेरिस और ब्रुशेल्सके मार्क्स और एगेल्स साथ मित्रताका भाव रखता था और बर्लिन तथा लाइपजिगसे "नोये राइनिश जाइटुङ्ग" में लेख लिखा करता था। बोर्न कम्युनिस्ट घोषणापत्रको अच्छी तरह समझता था, लेकिन जर्मनीके अधिकाश भागके वर्ग-चेतनामें पिछड़े हुये सर्वहारोंके ऊपर घोषणापत्रके प्रोग्राम और सिद्धान्तों-का लागू करना उसके बसकी बात नहीं थी।

१८४९ ई०के वसन्तमें मार्क्स और एगेल्सने कमकर-आन्दोलनकी दिशामें पहला कदम उठाया था। "नोये राइनिश जाइटुङ्ग" पहले कमकरोंके आन्दोलन और कार्रवाइयोंके बारेमें जो अधिक ध्यान नहीं देता था, इसका कारण यही था, कि उनका कोलोन-कमकर-एसोसियेशनके नामसे अपना एक संगठन था, जिसकी ओरसे वह अपना अर्ध-साप्ताहिक पत्र मोल और शापरके सम्पादकत्वमें निकालते थे। इसके अतिरिक्त यह भी बात थी, कि "नोये राइनिश जाइटुङ्ग" जनतान्त्रिकताका मुखपत्र था, इसलिए वह सामन्तवाद और निरकुशताके विरुद्ध

सर्वहारा तथा बूर्ज्वाज़ीके सम्मिलित हितोंकी वकालत करता था, जो उस समय जरूरी भी था। क्रान्तिके विफल और प्रति-क्रान्तिके सफल होनेपर जनतान्त्रिकता-का बूर्ज्वाजी अंग बहुत भयभीत हो, जल्दी ही युद्धक्षेत्रसे भाग गया। जब जन-तान्त्रिक सङ्गठन अब निराशावाद और समझौतावादी नीतिका अनुसरण कर रहा था, वहाँ रहना बेकार था। इसलिये मार्क्स, विलहेल्म वोल्फ, शापर और हेरमान वेकेरने जनतान्त्रिक प्रदेश-कमेटीसे १५ मईको इस्तीफा दे दिया। इसी समय कोलोन-कमकर-एसोसियेशनने भी रेनिश जनतान्त्रिक सङ्गठनोंके एसो-सियेशनोंसे अपना नाम हटा लिया और सभी मजूरवर्गीय और दूसरे सङ्गठनोंको निमन्त्रित किया, कि समाजवादी जनतान्त्रिकताके सिद्धान्तोंकी रक्षा करनेवाले मजूरवर्गीय और दूसरे सङ्गठनोंके प्रतिनिधियोंको ६ मई (१८४६ ई०) को, होनेवाली प्रादेशिक काँग्रेसमें भेजें। २० मार्चसे "नोये राइनिश ज़ाइटुङ्ग" ने सिलेसियाके करोड़पतियोंके विरुद्ध विलहेल्म वोल्फके लेख छापने शुरू किये, जिनसे दीहाती सर्वहारोंके भीतर बड़ी सनसनी फैली। ५ अप्रैलसे पत्रने ब्रुशेल्समें मार्क्सके दिये हुये भाषण—मजूर-श्रम और पूँजी—को छापना शुरू किया। मार्क्सने १८४८ ई०के जबर्दस्त जन-संघर्षका हवाला देते हुए बतलाया कि चाहे प्रत्येक क्रान्तिकारी विद्रोह फैला हो, चाहे वर्ग-संघर्षसे उसका उद्देश्य कितना ही अलग हो, किन्तु मजूर वर्ग विजयी होगा। अखबारने आर्थिक सम्बन्धोंकी समस्यापर रोशनी डालते हुये कहा, कि बूर्ज्वाज़ी और कमकरोंकी दासता इन्हीं आर्थिक सम्बन्धोंपर आधारित है।

आन्दोलनको ठंडा पड़ते देख कायर सरकारोंकी हिम्मत और बढ़ जाती है। उसीके अनुसार अब जर्मन-सरकारने भी कदम उठाया और "नोये राइनिश ज़ाइटुङ्ग" का गला घोंटनेका निश्चय किया। वह राइनलैंडमें मार्शल-ला भी घोषित करना चाहती थी, लेकिन वहाँकी फौजके कमाण्डेन्टकी हिम्मत टूट गई और उसने मार्शल-ला (फौजी-कानून) घोषित करनेकी जगह "खतरनाक आदमी" कहकर पुलिस द्वारा मार्क्सको निर्वासित करनेका निश्चय किया। लेकिन पुलिस भी ऐसा करनेसे घबराती थी। उसने इसके बारेमें प्रादेशिक गवर्नरसे पूछा, जिसने गृह-मन्त्री मन्टोफेलसेके पास लिखा। १० मार्चको प्रादेशिक

सरकारने बर्लिनको सूचित किया कि मार्क्स अब भी कोलोनमें हैं, यद्यपि विदेशी होनेके कारण पुलिसकी आज्ञा न होनेसे उसे वहाँ रहनेका अधिकार नहीं है। यहाँ रहते बल्कि अपने अखबार द्वारा वह अपनी उग्र कार्रवाइयोंको भी जारी रखे हुए हैं, वह लोगोंको वर्त्तमान संविधानके विरुद्ध भड़काता, एक सामाजिक गणराज्य स्थापित करनेका प्रचार करता है, और मानवता जिन बातोंकी इज्जत करती, जिनके प्रति प्रेम दिखलाती है, उनका वह उपहास करता है। पत्रकी ग्राहक-संख्या भी बढ़ती जा रही है। पुलिसकी रिपोर्टको पाकर गृह-मन्त्रीने राइन प्रदेशके प्रेसीडेन्ट आइख़मानसे राय पूछी। २६ मार्चको (१८४६ ई०) आइख़मानने बतलाया, कि मार्क्सका निर्वासन उचित है, लेकिन ऐसा करनेमें तब तक कठिनाई है, जब तक कि वह और अपराधोंके लिये जिम्मेवार नहीं हो जाता। ७ अप्रैलके अपने आदेश-पत्रमें मन्टोफेलने प्रादेशिक सरकारको सूचित किया, कि मैं निर्वासनके विरुद्ध नही हूँ, लेकिन किस समय और कैसी परिस्थितिमें इसे करना चाहिये, यह प्रादेशिक सरकारके जिम्मे है। मेरी रायमें निर्वासन का आदेश उसी समय निकालना चाहिये, जब कि किसी खास अपराधसे उसका सम्बन्ध जोड़ा जा सके।

लेकिन कोई खास अपराध न पा मार्क्स द्वारा सम्पादित पत्रकी "खतरनाक रुझान" के कारण ही मार्क्सको निर्वासनका आदेश ११ मईको दिया गया। २६ मार्च और ७ अप्रैल तक अभी प्रशियन सरकारको ऐसा कदम उठानेकी हिम्मत नहीं थी, लेकिन मईके मध्यमें पहुँचते-पहुँचते वह अपनेको काफी मजबूत समझती थी। इस निर्वासनके तुरन्त ही बाद कवि फ्राइलिग्रथने निम्न पंक्तियाँ लिखी थीं :

"ईमानदारीके युद्धमें एक यह ईमानदार प्रहार नहीं,
बल्कि ईर्ष्या और धोखेकी चाल है,
मुझे गिराया गुप्त कलंकने,
कमीने पाश्चात्य कलमकके।"

अध्याय १०

लन्दनमें निर्वासित जीवन (१८४६ ई०)

सचमुच ही प्रशियन सरकारकी कायरता और भी नंगी दीखने लगती है, जब हम यह जानते हैं कि आदेश-पत्र उस समय निकाला गया, जब कि मार्क्स कोलोनमें मौजूद नहीं थे। "नोये राइनिश ज़ाइटुङ्ग" के ग्राहकों और अनुग्राहकोंकी संख्या यद्यपि बढ़ती जा रही थी, इस वक्त उसके छः हजार ग्राहक थे, कि उस शताब्दीके जर्मन पत्रोंके लिए कम नहीं समझी जाती थी, लेकिन आर्थिक-कठिनाइयाँ उसकी कम नहीं हुई थीं। १८४६ ई० में हाम नगरके दो पूँजीपतियोंने एक कम्युनिस्ट प्रकाशन-गृह स्थापित करनेके लिये पैसा देना चाहा था। उनमेंसे एक रेम्फेलसे उसी सिलसिलेमें बात करनेके लिए मार्क्स हाम गये हुये थे। रेम्फेलने अपनी थैली न खोली किसी दूसरे आदमी भूतपूर्व लफटेनेन्ट हैज़ेका नाम बतलाया, जिसने मार्क्सकी वैयक्तिक जिम्मेवारी पर तीन सौ थालर कर्जके रूपमें दिये। हेज़ पीछे पुलिसका गुप्तचर साबित हुआ, लेकिन उस समय पुलिस उसपर मुकदमा चला रही थी। उसके साथ मार्क्स जब कोलोन पहुँचे, तो निर्वासनका हुकुमनामा वहाँ मौजूद मिला। अब "नोये राइनिश ज़ाइटुङ्ग" के लिए कुछ नहीं किया जा सकता था। उसके दूसरे सम्पादकोंमेंसे भी बहुतसे मार्क्सकी तरह ही प्रशियन कानूनकी दृष्टिमें "विदेशी" थे, और जो बच रहे थे उनपर मुकदमा चलाया जा रहा था। १६ मईको पत्रका अन्तिम अंक निकला, जिसमें बिदाईका सन्देश देते हुये मार्क्सने सरकारके ऊपर जबर्दस्त प्रहार किये : "अपने मूर्खतापूर्ण झूठों, अपने बनावटी वाक्योंके फेरमें क्यों पड़ते हो ! हम स्वयं निष्ठुर हैं। हम तुमसे दयाकी भिक्षा नहीं माँगते। जब हमारी बारी आयेगी, तो हम अपने आतंकवादको काममें लानेमें जरा भी नहीं हिचकिचायेंगे, लेकिन राजसी आतंकवादी, भगवान्‌की दया और कानूनके अधिकारवाले आतंकवादी व्यवहारतः पशु, घृणित और कमीने हैं, सिद्धान्त

में चार और 'मनस्यन्यद् वचस्यन्यद्वाले हैं। व्यवहार और सिद्धान्त दोनोंमें उन्हें इज्जत-प्रतिष्ठा छू नहीं गई है।" पत्रने चलते-चलते कमकरोंको सावधान किया, कि इस समय कोई भी सशस्त्र कार्रवाई करना बेकार ही नहीं खतरनाक और मूर्खतापूर्ण भी होगी। लेखके समाप्तमे हुआ था: "कमकर-वर्गकी मुक्ति" के साथ।

मार्क्स केवल सिद्धान्तवादी और जबर्दस्त व्यावहारिक क्रांतिकारी ही नहीं थे, बल्कि उनका हृदय उच्च आदर्शवाद और त्यागसे भरा हुआ था। समय-समय पर उनके रूखे बर्तावोंसे उनके पिताके शब्दो "हृदयहीनके शब्द हृदयहीन" को दूसरे भी दोहरा सकते थे, लेकिन उस असाधारण पुरुषके हृदयमें असाधारण उदार और त्याग का भाव भरा हुआ था। यदि उस महापुरुषके केवल ऐसे ही जीवनके पहलुओंको लिया जाय, तो वह पुराणो और जातकोके किसी भी सर्वस्व-त्यागी पुरुषसे पीछे नहीं दिखलाई पड़ते। लेकिन केवल स्वार्थत्याग और बलि-दानसे एक ठोस आर्थिक ढाँचेको हटाकर उसकी जगह सर्व कल्याणकारी नया ढाँचा नहीं कायम किया जा सकता, हजारों वर्षोंसे चले आते शोषण और उत्पीडनको हटाकर मुक्त मानवके सुखी और समृद्ध समाजको स्थापित नहीं किया जा सकता। उसके लिये जिस चीज की आवश्यकता मानवताको थी, वह था उनका सिद्धान्त और व्यवहारका परम ज्ञान। जब तक दुनियामें वर्गहीन समाज स्थापित नहीं हो जाता, तब तक मार्क्सके जीवनके इन्हीं दोनों पहलुओ की ओर सबसे अधिक ध्यान देनेकी आवश्यकता है।

"नोये राइनिशे त्साइटुङ्ग" अब अस्त होने जा रहा था, लेकिन मार्क्स पत्रको अपनी वैयक्तिक जिम्मेवारी समझते थे, इसलिये उसके प्रति अपने दूसरे कर्त्तव्योंको भी पालन करना उन्हें आवश्यक जान पड़ा। तीन सौ थालर हेजैसे थे, पन्द्रह सौ थालर ग्राहकोंसे मिले थे। प्रेस, दूसरी चीजो तथा इन पैसोंसे मार्क्सने मुद्रकों, कागजके व्यापारियों, क्लर्कों, सम्पादको, संवाददाताओ—सबका पैसा-पैसा चुकाया। मार्क्सने अपनी बीबीके चाँदीके बर्तनोंको ही केवल अपने पास रक्खा, बाकी सबको बेंचकर एक-एक पैसा बेबाक किया। जेनीके इन चाँदीके बर्तनों को फ्राकफुर्तमें बन्धक रखनेवालोंके हाथमें दे, कुछ सौ गिल्डर मिले। यही अब मार्क्स-परिवारका एकमात्र अवलम्ब रह गया।

१. विदा जन्मभूमि !

फ्रांकफुर्तसे मार्क्स एंगेल्सके साथ बाडेन और प्लाटिनाटमें हुये विद्रोहके स्थानोंको देखने गये। पहले वह कार्ल्सरूहे पहुँचे फिर काइजरस्लाउटेर्न, जहाँ क्रान्तिकारियोंकी अस्थायी सरकारके प्राण डा० ईस्टरसे मिले। डा० ईस्टरने मार्क्सको पेरिसमें होनेवाली राष्ट्रीय एसेम्बलीमें जर्मन क्रान्तिकारी पार्टीका प्रतिनिधित्व करनेके लिये कहा। यह राष्ट्रीय एसेम्बली नकली बोनापार्ट और उसके दल "कानून और व्यवस्था" की पार्टियोंके विरुद्ध प्रहार करनेके लिये तैयारी कर रही थी। लौटते समय हेसियन सेनाने सन्देहपर दोनोंको गिरफ्तार कर लिया, लेकिन अन्तमें छोड़ दिया। मार्क्स ७ जूनसे पहिले पेरिस चले गये और एंगेल्स काइलरस्लाउटेर्न लौट एक भूतपूर्व प्रशियन लेफ्टनेंट विलिच द्वारा संगठित स्वयंसेवक सेनामें अड्जुटेंट बन गये।

पैरिसमें भी भला मार्क्सको कैसे चैनसे रहने दिया जाता। १६ जुलाईको पुलिसके अधिकारी (प्रिफेक्ट) ने मार्क्सके पास गृह-मन्त्रीका हुकुम पहुँचाया, कि तुम्हें देपार्तमाँ मोरबिआँ "(Department Morbihan)" में रहना होगा। इस जिलेके बारेमें फ्राइलिग्रथने मार्क्सको लिखा था : "दानियाल कहता है, कि मोरबियां फ्रांसका सबसे अधिक अस्वास्थ्यकर जिला है, वद दलदली है, बुखारका घर है।" मार्क्सने तुरन्त इस आज्ञाको मान नहीं लिया, बल्कि गृह-मन्त्रीसे अपील करके आज्ञाको स्थगित करवाया। इस समय मार्क्सकी आर्थिक अवस्था बहुत खराब थी। फ्राइलिग्रथ और लाज़ेल दोनोंने सहायताके लिये पैसा जमा करनेकी अपील की। फ्राइलिग्रथने लाजलेके पैसा जमा करनेके तरीकेकी शिकायत की। इसपर मार्क्सने बहुत क्षुब्ध होकर ३० जुलाईको कविको पत्र लिखते हुये कहा था : "सार्वजनिक भीख माँगनेकी अपेक्षा बड़ीसे बड़ी आर्थिक कठिनाइयाँ मुझे ज्यादा पसन्द हैं, और मैंने ऐसा उसे लिख दिया। उसकी इस कार्रवाईसे मैं बड़ा क्षुब्ध हुआ हूँ"। लेकिन लाज़ेलने पीछे समझाकर मार्क्सके दिलसे इस भावको हटा दिया। २३ अगस्तको मार्क्सने एंगेल्सको सूचित किया, कि मैं फ्रांस छोड़ रहा हूँ। ५ सितम्बर (१८४८ ई०) को मार्क्स ने कविको लिखा, कि इसके बाद १५ सितम्बरको मेरी बीबी भी आ

जायेगी, यद्यपि मैं यह नहीं जानता कि उसकी यात्रा और फिर कहीं सिर रखनेके लिये पैसा कहाँसे आयेगा।

२. नोये राइनिशे रिव्यु—पैरिससे मार्क्सने अन्तिम पत्रमे एंगेल्सको लिखा था, कि लन्दनसे एक पत्र निकालनेकी संभावना है, और इसके लिये कुछ पैसा भी मिलनेवाला है। इसी पत्रमें एंगेल्सको यहभी लिखा कि तुम तुरन्त लन्दन चले जाओ। एगेल्स बाडेन और प्लाटिनाटके विद्रोहके विफल होनेके बाद स्वीट्जलैंड राजनीतिक शरणार्थी थे, जब कि इन्हें यह पत्र मिला। वह गेनोवासे जहाज द्वारा इंगलैंड पहुँचे। जो पैसा पत्रके लिये मिला था, वह बहुत थोडा था, इसमे सन्देह नहीं। मार्क्सने अपने सम्पादकत्वमे नोये राइनिशे रिव्यू के नामसे एक राजनीतिक-आर्थिक पत्रिका निकालनेका निश्चय करते हुये १ जनवरी १८५० को पत्रिकाके शेयरका विवरण प्रकाशित किया, जिसमें बतलाया गया था, कि दक्खिनी जर्मनी और पेरिसके क्रान्तिकारी आन्दोलनोंमें भाग लेने के बाद नोये राइनिशे के सम्पादक पिछली गर्मियोमे लन्दन पहुँचे। यहाँसे उन्होंने पत्रको निकालनेका निश्चय किया। पहिले यह २८ पन्नोंकी एक मासिक पत्रिकाके तौरपर निकलेगा, लेकिन जैसे ही आर्थिक अवस्था बेहतर होगी, यह अर्ध-मासिक और फिर उसी ढगपर शायद साप्ताहिक बन जायेगा जैसे कि इंगलेंड और अमेरिकाके साप्ताहिक निकलते हैं। जैसे ही जर्मनी लौटनेका अवसर मिलेगा, पत्र फिर पहलेकी तरह दैनिक रूपमे निकलने लगेगा। अन्तमें पाठकोंसे पचास फ्रांकवाले शेयरोंके लेनेके लिये प्रार्थना की गई थी। शायद बहुत अधिक शेयर बिके नही।

पत्रिका हाम्बुर्गमे छापी जाती, जहाँके एक बुकसेलरने ५० प्रति सैकडा कमीशनपर उसके प्रकाशित करने और बॉटनेकी जिम्मेवारी ली थी। इसका तिमाही चन्दा था २५ चादीका ग्रोशेन। बुकसेलरने बहुत कोशिश नहीं कर पाई, क्योंकि प्रशियन सेना उस वक्त हामबुर्गमे पडी हुई थी। लाजेलने डूजेल्डोर्फसे पचास ग्राहक दिये थे, वेडेमेयरने फ्रांकफुर्तमें बेचनेके लिये सौ कापियोंका आर्डर दिया था, लेकिन छ महीनेके बाद वह केवल ५१ गिल्डर पा सका: मैंने लोगोंपर बहुत दबाव दिया, लेकिन कोई पेसा देनेकी जल्दीमें नहीं है। "जेनी

मार्क्सको सबसे ज्यादा आर्थिक अभावकी चोट सहनी पड़ती थी, इसलिये वह इस प्रबन्ध-संबन्धी दुर्व्यवस्थापर असंतुष्ट थीं। पत्रिकाके कुल छ अंक निकले यद्यपि व्यवसायके तौरपर वह बिलकुल असफल ही नहीं, वल्कि मार्क्सकी आर्थिक कठिनाइयोंको ओर बढ़ानेवाला था, लेकिन उसमें जो चीजें निकलीं, वे अपना स्थायी मूल्य रखनेवाली थीं। मार्क्सकी उस समयकी स्थितिके बारेमें जेनीने लिखा था : " उनकी सारी शक्ति, स्वभावकी सभी शान्ति, संचित शक्ति प्रतिदिन और प्रतिघंटा विपत्तियोंसे घिरी हुई है। दोनों मित्र अपनी जवानीसे ही जब मार्क्स और एंगेल्स एक जगह नहीं रहते, तो बराबर पत्रों द्वारा एक दूसरेके पास सारी जानकारी भेजा करते थे। ऐसे पत्रोंकी संख्या हजारों थी। यह ऐतिहासिक पत्र आज भी मार्क्सके दीर्घ जीजनके अनेक पहलुओंपर स्पष्ट प्रकाश डालते हैं। मार्क्सके लिखे अनुसार एंगेल्स इंगलैंड पहुंच पत्रिकाके सम्पादनमें हाथ बँटा रहे थे। मार्क्सका ज्ञान और तजर्बा अगाध था, लेकिन वह अपनी आलोचना करनेमें बड़े निष्ठुर थे। वह और एंगेल्स आत्मवंचनाको बहुत बुरा समझते थे और हर वक्त अपनी गलतियोंको देखनेके लिये तैयार रहते। १८४६ ई० के संघर्षमय जीवन और यूरोपके अनेक देशोंमें क्रान्तियोंके निष्फल होनेके बारेमें मार्क्सने अपने विचार नई पत्रिकाके तीन अंकोंमें प्रकट किये। एक जगह आलोचना करते हुये मार्क्सने संक्षिप्त किन्तु अत्यन्त सार-गर्भित शब्दोंमें कहा है : " जूनके दिनोंसे पहले संविधानका जो पहला मसौदा तैयार किया गया था, उसमें काम पानेके अधिकारकी माँग भी सम्मिलित थी। यह सर्वहाराकी क्रान्तिकारी आकांक्षाओंका पहला मोटा सा रूप था। पीछे इसे सार्व-जनिक समर्थन प्राप्त करनेसे अधिकारके रूपमें परिवर्तित कर दिया गया, लेकिन उसे कौन सा आधुनिक राज्य है, जो अपने भिखमंगोंके लिये किसी न किसी रूपमें नहीं समर्थन करता है ? बूर्ज्वा दृष्टिकोणसे काम पानेका अधिकार एक फजूल, दयनीय और मनके लड्डू हैं, लेकिन काम पानेके अधिकारके पीछे पूँजी पर अधिकारकी माँग खड़ी है, जिसके पीछे उत्पादन-साधनोंके जब्त करने, और उसपर सम्मिलित मजूर वर्गका आधिपत्य खड़ा है, जिसका अर्थ है मजूर-श्रम, और पूँजी तथा उनके पारस्परिक सम्बन्धोंका मनसूख करना।

३. किंकेल-काण्ड

चौथे अंक (अप्रैल १८५०) में पहुँचते-पहुँचते पत्रिकाका पैर लड़खड़ाने लगा था। इस अंकमें मार्क्सका एक छोटा लेख निकला, जिसमें बताया गया था, कि यह लेख भावुक जूआचोरो और जनतान्त्रिक भड़ाभर्सिहोंमें बड़ा क्षोभ प्रकट करेगा। इस छोटे से लेखमें अपनी सफाईमे दिये हुये गोट्फ्रीड किंकलके ७ अगस्त १८४६ के भाषणकी तीव्र आलोचना थी। किंकल विद्रोहमे पकड़ा गया। रासटाटमे उसपर फौजी कानूनसे मुकद्मा चलाया जा रहा था। किंकलके दिये हुये भाषणको अप्रैल १८५० में बर्लिनके किसी पत्रने छापा था। किंकल राइख्न-संविधानके संघर्षके समय विलिचकी स्वयंसेवक सेनामें शामिल था, जिसमें एंगेल्स और मोल भी थे। लड़ते समय उसने बड़ी बहादुरी दिखलाई थी। मुर्गमें जिस समय मोल शहीद हुआ, उसी समय किंकल भी सिरमें घायल होकर बन्दी बना। फौजी अदालतने उसे किलेमे आजन्म कैद करनेकी सजा दी। किंकलने अपने भाषणोंमें चापलूसी करते हुये "तत्र महान् श्री राजकुमार हमारे सिंहासनके उत्तराधिकारी का वाक्य प्रयोग किया था, लेकिन तत्र महान् उसकी इस चापलूसीसे जरा भी नहीं प्रभावित हुआ। उसने राजासे कहा कि किंकेल के दण्डको मनसूख कर उसपर फिरसे मुकदमा चलाया जाय, क्योंकि उसे मृत्यु-दण्ड मिलना चाहिये था। लेकिन तत्र महान्की यह इच्छा पूरी नहीं हो सकी। किंकेल स्पन्डोके जेलखानेमें मई १८५० को स्थानातरित किया गया, जहाँ उसके साथ बहुत कड़ाईका बर्ताव नहीं किया जाता था और वह "तू" की जगह अब तुम से सम्बोधित करने योग्य कैदी माना जाने लगा था। उसकी बीबी इस बातकी कोशिश कर रही थी, कि उसके पतिको अमेरिका चले जानेके लिये जेलसे मुक्त कर दिया जाय। दूसरे प्रभावशाली लोग भी कोशिश कर रहे थे। किंकेल जैसे कमजोर दिलके आदमीकी जेलमे सासत किये जानेकी बातको लेकर शिक्षित लोगोंमें बहुत हाय-तोबा मचाई जा रही थी। कहा जाता था, ऐसे शिक्षित-सम्भ्रान्त व्यक्ति के साथ ऐसा बर्ताव अत्यन्त अनुचित है। मार्क्सने अपने लेखमें लिखा था, कि आगस्ट रोक्केल जैसे और भी कितने ही उतने ही शिक्षित-सम्भ्रान्त व्यक्ति जेलमे पड़े बारह वर्षोंसे अधिकारियों द्वारा असह्य पीड़ासे सताये

खा रहे हैं। लेकिन उन्होंने क्षमा की बात भी मुँहपर लानेसे इन्कार कर दिया। राकेलने जब सरकारके भीषण अत्याचारोंको सहते उसके इशारेपर भी माफी माँगके बाहर जानेसे इंकार कर दिया, तो सरकारको निर्लज्ज होकर उसे जबर्दस्ती जेलसे बाहर करना पड़ा। राकेल जैसे कितने ही स्वतंत्रता-प्रेमी वीर जेलमें सड़ रहे हैं। किंकेलने तो पहिले मुकदमेके समय ही अपना प्रायश्चित कर लिया था। मार्क्सके इस आक्षेपको कितनों ही ने बुरा समझा। बूर्ज्वाजीने अपनी थैली खोल दी, और नवम्बर १८५० को रिश्वत देकर कार्ल शुर्जने स्पन्डौ जेलसे किंकेलको भगानेमें सफलता प्राप्त की। किंकेलने सरकारको वचन दिया था, कि मैं अमेरिका चला जाऊँगा और फिर कभी राजनीतिमें भाग नहीं लूँगा। लेकिन, अब वह मुक्त होकर वीर बन चुका था, इसलिये सरकारके खिलाफ फिर आन्दोलन करनेको तैयार था।

४. कम्युनिस्ट लीगमें फूट

किंकेलको लेकर लन्दनके कितने ही शरणार्थियोंमें मार्क्स और एंगेल्सके प्रति जो भाव पैदा हुआ था, उसका प्रभाव कम्युनिस्ट लीगपर भी पड़ना जरूरी था। लन्दन आनेपर मार्क्स और एंगेल्स पत्रिकाके संचालनके अतिरिक्त एक और काममें लगे हुये थे। क्रान्तिके विफल होनेके बाद बहुतसे शरणार्थी विपन्नावस्थामें लन्दन पहुँचे हुये थे, उनकी सहायता करना इस समय जरूरी था इसलिये उन्होंने बावेर, प्फान्डर और विन्चिलकी सहायतासे एक शरणार्थी-सहायता-कमेटी संगठित की थी। स्वीजरलैंडने भी इस समय उदारतासे काम लेना छोड़ दिया था, इसलिये इंगलैंडमें भागकर आनेवाले शरणार्थियोंकी संख्या अधिक हो गई थी। मार्क्स और एंगेल्स इस समय कम्युनिस्ट लीगको पुनः स्थापित करनेकी आवश्यकता महसूस करने लगे थे। १८४९ ई०के शरद्से ही कम्युनिस्ट-लीगके पुराने बहुतसे मेम्बर लन्दनमें आ चुके थे। केवल मोल नहीं आया, क्योंकि वह दुश्मनोंसे लड़ते हुये शहीद हुआ था। शापर १८५० ई०के ग्रीष्ममें आया और वर्षके अन्तमें स्वीजलैंडसे विलहेल्म वोल्फ भी पहुँच गया था। पुराने मेम्बरोंके अतिरिक्त नये मेम्बरोंको भी लीगमें लिया गया, जिनमें

अगस्त विलिच भी था। एंगेल्स उसके अड्जुटेन्ट रह चुके थे। उसने विद्रोहमें स्वयंसेवक सेनाका सुन्दर रीतिसे संचालन किया था। वैसे वह बड़े ही कामका आदमी था, लेकिन सिद्धान्तोके संबंधमें वह बहुत स्पष्ट विचार नहीं रखता था। नये लिये हुये तरुणोंमें थे : व्यापारी कोनड्राड शम्म, स्कूल-मास्टर विलहेल्म पीपर और विलहेल्म लीब्क्नेरन्ट। लीबक्नेरन्टने जर्मन विश्वविद्यालयमें अध्ययन किया। अन्तमे-बाडेनके विद्रोहमें उसने भाग लिया और फिर स्वीजलैंड भाग गया। अगले जीवनमें यह तरुण मार्क्सके घनिष्ठ सम्बन्धमें आया। वह तो आजीवन मार्क्सका परमभक्त शिष्य बना रहा। कोनड्राड शम्म तपेदिकसे जवानी ही में मर गया। उसके लिये मार्क्सके दिलमें काफी स्नेह था। पीपर मार्क्सके अनुसार एक अच्छा लडका (बों गारसॉ) था।" गौटिंगेनके एडवोकेट योहानेस निकेलका मार्क्ससे परिचय हुआ। वह कम्युनिस्ट लीगमे शामिल हुआ, लेकिन अन्तमें पीपरकी तरह वह भी नरमदली बन गया। मार्क्स कठोर यथार्थवादी थे। किसी बातका फैसला वह भावुकतासे नहीं करते थे। गम्भीर सैद्धान्तिक दृष्टि और व्यापक तजर्बेने उन्हें बतला दिया था, कि सर्वहारा क्रान्ति—जिसे ही वस्तुतः क्रान्तिका नाम दिया जा सकता है—कभी मध्यवर्गके व्यक्तियोंपर विश्वास नहीं कर सकती, क्योकि वह बालूकी भीत हैं : जिस वक्त चारो तरफ सफलता और वाहवाही दिखलाई पडती है, वह घोर क्रान्तिकारी और कम्युनिस्ट बन जाते हैं; लेकिन जैसे ही परिस्थिति बदलती है, वह दुम दबाकर भाग खड़े होते हैं, अथवा छिपकर पार्टी और उसके उद्देश्योको नुकसान पहुँचानेकी कोशिश करते हैं। आज १०३ वर्ष बाद भी हम सत्यको किसी भी देश और प्रदेशमें देख सकते हैं।

कम्युनिस्ट लीगके पुनः स्थापित करनेके बाद मार्च १८५० मे लीगकी केन्द्रीय कमेटीकी ओरसे मार्क्स और एंगेल्स द्वारा तैयार किया सरकुलर (परिपत्र) निकाला गया, जिसमें लिखा गया था : "क्रान्तिकारी कमकर पार्टी निम्न-मध्यम-वर्गीय जनतन्त्रतावादियोंके साथ उस शत्रुसे लडनेमें सहयोग करेगी, जिसको दोनों हटाना चाहते हैं। लेकिन, जहॉ उसका अपना हित मॉग करेगा, वहॉ वह उसका विरोध भी करेगी।" निम्न-मध्यवर्गकी अविश्वसनीयताके बारेमें बतलाते हुये परिपत्रमें कहा गया था, कि यह वर्ग सफल क्रांतिको पूँजीवादी समाजके सुधार-

में इस्तेमाल करेगा, जिसमें कि उसके लिए जीवन अधिक आसान और सुखमय हो, कुछ हद तक कमकरोंके लिए भी इस्तेमाल करेगा। लेकिन सर्वहारा इससे इतनेसे सन्तुष्ट नहीं हो सकता, क्योंकि जनतन्त्रतावादी निम्न-मध्यमवर्गकी माँगें बहुत सीमित हैं। जब वह प्राप्त हो जायेंगी, तो फिर वह जल्दी ही क्रान्ति से अपनी आँखें फेर लेगा। इसके विरुद्ध कमकरोंको क्रांतिको तब तक चालू रखना होगा, "जब तक कि सम्पत्तिवाले वर्गसे सभी छोटी या बड़ी राजशक्ति छीन नहीं ली जाती, और शासन सर्वहारा तथा कमकरोंके सङ्गठन हाथमें नहीं आ जाता—यह केवल एक ही देशमें नहीं, बल्कि सारी दुनियाके अधिकांश महत्वपूर्ण देशोंमें और क्रान्ति इतनी दूर तक सफल नहीं हो जाती, जिसमें कि उन देशोंके कमकरोंके बीच प्रतियोगिता बन्द न हो जाये और कमसे कम उत्पादनके अत्यंत महत्वपूर्ण साधन उनके हाथमें नहीं आ जायें।"

सरकुलरमें कमकरोंको सावधान किया गया था कि निम्न-मध्यमवर्गके शान्ति और समझौतेके उपदेशोंसे धोखा न खायें अथवा बूर्ज्वा जनतान्त्रिकताके लग्गू-भग्गू न बन जायँ। 'संघर्षके दौरानमें और उसके तुरन्त बाद कमकरोंको सबसे अधिक और यथासम्भव बूर्ज्वा-वर्गके शान्तिके सभी प्रयत्नोंका विरोध करना होगा, और जनतान्त्रिकतावादियोंको अपने आतंकवादी शब्दोंको कार्यरूपमें परिणत करनेके लिये बाध्य करना होगा।...' राष्ट्रीय एसेम्बलीके चुनावमें मजदूरोंको सब जगह अपना उम्मीदवार खड़ा करना चाहिये, चाहे सफलताकी आशा भी न हो। इससे जनतन्त्रतावादियों और सरकारपरस्तोंकी पोल खोलनेका अच्छा मौका मिलेगा। सरकुलरमें यह भी बतलाया गया था कि सामन्ती जमींदारियोंके उठा देनेमें जब क्रान्ति सफल हो जाये, तब भी महान् फ्रैंच-क्रान्तिका अनुकरण करते हुए इन जमींदारियोंको छोटे-छोटे टुकड़ोंमें करके किसानोंकी वैयक्तिक सम्पत्तिके रूपमें नहीं बाँटना चाहिये, क्योंकि इससे दीहाती सर्वहाराकी श्रेणी बनी रहेगी और किसानोंकी निम्न-मध्यमवर्गीय मनोवृत्ति जमींदारोंको पैदा करेगी। कमकरोंको माँग करनी होगी, कि सामन्ती इलाकोंको जब्त करके उन्हें सरकारके हाथमें देना चाहिये, जो उन्हें कमकर-उपनिवेशोंके रूपमें परिणत करे और इस सम्मिलित भूमिको सर्वहारा बड़े पैमानेकी खेतीमें लगायें। इस प्रकार

बूर्ज्वा सम्पत्ति-सम्बन्धोंमें छिन्न-भिन्न होते समय सम्मिलित मिलकियतको एक मज-बूत आधारपर कायम किया जा सकेगा।

इस सरक्कुलरको लेकर बावर जर्मनी गया। उसे अपने काममें बड़ी सफलता हुई। उसने वहाँ कम्युनिस्ट लीगके टूटे हुये सम्बन्धोको पुनः स्थापित किया और कितने ही नये सम्बन्ध कायम किये। कमकरो, किसानों, दैनिक मजूरों एवं खेल-कूदकी सभाओंके ऊपर भी उसने प्रभाव डाला। स्टेफन बोर्न द्वारा स्थापित कमकर-बिरादरीके अत्यन्त प्रभावशाली सदस्य भी लीगमें शामिल हो गये। जून १८५० की केन्द्रीय कमेटीके कागज-पत्रोसे पता लगता है कि जर्मनीके कितने ही शहरोंमें लीगके फिर पैर जम गये और कई जगह कमेटियाँ भी कायम हो गईं : हम्बुर्ग, श्वेरिन, मेकलेनबुर्ग, ब्रेस्ला (सिलेसिया), लाइपजिग, सेक्सनी, बर्लिन, नूरेम्बर्ग (बवारिया) और कोलोन (राइनलेंड-वेस्टफालिया) मे उन प्रदेशोके संचालनके लिए कमेटियाँ भी कायम हो गईं। यह भी पतह लगता है कि लोगका सबसे जबर्दस्त प्रभाव लन्दनमें था।

लन्दनके शरणार्थियोंको बहुत विश्वास था कि जर्मनीमें क्रान्ति फिर शुरू हो जायेगी और हमें स्वदेश लौटनेका मौका मिलेगा। लेकिन उसमें उन्हें १८५० ई०के ग्रीष्म तक निराश होना पड़ा। और देशोंमे भी क्रान्तिकी सम्भा-वना नहीं दीख पड़ी। इस सबका प्रभाव लीगके ऊपर बहुत बुरा पड़ा। आपसमें मतभेद और खटपट शुरू हो गई, जिससे केन्द्रीय कमेटी भी नहीं बच सकी। १५ सितम्बर १८५० को केन्द्रीय कमेटीका जो अधिवेशन हुआ, उसमें साफ दो दल हो गये—एक दलमें छः सदस्य और दूसरेमे चार। मार्क्स, एगेल्स, बावर, एकेरियस, फ्फाडेर जैसे लीगके पुराने नेता कोनड्राड शम्मके साथ एक ओर हुये और विलिच, शापर, फ्रेंकेज और लेमान दूसरी ओर—जिनमें शापर ही पुराने कम्युनिस्टोंमें से था। बहुमत दलने लीगकी रक्षा करनेके लिये केन्द्रीय नेतृत्वको कोलोनमें स्थानान्तरित करनेका विचार किया। कोलोन जिला कमेटीने इस सुझावको स्वीकार कर एक नई केन्द्रीय कमेटी निर्वाचित भी कर ली, लेकिन अल्प मतने बहुमतके विचारको अस्वीकार कर दिया, क्योंकि वह लन्दनमें अपनेको अधिक दृढ समझता था।

"नोये रेनिश रिव्यू" के पाँचवें और छठवें अंकोंमें मार्क्स और एंगेल्सने अपने दृष्टिकोण को रक्खा था। यह दोनों अंक इकट्ठा नवम्बर १८५० में निकले थे, जिसके साथ पत्रिकाने अपनी जीवन-लीला समाप्त की। इस जोड़े अंकमें मार्क्सने एक लेखमें १५२५ ई०के किसान-संग्रामका ऐतिहासिक भौतिकवादी दृष्टिकोणसे विश्लेषण किया था। इस लेखमें मार्क्सने बड़े उत्साहके साथ लिखा था : "सर्वहारा सड़ककी मोर्चाबन्दियोंवाले युद्धोंको लड़नेसे पहले अपने शासनके आगमनको कितनी ही बौद्धिक विजयों द्वारा घोषित करता है। मार्क्स और एंगेल्सने इस महत्वपूर्ण अन्तिम अंकमें राजनीतिक क्रान्ति और प्रति-क्रान्तिके आर्थिक कारणोंकी बड़ी सुन्दर विवेचना करते हुये बतलाया कि क्रान्ति आर्थिक संकटसे पैदा हुई थी, जब कि प्रतिक्रान्तिका आधार है उत्पादनमें एक नया बढ़ाव : "चारों ओर जो आम समृद्धि इस वक्त फैली हुई है और जिसके कारण बूर्ज्वा-समाजकी उत्पादक शक्तियाँ—बूर्ज्वा समाजके ढाँचेके अन्दर जहाँ तक सम्भव है, उतनी तेजीसे बढ़ रही हैं, उसमें किसी वास्तविक क्रान्तिका प्रश्न नहीं उठ सकता। ऐसी क्रान्ति केवल उसी कालमें सम्भव है, जब कि दो बातें आपसमें भिड़ जायँ, जब कि आधुनिक उत्पादक शक्तियोंकी बूर्ज्वा उत्पादनके ढंगसे भिड़न्त हो जाये।... एक नये संकटके परिणामस्वरूप ही एक नई क्रांति सम्भव है। लेकिन यह उतनी ही निश्चित है, जितना कि स्वयं आर्थिक संकटका आना।"

१ नवम्बर १८५० को पत्रिकाका अंतिम अंक लिखा गया और उसके साथ वह खतम हो गई। उसके साथ ही दो शताब्दियोंके लिए उसके दोनों लेखोंका सीधा और तुरन्तका सहयोग खतम हो गया। एंगेल्स अपने बापके फर्म एरमेन और एंगेल्समें काम करने चले गये और मार्क्सने लन्दनमें रहकर अपना सारा समय और शक्ति वैज्ञानिक अध्ययन तथा अपनी महान् कृतियोंकी तैयारीमें लगा दिया।

५. आर्थिक कठिनाइयाँ

नवम्बर १८५० ई० में मार्क्स अपने जीवनका आधा खतम कर चुके थे,

वह अब ३२ वर्षके थे। फरवरी १८५१ में मार्क्सको पत्र लिखते हुये एंगेल्सने कहा था : "आदमी इसे और भली तरह देख सकता है, कि निर्वासन एक ऐसा जीवन है, जिसमें हरेक आदमी अवश्य बेवकूफ, गदहा, कमीना, नीच और पाजी बन जाता है। अगर वह अपनेको उससे पूर्णतया अलग नहीं कर एक स्वतन्त्र लेखक बननेमें सन्तोष नहीं करता, अपने दिमागको किसी बातके लिये, यहाँ तक कि तथाकथित क्रान्तिकारी पार्टीके लिए भी परेशान नहीं करता।" इसके जवाबमें मार्क्सने लिखा था : "मैं सार्वजनिक तौरसे इस अलग-अलग रहनेको—जिसमे कि हम दोनो अपनेको पा रहे है—बहुत पसन्द करता हूँ। यह बिल्कुल हमारे मनोभाव और सिद्धान्तोंके अनुसार है। पारस्परिक समझौता-बाजी दिखावेके लिए अधकचरे कामको सहन करनेका ढंग और जनसाधारणकी आँखोंमें उन सभी गदहोंके साथ जिम्मेवारीमे हिस्सेदार बननेकी आवश्यकता, अब खतम हो गई है।" इसपर एंगेल्सने लिखा था : "हमे अब फिर एक बार बहुत दिनोंके बाद पहली बार यह दिखलानेका अवसर मिला है, कि हमे जन-ख्यातिकी आवश्यकता नहीं, और न किसी देशकी किसी पार्टीसे समर्थन प्राप्त करनेकी आवश्यकता है। इन छोटी-छोटी बातोंसे हमारी स्थिति बिल्कुल स्वतन्त्र है। अबसे हम अपने आपके प्रति जिम्मेदार है।.. वर्षों तक हम ऐसे कार्यरत रहे, कि मानो क्रेथी और प्लेथी हमारी पार्टी है, यद्यपि हमारी कोई पार्टी और लोग नहीं थे, जिन्हें कि हम अपने दल, कमसे कम कायदेके तौरपर मानते, और जो हमारे उद्देश्यके प्रारम्भिक नियमोंको भी समझते।"

इसके बाद मार्क्स और एगेल्स अब अलग रहने लगे। लेकिन इस अवस्था में भी वह पूर्णतया एकान्तवासी हो गये थे, यह नहीं कहा जा सकता, क्योंकि इंगलैंडके चार्टिस्ट पत्रोंमे वह लेख लिखा करते थे। वह यह भी चाहते थे, कि "नोये राइनिश रिव्यू" सदाके लिए न मर जाय, इसके लिए बार्जेल (स्वीजर्लैंड) के प्रकाशक शोवेलित्जने जिम्मेवारी भी ली, लेकिन उसका कोई परिणाम नहीं निकला। इसी तरह और जगहोंपर भी किया प्रयत्न सफल नहीं रहा। कोलोनके पत्र "वेस्ट-डाशे जाइटुंग" के सम्पादक हेरमान बेकरने इच्छा प्रकट की, कि मार्क्सकी कृतियोंकी एक ग्रंथावलि प्रकाशित की जाय, लेकिन मई

१८५१ में बेकर गिरफ्तार कर लिया गया और मार्क्सकी "संचित ग्रंथावलि" की एक छोटी सी पुस्तक ही निकल पाई। चार-चारसौ पृष्ठोंकी दो जिल्दोंमें ग्रंथावलि निकालनेकी योजना थी। वह दस भागोंमें निकलने वाली थी और १५ मई तक ग्राहक बन जानेवालोंको प्रत्येक भागका दाम आठ (चाँदीका) ग्रोशेन निश्चित किया गया था। वैसे आम बिक्रीका दाम एक थालेर और पन्द्रह (चाँदी) ग्रोशेन प्रति जिल्द रक्खा गया था। पहला भाग निकलते ही बिक गया था। योजना बनाते हुये मार्क्सको केवल अपनी कृतियोंको संग्रहीत कर देनेका ही ख्याल नहीं था, बल्कि उस वक्त उनके लिए जीविकाका भी भारी प्रश्न था। मार्क्स-परिवार भारी दरिद्रतामें पड़ा हुआ था। नवम्बर १८४६ में मार्क्स-दम्पतीका चौथा बच्चा (पुत्र) गीडो पैदा हुआ जिसपर उसकी माँने लिखा था : "बेचारा छोटा सा फरिश्ता इतनी तकलीफों और चिन्ताओंमें पाला गया, जिससे वह सदा बीमार और रात-दिन भीषण यंत्रणामें पड़ा रहता था। जबसे वह दुनियामें आया, एक रात भी वह ठीकसे नहीं सो सका और सोया भी तो एक समय दो या तीन घंटेसे अधिक नहीं।" जन्मके एक वर्ष बाद यह लड़का मर गया। वह गरीबीपर बलिदान हुआ, इसे माता-पिता जानते थे। दुनियाको गरीबीके जीवनसे निकालकर सुखी बनानेके प्रयत्न करनेवालेको स्वयं अपने कंधेपर गरीबीका भार उठाना आवश्यक था।

अब परिवारमें दाने-दानेके लाले पड़ रहे थे, चीजें बन्धक रख या बेंचकर अन्नका दो दाना मुँहमें डालनेकी भी कितनी बार नौबत नहीं थी। चेल्सियामें जिस घरमें पहले पहल मार्क्स-परिवार रहने लगा था, उसके मालिकने उन्हें अत्यन्त निष्ठुरता और बर्बरतापूर्वक घरसे निकलवा दिया, यद्यपि मार्क्सने वस्तुतः किराया बाकी नहीं रक्खा था। उन्होंने मूल किरायादारको किराया दे दिया था, लेकिन उसने भूमिपतिको उसे अदा नहीं किया। बहुत दौड़-धूप करनेपर लीसेस्टर-स्क्वायरके पास लीसेस्टर-स्ट्रीटमें एक जर्मन होटलमें उन्हें कुछ समयके लिए शरण मिली, फिर वहाँसे गरीबोंके मोहल्ले सोहो-स्क्वायरकी २८ डीन स्ट्रीटमें चले गये। अगले छः वर्षोंके लिये डीन स्ट्रीटके ये दो कमरे परिवारको सर्दी-गर्मीसे बचाते रहे। मार्क्स केवल अपने आदर्श और विचारोंके लिये मारे-

मारे फिरते रहे; लेकिन उन्होंने इसके लिये कभी अफसोस नहीं किया। वह जानते थे कि यह मूल्य हमें अदा करना ही होगा, सर्वहाराके सगे भाई-बन्द बननेके लिये इस जीवनकी आवश्यकता है।

सिरके ऊपर छत तो मिल गई, लेकिन आर्थिक विपत्तियाँ बढती ही गईं। अक्टूबर १८५० के अन्तमें मार्क्सने वेडेमेयरके पास फ्रांकफोर्ट (माइन) मे लिखकर कहा कि वहाँ खानदानके चाँदीके बर्तन और दूसरी चीजें जो बन्धक रक्खी हुई हैं, उन्हें अच्छी कीमतपर बेच दो, केवल छोटी जेनीके चम्मच आदिकी एक छोटी सी सन्दूकचीको रख छोडो। इस समय मेरी स्थिति ऐसी है, कि मुझे जैसे भी हो पैसा प्राप्त करना चाहिये, जिसमें कि मैं अपने कामको जारी रख सकूँ। और काम क्या था सर्वहाराके लिये "कपिटाल" (पूँजी) जैसे अमर अनमोल रत्नके लिखनेके लिये सामग्री-संचय करना। इसी समय अपने बन्धुकी इस स्थितिको देखकर एगेल्सने भी निश्चय कर लिया कि चाहे नरकमें जाना पड़े, लेकिन मार्क्सकी आर्थिक सहायताके लिए मुझे अब कुछ करना जरूर है। वह अब तक अपने पिताके कपडेकी मिलके व्यवसायको एक आदर्शवादी साम्यवादीके तौरपर बडी घृणाकी दृष्टिसे देखते थे, लेकिन अब उन्होने उस घृणाको घोलकर पी लिया और उस "नरक व्यवसाय" में पडनेके लिए वह मान्चेस्टरके लिए चल पड़े। इस विपत्तिमे एगेल्स छोडकर दूसरे सहायता देनेवाले मित्र बहुत कम मिले। १८५० ई० में जेनीने वेडेमेयरको लिखा था : "जो चीज मुझपर सबसे अधिक चोट पहुँचाती है, मेरे हृदयको बेधकर लहूलोहान कर देती है, वह यही है कि मेरा पति कितनी ही छोटी-छोटी कठिनाइयोंके लिए परेशान है। उसकी सहायताके लिये थोडी सी चीज भी पर्याप्त है, लेकिन जो दूसरोंकी हमेशा खुले दिलसे सहायता करता रहा, वह अब स्वयं असहाय छोड दिया गया है। कृपया हेर वेडेमेयर, तुम यह न सोचो कि हम किसीसे कुछ माँग रहे हैं, लेकिन कमसे कम मेरे पतिने जिनको इतने विचार और समयपर सहायता दी है, उन्हें उनकी पत्रिकामे कुछ अधिक व्यावसायिक उत्साह और दिलचस्पी तो दिखानी चाहिये।.. इससे मेरा दिल दुखता है, लेकिन मेरा पति और ही तरह सोचता है। उसका विश्वास भविष्यके प्रति कभी भी—सबसे भयकर क्षणोंमें

भी—नहीं उठा, वह हमेशा सुमन रहता है और बहुत आनन्द अनुभव करता है, जब कि मुझे प्रसन्न और हमारे प्यारे बच्चोंको मेरे साथ मचलते देखता है।" जेनीके यह कष्ट कुछ क्षणों, कुछ घड़ियों, कुछ दिनोंके नहीं थे बल्कि वर्षों उस तपस्विनीने इसी तरह परिवारके कष्टोंमें घुलते हुये बिताया। चार-चार बजे रात तक जागकर लिखा-पढ़ी करनेवाले पति और अपने विचारोंके कारण उसके सोनेके संसारको मिट्टी करनेवाले पतिके लिये उसे कभी भी पछतावा नहीं हुआ। वह हमेशा कोशिश करती रही, कि मार्क्स अपने महान् कालको निराबाध रूपसे पूरा करें। सारे मित्र जिस वक्त हाथ छोड़ बैठे थे, उस वक्त भी जेनी छायाकी तरह अपने पतिके दुःखों और चिन्ताओंके अधिक भागको अपने सिरपर बहन करती थी, जब शत्रु मार्क्सको चारों ओरसे प्रहार करके जर्जर करते, उस वक्त भी वह पतिकी ढाल बनती।

अगस्त १८५१ में मार्क्सने फिर वेडेमेयरको लिखा था: "तुम्हें मालूम होगा कि मेरी स्थिति कितनी निराशापूर्ण है। यदि यही अवस्था देर तक रही, तो मेरी स्त्रीकी हालत बहुत बुरी हो जायेगी। अपनी अनिवार्य आवश्यकताओंको पूरा करने के लिये दिन-प्रतिदिन जिन संघर्षों और कठिनाइयोंका सामना लगातार करना पड़ रहा है, उसके कारण वह कृश और निर्बल होती जा रही है। इस सबके ऊपर मेरे विरोधियोंकी नीचता अपना प्रभाव अलग डाल रही है। वह मेरे ऊपर किसी सच्चाईसे आक्रमण करनेका प्रयत्न नहीं करते, बल्कि अपनी अक्षमताके कारण मेरे प्रति सन्देह पैदा करते, मेरे बारेमें बड़े ही अवर्णनीय कलंकोंको फैलाते बदला लेनेकी कोशिश करते हैं।... जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मैं इन सारी बातोंपर हँस सकता हूँ, उनसे मैं अपने काममें जरा भी बाधा नहीं पड़ने देता। लेकिन तुम सोच सकते हो कि इससे मेरी स्त्रीका भार हलका नहीं होगा। वह बीमार है। उसके ज्ञानतन्तु दुर्बल हो गये हैं, वह सबेरेसे शाम तक भयंकर दरिद्रतासे लोहा लेनेके लिये मजबूर है।"

इसके कुछ महीने पहले (मार्चमें) मार्क्सको एक लड़की—फ्रांजिस्का—पैदा हुई। यद्यपि प्रसवमें कोई कठिनाई नहीं हुई, लेकिन प्रसूता बहुत बीमार थी—"शारीरिक कारणोंसे उतना नहीं, जितना कि मानसिक कारणोंसे।" मार्क्सने

विकल हो बड़ी खिन्नताके साथ उस दिन एंगेल्सको लिखा था कि घरमें एक पैसा भी नही है ।

इन कठिनाइयो और चिन्ताओंका भार मार्क्स जैसे स्वस्थ पुरुषके लिये भी बर्दाश्तसे बाहरकी चीज हो जाता, यदि वैज्ञानिक अध्ययन और भविष्यकी शुभाशायें उन्हें समाहित न करतीं । वह रोज ९ बजे सवेरे उस समयकी दुनिया के सबसे बड़े पुस्तकालय और संग्रहालय—ब्रिटिश म्युजियम—में जा बैठते और ७ बजे शामको ही उठते । इन दस घंटोमें सचमुच हो पुस्तक-पाठके अतिरिक्त गला तर करनेकी कोई चीज उनको नही मिलती होगी, इसे आसानीसे समझा जा सकता है । किंकेल, विलिच जैसे कितने ही उस समय और आजके भी क्रान्तिकारी समाजवादी थे और हो सकते हैं, जो कि अपने ज्ञानको गहरा करने के लिये कोई मत्थापच्ची करना नहीं चाहते । मार्क्सने वर्षों तक इस गम्भीर अध्ययनको जारी रखते हुये ऐसे लोगोके बारेमें लिखा था—'यह स्वाभाविक है कि जनतान्त्रिकतावादी बुद्धुओंको इस तरहकी किसी चीजकी आवश्यकता नहीं, क्योंकि उनको प्रेरणा 'ऊपरसे' से आती है । इन बेचारोंको अर्थशास्त्र और इतिहाससे माथापच्ची करनेकी क्या आवश्यकता ? जैसा कि योग्य विलिच मुझसे कहा करता था—सभी बातें इतनी आसान हैं । शायद यह उनके गड़बड़घोटाले-वाले दिमागोमे, क्योकि वे वस्तुतः महान् बुद्धू हैं ।' इस समय मार्क्स अपने 'राजनीतिक अर्थशास्त्रकी आलोचना' को कुछ सप्ताहोंमें समाप्त कर देनेकी आशा रखते थे और उसके लिये किसी प्रकाशकको ढूँढ रहे थे, जिसमे उन्हें निराश होना पड़ा ।

मई १८५१ में मार्क्सका पूर्ण विश्वासपात्र और सच्चा मित्र फर्डिनांड फ्राइ-लिग्रथ लन्दन आया । अगले कुछ वर्षों तक दोनों एक दूसरेके घनिष्ठ सम्पर्कमें रहे, लेकिन फिर एकके बाद एक बुरे समाचार आने लगे । १० मईको लाइप-जिगमे कम्युनिस्ट लीगके प्रतिनिधिके तौरपर आन्दोलनके लिये गया दर्जी नथयुंग पकड़ा गया । उसके पास जो कागज-पत्र मिले, उनसे पुलिसको लीगके विद्यमान होनेका भेद मिल गया और थोड़े ही समय बाद कोलोनमें केन्द्रीय कमेटीके मेम्बर पकड़ लिये गये । इसी समय कवि फ्राइलिग्रथ वहाँसे भाग

निकला। जब वह लन्दनमें आया, तो जर्मन निर्वासितोंके भिन्न-भिन्न दलोंने उसे अपनी तरफ खींचनेके लिये एड़ीसे चोटी तकका जोर लगाया। वह समझते थे, कि प्रसिद्ध कविको अपनेमें लाकर हमें बहुत फायदा रहेगा। लेकिन कविने उनको साफ कह दिया, कि मैं तो मार्क्स और उनकी मंडलीका हूँ। १४ जुलाई को (१८५१) आपसी झगड़ेके मिटानेके लिये जो सभा हुई थी, उसमें भी कविने शामिल होनेसे इन्कार कर दिया। इस असफलताने कितने ही और भी नये मतभेद पैदा कर दिये। २० जुलाईको रूगेके बौद्धिक नेतृत्वमें आन्दोलन क्लब स्थापित हुई, और २७ जुलाईको किंकलके बौद्धिक नेतृत्वमें प्रवासी क्लब बनाई गई। यह दोनों क्लबें जल्दी ही जर्मन-अमेरिकन पत्रोंके कालमोंमें आपसमें गुत्थमगुत्था करने लगीं। मार्क्स इस मेंढक और मूषके युद्ध को घृणा की दृष्टिसे देखते, यह स्वाभाविक था। मार्क्स किंकलकी करतूतोंको बड़े ध्यानसे देख रहे थे। स्पन्डौके जेलसे भागनेके बाद किंकलने लन्दनमें क्रान्ति वीरका पार्ट अदा करना शुरू किया था। कवि मजाक करते हुये उसके बारेमें कहता था: कभी पब (भट्ठीखाना) और कभी क्लबमें। किंकलने विलिचकी सहायतासे एक भारी जालका ताना बाना तैयार किया। १४ सितम्बर (१८५१) को किंकल जर्मन राष्ट्रीय कर्ज जमा करनेके उद्देश्यसे न्यूयार्कमें उतरा। जर्मनीमें गणराजी क्रान्ति करनेके लिये पहले वह बीस हजार थालर एकत्रित करना चाहता था। कर्जके उगाहनेके लिये प्रचार करते समय दोनों गुरू-चेले उत्तरी राज्योंमें दासता के विरुद्ध और दक्षिणी राज्योंमें उसके पक्षमें उपदेश देते रहे। जिस समय किंकल अमेरिकाकी सोनेकी खानोंमें लूटके लिये पहुँचा था, उसी समय मार्क्सका अमेरिकाके साथ दूसरी तरहसे आयका सम्बन्ध स्थापित हुआ था। न्यूयार्क ट्रिब्यून उत्तरी राज्योंमें उस वक्त सबसे अधिक छपनेवाला दैनिक था, जिसके प्रकाशक डानासे मार्क्सका कोलोनमें परिचय हो गया था। न्यूयार्क ट्रिब्यून ने मार्क्सको बराबर लेख देनेके लिये नियमित पारिश्रमिक देनेका निश्चय किया। अभी मार्क्सकी अंग्रेजी अच्छी नहीं थी, इसलिये जर्मनीमें क्रान्ति और प्रतिक्रान्तिके बारेमें मार्क्सने जो लेख लिखे, उनकी अंग्रेजी ठीक करनेका काम एंगेल्सने अपने ऊपर लिया। कई साल तक मार्क्स अपने लेखोंको न्यूयार्क ट्रिब्यून में देते रहे।

६. अठारहवाँ वर्ष*

मार्क्सका पुराना मित्र ब्रुशेल्सका योजेफ वेडेमेयर सारे क्रान्तिके वर्षोंमें फ्रांकफोर्ट-श्राम-मैनमें एक जनतंत्रतावादी अखबारके सम्पादकके तौरपर बड़ी हिम्मतके साथ संघ करता रहा। लाइपजिगमें जो कागज मिले थे, उनसे पता लग गया, कि वेडेमेयर भी कम्युनिस्ट लीगका सक्रिय सदस्य है। इसपर खुफिया पुलिस उसके पीछे पड़ी। पहले वेडेमेयरने साखजेन हाउजेन नामक एक छोटी एकान्त सरायमें शरण ली, समझा कुछ दिनोंमें तूफान उतर जायेगा। इस समय वह राजनीतिक अर्थशास्त्रपर एक सरल पुस्तक लिखनेमें लगा हुआ था। लेकिन तूफान दबनेकी जगह और जोर पकड़ता गया। वेडेमेयर दो छोटे-छोटे बच्चोंका बाप था। उसने स्वीजलैंड या लन्दनमे जीविका कमानेकी आशा न होनेसे अमेरिका जानेका निश्चय किया। मार्क्स और एंगेल्स दोनो ऐसे मित्रको हाथसे खोना नहीं चाहते थे। मार्क्सने बहुत सोचा कि कहीं उसे काम इञ्जीनियर रेलवेके सर्वेयर या और कोई नौकरी मिल जाय। लेकिन उसमे सफलता नहीं हुई। जब वेडेमेयर के अमेरिका जानेको छोड़कर और कोई रास्ता नहीं रहा, तो एगेल्सने कहा : हमें न्यूयार्कमें एक विश्वासपात्र आदमीकी आवश्यकता है। आखिर, न्यूयार्क भी दुनियासे बाहर नहीं है और हम यह जानते हैं कि जब आवश्यकता होगी, तो वेडेमेयर तैयार रहेगा। वेडेमेयर १९ सितम्बरको हाव्रेसे जहाजपर बैठा और चालीस दिनो बाद तूफानी समुद्र में होते उसका जहाज न्यूयार्क पहुँचा। ३१ अक्तूबरको मार्क्सने चिट्ठी लिखकर वेडेमेयरसे कहा, कि न्यूयार्कमें पुस्तक-विक्रेता और प्रकाशकका काम शुरू करो, और नोये राइनिशे जाइटुंग तथा नोये राइनिशे रिव्यू से अच्छे-अच्छे लेखोको जमा करके उन्हें प्रकाशित करो। वेडेमेयरने अपने गुरुके सुझावको स्वीकार करते हुये लिखा, कि यद्यपि बनियापनका मनोभाव जितना अधिक अमेरिकामें है, उससे मुझे इस व्यवसायसे घृणा होती है; तो भी- मुझे आशा है कि जनवरी (१८५२ ई०) से एक साप्ताहिक डी रिवोल्यूशन (क्रान्ति) के नामसे निकालना चाहता हूँ,

---

* The Eighteenth Brumeire.

उसके लिये जितना जल्दी हो सके आप लेख भेजें। मार्क्सने सभी अपने लेखक मित्रोंको प्रेरित किया। एंगेल्सने भी लेख लिखे। प्रता फ्राइलिग्रथने एक कविता तैयार की, एकेरियस, वीर्थ और दोनों वोल्फोंने भी कलम चलाई। स्वयं अपने लिखनेके लिये मार्क्सने लुई बोनापार्त का १८ वीं ब्रूमेर अर्थात् २ दिसम्बरको हुये बोनापार्ती कूप-दे-ता (राजविराजी) पर लेख लिखनेका निश्चय किया। इस राजविराजीपर फ्रांसके प्रसिद्ध लेखक विक्तर हूगो और प्रूधोंने भी कलम चलाई थी; लेकिन वह उसकी गहराई तक नहीं पहुँच सके थे।

मार्क्सकी इस पुस्तककी भाषा अत्यन्त सजीव है। इतिहासकी अपनी भौतिक-वादी दृष्टिके कारण वह इस समसामयिक घटनाकी तह तक पहुँचने में सफल हुये। जैसी ही इसकी भाषा चमत्कारपूर्ण है, वैसा ही विषय भी सुन्दर और ज्ञानवर्द्धक है। पहले अध्यायमें तुलना करते हुये उन्होंने लिखा है : अठारहवीं शताब्दी जैसी बूर्ज्वा-क्रान्तियाँ एकके बाद एक सफलतायें प्राप्त करते नये किले दखल करती आगे बढ़ती गई। उनका नाटकीय प्रभाव एक दूसरेसे बढ़-चढ़कर है। मनुष्य और चीजें ज्वालाकी जगमगाहट में जड़ी हुई सी मालूम होती हैं। प्रतिदिन और सर्वत्र आत्मविभोरता सी फैली दिखाई पड़ती है, लेकिन क्षणिक ही। जल्दी ही वह अपने मध्याह्नपर पहुँचती है, फिर अपनी तूफानी कारवाइयों-के परिणामोंको विचारपूर्वक आत्मसात कैसे करें इसे सीखनेके पहले समाजमें एक दीर्घव्यापी अवसाद आ पड़ता है। किन्तु १९ वीं शताब्दीकी किन्तु सर्वहारा क्रान्तियाँ लगातार अपनी आलोचना करती हैं, अपने रास्तेमें बराबर अपनेको रोकती रहती हैं, जो पहले ही पूरा किया जा चुका है, मानो उसे फिरसे शुरू करनेके लिये पुनः उसी जगह लौट आती हैं। पहिले प्रयत्नोंमें अपनी बेमनता, निर्बलता और हीनता दिखलानेकी पूरी निष्ठुरताके साथ निन्दा करती हैं। जान पड़ता है, वह अपने शत्रुको इसीलिये धरतीपर पटकती हैं, कि वह पृथिवीसे नई शक्ति प्राप्त करके और अधिक शक्तिशाली बन उनके सामने खड़ा होकर फिर भिड़न्त करे और अपने निजी उद्देश्योंके अनिश्चित और जबर्दस्त स्वरूपके कारण तब तक पुनः और पुनः भिड़न्त करे, जब तक कि वह ऐसी स्थिति न पैदा कर दे, जब कि पीछे हटना असम्भव हो जाय और परिस्थितियाँ चिल्ला

कर कहने लगें : चाहे जो कुछ ! Hic Rhodus, hic Sapta....अगर सम्राज्ञी चादर लुई बोनापातके कन्धोपर पड़ी तो नेपोलियनकी काँसेकी मूर्त्ति वाँदोमके खम्भेसे गिरकर चूर-चूर हो जायेगी।

यह अद्भुत पुस्तक मार्क्सने उस समय लिखी थी, जब कि पैसेकी कमीके कारण वेडेमेयरको अपना साप्ताहिक बन्द करनेके लिये मजबूर होना पड़ा: "शरदके आरम्भसे ही जो भीषण वेकारी यहाँ फैली हुई है, उसके कारण कोई भीं नया अध्यवसाय आरम्भ करना वहुत कठिन है। इसके ऊपर हालमें कम-करोंको भिन्न-भिन्न तरीकेसे लूटा गया है, पहले किकलने ऐसा किया फिर कौसुत (हुंगेरियन) ने। दुर्भाग्यसे अधिकाश मजूर अपने विरोधी प्रचारके लिये एक डालर दे सकते हैं, जब कि अपने हितोंकी रक्षाके लिये एक सेन्ट। अमेरिकाकी स्थितियाँ लोगोंपर असाधारण बुरा भ्राष्टाचारिक प्रभाव डालती हैं, और उसके साथ ही इस अहंकारको भी पैदा करती हैं, कि पुरानी दुनियाके उनके साथियोसे अमेरिकन वेहतर हालतमें हैं" तब भी वेडेमेयरने अभी हिम्मत नहीं छोडी, और दो सौ डालर हाथमे आ जानेपर वह एक मासिक निकालनेकी फिकरमें पड़ा।

इस तरह अवस्था निराशापूर्ण थी, जब कि मार्क्सकी लेखनी अठारहवीं 'ब्रुमेर' लिख रही थी। इसी समय जनवरीके आरंभमे मार्क्स बीमार हो गये। वह बडी मुश्किलसे कलन चला सकते थे: "वर्षोंसे मुझे किसी चीजने इतना बुरी तौरसे नहीं पछाड़ा जैसा कि यह अभागी ववासीर, इतना तो भीषण फ्रेंच असफलताके समय भी नहीं हुआ था।" २७ फर्वरीको उन्होंने लिखा था: "मेरी स्थिति अब उस स्थानपर पहुँच चुकी है, जब कि मैं घरसे बाहर नहीं निकल सकता, क्योंकि मेरे कपड़े बन्धक रक्खे हुये हैं और साख न रह जानेके कारण मैं मास नहीं खा सकता।" तो भी २५ मार्चको वह अपनी पुस्तकके हस्तलेखके अन्तिम भागको वेडेमेयरके पास भेजनेमें सफल हुये, साथही वेडेमेयर के नये पुत्रके जन्मके वारेमें मार्क्सने अभिनंदन करते हुये लिखा, वह ऐसे समय आया : "जिस क्षणको छोडकर और अच्छा समय दुनिया में आनेके लिये प्राप्त करना असम्भव है। (वह समय आने वाला है) जबकि लन्दनसे कल-

कत्ता सात दिनमें पहुँचना सम्भव होगा, जब कि हमारे सिर कट चुके होंगे या वह बुढ़ापेके कारण काँपते रहेंगे। आस्ट्रेलिया, कलिफोर्निया और प्रशान्त महासागर! नई दुनियाके नागरिक यह समझनेमें असमर्थ होंगे, कि हमारी दुनिया कितनी छोटी है।" अपनी भीषण कठिनाइयोंके बीचमें भी मार्क्स अपने सिरको पानीसे ऊपर रखने का प्रयत्न करते थे। उनके हृदय और दिमागमें भव्य भविष्यके प्रति पूर्ण आस्था थी, और मानव विकास की अपार संभावनायें उनके चित्तको आह्लादित करती रहती थीं। १६ अप्रैलको मार्क्सके एक बच्चेको कब्रमें लिटाया गया। विल्हेल्म वोल्फने उस वक्त लिखा था: "प्रायः हमारे सारे ही मित्र दुर्भाग्यके सताये और भीषण संकटसे दबे हुये हैं।" यह ईस्टरका त्यौहारका दिन था, जब कि एक ही वर्ष पहले पैदा हुई मार्क्सकी सबसे छोटी लड़की मर गई। जैनीने उस समयके भीषण दृश्यका बड़ा ही मार्मिक वर्णन अपनी डायरीमें किया है: "१८५२ ई० के ईस्टरमें हमारी छोटी सी बिटिया फ्रांजिस्का फेफड़ेकी सूजनसे जबर्दस्त बीमार पड़ गई। तीन दिनों तक बेचारी बच्ची मृत्युसे लड़ते अपार यंत्रणा सहती रही। उसका छोटा सा निष्प्राण शरीर हमारे पीछेवाले छोटे से कमरेमें रक्खा था, जब कि हम सब सामनेवाले कमरेमें चले गये। रात आई, तो हमने धरतीपर अपना बिस्तरा बिछाया। तीन बचे हुये बच्चे (सभी लड़कियाँ) हमारे साथ लेटे थे, और हम उस बेचारी छोटी सी फरिश्तेके लिये रो रहे थे, जो कि दूसरे कमरेमें ठंडी और निर्जीव पड़ी थी। मैं पड़ोसी फ्रेंच शरणार्थीके पास गई, जो कि कुछ पहले हमारे घर आया था। उसने बड़े सौहार्द, और सहानुभूतिके साथ बर्ताव किया और दो पौंड दिया। इस पैसेसे हमने उस शवाधानी का दाम चुकाया; जिसने मेरी बच्ची शान्तिपूर्वक विश्राम करेगी। पैदा होने पर उसे हिंडोला नहीं मिला, और अन्तिम छोटीसी सन्दूकची भी काफी समय तक उसे मुयस्सर नहीं हुई। हमारे लिये वह भीषण घड़ी थी, जब कि छोटी सी शवाधानी अपने अन्तिम विश्रामस्थानपर ले जाई गई।" उसी दिन वेडेमेयरका निराशापूर्ण पत्र मार्क्सको मिला था।

इन्हीं दुःखकी घड़ियोंमें समुन्दरपारसे एक नया पत्र आया, जिसपर ६ अप्रैलकी तिथि लिखी हुई थी: "अप्रतीक्षित सहायताने अन्तमें उन कठिनाइयों

को दूर कर दिया, जिनके कारण कुछ पम्फलेटोंका प्रकाशन रुका हुआ था। पिछली चिट्ठी भेज देनेके बाद फ्राकफुतसे आये हमारे एक कमकरसे भेंट हुई। वह दर्जी है, और हमारी ही तरह गर्मियोंमे यहाँ आया। उसने अपने बचे हुये सारे पैसे—चालीस डालर—मेरे हाथमे दे दिये।" यदि इस सर्वहाराने अपना सर्वस्व त्याग नहीं किया होता, तो बहुत संभव है "अठारहवी ब्रूमियें" प्रकाशित न हो पाई होती। उस महानत्यागी का नाम लिखना भी वेडेमेयर भूल गया। लेकिन नाम से क्या ? सर्वहारा अपनी वर्गचेतना से प्रेरित होकर क्या-क्या कुर्बानियाँ नहीं कर सकता ? वह क्रातिकी बलिबेदीपर हँसते-हँसते अपने प्राणोंकी बलि देना जानता है।

वेडेमेयरने अब अपने मासिक "रेवोल्यूशन" (क्राति) को प्रकाशित करना शुरू किया, जिसके पहले अकमें मार्क्सकी यह अमर कृति निकली। दूसरे तथा अन्तिम अंक में फ्राइलिग्रथकी दो कविताये वेडेमेयरके पास चिट्ठीके रूपमें छपीं, जिनमें बड़े व्यग और चमत्कार शब्दोंमें किंकलके जर्मन राष्ट्रीय ऋण उगाहनेके प्रयत्नका उपहास किया गया था। वेडेमेयर "अठारहवीं ब्रूमियेर" की एक हजार कापियाँ छापी थीं, जिनमेंसे एक-तिहाई युरोपमें मित्रो और सहानुभूतिकारोमें बाँटनेके लिये भेजी गईं। उग्रवादी पुस्तक-विक्रेताओंने भी उसे बेचनेमे हाथ नहीं लगाया। पीपर द्वारा अनुवादित और एंगेल्स द्वारा पालिश की गई उसके अनुवादको छापनेके लिये कोई अंग्रेज प्रकाशक नहीं मिला।

इसी समय कोलोनमें पकड़े गये कम्युनिस्टोपर अभियोग चलाया जाने लगा था।

७. कोलोन का कम्युनिस्ट-मुकदमा

मई १८५१ मे कोलोनमें कम्युनिस्ट साथियोकी गिरफ्तारीके समयसे ही मार्क्सकी आँखे वहाँ होती सारी कार्यवाइयोंकी ओर लगी हुई थीं। पुलिस कोई पक्का सबूत नहीं पा रही थी, इसलिये मुकदमा रुका पडा था। उनके बारेमें जो सबूत मिल सका था, उससे यही साबित किया जा सकता था, कि वह एक

गुप्त प्रचारक संस्थाके मेम्बर हैं, लेकिन फौजदारी कानूनमें उसके लिये कोई दण्ड नहीं था। प्रशियाके राजाने अपने आदमी स्टीबेरको इस मुकदमेपर लगाना चाहा। वह जैसे भी हो, सबूत जमा करने लगा। उसके एक चरने विलिचके संगठनके एक आदमी ओजवाल्ड डीट्जके लिखनेके डेस्कका ताला तोड़कर कागज चुराये। उन कागजों तथा फ्रेंच अधिकारियोंकी सहायतासे स्टीबेरने "फ्रेंच-जर्मन षड्यन्त्र" गढ़ा और फर्वरी १८५२ में पेरिसकी अदालतोंने कितने ही अभागे जर्मन कमकरोंको भिन्न-भिन्न मियादकी सजायें दी। लेकिन स्टीबर अब भी पेरिस-षड्यन्त्रको कोलोन के अभियुक्तोंके साथ जोड़नेमें असमर्थ था। पेरिसके षड्यन्त्र कोलोनके मुकदमेमें सहायता देनेवाली कोई चीज हाथ नहीं लगी। इसी समय "मार्क्स पार्टी" और "विलिच-शापर पार्टी" के मतभेद और उग्र हो गये। विलिचने अमेरिकासे लौटनेके बाद किंकलसे मिलकर जो कार्यवाई करनी शुरू की, उसके कारण १८५२ के ग्रीष्ममें दोनों दलोंका विरोध और भी उग्र हो गया। यद्यपि किंकल दो लाख थालर जमा करनेमें सफल नहीं हुआ, लेकिन तो भी उसे एक लाख थालरके करीब हाथ लगा। उसके सामने यह एक समस्या थी, कि पैसेको कैसे खर्च किया जाय। साथ ही रुपए की गन्ध पाकर अब उसके साथियोंमें की भी लार टपकने लगी। अन्तमें किंकलने एक हजार पौंड प्रथम अस्थाई सरकारके नामसे वेस्टमिन्स्टर बैंकमें जमा कर दिया और बाकी सारी करीब दो लाखकी रकम सैर-सपट्टे और प्रबन्ध में खर्च की। बैंकमें जमा की हुई रकम पन्द्रह बरस बाद जर्मन समाजवादी जनतंत्रताका पत्र निकालनेमें सहायक हुई।

कोलोनमें सरकारी अधिकारीने सबूत जुटानेके लिये काफी समय तक मुकदमेको बन्द रक्खा। अन्तमें अक्तूबर १८५२ को नाटक आरंभ हुआ। फ्रंच-जर्मन षड्यन्त्रके साथ अभियुक्तोंका सम्बन्ध किसी तरह भी नहीं स्थापित किया जा सकता था। जिस पार्टीके षड्यन्त्रके साथ पुलिस सम्बन्ध जोड़ना चाहती थी, अभियुक्त उसके मेम्बर ही नहीं थे, यही नहीं, बल्कि वह उस दलके विरोधी थे। अन्तमें स्टीबरने "मार्क्स पार्टी" की मूल कार्यवाही-बही पेश की, जिसमें मार्क्स और उनके साथियोंकी उन मीटिंगोंकी कार्यवाही दर्ज थी, जिनमें

उन्होने विश्व-क्रान्तिकी योजनापर विचार प्रकट किया था। यह "कार्यवाही बही" सरकारी एजेंट चार्ल्स फ्लोरी और विल्हेल्म हर्श द्वारा पुलिस-अफसर ग्राइफकी देख-रेखमे जाली बनाई गई थी। स्टीबरको बहुत विश्वास था, कि मैंने मैदान मार लिया; लेकिन, मार्क्सने उसके विरुद्ध जो सबूत सचित कर दिये थे, उसके कारण स्टीवरको सफलताकी आशा कम हो गई। जिस समय मार्क्स कोलोनके अपने साथियोंके अभियोगमें दत्तचित और परेशान थे, उस समय उनके घरकी हालत कितनी बुरी थी, यह एंगेल्सके नाम लिखे उनके ८ सितम्बरके पत्रसे मालूम होगा। "मेरी स्त्री बीमार है, नन्हीं जेनी बीमार है; लैनचेनको एक तरह का स्नायविक बुखार है, और मैं डाक्टर नहीं बुला सकता, क्योंकि मेरे पास फीस के लिये पैसा नहीं है। करीब आठ या दस दिनसे अब तक हम रोटी और आलूपर गुजारा कर रहे हैं, और अब इसमे भी सन्देह है कि वह हमें मिल सकेगा। मैने डानाके लिये कुछ नहीं लिखा, क्योंकि मेरे पास अखबारोंके खरीदनेके लिये पैसा नहीं है। अब सबसे बढिया बात यही हो सकती है, कि घरकी मालकिन अपने घरसे हमें बाहर निकाल दे, क्योंकि ऐसी अवस्थामें बकाया किरायेके बाईस पौंडका बोझ मेरे दिमागसे उतर जायेगा; लेकिन, मुझे इसकी उम्मीद नही है, कि वह इतनी दयावान् होगी। इसके ऊपर रोटीवाले, दूधवाले मोदी, सागवाले और गोश्तवालेके भी हम कर्जदार हैं। कैसे इस शैतानी आफत-से मै बाहर निकल सकता हूँ? पिछले सप्ताह...मैंने कमकरोंसे कुछ शिलिंग क्या कुछ पेन्स तक उधार लिए हैं। यह मेरे लिए भयकर कृत्य था, लेकिन ऐसा करना अनिवार्य था, नही तो हम सब भूखे मरते।" इस स्थितिमें भी अपने कोट तकको बेंचकर कोलोनके अभियुक्तोकी सहायता करनेके लिए मार्क्स प्रयत्न कर रहे थे।

अभी अनुकूल फैसलेके बारेमें कोई निश्चय नही था, इसी समय फ्राउ मार्क्स (श्रीमती जेनी मार्क्स) ने एक अमेरिकन मित्रको लिखा था : "जाल-साजीके सारे सबूत यहाँसे तैयार करके भेजने हैं, जिसके लिए मेरे पतिको सारे दिन और रातमें भी बहुत देर तक काम करना पडता है। फिर इस लिखी हुई सामग्रीकी छः या सात कापियाँ हमे करनी पड़ती हैं, जिन्हें भिन्न-भिन्न तरीकोंसे

फ्रांकफोर्त आदिके रास्ते जर्मनी भेजना पड़ता है; क्योंकि मेरे पतिके पास आने-वाले तथा उनके जर्मनीके लिये भेजे जानेवाले सारे पत्र खोलकर जब्त कर लिए जाते हैं। अब सारा मामला पुलिस और मेरे पतिके बीच संघर्षके रूपमें परिणत हो गया है, और मेरा पति हरेक बातके लिए, मुकदमेकी पैरवीके लिये भी जवाबदेह बनाया गया है। मेरी घबराहटके लिये तुम माफ करना, क्योंकि इस मामलेमें मेरा भी कुछ भाग है। मैं तब तक कापी करती रहती हूँ, जब तक कि मेरी अंगुलियाँ दुखने नहीं लगतीं।...हमारा घर एक बाकायदा आफिस बन गया है। दो या तीन आदमी लिखते, दूसरे सन्देश लेकर दौड़ते, और बाकी पैसे-पैसे जुटा रहे हैं, जिसमें कि हम जीवित रह सकें और दुनियाके अत्यन्त लज्जाजनक सरकारी दुराचारके खिलाफ सबूत तैयार कर सकें। इस सारे समय मेरी तीनों जिन्दादिल बच्चियाँ गातीं और सीटी बजाती रहती हैं, जिसके लिये उन्हें कभी-कभी अपने बापकी कड़ी फटकार भी खानी पड़ती है। कैसा जीवन!"

अन्तमें स्टीबरकी जालसाजीका भंडाफोड़ हो गया, और मार्क्स विजयी हुये। जाली "कार्यवाही बही को सरकारी वकीलने छोड़ दिया, लेकिन यदि अभि-युक्तोंको सजा नहीं दी जाती तो प्रशियन सरकारका मुँह काला होता, इसलिये उसकी सहायताके लिये जूरीवाले भी ईमानदारी खोनेके लिये तैयार थे। ११ मेंसे ७ अभियुक्तोंको देशद्रोहके प्रयत्नका अपराधी माना गया। सिगार बनानेवाले रोजेर, लेखक बुरगेर्स और फेरीवाले दर्जी नोथयुंगको किलेमें सात सालकी कैदकी सजा हुई। और कमकर राइख रसायनिक ओटो और भूतपूर्व बैरिस्टर बेकरको किलेमें पाँच सालकी कैदकी सजा हुई, फेरीवाले दर्जी लैसनरको तीन-सालकी सजा। क्लर्क एरहार्ट और तीन डाक्टर डानियल्स याकोबी और क्ला-इन छोड़ दिये गये। डानियलको अठारह महीनेके हवालाती जीवनमें तपेदिक लग गई, जिसके कारण वह कुछ वर्षों बाद मर गया। मार्क्सने उसकी मृत्युपर जो सहानुभूतिपूर्ण पत्र उसकी बीबीको भेजे थे, उनके लिये उसकी विधवाने बड़े करुण शब्दोंमें देते हुये धन्यवाद दिया था।

इन अभियुक्तोंमेंसे कितने ही पीछे अपने अतीतको छोड़ पथभ्रष्ट हो गये। बुरगेर्स राइखस्टाग (पार्लियामेंट) का मेम्बर चुना गया, बेकर पीछे

कोलौन म्युनिसिपैलिटीका लार्ड मेयर और प्रशियन पार्लियामेंटके उच्च-सदनका सदस्य बना। नोथयुंग और रोजेर अपने पथपर अचल रहे। लेसनेर मार्क्स और एंगेल्सके मरनेके बाद भी निर्वासित जीवन बिताते हुये अन्तिम समय तक उनका परमभक्त बना रहा।

कोलोन-कम्युनिस्ट अभियोगके बाद कम्युनिस्ट-लीगने अपनेको खतम कर दिया, जिसका अनुसरण विलिचके संगठनने भी किया। पीछे विलिच अमेरिका प्रवासी हो गया, जहाँ उसने गृह-युद्धके समय उत्तरी सेनाके एक जैनरलके तौरपर काफी प्रसिद्धि हासिल की। शापर पश्चात्ताप करके फिर अपने पुराने साथियोके साथ आ गया।

इस सफलताके बाद भी मार्क्स प्रशियन-सरकारको चैन लेने देनेके लिये तैयार नहीं थे। उन्होंने इस अभियोगके बारेमे पुस्तक लिखकर उसे स्वीजलैंड और सम्भव हो तो अमेरिकामे प्रकाशित, करनेका निश्चय किया था : "इस पम्फ्लेटके विनोदी अंशको, मैं समझता हूँ तुम और अच्छी तरहसे समझ सकोगे; यदि मैं बतला दूँ, कि उसका लेखक अपने पैरों और पीठको पर्याप्त न ढाँक सकनेके कारण बिल्कुल घरमे बन्द सा है। इसके ऊपरसे उसका परिवार पहले और अब भी भयंकर तकलीफसे संत्रस्त है। यह भी अभियोगकी कार्रवाइयोंका ही एक आंशिक परिणाम है, क्योकि जिन पाँच सप्ताहोंमें सरकारकी चालोके विरुद्ध पार्टी की बचावके लिये मैं अपनी सारी शक्ति लगानेके लिये मजबूर था; उस समय मैंने जीविका कमानेके लिये कुछ नहीं किया। यही नहीं, इस मुकदमेने जर्मन पुस्तक-विक्रेताओंको पूरी तौरसे मेरे खिलाफ कर दिया है, जिनसे कि राजनीतिक अर्थशास्त्रपर अपनी पुस्तकके प्रकाशन का प्रबन्ध करनेकी आशा रखता था।

जो भी हो ११ दिसम्बरको शावेलित्जके लडकेने—जिसने कि अपने पिताके कारबारको अपने हाथमें सँभाल लिया था—बाजेल (स्वीजलैंड)से मार्क्सके पास लिखा, कि मैं किताबकी पहली गोलियोको देख रहा हूँ : "मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक जबर्दस्त सनसनी पैदा करेगी, क्योंकि यह एक मास्टरपीस है।" शावेलित्जने प्रस्ताव किया कि पुस्तककी दो हजार कापियाँ छापी जायें

और दाम चाँदीका दस ग्रोशन रक्खा जाय, क्योंकि कितनी ही पुस्तकें सरकार पकड़कर जब्त करनेमें जरूर सफल होगी। दुर्भाग्य समझिये, गुप्त रीतिसे भेजनेके लिये बाडेनके एक सीमान्ती गाँवमें पुस्तकें भेजाकर छः हफ्ते तक अवसरकी तलाशमें पड़ी थी, वहीं इस संस्करणकी सारी प्रतियाँ सरकार के हाथोंमें पड़कर जब्त कर ली गई।

कितनी दुश्चिन्ता और दुर्भाग्यकी बात थी "विपद् विपदमनुसरति" का कितना निष्ठुर उदाहरण था। जब १० मार्चको यह बुरी खबर एंगेल्सको मिली, तो उन्होंने बहुत दुःखी होकर लिखा : "इस तरहका दुर्भाग्य फिर आगे लिखनेके उत्साहको आदमीसे छीन लेना चाहता है। क्या हम सदा प्रशियाके राजाके लिये काम करते रहें। इसी चिन्तामें पड़े हुये थे कि तीन महीने बाद शावेलित्जके भागीदार अम्बेरगेरने ४२४ फ्रांक छपाईका मार्क्ससे माँगा, जिससे उनकी परेशानी और बढ़ गई।

स्वीजलैंडकी असफलताका कष्ट कुछ हलका तब हो पाया, जब अमेरिकामें कुछ सफलता कुछ दीख पड़ी। "नो-इंगलैंड जाइटुंग" बोस्टनसे प्रकाशित होता था। उसने कोलोन वाले पम्फ्लेटको छापा। एंगेल्सने अपने खर्चपर उसकी ४४० कापियाँ अलग छपवा लीं। लाजेलकी सहायतासे उन्होंने इन्हें राइन प्रदेशमें बँटवानेका प्रस्ताव किया। फ्राउ मार्क्स (जेनी) ने लाजेलके पास इसके बारेमें लिखा। लाजेलने उत्साह भी दिखलाया, लेकिन पता नहीं काममें कहाँ तक सफलता हुई। कोलोन-अभियोगके रहस्योद्घाटक पम्फ्लेटकी अमेरिकाके जर्मन-पत्रोंमें काफी चर्चा रही, विशेषकर विलिचने उसके खिलाफ खूब लिखा। इसपर छोटा सा जवाब मार्क्सने उच्च हृदयका वीर के नामसे लिखा।

कम्युनिस्ट-लीग खतम हो गई थी। जर्मनीके सार्वजनिक जीवनसे नाता रखनेके तार टूट चुके थे। अब मार्क्सका निर्वासित घर ही सदाके लिये उनका घर हो गया।

अध्याय ११

मार्क्स और एंगेल्स

मार्क्स युगप्रवर्त्तक पुरुष थे, अब इससे विरोधी भी इन्कार नहीं कर सकते। इतिहासमें किसी एक पुरुषको एक समयमे मानवताकी इतनी संख्या और इतने प्रतिशतने अपना मार्गप्रदर्शक नहीं माना। मार्क्सका जीवन बडी गहरी और तीव्र बौद्धिकता—पुराने शब्दोंमें ज्ञानमार्ग का था। उसके साथ दूसरी ज्ञानको व्यवहारमे लानेकी ओर भी उनको उतना ही अधिक जोर था, जिसे पुरानी परिभाषाके अनुसार ज्ञान और कर्मका समन्वय कह सकते हैं। साथ ही दोनो बन्धुओंमें आदर्शवाद और त्यागकी वह भावना देखी जाती है, जो कि केवल जातककी कहानियोंमें ही हमें मिलती हैं। लेकिन जातकोमे भी त्याग दुःखकी जडके उच्छेदके लिये उतना नहीं देखा जाता, जितना कि मार्क्स और एंगेल्स-में। मार्क्सने स्वेच्छापूर्वक कष्टका जैसा जीवन बिताया, शायद ही धर्मके पैग-म्बरो और अनुयायियोंमे किसीने उतना दुःख उठाया हो। अलकारिक भाषामे हम कह सकते हैं, कि मानवताके दुःखोसे मुक्त करनेके लिये उन्होने स्वयं मानवकी सहिष्णुता-शक्तिसे परेके दुःखोंको सहा। ईसा किसीके पापोको अपने सिरपर उठानेके लिये सूलीपर नहीं चढे, यह तो केवल उनके अनुयायियोका प्रचार भर है, अधिक उनके लिये यही कह सकते हैं, कि वह गरीबी देखकर द्रवित हो जाते थे। बुद्धमें यह भावना ईसासे कहीं बढ़-चढ करके थी, और वह मूढ़ भक्तिके नहीं, बल्कि अपने समयके प्रखर बुद्धिवादके प्रवर्त्तक थे। किन्तु मार्क्सके सर्वथा मानव-जीवनके इस पहलूको ही अगर लेकर जीवनी लिखी जाय, तो वह किसी महान् तपस्वी और पैगम्बरके जीवनसे कम मधुर और करुणारस प्लावित नही होगी। खैर, अभी जब तक कि सारी दुनिया मार्क्सकी चिकित्सा द्वारा स्वस्थ नही हो जाती, आधी बची हुई मानवता मार्क्सके पथपर आरूढ होकर सुख-सतोष, निश्चिन्तता और सस्कृति-कलायुक्त जीवन

बिताने नहीं लगती, तब तक उसके लिये मार्क्सका ज्ञान और व्यवहार (कर्म) ही अत्यन्त प्रिय और हितका होना चाहिये। भावी पीढ़ियाँ सारे विश्वमें मार्क्स-के बनाये मार्गपर आरूढ़ हो सुखी जीवन बिताते मार्क्सके जीवनके इस तीसरे पहलूकी ओर विशेष ध्यान देगी, तब वह मार्क्सके करुणरसपूर्ण काव्यमय किन्तु वास्तविक जीवनको बड़े प्रेमसे पढ़ेंगी।

१. अद्भुत प्रतिभा

मार्क्सने अपने आधे जीवनको इंगलैंडकी राजधानी लन्दनमें बिताया। इंगलैंड लोभी और कंजूस बनियों का राज्य था, और जर्मनी, फ्रांस और बेल्जि-यम उसकी बनियाशाहीकी अपेक्षा अधिक उदार सामन्तशाही देश थे, लेकिन इन बनियोंने मार्क्सके प्रति अधिक मानवोचित बर्ताव किया था। दूसरी सरकारें मार्क्सके प्राणोंकी गाहक बन गई थीं। उन्हें कितने समय तक एक देशसे दूसरे देशमें मारा-मारा फिरना पड़ा। इंगलैंडकी बनियाशाही सरकारसे भी अधिक वहाँकी जनताको इसका श्रेय देना चाहिये, क्योंकि यदि वह इतने उदार न होते, तो लन्दनकी बनिया-सरकार शायद कुछ अनिष्ट करनेके लिये तैयार हो जाती। आगे हम देखेंगे, कि मार्क्सने इंगलैंडकी पूँजीशाहीकी निर्भीक आलो-चना करनेमें हिचकिचाहट नहीं की दुनियाके बाजारोंकी लूट मालामाल इंगलैंड-के पूँजीपतियों और उनकी पत्तल चाटनेवाले मजदूर-नेताओंसे उनको कम आशा थी, कि वहाँ अदूर भविष्यमें क्रांति होनेवाली है, इसीलिये तुरन्त क्रांति लाने की दृष्टिसे उन्होंने इंगलैंडमें काम नहीं किया। यह भी एक कारण था, जिससे इंगलैंडकी सरकारको तुरन्त वैसा कोई बहाना नहीं मिल सकता था, जिससे कि वह मार्क्सको वहाँसे भगानेके लिये उतारू हो जाती।

प्रतिभाओंकी अवहेलना वर्गसमाजमें हमेशा ही होती आई है, विशेषकर उस प्रतिभाकी तो वहाँ कोई पूछ नहीं हो सकती, जो वर्गभेदकी जड़ काटनेके लिये असली हथियारोंका आविष्कार करती है। फाँसूटके शब्दोंमें :

जिन थोड़ोंने देखा समझा और फिर,
अज्ञानतासे अपने हृदयको पूरा खोल दिया,

और जनगणको अपनी भावनायें दिखलाई,
वह हमेशा बलिखूंटे या सलेवपर मरे।

अपनी आत्माको बेचनेवाली या अपने चारों तरफ होते अतिचारों और अत्याचारोंके प्रति आँख मूँदनेवाली प्रतिभाओंके लिये जीवन कंटकाकीर्ण नहीं था। शासकवर्ग उन्हें सिरपर उठानेके लिये तैयार था। लेकिन, क्रान्तिकारी प्रतिभायें उनकी कृपा ही नहीं सहिष्णुतासे भी वञ्चित थीं। १६ वीं शताब्दी ही नहीं, बल्कि सारे इतिहासमें कार्ल मार्क्स जैसी प्रतिभा बहुत ही कम पैदा हुई। उन्हें कार्य-क्षेत्रमें पैर रखनेके बाद एक दशाब्दी तक दूसरे संघर्षोंके साथ गरीबी-से भी संघर्ष करना पड़ा। जब वह लन्दनमें निर्वासित जीवन बितानेके लिये सपरिवार आये, तो जीवनकी वह कठोर विपत्तियाँ सामने आईं, जिनमें सबसे पहले मार्क्स और जेनीको अपनी कई सन्तानोंको बलि देनी पड़ी। साल भरकी बच्चीके मरनेकी घटना हम देख चुके हैं। वह केवल गरीबीकी बलि हुई, इसमें सन्देह नहीं। असह्य शारीरिक और मानसिक पीड़ाओंसे भरे जीवनको बिताते हुये मार्क्सने कैसे अपने अध्ययन, अनुसन्धान और आविष्कारोंको जारी रक्खा, यह सोचकर आश्चर्य होता है।

मार्क्स चतुरस्र महापुरुष थे, बुद्धिके क्षेत्रमें भी एकांगिता इनमें छू नहीं गई थी। कितनी ही प्रतिभायें होती हैं, जिनकी महानतामें कोई सन्देह नहीं, लेकिन उनमें निरंतर काम करनेकी लगन और उत्साह नहीं होता, जिसके कारण वह मानवताके लिये बहुत काम नहीं कर पातीं। पर, मार्क्स जितने ही प्रतिभाशाली थे, उतने ही कठोर परिश्रमी भी। दिन ही नहीं रातसे भिनसार तक बैठे काम करना, दसियों बरस तक दस-दस घंटे रोज ब्रिटिश म्युजियममें देश-विदेशके मानव-जीवनके हरेक पहलुओंपर लिखे गये अनमोल रेकार्डोंकी धूलियोंको पोंछकर उन्हें तन्मय होकर अध्ययन करना बिल्कुल अनहोनी सी बात मालूम होती है। लेकिन, मार्क्सके लिये वह अनहोनी बात नहीं थी। वह मानवताके सबसे अधिक उत्पीडित और सबसे अधिक सख्यावाले जनगणको बन्धनसे मुक्त करना चाहते थे। इस महान् कामके महत्वको बड़ी तीव्रतासे वह अनुभव करते और उससे भी कहीं खेदके साथ देखते थे। एक जीवन क्या

अगर उन्हें सौ जीवन भी मिलता, तो वह इसी काममें लगाते। मार्क्सकी प्रतिभा और तपस्या विफल नहीं गई, बल्कि कह सकते हैं, वह बहुत जल्दी सफल हुई, जब कि उनकी आँखोंके मूँदनेसे चौंतीस साल बाद ही उनका अनुयायी बन पृथिवीके छठे भागने युगोंकी दासतासे मुक्ति पाई, और दो शताब्दियोंसे कुछ और अधिक बीतनेपर आधी मानवताने पुराने नर्कको ढाकर नये स्वर्गकी भव्य इमारत निर्माण करनी शुरू की। मार्क्सका जीवन कर्ममय था। उन्होंने स्वयं कहा था, कि कर्म करनेकी अक्षमता किसी ऐसे मानवके लिये मृत्युदंड है, जो कि सचमुच पशु नहीं है। एक बार कई सप्ताह तक बीमार रहनेके समय उन्हों-ने एंगेल्सको लिखा था: यद्यपि मैं काम करनेके लिये बिल्कुल असमर्थ हूँ, लेकिन मैंने कारपेन्टरकी "फिजियालोजी" (शरीर शास्त्र) कोलिकेरकी "गेवेवेलेर" स्पुर्जहाइमकी "अनटोमी डेज हर्न्स उंड नेरवेनसिस्टम" और श्वान एवं श्लाइडेन-की "उइवेर डी जेलेन्श्मीरे" पढ़ी। उनका मस्तिष्क शरीरके अस्वस्थ रहनेपर भी गम्भीर अध्ययनको छोड़नेके लिये तैयार नहीं था। वह इतना काम करनेमें इस-लिये भी समर्थ हुये, क्योंकि उनका शरीर लोहेका था, तभी तो वह इतने परिश्रम और विपदाओंके बोझको बर्दाश्त कर सका था। शरीर और बुद्धि दोनों-से इतने मजबूत पुरुष बहुत कम मिलते हैं।

लन्दनके इस समयके जीवनमें १८५१ ई० से करीब दस साल तक अमे-रिकन पत्र "न्यूयार्क ट्रिब्यून" का पारिश्रमिक उनके लिये सबसे बड़ा सहारा था। आज तो पत्रोंकी ग्राहक-संख्या आधे-आधे करोड़ तक पहुँचती है, इसलिये ट्रिब्यूनकी उस समयकी दो लाखकी ग्राहक-संख्या आजके लिये कोई असाधारण बात नहीं। किन्तु, उस समय युक्तराष्ट्र अमेरिकाका वह सबसे बड़ा और शक्ति-शाली अखबार था। उसके मालिकोंका फूरियेके समाजवादके साथ कुछ सहानु-भूति भी थी, जिसमें कुछ कारण पत्रके अधिक जनप्रिय होने एवं अधिक पैसा कमानेका ख्याल भी था। पत्र-मालिकोंने मार्क्सके साथ समझौता किया था, कि वह प्रति-सप्ताह दो लेख लिख दिया करेंगे और ट्रिब्यून प्रत्येक लेखका दो पौंड दिया करेगा। इस प्रकार उन्हें दो सौ पौंड वार्षिककी आमदनीका एक रास्ता निकल आया था। इसे कहनेकी तो आवश्यकता नहीं, कि उस समयके

मापदण्डसे भी जिस तरहके लेख मार्क्स ट्रिव्यूनमें भेजा करते थे, उनके लिये यह पारिश्रमिक अत्यन्त अपर्याप्त था। पत्रका प्रकाशक डाना अपनेको फूरियेके समाजवादका अनुयायी मानता था, लेकिन एंगेल्सके अनुसार डानाका समाजवाद लोभ तथा निम्न-मध्यमवर्गकी ठगीसे बढ़कर कुछ नहीं था। वह मार्क्सके लेखोंके मूल्यको जानता था, लेकिन मालिक होनेके कारण अपने वेतनभोगी सेवकको शोषित करनेसे अपनेको कैसे रोक सकता था। सबसे बुरी बात जो मार्क्सको असह्य थी, वह थी उनके लेखोंकी मनमाना कतर-ब्योंत, और पसन्द न आने पर उन्हें रद्दीकी टोकरीमें फेंक देना। पत्रकी ग्राहक-संख्याके कम होनेकी जरा भी संभावना होने पर डानाने पारिश्रमिक कम करनेमें भी आनाकानी नहीं की। जो देता भी था, वह भी सिर्फ उन्हीं लेखोंके लिये, जिन्हें वह छापता था। रद्दीकी टोकरीमें फेंके उन लेखोंकी कोई कीमत नहीं थी, जिनके लिखनेमें मार्क्सको ब्रिटिश म्युजियमकी पुस्तकों और दूसरी सामग्रीके अध्ययनमें दिनों लग जाते थे। एक बार तो तीन सप्ताह तक और कभी-कभी छ सप्ताह तक, जो भी लेख मार्क्स भेजते रहे, उन्हे रद्दीकी टोकरीमे फेंका जाता रहा। "डी प्रेस" (वीना) जैसे जर्मन अखबारोंका भी वर्ताव इससे बेहतर नहीं था।

१८५३ ई० में मार्क्स कुछ महीनोंकी शान्ति पानेकी बड़ी लालसा रखते थे, जिसमें कि निश्चिंत हो वह अपने वैज्ञानिक अध्ययनको जारी रख सकें : पर मालूम होता है, मुझे वह नहीं मिलनेवाली है। अखबारोंके लिये यह लगातार गड्डियोंको छाप्ना मेरे लिये दुर्भर हो गया। चाहे तुम कितने स्वतन्त्र विचारोंके हो, लेकिन लेख तो अन्तमें अखबार और उसके पाठकोंके पास जाना है।... ऐसी स्थितिमें शुद्ध वैज्ञानिक कार्य करना बिल्कुल कठिन है। कुछ सालों तक डानाके लिये काम करनेके बाद एक बार उन्होंने लिखा था : "यह बिल्कुल जुगुप्सनीय है, कि ऐसे दरिद्रकी मेहरबानीका नाज उठाया जाय, जोकि कृपा करके अपनी डोंगीमे बैठानेके लिये सहमत है। दरिद्रालयके भिखमंगोंकी तरह हड्डी पीसकर उसका सूप बनाना जैसा ऐसे पत्रके लिये राजनीतिक लेख लिखना है, तो भी मुझे उसे परे परिमाणमें करना पड़ता है।" मार्क्सने केवल सर्वहाराके दुःखों और चिन्ताओंका ही कालकूट घूँट दीर्घ काल तक नहीं पिया, बल्कि आधुनिक

सर्वहाराकी तरह ही उनका भी मालिकों द्वारा शोषण होता रहा। उन्होंने कितना कष्ट सहा, यह एंगेल्स के नाम लिखे हुये उनके पत्रोंसे मालूम होता है: एक समय वह घरके भीतर बन्द रहनेके लिये मजबूर हुये, क्योंकि उनके पास बाहर जानेके लिये न कोट था न जूता। दूसरे समय उनके पास इतना पैसा नहीं था, कि लिखनेका कागज या अखबार खरीद सकें। फिर एक समय अपने लेखको प्रकाशकके पास भेजनेके लिये डाकके टिकटोंके वास्ते अपने परिचितोंके पास हाथ पसारे दौड़ना पड़ा। मोदी, सब्जीवाले, रोटीवालेका दाम ठीक समयपर चुकता न होनेसे उनकी झिड़क भी खानी पड़ती थी। उससे भी असह्य था, घरके मालिकका बर्ताव—जरा भी किराया बाकी रहता, कि वह उनको निकालकर सड़कपर पटकनेके लिये तैयार हो जाता। ऐसी स्थितिमें यदि घरमें कभी थोड़ी कड़वाहट आ जाय, तो कोई अस्वाभाविक बात नहीं थी। लेकिन, मार्क्सको दूसरे विद्वानोंकी तरह "कटही" बीबी नहीं बल्कि जेनी जैसी अनुपम देवी मिली थी, जो शायद ही कभी खीजती थी, और खीजनेपर भी तुरन्त अपनेको दोषी मान पतिको शान्त और संतुष्ट करनेकी हर प्रकारसे कोशिश करती थी। लेकिन, गरीबीमें परिवारका बोझ बहुत भारी होता है, इसीलिये मार्क्सने अपनी राय दी थी: जो लोग मानवताकी सेवा एकान्त मनसे करना चाहते हैं, उनके लिये विवाहसे बढ़कर कोई बेवकूफी नहीं हो सकती, क्योंकि इसके कारण उन्हें वैयक्तिक जीवनकी छोटी-छोटी चीजोंके लिये मरना-खपना पड़ता है। घरके अभावोंके लिये जेनी कभी शिकायत करती, तो मार्क्स हमेशा उसके पक्षका समर्थन करते कहते, कि मेरी अपेक्षा तुम्हें अधिक कष्ट और अवर्णनीय अपमान, चिन्ता और आशंकाका सामना करना पड़ता है। मार्क्स तो दस-दस घंटे ब्रिटिश म्युजियममें गुजार देते थे, कभी और जगह भी जाकर मनबहलाव कर सकते थे, लेकिन जेनी तो कई बच्चोंकी माँ थी, जिनके भोलेभाले सूखे चेहरोंको देखकर उसका कलेजा फटता रहता था। उसका भी अपना बचपन था। कितनी निश्चिन्तता और आनन्दसे उसने उसे बिताया था? लेकिन अब वह अपने बच्चोंको उनसे सर्वथा वंचित देखती थी। दूसरे कितने ही राजनीतिक कर्मियोंकी तरह मार्क्स भी चाहते, तो अपनी इज्जतपर बिना धब्बा लगाये बूर्ज्वा-

लोगोंके कामोंमें से एकको अपना सकते थे। लेकिन मार्क्सका कहना था : "चाहे जो भी हो, मुझे अपने लक्ष्यका अनुसरण करना है। मै अपनेको बूर्ज्वा-समाजकी पैसा कमानेवाली मशीन बनने नहीं दूँगा।"

वह सर्वथा मानव थे और जीवनके कष्टोंको एक मानव-हृदयके तौरपर ही महसूस करते थे। अपने जिस पत्रमें अपने मित्र एंगेल्सको तुरन्त सिरपर पड़े दुःखके पहाड़के बोझका जहाँ वर्णन करते होते, उसी पत्रमें आगे चलकर वह उसे बिल्कुल भूल जाते, जबकि वह अपने अनुसन्धान और जीवनके लक्ष्यके बारेमें वर्णन करने लगते। अपने ५० वें वर्षको पूरा करते समय उन्होंने कहा था : "आधी शताब्दीका बोझ मेरी पीठपर है और अब भी मैं अकिंचन हूँ!" एक जगह वह लिखते हैं, कि इस तरहके जीवनसे हजार पोरसा समुद्रके नीचे जाना बेहतर है, और दूसरे समय कहते हैं : मै अपने सबसे भयंकर शत्रुके लिये भी नहीं चाहूँगा, कि वह ऐसा जीवन बिताये। एक समय जीवनकी छोटी-छोटी चिन्ताओंने उन्हें इतना पीस दिया था, कि वह आठ सप्ताह तक अपना बौद्धिक कार्य करने लायक नहीं रह गये।

यह था पारितोषिक, जिसे जीवनमें उस अद्भुत प्रतिभाको तत्कालीन समाज दे रहा था।

२ अनुपम मित्रता

यदि मार्क्सकी प्रतिभाको लौहमय शरीर मिला था, जो कि असाधारण परिश्रम और कष्टोंको सहन कर सकता था, तो उनको समाजमें एक बाहरी शरीर भी एंगेल्सके रूपमें मिला था। "एक प्राण दो शरीर" या बहिश्वर प्राण" की कहावत इन दो मित्रोंपर बिल्कुल ठीक घटती है। उनके बौद्धिक कार्योंमे हाथ बँटानेके लिये एंगेल्स जिस तरह तैयार रहते थे, और उसके लिये सक्षम भी थे; उसी तरह उनके कष्टोंको बाँटनेमे बड़ा आनन्द आता। एंगेल्सने एक तरह अपने सारे बौद्धिक और शारीरिक जीवनको इस मित्रतापर बलि चढ़ा दी थी। दोनो मित्रोके बीच लिखे गये हजारों पत्र इसके साक्षी हैं। इतिहासमे इस तरहकी सर्वांगीन अभिन्न मित्रता दूसरी कोई भी देखी नहीं जाती। इस

मित्रतामें किसी तरहके स्वार्थकी भावना न थी। मार्क्सको दुःख होता था, जब सोचते थे, कि एंगेल्स जैसा प्रतिभाशाली पुरुष सिर्फ मेरे लिये मन मारकर, अपनी प्रतिभाको बेकार करके व्यापारमें लगा हुआ है।

एंगेल्स कदमें लम्बे-चौड़े ब्लौंड (गौर) केशोंवाले थे। वह हमेशा अपनी पोशाक बिल्कुल बाकायदा पहनते थे। फौजी बारेक तथा आफिसमें उन्होंने जो अनुशासनका जीवन बिताया था, उसके कारण वह काममें सदा बड़े मुस्तैद रहते थे। उन्होंने एक मर्तबे कहा था कि छ क्लर्कोंकी मददसे मैं शासन-प्रबन्ध को उससे कहीं अधिक योग्यता और सीधे-साधे ढंगसे चला सकता हूँ, जिसे कि साठ प्रीवी-कौंसिलर (राजामात्य) भी नहीं कर सकते—वह प्रीवी-कौंसिलर, जो ठीकसे लिख भी नहीं सकते, और जिनकी चिन्हारियोंकी सिर-पूँछका कोई पता नहीं लगा सकता। पिताके व्यापारके कारण व्यवसाय क्षेत्र उनका कार्यक्षेत्र बना था। वह मान्चेस्टर शेयर-बाजारके एक बहुत ही सम्मानित सदस्य थे। बूर्ज्वा-वर्गके जीवनके ऊपरी वेषभूषाको उन्हें कायम रखना पड़ता था, यहाँ तक कि लोमड़ीके शिकार और बड़े-दिनकी पार्टियोंमें भी वह शामिल होते थे।

अधिक समय नगरसे बाहर एक छोटेसे एकान्त बँगलेमें बीतता था, जहाँ वह बूर्ज्वा-समाजके घृणित वातावरणसे निकलकर शुद्ध हवामें साँस लेते अपने अध्ययन, मनन या लेखनमें लगे रहते।

मार्क्स गठीले और मजबूत शरीरके आदमी थे। उनका कद साधारणसे अधिक ऊँचा और युरोपियन तुलनामें उन्हें साँवला कहा जा सकता था। उनकी आँखें चमकीली तथा काली थीं। इनके साथ घने कोयले जैसे काले बाल बतलाते थे, कि वह सामीय जातिके हैं। वह कपड़े-लत्ते या रहन-सहनमें बड़ी बेपर्वाही रखते थे, उनकी उन्हें जरूरत भी नहीं थी, क्योंकि नगरके भद्र-समाजमें सम्मिलित होनेकी उन्हें आवश्यकता नहीं थी। उसके लिये समय भी नहीं निकल सकता था, क्योंकि अपने बौद्धिक श्रमके बाद मुश्किलसे थोड़ासा समय मिलता था, जब कि वह जल्दी-जल्दी शरीरकी गाड़ी चलानेके लिये कुछ ग्रास अपने मुँहमें डाल लेते और फिर बहुत रात तक काममें जुट जाते। विचारणा उनके लिये परम आनन्दकी बात थी, विचार करते वह थकते नहीं थे। वह थे

भी तो परम विचारकोंकी श्रेणीमें। वह बड़ी प्रसन्नताके साथ हेगेलके वाक्योंको दोहराते : "एक गुण्डे का अपराधपूर्ण विचार करना स्वर्गके सभी आश्चर्योंसे कहीं उच्च और भव्य है।" लेकिन मार्क्स जिस विचारको निरन्तर किया करते, वह था कार्यको पूरा करना। छोटी-छोटी बातोंमें बिल्कुल व्यवहारपटु नहीं थे, लेकिन बड़ी बातोंमे कहीं अधिक व्यवहारपटु थे। एक छोटेसे परिवारका चलाना उनकी शक्तिसे बाहरकी बात थी, लेनिक एक भारी सेनाको तैयार कर सारी दुनियाके रूपको बदलनेके लिये उसे लेकर आगे बढ़नेमे उनकी प्रतिभा अद्वितीय थी।

मार्क्स और एंगेल्स दोनों कलमके धनी थे, दोनो हीकी अपनी अलग-अलग शैली थी, दोनों ही अद्भुत भाषाविद् थे—उन्होने बहुतसी भाषाओं और बोलियोंपर अधिकार प्राप्त किया था। एंगेल्स बल्कि इस विषयमे मार्क्ससे भी आगे बढ़े हुये थे। एंगेल्सकी भाषा बड़ी भावपूर्ण और सीधी-सादी होती थी। शब्दाडम्बरको वह पसन्द नहीं करते थे। वह बड़े सुगम और सुन्दर ढंगसे लिखते थे। उनकी लेखनीमें प्रवाह और प्रसाद दोनों पूरे रूपमे पाये जाते हैं। जिस तरह वह अपनी पोशाकके बारेमे बाकायदगी करते थे, वैसे ही वह लिखने में भी देखे जाते।

लेकिन, मार्क्स लिखनेमें उतनी सावधानी नहीं रखते थे। उनके दिमागके भीतरसे गम्भीर विचारोंकी इतनी प्रखर धारा छूटती रहती, जिसके कारण उनका लिखना भी सुगमतासे नहीं होता था। अपने पहलेके पत्रोंमे, मालूम होता है, वह अपने विचारोंके प्रकट करनेके लिये शब्दोंके ढूँढ़नेका भारी प्रयत्न कर रहे हैं। इंग-लैंड चले आनेके बादके पत्रोंमें तो उनकी शैली और भी दुरूह हो जाती है। अपने भावोंको प्रकट करनेमें जर्मनमें लिखे पत्रोंमे भी वह अँग्रेजी या फ्रेंच शब्दों और मुहावरोंको बेधड़क इस्तेमाल करते हैं। उनकी कृतियोंमें आवश्यकतासे अधिक विदेशी शब्दोंकी भरमार देखी जाती है—उनमें अँग्रेजी और फ्रेंचकी मात्रा-से बहुत अधिक पुट होती है। लेकिन जर्मन भाषापर उनका इतना अधिक अधि-कार था, कि उनके ग्रंथोंका मूलके भावोंको सुरक्षित रखके दूसरी भाषासे अनुवाद करना बहुत मुश्किल है। मार्क्सके जिन ग्रंथोंके अनुवाद हिन्दीमें हुये हैं, वह

मूलतः जर्मनमें थे, उन्हें अँग्रेजीसे प्रत्यनुवाद किया गया है। दो भाषाओंसे गुजर-कर हुआ अनुवाद मूलसे कितना भेद रखता होगा, इसे सहज समझा जा सकता है। इसके लिये यह जरूरी है, कि मार्क्सके ग्रंथोंका सीधे जर्मन भाषासे हमारी भाषाओंमें अनुवाद हो। मार्क्सके अँग्रेजी अनुवादोंके बारेमें एंगेल्सने स्वयं कहा है: जिन अनुवादोंकी पालिश स्वयं मार्क्सने बड़े ध्यानसे की थी, उनमें भी मूलकी आत्मा बहुत विकृत हो गई है। मार्क्स उपमाओंका प्रयोग अपनी भाषामें बहुत अधिक करते हैं। आखिर भाषा भावोंका वास्तविक चित्रण नहीं, बल्कि संकेत मात्र है। यह संकेत उपमा और उदाहरण द्वारा अधिक तीव्रताके साथ किये जा सकते हैं, इसीलिये मार्क्स उनका बहुत सफलतापूर्वक इस्तेमाल करते थे। लेकिन, वही उनके ग्रंथोंके भाषान्तर करनेमें सबसे बड़ी कठिनाई पैदा करते हैं। भाषा और भाव पुरुष और स्त्रीका सुखमय विवाह है, यदि विवाह दुखमय हुआ, तो जीवन फीका हो जाता है। भाषा और भावका सामंजस्य न रहनेपर लेखककी कृति कुरूप बन जाती है। मेरिंगने लिखा है: "मार्क्स सदा समस्याओंको इस तरह पेश करते हैं, मानो वह अपने पाठकके लिये लाभदायक विचार करनेके लिये भोजन रख देते हैं। उनकी भाषा गहरे नीले सागरके ऊपर लहरोंकी क्रीडा जैसी मालूम होती है।"

एंगेल्स सदा मार्क्सकी प्रतिभाको अपनेसे श्रेष्ठ मानते थे, और सदा उनका अनुयायी रहनेकी इच्छा रखते थे। लेकिन, एंगेल्स मार्क्सके केवल सहायक या भावानुवादक नहीं, बल्कि उनके स्वतन्त्र सहयोगी थे और अपनी प्रतिभामें वह मार्क्सके जैसे ही तथा योग्य भागीदार थे। अपनी मित्रताके आरम्भमें एंगेल्सने जितना मार्क्ससे पाया, उससे कहीं अधिक प्रदान किया। बीस सालकी गम्भीर मित्रताके बाद मार्क्सने स्वयं उनको लिखा था: "तुम इसे जानते हो, कि पहले तो मैं किसी तत्वपर धीरे-धीरे पहुँचता हूँ, और दूसरे यह कि मैं तुम्हारे कदमों-पर चलता हूँ।" इससे मालूम होता है, कि एंगेल्स किसी तत्वकी तहपर बड़ी जल्दी पहुँच जाते थे। मार्क्सको देरसे पहुँचनेका कारण यह था, कि वह द्वन्द्वा-त्मक दृष्टिका सर्वतोभावेन उपयोग करते हरेक बातको पक्ष-विपक्षकी कसौटीपर कसते आगे किसी निष्कर्षको घोषित करनेके लिये तैयार होते थे। मार्क्सने

अपने जीवनमें किसी बड़े राजनीतिक निर्णयको तब तक नही किया, जब तक कि एगेल्ससे पूछ न लिया। इसीसे मालूम होगा, कि एगेल्स मार्क्सकी छाया नही थे, बल्कि दोनो यमल प्रतिमाये थी, जिनका उदाहरण हमे मार्क्स-एंगेल्सके उत्तराधिकारियों लेनिन और स्तालिनमे ही मिलती है।

राजनीतिक बातोंमे सदा एगेल्सकी राय लेते, यद्यपि सैद्धान्तिक प्रश्नोमे वह एगेल्ससे कहीं अधिक क्रान्तदर्शी थे। मार्क्स अपने कामोंको कभी जल्दी या फुर्तीसे करनेके विरोधी थे। एगेल्सको इसके लिये अनकुस मालूम होता था। वह समझते थे, मार्क्स जो भी लिख देंगे, वह बहुमूल्य होगा और उसके जल्दी प्रकाशित होनेपर फल भी जल्दी प्राप्त होने लगेगा। उन्होने एक बार मार्क्सको लिखा था : "अपनी कृतिके बारेमें इतनी अधिक सावधानी मत रखिये। साधारण जनताके लिये वह हर तरहसे बहुत ही अच्छी होगी। सबसे बडी बात यह है, कि इसे समाप्त करके प्रकाशित कर दीजिये। उसकी कमियोको जो आप देख सकेंगे, उनका पता गदहे किसी तरह भी नही पा सकेंगे। जिस तरह एगेल्स अपनी रायको इस तरह दोहराते रहते, मार्क्स भी उसी तरह उनके माननेसे इन्कार किया करते। दिन-प्रतिदिनके कामके लिये एगेल्स कही अधिक सक्षम थे। मार्क्सने एक बार उनके बारेमे कहा था : "एक बिल्कुल गभीर विश्वकोष, दिन या रातके किसी घंटेमे काम करनेके लिये तैयार, लिखनेमे तेज और शैतानकी तरह सक्रिय।"

१८५० ई० की शरदमें "नोए राइनिशे रिव्यू" के बन्द हो जानेपर लन्दन में दोनों मित्र एक नई योजना बना रहे थे। मार्क्सने दिसम्बर १८५३ मे एगेल्स को लिखा : "अगर हमने लन्दनमे अग्रेजी सव्यवहार (पत्र-व्यवहार) का काम ठीक समय पर शुरू कर दिया होता, तो इस समय तुम्हें मैनचेस्टरमें रहकर व्यवसायके जजालमे न पड़ना पडता और न मुझे कर्जोंके नीचे पिसना पडता।" एगेल्सने बापकी फर्ममें जाना ही पसन्द किया था, यद्यपि यह ख्याल करके कि अनुकूल स्थिति होने पर मैं फिर उस "सारे व्यापार" को सदाके लिए छोडकर लिखने-पढनेके काममें लग जाऊँगा। १८५४ ई० के वसन्तमे एगेल्सने काम छोड़कर लन्दन जानेके लिए विचार भी किया, लेकिन मार्क्सकी आर्थिक स्थिति-

को देखकर यह निर्णय करनेमें जरा भी आनाकानी नहीं की, कि मुझे अपने मित्र और उनके अनमोल कार्यमें सहायता करनेके लिए इस जूयेको बराबरके लिए अपने कन्धेपर रखना होगा। एंगेल्सने इस महान् त्यागका अन्तिम और पक्का संकल्प इसी समय किया।

आगे चलकर एंगेल्स अपने फर्ममें पार्टनर (भागीदार) बन गये, किन्तु अभी वह फर्मके एक नौकर भर थे और चितना चाहते थे, उतनी मार्क्सकी सहायता नहीं कर पाते थे। लेकिन, पाँच पौंड और दस पौंड के नोट वह बराबर मार्क्सके पास भेजा करते थे। पीछे तो उनकी सहायतायें सौ पौंडके नोटोंमें बराबर मैनचेस्टरसे लन्दन आया करती थीं। जब दोनों ही एक प्राण और दो शरीर थे, तो मार्क्स या जेनीको उनसे अपनी स्थिति छिपाये रखनेकी कोई आवश्यकता नहीं थी। उस समय ये पत्र दिन-प्रतिदिन चलते उनके दुःख और चिन्ताके बाह्य प्रकाश थे, लेकिन, आज वह हमारे लिए सबसे ठोस ऐतिहासिक अभिलेख हैं। मार्क्स जीवनकी छोटी-छोटी बातोंमें व्यवहारपटु नहीं थे, यह हम बतला आए हैं। इसके कारण भी कष्टोंकी परम्परा कम नहीं हो पाती थी। एक समय मार्क्सने समझा, कि हमने परिवारकी स्थितिको ठीकठाक कर लिया, लेकिन वस्तुतः जेनीने चिन्ता न होनेके लिए कुछ उधारोंको छिपा रक्खा था। फिर एकाएक एक दिन, वह सामने चले आये, और फिर चिन्ता बढ़ चली। इसे मार्क्स अपने मित्र से कहते "स्त्रियोंकी बेवकूफी" जिन्हें हमेशा एक पगहेकी जरूरत होती है।

एंगेल्स अपनी कमाईके पैसोंकी ही बलि देनेके लिये तैयार नहीं थे, बल्कि दिनभर के आफिस और शेयर-बाजारके कामसे चूर होकर जब वह शामको घर लौटते, तो फिर रातको बहुत देर तक "ट्रिब्यूनके" लिए मार्क्सके लेखोंको ठीक करते, क्योंकि मार्क्सका अंग्रेजी भाषा पर उतना अधिकार नहीं था। सैनिक विज्ञान एंगेल्सका अपना विषय था, भाषाओंके अध्ययनकी ओर भी उनकी विशेष रुचि थी, लेकिन वह "विद्या विद्याके लिए" के ख्यालसे नहीं, बल्कि जिस महान् कार्यके लिये उन्होंने अपना जीवन दे रक्खा था, उसमें उनका उपयोग था, इसीलिए वह उनके सदा गम्भीर विद्यार्थी बने रहे। जब उन्होंने

रूसी आदि स्लाव भाषाओंका पढ़ना आरम्भ किया था, तो इसका कारण बतलाते हुए कहा था : हममें से कमसे कम एक आदमीको उन जातियोंकी भाषाओं, इतिहास, साहित्य और सामाजिक संस्थाओंका अध्ययन करना चाहिए, जिनसे हमें शायद जल्दी ही काम पड़े। इसी तरह सुदूर पूर्वके कामके लिए उन्होंने अरबी और फारसी पढ़ी। अरबीकी चार हजार धातुओंने उन्हें डरा दिया, लेकिन फारसी उनके लिए लड़कोंका खेल थी और उन्होंने उसमे हाथ लगाते ही कह दिया, कि तीन सप्ताहमें मै इसपर अधिकार कर लूँगा। फिर वह जर्मानिक भाषाओंके ऊपर पडे। उन्होने उस समय लिखा था : "अब मै उलफिलस (गाथ पादरी) में आँखों तक डूब गया हूँ। मुझे इस सौरी गाथिकको सचमुच ही बहुत पहले ही खतम कर लेना चाहिये था।...मुझे यह देखकर बडा आश्चर्य होता है, कि मै इसे उससे कहीं अधिक जानता हूँ, जितना कि मैं समझता था। एक अच्छे कोषके सहारे दो हप्ते में मुझे इसके बहुत भीतर पहुँच जाना चाहिए। फिर मैं प्राचीन नार्डिक और प्राचीन सैक्सनकी ओर जाऊँगा, जिनके साथ सदासे ही मेरा कुछ परिचय था।" जब आयर्लैंडका प्रश्न उठ खड़ा हुआ, तो उनका ध्यान उसकी भाषा गैलिककी ओर गया। इन्टर्नेशनलके युगमे अधिवेशनोंके समय भाषाओंका ज्ञान उन्हे बडा सहायक सिद्ध हुआ। इसीसे कोई कह उठा "एंगेल्स बीस भाषाएँ हकला सकता है।" जब बहुत उत्तेजित हो जाते, तो एंगेल्सके बोलनेमे थोडी-थोडी हकलाहट आ जाती थी।

सैनिक विज्ञानके अध्ययन के प्रति जो उनका शौक था, इसके कारण लोगोंने उन्हें "जेनरल" का नाम दे दिया था। सैनिकोंकी संयुक्त भावनाके वह प्रशसक नहीं थे और कहते थे, कि भीडका यह बहुत ही जुगुप्सनीय रुप है। उन्होने यह भी कहा था : "ये सैनिक एक दूसरेसे विषकी तरह घृणा करते हैं, और जरा भी विशेषता होनेपर स्कूली लड़कों की तरह एक दूसरेके साथ ईर्ष्या करते हैं। लेकिन जहाँ तक असैनिकोका सम्बन्ध है, उनके विरुद्ध वह एक आदमीकी तरह खड़े हो जाते हैं।" सैनिक विज्ञान और सैनिक संगठनका उन्होंने बडे विस्तारके साथ गम्भीर अध्ययन किया था, सैनिक और नवीनतमसैनिक टेक्नीकको भी हृदयंगत की थी : प्रारम्भिक दाव-पेंच, मोर्चाबन्दी, पुल-निर्माण,

खाई खोदना, हर तरहके हथियारोंका इस्तेमाल, भिन्न-भिन्न प्रकारके हथियारोंका विवरण, सेनाके लिए सप्लाई (पूर्ति) व्यवस्था, अस्पताल-व्यवस्था तथा दूसरी बहुत सी बातोंका अध्ययन किया था। उन्होंने नेपियर (अंग्रेज) जोमिनी (फ्रेंच), क्लाउजेवित्ज (जर्मन) जैसे महान् सैनिक इतिहासकारोंके ग्रंथोंका भी आद्योपांत पारायण किया था।

इतनी प्रतिभा और योग्यता रखते हुये भी एंगेल्सने अपनेको पीछे रक्खा। वह इसे ही अपना सबसे बड़ा सौभाग्य मानते थे, कि चालीस वर्षों तक वह अपने प्रिय मित्र मार्क्सके साथ-साथ अभिन्न तौरसे रहे। मार्क्सके बाद एक दशाब्दीसे ऊपर दुनिया के मजदूर-वर्गके आन्दोलनमें उन्होंने अपनी प्रतिभाका पूरा इस्तेमाल किया, और इस वक्त वह विश्वके मजदूरोंके सर्वोपरि नेता माने जाते थे।

३. भारत पर मार्क्स

"न्यूयार्क ट्रिब्यून" में मार्क्सने भारतके बारेमें जो लेख लिखे और एंगेल्सके लिये लिखे पत्रोंमें भारतका जिस तरह वर्णन किया, उससे पता लगता है, कि मार्क्सका भारत-सम्बन्धी अध्ययन कितना गम्भीर था और भारतकी स्वतन्त्रता से वह कितने खिन्न तथा उसके भविष्यके प्रति कितने आशावान थे। इन्हें लिखनेमें मार्क्सने स्याही-कलम और जहाँ-तहाँसे सुनी-सुनाई बातें पर्याप्त नहीं समझी थी, बल्कि ब्रिटिश म्युजियममें अंग्रेजोंने जो सामग्री भारतके बारेमें जमा कर रखी थी, उसका पूरी तौरसे इस्तेमाल किया था।

आज भी हमारे यहाँ मौके-बेमौके गाँवके गणराज्य या पंचायती राज्यकी महिमा गाई जाती है, लेकिन उस गणराज्यकी क्या रूप-रेखा थी, इसका हमें पता नहीं हैं। मार्क्सने अपने २५ जून १८५३ के "ट्रिब्यून" में छपे लेखमें पार्लियामेन्टमें पेश होनेवाली रिपोर्टपर लिखा था :

(१) ग्राम गणराज्य का स्वरूप—"गाँव भौगोलिक तौरपर देखनेपर कुछ सौ या हजार एकड़ आबाद या परती जमीनका टुकड़ा है। राजनीतिक तौर से देखनेपर वह कस्बा या संगठित नगर-सा मालूम होता है। उसके बाकायदा निम्न नौकर और अफसर होते हैं :

पटेल (या गाँवका मुखिया)—गाँवके कामोंका साधारण तत्वावधान इसके ऊपर रहता है। वह गाँववालोंके झगड़ोंका फैसला करता, पुलिसकी देख-भाल करता, और गाँवके भीतर कर वसूल करनेका काम करता है। यह काम ऐसा है, जिसे अपने वैयक्तिक प्रभाव, व्यक्ति तथा परिस्थितिसे सूक्ष्म परिचयके कारण वह बहुत अच्छी तरहसे करनेकी क्षमता रखता है।

पटवारी (कर्णम्)—खेतों तथा उससे सम्बन्ध रखनेवाली हर बातका लेखा रखता है।

चौकीदार—गाँवके जुर्मों, अपराधोंका सुराग लगाता है, और जानेवाले यात्रियोंकी रक्षा करते हुए एक गाँवसे दूसरे गाँवमें पहुँचाता है।

प्रहरीका काम ज्यादातर गाँवके भीतरसे सम्बन्ध रखता है। उसके कामोंमें फसलकी रखवाली और उसके तौलनेमें सहायता देना है।

सीमापाल गाँवकी सीमाकी रक्षा करता है, और विवाद होने पर उसके बारेमे गवाही देता है।

जलपाल तालाब और नहरो की देख-भाल करता है, और खेतीके लिये पानी बाँटता है।

ब्राह्मण गाँवके लिये पूजा करता है।

अध्यापक गाँवमें बच्चोको बालूके ऊपर लिखना-पढ़ना सिखाता है।

ज्योतिषी साइत बतलाता है, आदि।

आम तौरसे ये नौकर और कर्मचारी हर गाँवके संगठन में मिलते हैं, लेकिन देशके किसी-किसी भागमें इनकी संख्या कम होती है, और ऊपर बतलाये कर्त्तव्यों और अधिकारोंमेंसे एकसे अधिक एक ही आदमीके ऊपर होते हैं। और कहीं-कहीं उपरोक्त व्यक्तियोंकी सख्या और अधिक होती है। इस तरहकी सीधी-सादी सरकारके अधीन देशके निवासी अज्ञात कालसे रहते चले आये हैं। गाँवकी सीमा शायद ही कभी बदली हो। यद्यपि कभी-कभी गाँवोंको चोट पहुँची, युद्ध, अकाल या महामारीने उन्हें बरबाद किया है, किन्तु वही सीमा, वही स्वार्थ और बल्कि वही परिवार युगोंसे चलते आ रहे हैं। राज्योंके टूटने-फूटनेकी ग्रामीणों को कोई पर्वाह नहीं। जब तक गाँव अखंड है, तब तक उन्हें

इसकी चिन्ता नहीं, कि वह किस शासकके हाथमें हस्तान्तरित किया गया अथवा कौन उसका राजा बना—उसकी आन्तरिक अर्थनीति अछूती बनी रहती है। पटेल अब भी गाँववालोंका मुखिया है और वह अब भी गाँवका छोटा मुंसिफ, मजिस्ट्रेट और कलेक्टर—लगान जमा करनेवाला है।

आजसे १०० वर्ष पूर्व, गदरसे चार साल पहिले "भारतमें बृटिश शासन" नामक अपने लेखमें "न्यूयार्क-ट्रिब्यून" २५ जून १८५३में उपरोक्त पंक्तियोंको उद्धृत करते हुये मार्क्सने लिखा था—"यह छोटा अचल सामाजिक संगठन अब बहुत अंशोंमें नष्ट हो चुका या हो रहा है, किन्तु इसका कारण बृटिश कर-उगाहनेवाले और बृटिश सिपाही उतने नहीं हैं, जितने कि बृटिश भाप-इंजन और बृटिश मुक्त-व्यापार।"

(२) **ग्राम गणराज्यके कारण अकर्मण्यता**—उसी सन्के १४ जूनके अपने एक पत्रमें मार्क्सने भारतके ग्राम-संगठनके बारेमें एंगेल्सको लिखा था—

"एसियाके इस भागमें इस तरहकी जो गति-शून्यता—बाहरी राजनीतिक सतहपर जो लक्ष्यरहित कुछ गति सी भले ही दिखलाई पड़ती हो—एक दूसरे पर अवलम्बित दो परिस्थितियोंके कारण है : (१) सार्वजनिक काम (तालाब, नहर आदिका बनाना) केन्द्रीय सरकारके जिम्में था, (२) इसके अतिरिक्त सारा साम्राज्य, कुछ थोड़ेसे शहरोंको छोड़कर, ऐसे गाँवोंसे बना है, जिनका अपना एक बिल्कुल अलग संगठन है, और उनकी अपनी एक खुद छोटी सी दुनिया है :

"ये काव्यमय गणराज्य, जो पड़ोसी गाँवोंसे सिर्फ अपने गाँवकी सीमाओं-की ही तत्परतासे रक्षा करना जानते थे, अब भी हालमें अंग्रेजोंके हाथोंमें आये उत्तरी भारतके कितने ही भागोंमें काफी सुरक्षित रूपमें पाये जाते हैं। मैं नहीं समझता, एसियाई निरंकुशताकी गति-शून्यताके मजबूत कारण ढूँढ़नेके लिये किसी और चीजकी जरूरत है।...अंग्रेजों द्वारा इन पुराने अचल रूपोंका तोड़ा जाना भारतके यूरोपीकरणके लिये आवश्यक बात थी। उगाहनेवाला अकेला इसमें सफलता नहीं प्राप्त कर सकता था। गाँवोंके अपने स्वावलम्बी स्वरूपको दूर करनेके लिए उनके पुराने उद्योग-धन्धेका बरबाद होना जरूरी था।"

भारतीय मानव-समाजकी सहस्राब्दियोंसे चली आती इस तरहकी निश्चलता, प्रवाह-शून्यता—जो पहिली सदी तक पाई जाती थी—ही वह कारण है, जिससे भारतीय मानव ग्रामभक्तिसे उठकर देशभक्ति तक नहीं पहुँच सका और न सामूहिक तौरसे बाहरी दुश्मनोका मुकाबिला कर सका। इस ग्राम-पंचायतने शिल्पियोंको सहस्राब्दियों पूर्वके बसूलो रूखानियोंसे, किसानोंको हंसुओं फालोंसे चिपटा रहने दिया। शासकवर्ग जानता था, कि यह ग्राम-संगठन भारतीयका मर्म-स्थान है, वहाँ पर पड़ी चोटको वह सहन नहीं कर सकता, मुकाबिला किये बिना नहीं रह सकता, इसीलिये उसने उसे नहीं छेड़ा, जैसेका-तैसा रहने दिया और इसी पर भारतीय ग्रामीण बोल उठे—

कोउ नृप होइ हमे का हानी।

(तुलसीदास)

यदि वह भारतीय ग्राम्य-गणराज्य पहले ही टूटकर विस्तृत सगठनमे बद्ध हुआ होता, तो निश्चित ही साधारण जनता शासकोंकी निरकुशता का मुकाबिला करने की ज्यादा क्षमता रखती, फिर जिस स्वेच्छाचारिताको हम भारतके पिछले दो हजार वर्षोंके इतिहासमें देखते हैं, क्या वह रह पाती ?

(३) सामाजिक परिवर्त्तनका आरम्भ

(क) आक्रमणोकी क्रीड़ा-भूमि—सहस्राब्दियोंसे भारतीय समाज मुक्त-प्रवाह नही, प्रवाह-शून्य नदीका छाड़न हो गया है। आजभी धार्मिक हिन्दू गगाकी छाड़नमें नहाना बुरा समझता है, वह उसके लिये मुर्दाके साथ स्नान, पुण्य छीननेवाला स्नान है। वैसे भी ऐसे पानीके पाससे गुजरनेपर नाकमे सड़ाँद की बू आने लगती है। भारतीय मानव समाज १६ वीं सदी तक ऐसा ही छाड़न था। उसे अपने पुराणपनपर अभिमान रहा। उसने बहते पानीके समाजमे लाने की ओर ध्यान तक नहीं दिया।

मार्क्सके शब्दोमे "सारे गृहयुद्ध, विदेशी आक्रमण, क्रान्तियाँ, विजय, अकाल—चाहे जितने ही तीव्र और नाशकारी रहे हों, पर वह (भारतमें) सतहसे भीतर नहीं घुस सके।"

जिस परिवर्तनसे दुनिया बहुत पहिले गुजर चुकी थी, भारतको उसे अपनाने के लिये मजबूर करना अंग्रेजोंका काम था। अंग्रेज उन विजेताओंकी भाँति भारतमें नहीं आये थे, जो भारतमें आकर भारतीय बन भारतके हो गये—वह यूनानियों, शकों, तुर्कों, मुगलोंकी भाँति हिन्दू नहीं बन गए। अंग्रेजोंमें पहिलेके विजेताओंसे अनेक विशेषतायें थीं। दूसरे विजेता विजेता जरूर थे, किन्तु साथ ही वह सभ्यतामें उस तलपर नहीं पहुँचे हुए थे, जिसपर हिन्दू पहुँच चुके थे; इसलिए इतिहासके सनातन नियमके अनुसार राजनीतिक विजेता विजित जाति की श्रेष्ठ सभ्यता द्वारा पराजित हो गये। अंग्रेज हिन्दू सभ्यतासे कहीं ऊँची सभ्यताके धनी थे, इसलिए हिन्दू विजित जाति उन्हें अपनेमें हजम नहीं कर सकते थे। पीढ़ियों तक वह यही कोशिश कर सकते थे, कि विजेताकी सभ्यतासे दूर-दूर रहे; लेकिन, यह मूढ़ हठ कितने दिनों तक चल सकता था? आज हम देख रहे हैं, भारतका वह पुराणपन कितना टूटता जा रहा है।

(ख) अंग्रेज विजेताओंकी विशेषता—एक और बात भी है, अंग्रेज भारत में अंग्रेज राजवंश कायम करने नहीं आये थे। विजय करके भारतके शासनको पहले-पहल अपने हाथ-में लेनेवाला कोई राजा या उसका सेनापति नहीं था; वह तो था ऐसे सौदागरोंका गिरोह, जो अपनी पूँजीपर अधिकसे अधिक मुनाफा कमाना चाहते थे। यह बिलकुल ही नई तरहकी विजय थी, जिसमें विजेता राजवंश स्थापित नहीं करना चाहता था। ईस्ट इंडिया कम्पनी चाहती थी, और भारतपर इसलिए शासन कर रही थी, कि वह अपने भागीदारोंको अधिकसे अधिक नफ़ा बाँटे। इससे और अधिक यदि कोई उसका मतलब था, तो यही कि भारतसे अधिकसे अधिक अंग्रेजोंका भरण-पोषण हो। यह काम मुगलों और शकोंकी कर उगाहनेकी नीतिसे नहीं हो सकता था। मुगलों-शकोंके अपने खर्चके लिए लिया भी रुपया फिर भारतमें ही जीवनोपयोगी चीजोंके खरीदनेमें बँट जाता था, इसलिए वह एक तरहसे देशके भीतर विनिमयके रूपमें चक्कर काटता रहता था। अंग्रेजों द्वारा एक बार ली गई सम्पत्ति फिर लौटकर यहाँ आनेवाली न थी। इसके लिए जरूरी था, कि अंग्रेज स्वदेशी हो गए विजेताओंसे धनका ज्यादा शोषण करें।

संक्षेपमें अंग्रेजोंको अपने सारे शासकवर्ग-पूँजीपति वर्गके स्वार्थके लिए भारतका दोहन करना था—पहिले व्यापारसे, फिर व्यापार और शासनसे, फिर व्यापार, शासन और पूँजीवादीय शोषण (कच्चे-पक्के मालके क्रय-विक्रय) से। इस भारी शोषणमें ग्रामीण, गणराज्य बचाया नहीं जा सकता था; चाहे उसका कवित्वमय रूप तत्कालीन और आधुनिक कितने ही भावुक व्यक्तियोंको बहुत आकर्षक मालूम होता रहा हो, और कौन सा अतीत है, जो आकर्षक नहीं होता ?

(ग) अंग्रेजी शासनका परिणाम—सामाजिक क्रान्ति—हाँ, तो हजारों वर्षोंके इस भारतीय छाडनके लिये अँग्रेजोंने जो सबसे बडा काम किया, वह था उसका बाँध तोड़ना। उन्होंने भारतीय चर्खेको तोड डाला, पुराने कर्घेको विदा कराया, अपने यहाँ और यूरोपसे भी पुराने चर्खां-कर्घोंको निकाल बाहर किया, फिर गंगाको उलटी बहाया और मार्क्सके शब्दोमे "कपासकी मातृभूमिमें कपासके कपडोंकी बाढ़ ला दी। १८१८ से १८३६ ई० में ग्रेट ब्रिटेनसे भेजा जानेवाला कपडा ५२०० गुना बढ़ गया। १८३० ई० मे भारतमें आया अँग्रेजी मखमल मुश्किलसे दस लाख गज था। लेकिन, इसके साथ ही ढाकाकी आबादी डेढ़ लाखसे बीस हजार रह गई। अपने शिल्पोंके लिये जगद्विख्यात भारतीय नगर ही नही बर्बाद हो गये, बल्कि बृटिश भाप और विज्ञानने सारे हिन्दुस्तान मे कृषि और शिल्प-उद्योगके मेलको जड-मूलसे उखाड फेंका।...भारतके परि-वार-समुदायका आधार था घरेलू उद्योग—हाथकी कताई, हाथकी बुनाई, खेती-मे हाथकी जुताई—जिससे वह स्वावलम्बी बना हुआ था। अँग्रेजोंके भीतर दखल देनेका क्या फल हुआ ?—उसने कातनेवाले को लंकाशायरमे ला रखा, और जुलाहेको बगालमे, या हिन्दुस्तानी कमकरो और जुलाहो दोनो ही का सफाया कर दिया। इन छोटे-छोटे अर्ध-बर्बर, अर्ध-सभ्य-समुदायोंको उनकी आर्थिक नींवको उखाकर, ध्वस्त कर दिया, और इस प्रकार सबसे बडी, और सच पूछिये तो एसियामे कभी भी न सुनी गई, एकमात्र सामाजिक क्रान्तिको पैदा किया।

(घ) ध्वंसात्मक काम जरूरी—आज, मनुष्यका हृदय खिन्न जरूर होगा, जबकि वह इन अगनित पितृसत्ताक शान्तिपूर्ण सामाजिक संगठनोंको इस

प्रकार तितर-बितर हो ..बिखरते देखता है, उन्हें कष्टोंके समुद्रमें फेंके जाते, और अवयवोंके साथ ही अपनी सभ्यताके पुराने रूपका खोते देखता है। हमें भूलना नहीं चाहिये, यह काव्यमय ग्राम्य-संगठन, चाहे देखनेमें कितने ही मासूम जान पड़ें, लेकिन यही सदासे पूर्वी स्वेच्छाचारकी ठोस बुनियाद रहे हैं। इन्होंने मानव-मस्तिष्कको छोटे-से-छोटे दायरेमें बन्द रक्खा, और मिथ्या-विश्वासका चुप-चाप मान लेनेवाला हथियार बना उसे पुराने नियमोंका गुलाम बनाया, और उसे सभी महान् ऐतिहासिक (इतिहासकी प्रगतिसे उत्पन्न) शक्तियोंसे वंचित रक्खा। हमें यह भी नहीं भूलना चाहिये, कि एक तुच्छ छोटी सी जमीनकी टुकड़ीमें केन्द्रित बार्बरिक ममता साम्राज्योंके ध्वंस, अकथनीय नृशंसताके नग्न-नृत्य, बड़े-बड़े शहरोंकी जनताकी हत्याका कारण हुआ।.... हमें नहीं भूलना चाहिये, कि इस अपमानजनक, कीड़े-मकोड़ोंके मुर्दा जीवन, निर्जीवसे अस्तित्व-ने, अपने विरुद्ध, जंगली, निरुद्देश्य, सत्यानाशी असीम शक्तियोंको उत्तेजना दी, और खुद मनुष्य-हत्याको हिन्दुस्तानमें धार्मिक कृत्य बना दिया। हमें नहीं भूलना चाहिये, कि भारतकी यह छोटी-छोटी जमातें जाति-भेद और दासताके रोगमें फँसी हुई थीं। उन्होंने मानवको ऊपर उठा परिस्थितियोंपर विजयी बनने-की जगह बाहरी परिस्थितियोंका गुलाम बनाया, उन्होंने स्वयं विकसित होने-वाली सामाजिक स्थितिको अपरिवर्त्तनशील रख प्रकृतिके हाथकी कठपुतली बना दिया, इस प्रकार प्रकृतिकी पाशविक प्रजाको स्थापित किया, और प्रकृतिके राजा मानवका इतना अधःपतन कराया, कि वह वानर हनूमान् और कपिला गायकी पूजामें घुटने टेकने लगा।

यह सच है, कि हिन्दुस्तानमें इंगलैंड जो सामाजिक क्रांति ला रहा है, उसके पीछे एक बहुत ही नीच उद्देश्य छिपा हुआ है। किन्तु, सवाल यह नहीं है, सवाल तो है—क्या एसियाकी सामाजिक स्थितिमें क्रांति लाये बिना मानवजाति अपने ध्येयको पूरा कर सकती है? अगर नहीं, तो इंगलैंडने चाहे जो भी अपराध किया हो, किन्तु उक्त क्रान्तिको लानेमें उसने इतिहासके अनजाने हथियारका काम किया।

एक पुरातन जगत्के टूट-फूटकर गिरनेका दर्दनाक नजारा चाहे जितनी भी

कटुता हमारे व्यक्तिगत भावोंमें पैदा करे, किन्तु ऐतिहासिक दृष्टिसे देखनेपर हमें गोयथेके शब्द याद आते हैं—

इसका हमें सोच करना क्या लिप्साका स्वभाव ही ऐसा, बढती चले अयास,
और नही क्यो तैमूरी तलवार बनाती कोटि जनोंको क्रूर कालका ग्रास ?

(४) भारतीय समाजकी निर्बलतायें—११० वर्ष हो गये, जबकि २५ जून १८५३ ई० मार्क्सकी यह पक्तियाँ पहिले पहल प्रकाशित हुईं। इनको पढ़नेसे मालूम होता है कि इतनी दूर बैठकर ज्ञानके साधनोंके बहुत अभावके होते भी उनकी पैनी दृष्टि भारतीय समाजकी सतहसे भीतर कितनी घुस सकी थी। उन्होंने क्रूरताके साथ हमारे उस लुटते सोनेके गढके लिये दो आँसू बहाना काफी नहीं समझा, बल्कि बतलाया कि हमारा उस दयनीय दशाका कारण क्या है। उन्होंने यह भी बतलाया, कि उस पुरानी सामाजिक व्यवस्थाको नष्ट होनेसे बचानेकी जरूरत नहीं है, जैसा कि कुछ पहिले गाँधी और अब गाँधी-वादी भावे और जयप्रकाश दिलसे या दिखावेके लिये कह रहे हैं, बल्कि उससे एक प्रवाहशील उन्मुक्त समाजके निर्माणका जो अवसर मिला है, उससे हमें लाभ उठाना चाहिये।

उपरोक्त लेखसे डेढ महीने बाद, ८ अगस्त १८५३ को "न्यूयार्क ट्रिव्यून" मे मार्क्सका "भारतमें बृटिश-शासनके होनेवाले परिणाम" नामसे दूसरा लेख छपा। जिसमें उन्होंने भारतीय समाजके भविष्यपर प्रकाश डाला, यहाँ उसके कुछ उद्धरण दिये जाते हैं—

क्या बात थी, जिसके कारण भारतपर अँग्रेजोका प्रभुत्व स्थापित हुआ ? मुगल सूबेदारोंने मुगल शासन-केन्द्रको तोडा। सूबेदारोंकी ताकतको मराठोंने तोड़ा। मराठोंकी ताकतको अफ़गानोंने तोडा। और जब यह सभी सबके खिलाफ़ लड रहे थे, तब अँग्रेज दौड़ पड़े, और वह सबको दबानेमें सफल हुये। भारत वह देश है, जो हिन्दू-मुसलमानोंमें ही बॅटा नहीं है, बल्कि वह कबीलों-कबीलों जातों-जातोंमें बँटा हुआ है। उसके समाजका ढाँचा एक तरहके ऐसे संतुलनपर आधारित था, जो उसके सभी व्यक्तियोंके बीच साधारण बिखराव और मनमुखी-पनका परिणाम था। इस तरहका देश, इस तरहका समाज, क्या पराजित होनेके

लिये ही नहीं बना था ? चाहे हिन्दुस्तानके अतीत इतिहासको हम न भी जानते; किन्तु, क्या यह एक जबर्दस्त अविवादास्पद बात नहीं है, कि इस क्षण भी भारत अँग्रेजोंकी गुलामीमें भारत-खर्चपर रखी एक भारतीय सेना द्वारा जकड़ा हुआ है। फिर, भारत पराजित होनेसे बच कैसे सकता था ? उसका सारा अतीत का इतिहास अगर कोई चीज है, तो लगातार पराजयोंका इतिहास है, जिनसे कि वह गुजरा है। भारतीय इतिहास कम-से-कम ज्ञात इतिहास, कोई इतिहास नहीं है। जिसे हम उसका इतिहास कहते हैं, वह उन्हीं लगातार आनेवाले आक्रमणकारियोंका इतिहास है, जिन्होंने निष्क्रिय अपरिवर्त्तनशील समाजकी निश्चेष्टताकी मददसे अपने साम्राज्य कायम किये...।

(क) **अँग्रेजी शासनके दो काम**—"भारतमें अँग्रेजोंको दो काम पूरे करने हैं—एक ध्वंसात्मक, दूसरा पुनरुज्जीवक—पुराने एसियाई समाजका ध्वंस और एसियामें पाश्चात्य समाजका भौतिक शिलान्यास।

अँग्रेजोंने देशी (ग्राम्य) समाजको तोड़कर, देशी उद्योग-धन्धेंको जड़-मूलसे उखाड़कर देशी समाजमें जो कुछ महान् और उच्च था, उसे जमीनके बराबर करके, अपने ध्वंसात्मक कामको पूरा किया। ध्वंसोंके ढेरमें पुनरुज्जीवनका काम आज मुश्किलसे दिखलाई पड़ता है, तो भी वह आरम्भ हो गया है।

"आज महान् मुगलोंके शासनसे भी ज्यादा संगठित और विस्तृत भारतकी राजनीतिक एकता पुनरुज्जीवनके लिये सबसे पहली आवश्यक चीज है। अँग्रेजी तलवारके द्वारा जबर्दस्ती लादी गई यह एकता अब बिजलीके टेलीग्राफ द्वारा और मजबूत तथा चिरस्थायी बनाई जायगी। परेड सिखानेवाले अँग्रेज सर्जेन्ट द्वारा संगठित और शिक्षित देशी सेना भारतकी स्वतः मुक्तिके लिये तथा पहिले ही आनेवाले विदेशी आक्रमणकारीका शिकार बननेके लिये आवश्यक साधन है। स्वतंत्र प्रेस—जिससे छः एसियाई समाज पहले-पहल परिचित हुआ है, और जिसका प्रबन्ध मुख्यतः हिन्दुओं और यूरोपियनोंकी सम्मिलित सन्तानोंके हाथमें है—पुनर्निर्माणके वास्ते एक नया और बहुत ही शक्तिशाली हथियार है।...भारतीयोंमेंसे संख्यामें कम ही सही कलकत्तामें अँग्रेजोंकी देख-रेखमें

शिक्षा पाकर एक ताजा वर्ग उत्पन्न हो रहा है, जो कि शासन-संचालनकी कला-में निपुण और यूरोपीय विज्ञानसे अभिज्ञ है। आपने भारतका यूरोपसे यातायात नियमित और द्रुत कर दिया है, उसके प्रधान बन्दरगाहोंको इंगलैंडके दक्खिन-पूर्वके बन्दरगाहोंके साथ जोड़ दिया है, और उसकी उस अलग-थलगपनकी स्थितिको हटा दिया है, जो कि उसकी प्रवाह-शून्यताका कारण थी। वह समय दूर नहीं, जबकि रेलों और वाष्पपोतोंकी सम्मिलित सहायतासे इंगलैंड और भारतके बीचकी समयमें नापी जानेवाली दूरी घटकर आठ दिन रह जायेगी, और जब कि गाथाओंमें सुना जानेवाला यह देश, इस प्रकार यथार्थतः पाश्चात्य जगत्का एक भाग बन जायगा।

(ख) स्वार्थसे मजबूर—"ग्रेट-बृटेनके शासक्वर्गका अब तक भारतकी प्रगतिमें सिर्फ आकस्मिक चलता-फिरता एक खास तौरका स्वार्थ था। सामन्तवर्ग भारतको जीतना चाहता था, थैलीशाही उसे लूटना चाहती थी, और मिल-शाही सबकी गलाकट्टी कर रही थी। लेकिन, अब अवस्था बदल गई है। अब मिलशाही (पूँजीवाद) को पता लग गया है, कि भारतको उत्पादक देशमें परिणत करना उसके लिये एक आवश्यक बात है, और इसके लिये यह जरूरी हो गया है, कि भारतके पास सींचने और भीतरी यातायातके साधन प्रस्तुत किये जायें। अब मिलशाही सारे भारतमे रेलोंका एक जाल बिछाना चाहती है। और वह ऐसा करके रहेगी।...

मै जानता हूँ, अँग्रेज मिलशाही भारतमें रेलें सिर्फ इसलिये बिछाना चाहती है, कि कम खर्चमे कपास और दूसरे कच्चे मालको अपने कारखानोंके लिये प्राप्त कर सके। लेकिन, जब एक बार ऐसे देशमें मशीनरी तुमने चला दी, जहाँपर लोहा और कोयला है, तो उनके निर्माण (उद्योग) से तुम उसे रोक नही सकते।...भारतीयोंकी मानसिक योग्यताके बारेमें केम्बेलको माननेके लिये बाध्य होना पड़ा कि भारतीयोकी बडी-बडी संख्या एक बडी औद्योगिक शक्ति रखती है, वह पूँजी जमा करनेकी क्षमता दिमागमें गणित-जैसी स्पष्टता, आकड़ों और पक्के विज्ञानके योग्य विचित्र प्रतिभा रखती है। स्थापित होनेवाले आधु-निक ढगके उद्योग-धन्धे उस खान्दानी श्रम-विभागको उठा देंगे, जिसके ऊपर

भारतीय जात-पाँत आश्रित है, और जो कि भारतीय प्रगतिमें निश्चय ही जबर्दस्त बाधा है।

अँग्रेजी बूर्ज्वा (पूँजीवादी), जो कुछ भी करनेके लिये मजबूर होंगे, उससे न जनता मुक्त होगी, और नहीं वह उसकी सामाजिक अवस्थाको आर्थिक तौरसे सुधारेगा।...क्या पूँजीवाद (बूर्ज्वाजी) ने कभी भी ऐसी कोई प्रगति होने दी, जिसमें व्यक्तियों और जनताको खून और कूड़े-कर्कटमेंसे, कष्ट और अधःपतनमें से न घसीटा गया हो?

(५) भविष्य उज्ज्वल—अँग्रेज-बूर्ज्वा भारतीयोंके बीच समाजके जिन नवीन तत्वोंको बो रहे हैं, उनके फलका उपभोग भारतीय तब तक नहीं कर सकेंगे, जब तक खुद ग्रेट-बृटेनमें आजके शासकवर्गको हटाकर कारखानोंके सर्वहारा आगे न आ जायँ, अथवा हिन्दू खुद ही इतने मजबूत हो जायें, कि अँग्रेजी जूयेको उतार फेंकें। चाहे कुछ भी हो, कम या बेशी सुदूर कालमें यह जरूर देखनेमें आयेगा, जबकि उस महान् और मनोहर देशका पुनरुज्जीवन होगा... जिसके कोमल प्रकृतिवाले निवासियोंको...अधीनता-स्वीकृतिमें भी एक तरहका शान्त स्वाभिमान है, जिन्होंने अकर्मण्यताके रहते भी अपनी बहादुरीसे अँग्रेज अफसरोंको चकित कर दिया, जिनका देश हमारी जबानों, हमारे धर्मोंका स्रोत रहा, और जो अपने जाटोंमें प्राचीन जर्मनों और अपने ब्राह्मणोंमें प्राचीन यूनानियोंके प्रतिनिधि हैं।

अध्याय १२

यूरोपीय स्थिति (१८५३-५८ ई०)

जिस वक्त मार्क्स विलिचके लडकपन जैसे कामके विरुद्ध लिख रहे थे, उसी समय यूरोपीय राज्योमें एक जबर्दस्त संघर्ष उपस्थित हुआ। रूसी जारकी शक्तिसे भयभीत होकर फ्रास और इंगलैण्डने अपने भेदभावको भुला जारको खर्ब करनेका निश्चय कर लिया। जारशाही काकेशस, क्रिमिया और दन्यूबकी भूमिमें पैर पसारते हुए तुर्की भूमिको दबा रही थी। क्रिमियाका शासक सुल्तानके अधीन था। तुर्की अब इतना निर्बल हो गया था, कि जारशाहीका मुकाबिला नहीं कर सकता था। खतरा पैदा हो गया था, कि कहीं रूसी भालू कालासागरको अपनी झील न बना ले। सुल्तानके हारपर हार खानेको देखकर दोनों पश्चिमी बडी शक्तियोंको सीधे जारशाहीके विरोधमे खडा होना पडा। लेकिन जारशाही केवल पश्चिमी पूँजीवादी राष्ट्रोके लिए खतरेकी ही चीज नहीं थी, बल्कि वह प्रतिक्रियावादियोंका सबसे बडी समर्थक और पोषक थी। हुंगरीमें क्रान्तिको असफल करानेमें रूसका हाँथ था, प्रशिया युंकर भी जारशाही बलपर फुदक रहे थे। ऐसे सामन्तवादी शक्तिशाली राज्यको यदि सर्वहारा-क्रान्तिके समर्थक मार्क्स और एंगेल्स फूटी निगाहसे न देखते हों, तो आश्चर्य क्या! सर्वहारा-क्रान्ति किन परिस्थितियोंमें और कैसे देशमे होगी, इसके बारेमें मार्क्सके विचार बिल्कुल ठीक थे, लेकिन उन्हें यह समझनेमें गलती हुई, कि उन्हींके सिद्धान्तोके अनुसार पूँजीवादकी कडी सबसे निर्बल फ्रास और इंगलैंडमे नहीं, बल्कि रूसमें सिद्ध होगी, और वहाँके सर्वहारा तथा उनके नेता अधिक कर्मठ और दूरदर्शी सिद्ध होंगे। मार्क्सको इस वक्त जीविका चलानेके लिए "ट्रिब्यूनको" लेख लिखते रहना पडता था, जिसके लिए विश्वकी किसी महत्वपूर्ण घटनाके तह तक पहुँचनेके लिए उन्हें बृटिश म्युजियमकी पुस्तकोंके पन्ने उलटना पड़ता था। अभी हम देख चुके हैं, कि उन्होंने इन पन्नोंके बलपर भारतकी स्थितिके बारेमें

क्या समझा था। जर्मनीमें जो क्रांति और प्रति-क्रांति हुई थी, उसके बारेमें कितने ही लेख ट्रिव्यूनमें मार्क्सके नामसे छपे थे, लेकिन मार्क्स और एंगेल्सके आपसी पत्रों द्वारा यह मालूम है, कि उनके लेखक एंगेल्स थे। चार बड़ी जिल्दोंमें छपे मार्क्स और एंगेल्सके पत्र-व्यवहार पुस्तकों द्वारा लिखित और अलिखित सामग्रीपर कितना प्रकाश डालते हैं, इसे कहनेकी आवश्यकता नहीं। "ट्रिव्यूनके" लिये लिखे गए बहुतसे लेख छपे नहीं, और बहुत सी सामग्रीको मार्क्स प्रकाशनार्थ पूरी तौरसे तैयार नहीं कर पाए थे। यह सामग्री तब तक गुमनाम पड़ी रही, जब तक कि मार्क्सवाद दुनियाके छठे हिस्से रूसमें शासक नहीं बन गया, और वहाँ "मार्क्स-एंगेल्स प्रतिष्ठान" के नामसे एक बड़ी संस्थाने इस सारी सामग्रीको कई जिल्दोंमें प्रकाशित नहीं कर दिया। उनके लेख "राइनिशे जाइटुंग", "नोये राइनिशे जाइटुंग", "नोये राइनिशे रिव्यू", "न्यूयार्क ट्रिव्यून" आदि एक दर्जनसे अधिक पत्र-पत्रिकाओंमें बिखरे पड़े थे, जिनको मास्कोके उक्त प्रतिष्ठानने सुसम्पादित करके प्रकाशित किया। "नोये राइनिशे जाइटुंग" ने अपनेको दास बनानेवाली जारशाहीके प्रतिपोलोंके राष्ट्रीय स्वतंत्रता संघर्षका समर्थन किया, फिर इतालियन और हुंगेरियनके स्वतंत्रता-आन्दोलनमें भी उसी तरह खुलकर उनका पक्ष लिया, और साथ ही यूरोपीय प्रतिक्रांतिके सबसे जबर्दस्त दुर्ग रूसी जारके खिलाफ अपने भावोंको खुलकर कहा। यद्यपि, पीछे जब मालूम हुआ, कि इंगलैंड सबसे ज्यादा शक्ति-शाली प्रतिक्रियावादी राज्य है, तो उन्होंने इस बातकी घोषणाकी कि इंगलैंडकी शक्तिको छिन्न-भिन्न करनेके लिए एक विश्वयुद्धकी आवश्यकता है। विश्वयुद्ध होके रहेगा, इसे वह साम्राजी विस्तारसे जानते थे, और वह उनके मार्क्सके लीलासंवरणके ३१ वर्ष बाद हुआ भी। प्रथम विश्वयुद्धके परिणामस्वरूप बृटिश साम्राज्य निर्बल जरूर हो गया, लेकिन उतना नहीं कि वह छिन्न-भिन्न हो जाए। उस समय भारत जैसे उसके दास देश अभी राजनीतिक चेतनामें इतने आगे नहीं बढ़े थे, कि बृटिश साम्राज्यकी इस कमजोरीसे फायदा उठा अपनेको स्वतंत्र कर लेते। लेकिन, अन्तमें पहले नहीं तो दूसरे विश्वयुद्धने इगलैंडको अत्यन्त निर्बल करके उसके राज्यको छिन्न-भिन्न करनेमें सफलता पाई। मार्क्स समयके

बारेमें, वर्षोंके गिननेमें गलती कर सकते थे, लेकिन घटनाओंके निदानमें वह कभी चूक नहीं करते थे।

क्रिमियाके युद्धके समय मार्क्सने "एंग्लो-रूसी दासता" को सबसे बड़ी दासता और सर्वहारा-क्रांतिके लिए सबसे बड़ी बाधा कहा था। यूरोपकी प्रति-क्रांतिमें अपनी थूथुन घुसेड़कर जारशाहीने जो अपूर्व प्रभुत्व और शक्ति प्राप्त की थी, क्रिमियाके युद्धसे उसके कमजोर होनेकी आशा मार्क्स कर रहे थे। लेकिन इसका यह मतलब नहीं, कि जारशाहीके शत्रुओं-फ्रांस और इंगलैंडको वह शक्तिशाली देखना चाहते थे। लाखों आदमी और करोड़ों पौंड इस युद्धमें खर्च हुये, लेकिन जहाँ तक पश्चिमी पूँजीवादी शक्तियोंका सम्बन्ध था, उनको इस युद्धसे अधिक आँच नहीं आई, हाँ जारशाहीका मनसूबा कुछ दिनोंके लिये कुंठित जरूर हो गया। सेवेस्तापोलका दुर्ग महीनों इंगलैंड और फ्रांसके प्रहारको सहता रहा, और जारशाही वर्दी पहने रूसी किसान अपनी परम्परागत वीरताको दिखलाते अपना खून बहाते रहे। बड़ी मुश्किलसे और भारी क्षतिके बाद इंगलैंड और फ्रांसने इस ध्वस्त दुर्गपर अधिकार किया, किन्तु उसके बाद ही उन्हें "पराजित रूस" से वहाँसे अपनी सेना हटानेके लिये आज्ञा लेनी पड़ी। विजयी होनेके बाद भी दोनों पश्चिमी शक्तियोंने क्यों जारशाहीका और पीछा नहीं किया? नकली बोनापार्ट अपनी कमजोरियोंके कारण वैसा नहीं कर सकता था, लेकिन इंगलैंडने वैसा क्यों नहीं किया? इस पहेली का हल मार्क्सने पार्लियामेन्टके बृटिश म्युजियममें वर्षोंसे जमा होती पार्लियामेन्ट रिपोर्टों, सरकारी नील-पुस्तिकाओं और दूसरे देशोंसे भेजी कूटनीतिज्ञों की रिपोर्टोंको पढ़कर किया। इन कागजोंके देखनेसे पता लगा, कि १८वीं सदीके प्रथम पादमें पीतर महान्‌के समयसे ही लेकर क्रिमिया-युद्ध तक पीतर-बुर्ग और लन्दनके मंत्रालयोंमें घनिष्ट सहयोग रहा। इंगलैंड समझता था, कि जारशाहीको नष्ट करके नहीं, बल्कि उसको अपने हाथमें रखकर ही हम दुनियामें आगे बढ़ सकते हैं। क्रिमिया-युद्ध-के समय बृटिश-महामन्त्री पामर्स्टनके बारेमें यह भी कहा जाता था, कि जारशाही ने उसे खरीद लिया है, जो चाहे उतना सच न हो, लेकिन पामर्स्टनको अपने देश में मजदूरोंके चार्टिस्ट-आन्दोलन जैसे संघर्षको देखना पड़ा था। वह समझता तो

था, न जाने किस दिन उद्बुद्ध कमकर अपने इंगलैंडके बनिया-राज्यको उखाड़ फेंके। ऐसे गाढ़ के समय यूरोपमें हर जगह जारशाहीने सीधे सैनिक सहायता पहुँचाई थी। प्रतिक्रियावादकी इतनी बड़ी सहायक शक्तिका उच्छेद भला इंगलैंड कैसे पसन्द करता? साधारण लोगों या मजदूर वर्गको भी चाहे इसका न पता हो, लेकिन पूँजीवादी राजनीतिज्ञ भली भाँति समझते थे, कि उनका कृष्ण पैदा हो गया है, जो एक दिन कंसको मारे बिना नहीं रहेगा।

मार्क्स देख रहे थे, कि अभी भी सभ्यतामें बर्बर-अवस्थाके अवशेषोंके लिए बाल्तिकसे प्रशान्त महासागर तक फैले रूसके विशाल राज्यका हाथ युरोपके सभी मंत्रिमंडलोंमें कितना फैला हुआ है। ऐसी अवस्थामें वह साफ समझ सकते थे कि पश्चिमी युरोपमें हर क्रान्तिके समय भीतर घुसकर सहायता देनेके लिये तैयार जारशाही सर्वहाराका सबसे बड़ा शत्रु है। वह कि आर्थिक विकासके कारण पैदा हुई हर जगहकी उद्बुद्ध शक्तियोंको स्वाभाविक परिणामपर पहुँचनेमें बाहरसे आकर बाधा डालती है। उन्होंने यह साफ कहा था, कि जब तक जार-शाही खतम नहीं होती, तब तक यूरोपीय सर्वहाराकी मुक्ति असम्भव है। यह बात कितनी सच हुई, यह आज हमें स्पष्ट मालूम होती है। जारशाहीने खतम होकर यूरोपके सर्वहाराके लिए मुक्तिका रास्ता खोल दिया और इसमें शक नहीं यदि जारशाहीसे भी बढ़कर बर्बर अमेरिकन थैलीशाही यदि रास्तेमें न आती, तो आज पूर्वी यूरोपकी तरह पश्चिमी यूरोपका सर्वहारा भी स्वतन्त्र होता। अमेरिकन थैलीशाही जारशाहीसे भी कहीं अधिक बर्बर है, क्या यह हिरोशिमा और नागासाकीके सैनिक दृष्टिसे बिल्कुल अनावश्यक अणुबमोंकी नारकीय लीलासे सिद्ध नहीं है या कोरियामें कीटाणु-बमोंको गिरा वहाँ अणुबम बरसानेकी धमकी देते इन थैलीशाहोंके आचरणसे स्पष्ट नहीं है? १६ वीं सदीके मध्यमें—जिस वक्त कि मार्क्स जारशाहीके बारेमें अपना विचार प्रकट कर रहे थे—अभी जारके राज्यमें किसानोंकी अर्ध-दासता मौजूद थी, वहाँकी प्राचीन पंथिता भी अक्षुण्ण थी। तो भी, केवल अपने सैनिक प्रभुत्वको कायम रखनेके लिए भी जारशाहीको आधुनिक विज्ञानसे कितनी ही सहायता लेनेकी आवश्यकता पड़ी, जिससे वहाँ साइन्स और स्वतन्त्र विचारकी ज्योति कुछ मात्रामें पहुँच गई।

उसीके प्रभावसे काकेशस, मध्य-एसिया और साइबेरियाकी एसियाई जातियोंमे भी काफी सास्कृतिक परिवर्तन हो रहा था। पोलोंका समर्थन करते हुये भी मार्क्स रूसके इस पहलूको भूल नहीं सकते थे, इसीलिए १८५१ ई० मे ही एंगेल्सने कहा था—"इतालियनो, पोलो और हुंगेरियनोको साफ तौरसे कह देना होगा, कि जब आधुनिक प्रश्न सामने हो, तो उन्हें अपनी जबान रोक रखनी होगी।" यह भी याद रखना चाहिये कि इस समयकी प्रशिया (जर्मनी) यूरोपीय राजनीतिमे कोई महत्व नहीं रखती थी, उसकी स्थिति एक रूसी प्रदेश जैसी थी—यह हमें मालूम ही है, कि पीतर महान्‌के मरनेके कुछ ही सालो बादसे रूसी जारके रूपमें जर्मन राजकुमार और राजकुमारियाँ ही अपने जर्मनके कृपापात्रोंकी सहायतासे रूसका शासन करती थीं। जारवश अपने उच्छिन्न होनेके समय (१९१७ ई०) रूसीकी अपेक्षा जर्मन अधिक था।

मार्च १८५३ ई० मे मार्क्स यूरोपीय राजनीतिके अवगाहनमें लगे हुए थे। उस समयके एक पत्रमें एंगेल्सने लिखा था—"मैं अर्कहार्टकी किताबको इस समय पढ़ रहा हूँ। वह कहता है कि पामर्स्टन रूसका वेतनभोगी है। इसकी व्याख्या बिल्कुल आसान है, क्योकि वह केल्टी स्कॉच है...।" अर्कहार्ट दूसरे राष्ट्रवादी स्कॉचोकी तरह अंग्रेजोंका विरोधी था। हेलेनिक सस्कृतिसे प्रभावित होकर वह ग्रीस गया था, फिर तुर्कीमें जाकर कितने ही समय तक रहा। तुर्क रूसियोंके खिलाफ थे, इसलिए वह तुर्कोंके पक्षमें और रूसियोके खिलाफ बन गया। वह तुर्कोंसे इतना प्रभावित हुआ कि उसने एक बार लिखा था—"यदि मैं कालविनका अनुयायी न होता तो केवल मुसलमान ही हो सकता था।" एंगेल्सने कालविनकी पुस्तक पढते हुये यह बात मार्क्सको लिखी थी। मार्क्स और अर्कहार्ट दोनों एक तरह पामर्स्टनके विरोधी थे। इस विरोधमें मार्क्सने "न्यूयार्क ट्रिब्यून" में जो लेख लिखा था, उसे ग्लासगो (स्काटलैंड) के एक पत्रने छापा था, जिसे पढकर अर्कहार्टने फरवरी १८५४ ई० में मार्क्ससे मिलकर उन्हें अभिनन्दन करते हुए कहा था—ऐसा लेख था मानों उसे एक तुर्कने लिखा हो। लेकिन स्कॉच मारवाडीको जब पता लगा कि मार्क्स क्रांतिवादी है, तो उसे बडी निराशा हुई।

१. चार्टिस्ट

मार्क्स चार्ट चार्टिस्टोंका समर्थक था और अर्कहार्ट मुक्त व्यापारका समर्थक और बनिया होनेसे चार्टिस्टोंका विरोधी। अर्कहार्टको तो चार्टिस्ट-आन्दोलनमें भी रूसी रूबल चमकते दिखलाई पड़ते थे, जैसे कि उसके वंशजोंको प्रथम विश्वयुद्धके बाद हर जगहकी क्रांति और कमकर-आन्दोलनमें मास्कोके रूबल दिखलाई पड़ते रहे। १० अप्रैल १८४८ ई० की भयङ्कर पराजयके बाद चार्टिस्ट-आन्दोलन फिर सँभल नहीं सका, लेकिन वह उसी समय खतम नहीं हो गया। चार्टिस्ट-आन्दोलनके अवशेषोंको मार्क्स और एंगेल्सका पूरा समर्थन प्राप्त था। मार्क्स और एंगेल्स उनके पत्रोंमें मुफ्त अपने लेख भेजते थे। जार्ज जुलियन हार्नेने "लाल गणतन्त्री"* नामसे एक पत्र निकाला, जिसके बाद उसने "लोक मित्र"† और उसके बाद "जनतांत्रिक आलोचना"‡ निकाली। अर्नेस्ट जॉन्सने इसी समय "लोगोंके लिये टिप्पणी"$, "लोक पत्र"¶ निकाला। "लोक पत्र" नियमपूर्वक १८५१ तक प्रकाशित होता रहा। दोनों पत्र चार्टिस्ट आन्दोलनके क्रांतिकारी अंगसे सम्बन्ध रखते थे। बिरादराना जनतंत्रतावादियोंके अन्तर्राष्ट्रीय एसोसियेशनमें भी भाग लेनेवालोंमें हार्नी और जोन्स सबसे आगे थे। हार्नी एक नाविकका लड़का और सर्वहारा वातावरणमें पला था। फ्रांसके क्रांतिकारी साहित्यसे उसे प्रेरणा मिली थी और मरात उसका आदर्श था। उमरमें वह मार्क्ससे एक वर्ष बड़ा था। जिस वक्त मार्क्स "राइनिशे जाइटुंग" का सम्पादन कर रहे थे, उस वक्त हार्नी चार्टिस्ट मुखपत्र "उत्तरी तारा"§ के सम्पादकीय विभागमें काम करता था। एंगेल्स १८४३ ई० में उससे मिले थे, जब कि उनके बारेमें हार्नीने लिखा था—"एक पतला तरुण, पट्ठा इतना तरुण कि जान पड़ता है लड़का है, लेकिन तब भी वह असाधारण तौरसे शुद्ध अँग्रेजी बोलता है।" १८४७ ई० में हार्नीका मार्क्ससे परिचय हुआ और वह बड़े

* "The Red Republican", † "The Friends of the People. ‡ "The Democratic Review" $ "The Notes to the People". ¶ "The People's Paper" § "The Northern Star".

उत्साहसे उनकी मंडलीमें शामिल हो गया। हार्नीने कम्युनिस्ट घोषणा-पत्रका अँग्रेजी अनुवाद अपने पत्र "लाल गणतंत्री" में छापा जिसमें अपने फुट नोटमें उसने यह भी लिखा था : यह परमक्रांतिकारी कृति है, जो कि आज तक कहीं भी प्रकाशित नहीं हुई। पीछे मार्क्सके साथ उसका मतभेद हो गया। इस समय वह जर्सीके द्वीपमें जाकर रहने लगा, किन्तु कुछ समय बाद युक्तराष्ट्र अमेरिका चला गया, जहाँ १८८८ ई० में एंगेल्सने उससे मुलाकात की थी। इस मुलाकातके कुछ ही दिनो बाद हार्नी इंगलैंड लौटा, जहाँ काफी बूढ़ा होकर मरा।

अर्नेस्ट जोन्स जर्मनीमे पैदा और सीख-पढ़कर बड़ा हुआ। जर्मनीमें उसका बाप कम्बरलैंडके ड्यूकका सैनिक परामर्शदाता था—यह परम प्रतिक्रियावादी ड्यूक पीछे हनोवरके राजा अर्न्स्ट अगस्टके नामसे प्रसिद्ध हुआ। ड्यूकने धर्म-पिता बनकर अपना नाम जोन्सको दिया था। इस प्रकार अर्नेस्ट जोन्सका बचपनसे ही घनिष्ठ सम्बन्ध उच्च सामन्त परिवारसे रहा, लेकिन बचपनसे ही वह स्वतन्त्र विचार रखता था और सामन्ती समाजके कुत्सित वातावरणमें पलते हुये भी निर्लेप रहा। वह बीस वर्षका था, जबकि इंगलैंड लौटा और पीछे पढ़ाई करके बैरिस्टर बना। उसने अपना सारा भविष्य और आरामके जीवनको तिलांजलि दे चार्टिस्ट-आन्दोलनमे प्रवेश किया। इसके लिये १८४८ ई० में उसे दो साल-की सजा हुई और जेलमें मामूली अपराधियोंकी तरह रक्खा गया। १८५० ई० मे जेलसे वह कट्टर क्रान्तिकारी होकर निकला और उसी सालकी गर्मियोंमें मार्क्स और एंगेल्सके साथ उसका घनिष्ठ सम्बन्ध हुआ। तबसे करीब बीस वर्ष तक उसका यह सम्बन्ध कायम रहा, यद्यपि क्राइलिअथका पक्षपाती होनेके कारण पीछे उसका सम्बन्ध मार्क्सके साथ उतना अच्छा नहीं रहा, तो भी मार्क्स और एंगेल्सका उसकी ईमानदारीके कारण उसके प्रति सद्भाव था, यह १८६६ ई० में मेनचैस्टरमे रहते हुये जोन्सके मरनेके समय एंगेल्सके इन वाक्योंसे मालूम होता है : "पुराने गारदमेंसे एक और घरको चला गया!" जिसका जवाब मार्क्सने दिया : "इस खबरसे हम सभीके दिलको बहुत गहरा धक्का लगा, क्योंकि वह हमारे थोड़ेसे पुराने मित्रोमेंसे था।"

२. परिवार और मित्रमंडली

यह वह साल थे, जब कि मार्क्स राजनीतिक मंडलियोंसे अलग थे और उनका लोगोंसे सम्पर्क नहींके बराबर था। वह अपना सारा समय अध्ययन और अनुसन्धानमें लगा रहे थे, और बचे-खुचे समयको अपने परिवारमें गुजारते थे। इसी बीच १८५५ ई० में उनको एक लड़की एलीनोर पैदा हुई। एंगेल्सकी तरह मार्क्सका बच्चोंके साथ बहुत प्रेम था। किताब-कलम छोड़कर जो एक-दो घंटेकी छुट्टी ले पाते, उसे मार्क्स लड़कोंके साथ खेलनेमें बिताते। बच्चे भी उनके साथ असाधारण प्रेम रखते थे, क्योंकि वह बाप जैसे शासनका कभी उपयोग नहीं करते थे। बच्चोंके लिये वह मानो खेलके साथी थे। दूसरोंकी अपेक्षा अधिक साँवला तथा कोयले जैसे काले बालोंके कारण बच्चे उन्हें मूर (उत्तरी अफ्रीकाके अरब) कहते। मार्क्सका बच्चोंके बारेमें दूसरे ही विचार था, वह कहा करते थे : "बच्चोंको अपने माँ-बापको शिक्षित करना होगा।" और सचमुच ही मार्क्सके बच्चे अपने बापको सिखाते थे। इतवारके दिन उन्होंने मार्क्सको काम करनेकी सख्त मनाही कर रखी थी। उस दिन उन्हें सारा समय बच्चोंके लिये देना पड़ता। मार्क्स-परिवार बाहर दीहातमें या दूसरी जगह घूमने निकलता, रास्तेके किसी सरायमें वह अदरकी बीयर पीते, पनीर और रोटी खाते। अधिकतर वह हेम्स्टेडहीथ में घूमने जाते। यद्यपि उस समय यह टेकरी नगरसे बाहर थी, किन्तु नगरके बीचमें होनेपर भी उसके कितने ही अंशको प्राकृतिक रूपमें रखनेकी आज भी कोशिश की गई है, और इतवारकी संध्याको हजारों परिवार वहाँ सैर करनेके लिए जाया करते हैं। लीब्कनेख्टने मार्क्सके इस समयके रूपका बड़ा सुन्दर वर्णन किया है। जेक स्ट्राज पेसलका छोटा-सा उपाहारालय अब भी वहाँ मौजूद है, जिसकी मेजपर मार्क्स अक्सर बैठा करते थे। हीथके दक्षिण तरफ लन्दनका घना बसा हुआ शहर है, जहाँ सेन्ट पालके गिर्जेका गन्धोला और वेस्टमिनिस्टरके मीनार दूरसे दिखाई पड़ते हैं।

मार्क्सका जीवन आर्थिक तौरसे कष्टमय जरूर था, लेकिन बच्चोंमें पिता-माता अपनी सारी वेदनाओंको भूल जाते। इसी समय १८५५ ई० के गुड-फ्राइडेके दिन मार्क्सका एक मात्र पुत्र एडगर नौ वर्षकी अवस्थामें चल बसा।

पिता-माताका उसपर असाधारण प्रेम था। वह उसे प्यारसे "मुश" कहकर पुकारा करते थे। इसी अवस्थामें ही उसके "होनहार बिरवानके होत चीकने पात" दिखलाई दे रहे थे। परिवारके लिये यह कितनी दुःस्सह हृदयवेधी घटना थी, यह कवि फ्राइलिग्रथके जर्मनी भेजे हुये एक पत्रकी निम्न पंक्तियोसे मालूम होगा : "यह इतनी बुरी और भयंकर क्षति है, इसका प्रभाव मेरे ऊपर इतना गहरा पडा है, कि उसका मै वर्णन नहीं कर सकता।" मार्क्सने बच्चेकी बीमारी और मृत्युके बारेमे उसी समय ३० मार्चको एंगेल्सको बड़े करुण शब्दोमें लिखा था : "मेरी स्त्री केवल आशंकाके कारण एक सप्ताहसे बीमार रही, ऐसी बीमार जितना कि वह पहले कभी नहीं हुई थी। मै भी बहुत व्याकुल हूँ। मेरा हृदय बोझसे दबा जा रहा है, और मेरा सिर घूम रहा है, लेकिन बाहरसे मुझे अपनेको निर्लेप दिखाना है। बच्चा बीमारीके समय भी वैसे ही सुन्दर स्वभावका रहा है।" ६ अप्रैलके एक पत्र में उन्होने फिर लिखा : "बेचारा नन्हा चला गया। आज ५ और ६ बजेके बीच मेरी गोदमें सो गया। मै इसे कभी भूल नहीं सकता, कि तुम्हारी मित्रताने कैसे इन भयंकर दिनोंमे हमारे भारी बोझको हलका किया। तुम स्वय समझ सकते हो, कि मेरे लडकेकी मृत्युके बाद मुझे कितना दुःख हो रहा है।" १२ अप्रैलके पत्रमें मार्क्सने लिखा : "लडकेके मरनेके बादसे घर खाली और सूना सा मालूम होता है। वह इसका जीवन और आत्मा था। हर समय उसके अभावको हम कितना अनुभव करते हैं, इसका वर्णन करना असम्भव है। मैंने अनेक प्रकारके दुर्भाग्य सहे हैं, लेकिन इस वक्त मैं जानता हूँ, कि वास्तविक दुर्भाग्य क्या है।... जिन भयंकर आशकाओ और कष्टोंमेसे मैं गुजरा हूँ, उनमे मुझे तुमने और तुम्हारी मित्रताके विचारने बहुत शक्ति प्रदान की, और इस आशासे भी कि दुनियामें अभी भी कुछ कामकी चीज हम कर सकेंगे।"

मार्क्सको पुत्र-वियोगका घाव भरनेमें काफी समय लगा। लाजेलके सहानुभूतिकारक पत्र का जवाब देते हुये २८ जुलाईको मार्क्सने लिखा था : "बाकोका कहना है, कि वास्तविक महापुरुष प्रकृति और दुनियामें इतनी अधिक बातोंमें दिलचस्पी रखते हैं, इतनी अधिक चीजे उनके ध्यानको अपनी ओर खींचे रहती

हैं, कि कोई भी क्षति उनके लिये बहुत अधिक नहीं मालूम होती। मुझे यह कहनेमें संकोच नहीं, कि मैं उन महापुरुषोंमें नहीं हूँ। मेरे अपने लड़केकी मृत्युने मुझे जोरसे झकझोर दिया है, मैं उसके प्रभावको इतना जबर्दस्त महसूस करता हूँ, कि मानों यह दुर्घटना कल ही घटी है। मेरी बेचारी स्त्री तो इस चोटके मारे पूरी तौरसे पस्त हो गई है।" अप्रैलमें मरे लड़केके लिये जो दुःख हुआ, वह आठ महीने बाद भी कितना कड़ा था, यह ६ अक्तूबरके फ्राइलिग्रथ द्वारा मार्क्सको लिखे पत्रसे मालूम होता है: "मुझे इस बातके लिये भारी अफसोस है, कि आपकी वह बड़ी क्षति आज भी इतना जबर्दस्त दुःख दे रही है। दुर्भाग्यसे इसके सम्बन्धमें कुछ करना या समझना एक मित्रकी शक्तिसे बाहर है। मैं आपके दुःखको समझता हूँ और उसको सम्मानकी दृष्टिसे देखता हूँ, लेकिन अपने ऊपर आपको उसपर काबू पानेकी कोशिश करनी चाहिये, यह आपके प्रिय बच्चेकी स्मृतिके प्रति कृतघ्नता नहीं होगी।" मार्क्स परिवार कुछ वर्षोंसे बीमारीका डेरा बन गया था, जिसका अन्तिम प्रदर्शन एडगरकी मृत्युके साथ हुआ। पिछले वसन्तमें मार्क्स स्वयं बीमार पड़ गये थे, और अभी वह अच्छी तरह स्वस्थ नहीं हो पाये थे। खास शिकायत थी पेटकी, जिसे कि मार्क्स अपने पिताका दायभाग समझते थे। लेकिन इसमें घरकी अस्वास्थ्यकर अवस्था तथा वैसा ही पास-पड़ोस भी कारण था, इसमें शक नहीं। १८५४ ई० की गर्मियोंमें वहाँ भारी हैजा फूट निकला, जिससे इतने आदमी मरे, कि उन्हें दफनानेके लिये १६६५ के भयंकर प्लेग में मरे आदमियोंकी कब्रोंके ऊपर नई खाइयाँ खोदी गई। डाक्टरने मार्क्सको सोहो-स्क्वायरके पास-पड़ोस छोड़ देनेके लिये हिदायत की थी, जिसको कार्यरूपमें परिणत करनेके लिये अब मजबूरी हुई। १८५५ ई० के ग्रीष्म की गर्मियों (ग्रीष्म-वर्षा) में जैनी मार्क्स अपनी तीनों लड़कियोंके साथ माँकी बीमारीके कारण उसे देखने ट्रीर चली गई। ग्यारह दिनकी बीमारीके बाद जब माँ अपनी आँखोंको मूंद रही थीं, उसी समय बेटी और नतनियाँ वहाँ पहुँची थीं। माँकी सम्पत्तिमेंसे कुछ सौ थालर फ्राउ मार्क्सको भी मिले। इसी समय जेनीको अपने स्काच सम्बन्धियोंसे भी कुछ दायभाग मिला। यह दोनों आमदनी इतनी काफी थी, कि १८५६ ई० की शरद्में परि-

बार हेम्स्टेडहीथके पास ६ ग्रेफटेन टेरेस, मेटलैंड पार्क, हेवेरस्टॉक-हिलमें एक छोटा-सा घर किराये पर लेकर वहाँ चला गया, किराया ३६ पौंड वार्षिक था। जेनीने अपने एक पत्रमें इस घरके बारेमें लिखा था : "जिन माँदोंमें हम अब तक रहते रहे, उनकी तुलनामें यह राजमहल सा मालूम होता है। यद्यपि हमारे पास जो कुछ फर्नीचर (अधिकांश कबाडी का कूड़ा करकट) है, उसका दाम ५४० पौंडसे कुछ ही अधिक होगा, पर आरम्भमें मैंने अपनी नई बैठकमे अपनेको बडा अनुभव किया। सभी मलमलो और पुरानी समृद्धिके दूसरे अवशेषोंको मामाके हाथसे उबारी एक बार फिर मैं आनन्दके साथ अपने पुरानी दमिश्की नैपकिनोंको अपने पास देख रही थी। किन्तु, यह झूठा आनन्द देर तक नहीं रहा, जल्दी ही उनमेंसे एकके बाद एक पौप-शौप (कासेकी तीन घटियोंके चिन्हके कारण बन्धक रखनेवाले घरको बच्चे इस नामसे पुकारा करते थे) में पहुँच गये। तो भी, हम बहुत प्रसन्न थे, क्योंकि एक बार फिर हम बूर्ज्वा खुलकर वातावरणमें अपनेको पा रहे थे।"

मृत्युने उस वक्त परिवारके दूसरे मित्रोंके घरोंमे भी फेरा दिया था। दानियाल १८५५ ई० के शरद्में मरा, वीर्थ हैतीमें रहते जनवरी १८५६ ई० को चल बसा। १८५८ ई० के आरम्भमें जर्सी द्वीपमें कोनराड शाम्भ भी साथ छोड गया। मार्क्स और एंगेल्सने अपने पुराने सहयोगी मित्रोंके प्रति शोक प्रकट करते हुये छोटी सूचनायें प्रकाशित करानेका असफल प्रयत्न किया। वह बडा अफसोस प्रकट करते थे, कि पुराने क्रान्तिकारी एकके बाद एक चलते जा रहे हैं, और उनकी जगह लेनेवाले नए नहीं आ रहे हैं।

लीबक्नेख्ट इस समय लन्दनमें जब तक डीन स्ट्रीटमें रहा तब तक वह मार्क्स परिवारमें प्रतिदिन जाया करता। उसे भी भीषण गरीबीका सामना करना पड़ रहा था। यही बात कम्युनिस्ट लीगके दूसरे पुराने साथियों—लेस्नेर, लॉखनेर, इकेरियस और शापरकी थी। दूसरे साथी बिखर चुके थे : ड्रोन्के लिवरपुल और पीछे ग्लासगो में व्यापारी बन गया था, इमान्ट डंडीमें प्रोफेसर था, शिले पैरिसमें एडवोकेट था, जहाँ कवि हाइनेका अन्तिम वर्षोंका सेक्रेटरी राइनहार्ट भी रहता था।

३. १८५७ ई० का आर्थिक संकट

१८५७ ई० में भारत अंग्रेजी गुलामीसे आजाद होनेके लिये प्रयत्न कर रहा था। किसान-पुत्रों और गरीबोंकी अपार कुर्बानियाँ सामन्तोंके ईर्ष्या, लोभ और अव्यवस्थापूर्ण नेतृत्वमें असफल रहीं। इसी समय पूँजीवादके औरस पुत्र समयपर होनेवाले आर्थिक संकटने युरोपमें अपनी भीषणता दिखलाई थी। १८५० ई० के शरद्में सार्वजनिक जीवनसे अलग होते वक्त मार्क्स और एंगेल्सने कहा : "नई क्रान्ति एक नये संकटके परिणामस्वरूप ही सम्भव हो सकेगी, और ऐसे संकटका आना भी उसी तरह निश्चित है।" तबसे वह उस नये संकटकी बाट जोह रहे थे। कितनी देरकी प्रतीक्षाके बाद १८५७ ई० में वह संकट आन मौजूद हुआ। मार्क्सने एंगेल्स द्वारा विलहेल्म वोल्फको कहा था : मैं साबित कर सकता हूँ, कि जिस समय इस संकटको आना चाहिये था, कुछ कारणोंसे वह उसके दो वर्ष बाद आया। संकटके आम आगमनका पता युक्तराष्ट्रसे मार्क्सको पहले-पहल मिला, जब कि "न्यूयार्क ट्रिब्यून" ने उनके पारिश्रमिकको आधा कर दिया। यह भारी चोट थी, क्योंकि परिवारका वह एक सबसे बड़ा सहारा था। ग्रेफ्टन टेरेसमें डीन स्ट्रीटकी तरह परिवार अपने जीवनको नहीं बिता सकता था, इसलिये उनकी कठिनाइयाँ और बढ़ गई थीं। कहींसे आमदनीका कोई रास्ता दिखलाई नहीं पड़ता था, और उधर खर्च कम होनेकी जगह बढ़ता ही जा रहा था। २० जनवरी (१८५७ ई०) को मार्क्सने एंगेल्सको लिखा था : "मुझे कुछ नहीं समझमें आता, कि इसके बाद क्या करूँ। वस्तुतः मेरी स्थिति उससे कहीं खराब है, जैसी कि पाँच वर्ष पहले थी।" एंगेल्सको यह चिट्ठी वज्र गिरने जैसी मालूम हुई। वह तुरन्त अपने मित्रकी सहायता करनेमें लग गये और यह शिकायत करते हुये कि स्थितिके बारेमें मुझे पहले क्यों नहीं बतलाया। एंगेल्सने अभी-अभी अपने लिये एक घोड़ा खरीदा था, जिसके लिये उनके पिताने बड़े दिनकी भेंटके तौरपर कुछ पैसे दिये थे। उन्होंने लिखा : "मैं सचमुच ही इसे बहुत बुरा समझता हूँ, कि मैं यहाँ एक घोड़ा बाँधू, जब कि आप और आपका परिवार लन्दनमें ऐसी आफतमें पड़ा है।" एंगेल्सको कुछ महीने बाद यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई, कि डाना एक

विश्वकोषकी योजनामें मार्क्सकी सहायता लेना चाहता है। उसके पारिश्रमिकसे परिवारकी आर्थिक हालत सुधर जायेगी, यह विश्वास हो चला था, लेकिन अन्तमें वह ख्याल हवाई किला साबित हुआ। दोनों मित्र विश्वकोषके तीसरे अक्षर तक थोड़ा-बहुत सहयोग करते रहे, जिनके बाद वह ठप्प हो गया।

१८५७ ई० की गर्मियोंमें गिल्टीकी बीमारीके कारण एंगेल्सको देर तकके लिए समुद्रके किनारे जाकर रहना पड़ा। मार्क्सकी स्थिति भी काफी बुरी थी पेट-की बीमारी फिर उभड़ आई, जिसके कारण बहुत कठिनाईके साथ वह बहुत थोड़ा सा ही काम कर सकते थे। जुलाईमे मार्क्स-पत्नीको एक मृत बच्चा ऐसी स्थितिमें पैदा हुआ, जिससे मार्क्सको बहुत दुःख हुआ। उनके पत्रको पढ़कर एंगेल्सने लिखा था : "आपपर भारी चोट पडी होगी, जभी आप इस तरह लिख रहे हैं।"

इस तरहका वैयक्तिक दुःख और चिन्ता चारों ओर घेरे हुये थे, लेकिन जैसे ही शरदमे संकट इगलैंडमें दाखिल हुआ, फिर यूरोपमें फैलने लगा; वैसेही मार्क्स सारी बातें भूल गये और उन्होने १३ नवम्बरको लिखा : "यद्यपि मैं स्वयं भयंकर आर्थिक कठिनाइयोंमें पडा हूँ, लेकिन १८४६ ई० के बाद मैने कभी ऐसा आनन्द अनुभव नहीं किया था, जैसा कि आज इस भूकम्प (आर्थिक संकट) के समय।" पत्रके उत्तरमें अगले दिन एंगेल्सने लिखा था : "मैं समझता हूँ, अच्छा यही होगा, कि स्थायी (क्रानिक) संकटमें 'सुधार' कहीं द्वितीय और निर्णायक प्रहारके पहले ही न होने लग जाय। लोगोंको गरम करने के लिये थोडी देरके वास्ते दीर्घ स्थायी (पुराने) दबावकी आवश्यकता है, तब सर्वहारा स्थितिके बेहतर ज्ञानके साथ एकताबद्ध हो अच्छी तरह लडेंगे, जिस तरह कि रिसालेका हमला तभी ज्यादा जीवट वाला होता, जब घोड़े दुश्मनपर प्रहार करनेकी जगहसे पहले पाँचसौ कदम दौडनेका मौका पाये। मैं ऐसी किसी चीजको बहुत जल्दी, उस समयसे पहले घटित होना नहीं पसन्द करूँगा, जब तक कि सारा यूरोप इसमें पूरी तौरसे फँस न जायः क्योंकि तब बादका संघर्ष अधिक कठोर, अधिक मुश्किल और अधिक उतार-चढ़ावका होगा। मई और जूनका समय प्रायः बहुत पहलेका होगा। लम्बे अर्से तक समृद्धके भीतर गुजरते हुये

जनगण बहुत श्लथ हो गया है।...हाँ, मैं भी उसी तरह महसूस करता हूँ जैसे आप। एक बार यदि न्यूयार्कमें धोखा-धड़ीकी इतिश्री हो गई, तो जर्सीमें मेरे पास एक टुकड़ा भी नहीं रह जायेगा, किन्तु, मैं इस आम इतिश्रीका बहुत सुन्दर अनुभव कर रहा हूँ। चाहे पिछले कुछ वर्षोंमें बूर्ज्वा कीचड़ मुझसे भी चिपट गया है, लेकनि अब मैं उसे धोकर अपनेको नया आदमी अनुभव करने लगूँगा। समुद्रतट निवास सा ही यह संकट मेरे स्वास्थ्यके लिये लाभदायक होगा, इसे मैं अभीसे अनुभव कर रहा हूँ। १८४८ ई० में हम सोच रहे थे, हमारा समय आ रहा है और कुछ अर्थोंमें वैसा हुआ भी, लेकिन, इस समय वह वस्तुतः आ रहा है और सभी चीज दाँवपर है।"

एंगेल्सने अपने पत्रमें दावपर सब चीजोंके रखे होनेकी जो बात कही थी, वह गलत साबित हुई। संकटका प्रभाव उनकी सूझके अनुसार बिल्कुल ही न पड़ा हो, यह बात नहीं लेकिन सर्वहाराके ऊपर जो चरम प्रभाव पड़नेवाला था, और जिसके कारण इस विराट संसारमें प्रलय मच जाने वाली थी वह तब आनेवाला था, जब कि दोनों मित्र सदाके लिए आँखें मूँद चुके होंगे। १८ दिसम्बरके पत्र में मार्क्सने अपने मित्रको लिखा था : "मैं बहुत जबर्दस्त परिमाणमें काम कर रहा हूँ, ४ बजे सबेरे तक। मेरा काम दो तरहका है : (१) राजनीतिक अर्थ-शास्त्रके मौलिक सिद्धान्तोंकी रूपरेखा...और (२) वर्तमान संकट।

आर्थिक संकट में मार्क्सने इस बातका पता लगाया, कि दुनियाके शोषण और उत्पीड़नके खतम करनेके लिये आवश्यक सबसे शक्तिशाली हरावल दस्ता सर्वहारा है। लेकिन, सर्वहारा हर समय इसके लिये पूरी तौरसे तैयार होकर अपना जबर्दस्त और मरणान्तक प्रहार नहीं कर सकता। मरणान्तक और निर्णा-यक प्रहारके लिये एकमात्र समय है आर्थिक संकटका काल। आर्थिक संकटकाल-को टालनेके लिये पीछे पूँजीवादियोंने युद्धोंकी शरण ली। आज भी हम यह साफ देख रहे हैं, कि पूँजीवादी युद्धसे उतना नहीं जितना शान्तिसे काँपने लगते हैं। कोरियामें शान्तिकी बातचीत करते ही वाल स्ट्रीटके सटोरियोंमें हल-चल मच गई, चारों ओर उन्हें दिवाला ही दिवाला दिखलाई देने लगा, और उनके हाथकी कठपुतली अमेरिकन सरकार किसी न किसी बहाने शान्तिकी बला-

को टालनेकी कोशिश करने लगी। आर्थिक संकटको आते देख उसे सर्वहारा-क्रान्तिके लिये पुण्य-पर्व समझ मार्क्सके हृदयमें क्यों न अधिक प्रसन्नता और उत्साह पैदा होता। ८ दिसम्बरके अपने पत्रमें जेनी मार्क्सने मरणासन्न कोनराड सम्भके पास जर्मीमें जो पत्र भेजा था, उसकी कुछ पंक्तियाँ मार्क्सके इस समयके उत्साहके ऊपर प्रकाश डालती हैं : "यद्यपि हम अमेरिकन संकटको अपने पाकेट पर बुरी तरहसे अनुभव करते हैं, क्योंकि कार्ल 'ट्रिब्यून'के लिये दोकी जगह अब केवल एक लेख लिखता है। ट्रिब्यूनने' बयार्ड हेलर और कार्लको छोड़कर अपने सभी यूरोपियन संवाददाताओंको अलग कर दिया है। लेकिन, तुम समझ सकते हो कि इस समय मूर (मार्क्स) कितना प्रसन्न है! उसकी काम करनेकी क्षमता और फुर्ती इतनी ताजगीं और वेग के साथ लौट आई है, जो कई वर्षोंसे नहीं देखी जाती थी तबसे जब कि हमारे नन्हें बेटेके उठ जानेसे हमे भारी दुःख हुआ, ऐसा दुःख जो मेरे हृदयको सदा उदास बना देता है। दिनको कार्ल हमारी रोजकी रोटीके लिये काम करता है और रातको राजनीतिक अर्थशास्त्रपर अपनी पुस्तक समाप्त करनेके लिये काम करता है। अब जब, कि इस तरहकी पुस्तक इतनी आवश्यक हो गई है, निश्चय ही हम किसी टुटपुँजिये प्रकाशकको पानेमें सफल होवेंगे।"

लाजेलके प्रयत्नसे एक प्रकाशक मिल भी गया। अप्रैल १८५७को मार्क्स को पत्र लिखते हुये लाजेलने इस बातपर आश्चर्य प्रकट किया, कि बहुत समयसे उसे मार्क्सका पत्र नहीं मिला। मार्क्सको मौन देखकर लाजेलको बहुत दुःख हुआ। उसकी शिकायत करने पर जो पत्र मार्क्सने लिखा भी, वह भी बहुत छोटा और बेमनसे लिखा हुआ था।

जनवरी १८५८ ई० में लाजेलकी पुस्तक "हेराक्लितु" की एक कापी लन्दन पहुँची, जिसमें बर्लिनमे उसके ऊपर हुई आलोचनाओं और सम्पतियोंमेसे भी कुछ थीं। मार्क्सने पुस्तकमें विद्वत्ताके भारी प्रदर्शनको पसन्द नहीं किया। उन्होंने कहा, उदाहरणपर उदाहरण भर कर पुस्तकको बडा और काफी पैसा होनेपर उसको छपाया जा सकता है। लाजेल को अभी भी पता नहीं था कि मार्क्स मुझसे नाराज है। फर्वरी (१८५८) में उसने मार्क्सको लिखा कि मै

आपके राजनीतिक अर्थशास्त्रके लिये एक प्रकाशक ढूँढ़नेको तैयार हूँ। मार्क्सने इसे स्वीकार कर लिया। मार्चके अन्त तक लाज़ेलने अपने प्रकाशक फ्रांज डुंकेर से सब बात तै करके प्रतिज्ञानामा भीं तैयार कर लिया और उससे कहीं अच्छी शर्तपर, जिन्हें कि मार्क्सने माँगा था। आम तौरसे पारिश्रमिक एक फार्मके दो फ्रीडरिख्स डोर (१६-१७ मार्क्सका उस समयका प्रशियाका सोनेका सिक्का) होता था, लेकिन डुंकरने तीन फ्रीडरिख्सडोर देना स्वीकार किया था। पर, प्रकाशक यह शर्त रक्खी थी, कि अगर पहले भागकी संतोषजनक बिक्री नहीं हुई, तो आगे उसे प्रकाशित नहीं करेगा। १८५८ ई० का बड़ा दिन आया, जिसके साथ क्रिस्मसके आनन्दकी जगह मार्क्स-परिवारमें चिन्ता और दुःखका स्वागत था। २१ जनवरी १८५६ ई० को ग्रंथका हस्तलेख तैयार हो गया, लेकिन एक पैसा भी घरमें नहीं था, कि हस्तलेखको डाकसे भेजनेके लिए टिकट खरीदा जा सके। मार्क्सने एंगेल्सको डाकखर्चके लिये पैसा भेजनेके लिए लिखते हुये कहा था : "मैं नहीं समझता हूँ, कभी भी किसी आदमीने 'पैसा' के बारेमें लिखा हो, और उसे स्वयं उसके अभावके लिए इतना कष्ट हुआ हो। अधिकांश लेखक जिन्होंने इस विषयपर लिखा है, वह अपने शोधके लक्ष्य (पैसे) के साथ सबसे बढ़िया सम्बन्ध कायम रख सकते थे।"

४. "राजनीतिक अर्थशास्त्रकी आलोचना" (१८५६-६६ ई०)

काममें हाथ लगानेसे पन्द्रह वर्ष पहले मार्क्सने राजनीतिक अर्थशास्त्रके ऊपर एक विस्तृत ग्रंथ लिखनेकी योजना बनाई थी, जिसमें वह उत्पादनके पूँजीवादी ढंगके मौलिक सिद्धान्तोंको बतलाना चाहते थे। फ्रांसकी मार्च-क्रान्तिके पहले भी प्रूधोंको जवाब देते समय उनके मनमें इसका ख्याल आया था लेकिन, क्रान्तिकारी संघर्षोंमें पड़कर उसके लिये वह कुछ नहीं कर सके। उनसे छुट्टी पानेके बाद २ अप्रैल १८५१ को उन्होंने एंगेल्सको लिखा था : "इस वक्त मैं इतना दूर तक चला गया हूँ, मैंने अर्थशास्त्रके सभी नीरस झंझटोंको खतम कर दिया है। इसके बाद मैं घरमें बैठकर अपनी किताबको समाप्त करूँगा और म्युजियममें किसी दूसरे विज्ञानमें हाथ लगाऊँगा...ऐडम स्मिथ और

डेविड रिकार्डों (दो अंग्रेज अर्थशास्त्री) के समयसे राजनीतिक अर्थशास्त्र विज्ञानने कोई नई मौलिक प्रगति नहीं की है।" एंगेल्सने बहुत प्रसन्न होकर जवाब दिया : "मुझे यह सुनकर बड़ी प्रसन्नता हुई, कि अन्तमें तुम अपने राजनीतिक अर्थशास्त्रको पार कर गये। वस्तुतः यह काम बहुत देर तक लटका रहा।" और साथ ही यह भी कहा : "लेकिन जब तक तुम्हारे सामने अभी भी कोई ऐसी एक पुस्तक है, जिसे तुम महत्वपूर्ण समझते हो और जो पढ़ी नहीं गई है, तब तक तुम अपनी लेखनीको कागज पर नहीं धरोगे।" एंगेल्स जानते थे कि और कठिनाइयोंके अतिरिक्त एक बड़ी कठिनाई मार्क्सके लिये यह थी कि उन्हें एक-एक कदमको फूंक-फूंककर आगे रखनेकी आदत थी। फूंक-फूंककर पैर रखनेकी आदतको एंगेल्स बेकार नहीं समझते थे। और यही हुआ। १८५१ ई० में मार्क्सके लिखनेसे मालूमसे होता था, कि उनका यह ग्रंथ समाप्त ही होने जा रहा है, लेकिन उसमे उन्हें अभी और आठ वर्ष लगाने पड़े। बृटिश म्युजियममें इस विषयपर जो विशाल सामग्री रखी हुई थी, उसका एकके बाद एक पता लगता गया और मार्क्स फिरसे अपनी पुस्तकपर काम करने लगे। इस प्रकार १८५७-५८ ई० मे ही वह पुस्तक को प्रकाशनके योग्य बनानेके लिए काम करने लगे।

(ग्रंथ संक्षेप)—ग्रथकी भूमिकामे और बातोंके साथ मार्क्सने ऐतिहासिक भौतिकवादके सिद्धान्तको सक्षेपमें कहते हुए लिखा है।

"(हेगेलीय विधान (कानून)-दर्शनकी परीक्षा करते हुये मैं इस निष्कर्ष-पर पहुँचा, स्वयं अपनेमें या मानव-बुद्धिके तथाकथित आम विकाससे न कानूनी सम्बन्धोंको समझा जा सकता है, और न राज्यके रूपोंको ही, क्योंकि उनकी जड़ जीवनकी भौतिक स्थितियोंमे निहित है; जिसके पूर्ण योगको १८ वीं शताब्दीके अंग्रेज और फ्रेंच विद्वानोके उदाहरणोंका अनुगमन करते हुए हेगेलने 'बूर्ज्वा-समाज' की परिभाषामे सक्षिप्त करके कहना चाहा। बूर्ज्वा-समाजके शारीरिक ढाँचेको राजनीतिक अर्थशास्त्रमें ही ढूँढना होगा। ..मैं जिन सामान्य निष्कर्षोंपर पहुँचा हूँ, और जो मेरे आगेके अध्ययनमें पथ-प्रदर्शनका काम करेंगे, उन्हें संक्षेपमें निम्न प्रकार कहा जा सकता है : सामाजिक उत्पादनमें मानव-प्राणी

एक दूसरेके साथ निश्चित और आवश्यक सम्बन्धोंमें प्रवेश करता है, और उसका यह प्रवेश करना अपनी इच्छासे बिलकुल स्वतंत्र होता है। यह उत्पादक-सम्बन्ध भौतिक उत्पादन-शक्तियोंके विकासकी एक निश्चित अवस्थाके अनुसार होते हैं। इन उत्पादक-सम्बन्धोंका आकार सामूहिकरूपेण समाजके आर्थिक ढाँचा और भौतिक आधार बनते हैं, जिनके ऊपर वैधानिक (कानूनी) और राजनीतिक ऊपरी ढाँचा खड़ा है, और सामाजिक चेतनाके निश्चित आकार भी उसीके अनुसार होते हैं। भौतिक जीवनका उत्पादन-प्रकार आमतौरसे जीवनके सामाजिक, राजनीतिक और बौद्धिक प्रक्रियाका निर्णय करता है। मानवप्राणीकी चेतना उसके अपनेपनकी निर्णायक नहीं है, बल्कि इसके विरुद्ध उसका सामाजिक अस्तित्व उसकी चेतनाका निर्णय करता है। अपने विकासकी एक निश्चित अवस्थामें पहुँचकर समाजकी भौतिक उत्पादक-शक्तियाँ तत्कालीन उत्पादक सम्बन्धोंके साथ अथवा तत्कालीन साम्पत्तिक-सम्बन्धोंके साथ विरोधी बन जाती हैं—तत्कालीन साम्पत्तिक सम्बन्ध एक उसी चीजकी कानूनी अभिव्यक्ति है, जिसमें कि अबसे पहले वह चलती रहीं। तब यह सम्बन्ध उत्पादक-शक्तियोंके विकासके आकारोंसे उत्पादक-शक्तियोंकी बेड़ीके रूपमें परिणत हो जाते हैं, जिससे कि सामाजिक क्रान्तिका एक युग आरम्भ होता है। समाजके आर्थिक आधारके इस परिवर्त्तनके साथ सारा ऊपरी विशाल ढाँचा कम या बेशी जल्दी से बदल जाता है। इन परिवर्त्तनों को देखते हुये आदमीको सदा उत्पादनकी आर्थिक स्थितियोंमें भौतिक परिवर्तनोंको वैज्ञानिक सूक्ष्मताके साथ हृदयंगत करना होगा, और वैधानिक, राजनीतिक, धार्मिक, कलाकारिक और दार्शनिक-संक्षेपमें उनको वैचारिक आकारोंके बीच सदा फर्क करना होगा जिनमें कि पहुँचकर मानवसत्तायें इस विरोधको महसूस कर उनसे लड़ने लगती हैं। जिस तरह हम एक व्यक्तिकी परख उससे नहीं कर सकते, जैसा कि वह अपने बारेमें सोचता है; उसी तरह हम इस प्रकारके परिवर्त्तनके एक युगका उसकी अपनी चेतना द्वारा नहीं परख सकते, बल्कि हमें भौतिक जीवनके विरोधोंसे, सामाजिक उत्पादक-शक्तियों और उत्पादनकी स्थितियोंके बीच विद्यमान विरोधसे इस चेतनाकी व्याख्या करनी होगी। समाजका कोई रूप तब तक पतनोन्मुख नहीं होता, जब

तक कि उत्पादनकी सारी शक्तियाँ अपने विकासकी अपनी निजी अवस्थाके अनुसार विकसित नहीं हो जातीं, और नये तथा ऊँचे उत्पादक-सम्बन्ध पुरानों का स्थान तब तक नही ग्रहण करते, जब तक कि स्वय पुराने समाजके खोलके भीतर उनके अस्तित्वके लिये भौतिक स्थितियाँ विकसित नहीं हो जातीं। इसी-लिये मानवता किसी ऐसे कामको अपने सामने नहीं रखती, जिसके पूरा करनेकी अवस्थामे वह नहीं है। क्योकि यदि हम वस्तुका और नजदीकसे परीक्षण करे, तो हमें बराबर यही मिलेगा, कि कोई कार्य अपनेको पूरा करनेके लिये हमारे सामने तब तक उपस्थित नहीं होता, जब तक कि उसे पूरा करनेके लिये पहले हीसे भौतिक स्थितियाँ विकसित अथवा विकासोन्मुख न हो।

"आम तौरसे कहने पर (१) एसियाई, (२) क्लासिक (प्राचीन यूनानी) (३) सामन्ती और (४) आधुनिक पूँजीवादी उत्पादनके ढंग आर्थिक, सामाजिक आकारोके प्रगतिशील युगोके नाम हो सकते हैं। पूँजीवादी (बूर्ज्वा) उत्पादक-सम्बन्ध सामाजिक उत्पादनकी प्रक्रियाका अन्तिम विरोधी आकार—वैयक्तिक विरोधके अर्थमे नही, बल्कि ऐसे विरोधके रूपमें, जो कि व्यक्तियोंके जीवनकी सामाजिक स्थितियोंसे विकसित होता है—पैदा होता है। अस्तु, बूर्ज्वा-समाजके ढाँचेके भीतर विकसित हुई उत्पादक शक्तियाँ साथ ही ऐसी भौतिक स्थितियाँ उत्पन्न करती हैं, जो इस विरोधको खतम करनेवाली हैं : इसलिये समाजके इस रूपके साथ मानवसमाजके प्रारम्भिक इतिहासका अन्त होता है।"

अपने इस महान् ग्रंथके रूपमें मार्क्सने राजनीतिक अर्थशास्त्रको एडेम स्मिथ, डेविड रिकार्डों एवं दूसरे विचारको द्वारा स्थापित बूर्ज्वा राजनीतिक अर्थशास्त्रने सौदाके मूल्यका निर्धारण उसके उत्पादनमे आवश्यक श्रमके-समय-की मात्रा द्वारा किया था, वह उत्पादनके बूर्ज्वा ढंगको सामाजिक उत्पादनका सनातन और स्वाभाविक आकार मानता था, इसलिए वह समझता था, कि मूल्यका सृजन मानव श्रम-शक्तिकी स्वाभाविक विशेषता है, जैसा कि वह व्यक्ति-की सरकार श्रम-शक्ति में पाया जाता है। अपने इस निष्कर्षके कारण उसने अनेक विरोध पैदा कर दिये, जिनका समाधान करनेमें वह असमर्थ रहा।

लेकिन इसके विरुद्ध मार्क्सने उत्पादनके बूर्ज्वा-ढंगको सामाजिक उत्पादनका सनातन और स्वाभाविक आकार नहीं माना, बल्कि उसे केवल अपने पहलेके आकारोंकी परम्पराओंके उत्तराधिकारी सामाजिक उत्पादनका एक निश्चित ऐतिहासिक आकार माना। इस दृष्टिकोणसे उन्होंने श्रम-शक्तिकी मूल्य-उत्पादक विशेषताकी पूरी तौरसे परीक्षण किया कि किस तरहकी श्रम-शक्ति मूल्य पैदा करती है और कैसे? और क्यों मूल्य इस प्रकारकी श्रम-शक्तिका साकार छोड़ और कुछ नहीं है।

मार्क्सके इस महान् ग्रन्थके महत्वको उस समय उनके सहकारी और मित्र भी अच्छी तरह नहीं समझ सके, लेकिन धीरे-धीरे उसकी सच्चाइयाँ प्रकट होने लगीं। पैसे (Money) के सिद्धान्तके बारेमें मार्क्सने जिस तथ्यका प्रतिपादन किया, उसे बूर्ज्वा-अर्थशास्त्रियोंने भी चुपकेसे स्वीकार कर लिया, सात वर्ष बाद जर्मन राजनीति-अर्थशास्त्रके विश्वकोषने भी मार्क्सका लोहा माना। आज तो आधी मानवता मार्क्सके इसी राजनीतिक अर्थशास्त्रपर चल रही है।

अध्याय १३

मतभेद

१. लाजेलसे झगड़ा

एंगेल्सने मार्क्सकी सम्मतिसे "पो और राइन" के नामसे एक पम्फ्लेट लिखा, जिसे लाजेल द्वारा फ्रांज़ डुंकरने छपवाया। आस्ट्रियाके हाब्सबुर्ग राजवंश इतालीकी प्रसिद्ध नदी पोको राइनकी प्रतिरक्षाका मुख्य स्थान कहता था। आजकलके अमेरिकनोंकी तरह राजवंशका भी राज्यका-लोभ निस्सीम हो गया था। वह कहता था, कि जब तक इतालीकी भूमिको दाब करके रक्खा नहीं जायगा, तब तक हम जर्मनीकी रक्षा नहीं कर सकते। उधर फ्रांस राइन नदीको अपनी प्राकृतिक सीमा मानता था। लेकिन प्राकृतिक सीमा ही राज्यसीमा हो, यह बहुत कम ही देखा जाता है। एंगेल्सने अपने पम्फ्लेटमें आस्ट्रियाके शासकोंके दावेको गलत कहा। पुरानी जर्मन कहावतके अनुसार गदहेके मतलबसे यह बोरीको पीटना था। यदि फ्रांसके लिये राइनका बाँया तट अपने हाथमें करना आवश्यक है, तो जर्मनी पोके तटको कैसे छोड़ सकता है? मार्क्सने इस पम्फ्लेटको पढ़कर एंगेल्सको लिखा था: "असाधारणतया ठीक: इसका राजनीतिक पहलू भी, जो कि सौरा बहुत कठिन है। पम्फ्लेट बहुत सफल होगा।" लेकिन लाजेल एंगेल्सके विचारोंसे सहमत नहीं था। उसने "इतालियन युद्ध और प्रशियाके लिये करणीय" के नामसे तुरन्त एक पम्फ्लेट छापकर निकाल दिया, जिसमें उसने एंगेल्सके विचारोंका खंडन करते, अपने विचारोंको रक्खा। दोनोंने एकही तरहकी स्थितियोंका अपने पम्फ्लेटमें उल्लेख किया था और उनके विचारोंमें मौलिक मतभेद नहीं था, बल्कि मार्क्सके एक साल बादकी रायके अनुसार यह "उन्हीं स्थितियोंसे परस्पर विरोधी निर्णय पर पहुँचना था।" दोनोंके राष्ट्रीय या क्रान्तिकारी विचार एक से थे, दोनों ही सर्वहाराकी मुक्ति अपना अन्तिम लक्ष्य मानते थे, जिसके लिए बड़े जातीय राज्योंका निर्माण आवश्यक था।

जर्मन होनेके कारण दोनों जर्मन जातीय एकतामें सबसे अधिक दिलचस्पी रखते थे, जिसके लिए जरूरी था कि जर्मनीके भिन्न-भिन्न राजवंश समाप्त कर दिये जायें। दोनों ही जर्मन सरकारोंको पसन्द नहीं करते उनकी हार चाहते थे। युद्धके समय मजूर-वर्ग अपनेको शासक-वर्गके हाथमें इस्तेमाल करनेके लिए दे दे, यह भाव भी उनमें नहीं था। मार्क्स लाजेलको "मजबूत पट्ठा" कहते थे और यह भी जानते थे, कि वह बूर्ज्वा पार्टीसे कभी नहीं मिल सकता। लेकिन, मार्क्सका सन्देह अभी पूरी तौरसे दूर नहीं हुआ था।

२. "डास फौल्क"

दुःख्यात किंकल फिर मैदानमें उतरा और उसने १ जनवरी १८५९से एक साप्ताहिक "डेर हेरमान" निकालना शुरू किया। कवि फ्राइलिग्रथके अनुसार: "देश लौटनेके लिए बेकरार वीरों" का वह बड़ा प्रिय मुखपत्र था। लेकिन, सभी बूर्ज्वा निर्वासित पत्रसे प्रसन्न नहीं थे। मुक्त-व्यापारवादी फौखेरने "डी नोये जाइट" को बचानेके लिए धन-संग्रह करनेकी एक कमेटी बनाई, जिसमें वह सफल रहा और एलार्ड बिजकाम्पके सम्पादकत्वमें वह अब "डास फोल्क" (जनता) के नामसे निकलने लगा। बिजकाम्प "डी नोये जाइट" में मफस्सिलसे लेख लिखा करता, कहीं अध्यापकी करता था। अब उसने अपना सारा समय इस कामके लिये देनेका निश्चय किया। पत्र निकलनेके थोड़े ही समय बाद लीबक्नेख्टके साथ मार्क्ससे मिलकर उसने अपने पत्रके लिये लेख माँगा। १८५० ई० में जो झगड़ा हुआ था तबसे उन्होंने कमकर शिक्षा लीगसे अपना कोई सम्बन्ध नहीं रक्खा था, बल्कि लीबक्नेख्टका लीगके साथ सम्बन्ध जोड़ना भी उन्हें पसन्द नहीं था। मार्क्स लेख लिखनेके पक्षमें नहीं थे, लेकिन साथ ही वह नहीं चाहते थे, कि किंकेलको अखाड़ेमें अकेला छोड़ दिया जाय, इसलिए उन्होंने लीब्क्नेख्टके पत्रमें सम्पादनमें बीजकाम्पकी सहायता करनेमें सहमति प्रकट की। अपने बारेमें कह दिया कि मैं अपने और एंगेल्स द्वारा सम्पादित पार्टी-पत्रके सिवाय और मैं लेख नहीं लिखूँगा। "डास फोल्क" का खर्च चलाना आसान नहीं था, यद्यपि एंगेल्स अपनी लेखनीसे उसे पूरी सहायता कर रहे थे।

आखिर अगस्तके अन्तमें पत्र बन्द हो गया। मार्क्सने अपनी अव्यवहारिकतासे पत्रके मुद्रक की बिलकी जिम्मेवारी अपने ऊपर ले ली, जिसने मार्क्सके ऊपर पैसेके दावा करनेकी धमकी दी और अन्तमे पॉच पौंड देकर मार्क्सने अपना पिंड छुड़ाया।

३. "हेर फोग्ट" *

१ अप्रैल १८५६ को एक जर्मन निर्वासित कार्ल फोग्ट इतालियन युद्धके प्रति जर्मन जनतान्त्रिकताका एक राजनीतिक प्रोग्राम लन्दनके निर्वासितोंके पास भेजा, जिसमे उसने स्वीजरलैंडसे एक नये साप्ताहिकके प्रकाशनके लिये लन्दन-वालोके सहयोग माँगा। फोग्ट फोलेड बन्धुओंका भाजा था, जिन्होने जो कि फ्राकफोर्ट एसेम्बलीके वामपक्षी नेताओंमेंसे थे इस तथा कथित पार्लियामेन्टमें अपने मरनेके समय राइखके पॉच रिजेन्टोंमेंसे एक फोग्टको भी बनाया था। फोग्ट इस समय जेनेवामें भूतत्वका प्रोफेसर था। प्रोग्रामकी एक कापी कवि फ्राइलिग्रथको भी मिली और उसने फोग्टके बारेमें मार्क्सकी राय पूछी। उन्होंने अनुकूल राय नहीं दी। मार्क्सने विस्तारपूर्वक एंगेल्सको बतलाया था: "जर्मनी अ-जर्मन भूमिको त्यागती है। वह आस्ट्रियाका समर्थन नहीं करती। फ्रेंच निरकुशता अस्थायी है, आस्ट्रियन निरंकुशता स्थायी। दोनों निरंकुश अपनेको लोहूलोहान करते मरना चाहते हैं।...जर्मनीके लिये सशस्त्र तटस्थता। जर्मनीमें हमारे जीवन तक किसी क्रांतिकारी आन्दोलन नहीं सोचना चाहिए। फोग्ट अत्यन्त विश्वसनीय स्रोतोंसे सूचना पाये हैं, जिसके परिणामस्वरूप जैसे ही आस्ट्रियाको बोनापार्त ध्वस्त करेगा, पितृभूमिमें कुमार-रिजेन्टके अधीन एक उदार-राष्ट्रवादी (नरम) दल खड़ा हो जायगा और फोग्ट हो सकता है दरबारी वेदूषक बन जाये।"

जूनके आरंभमें मार्क्स अपने मित्रो और सहानुभूतिकारोंसे "डास फोल्क" की सहायताके लिये धन जमा करने मान्चेस्टर गये थे। उनकी अनुपस्थितिमें बीनक्नेख्टको एक पम्फ्लेटका गेली प्रूफ मिला, जिसमे फोग्ट पर आक्रमण किया

---

* Her Vogt

गया था, और उसके बारेमें ब्लिंडके दोषारोप थे। कम्पोजिटर फ़ोगेलेने बतलाया कि पम्फ्लेट तो स्वयं ब्लिंडने दिया था, और गेलीमें प्रूफ शोधन भी उसीके हाथ का है। कुछ दिन बाद लीबक्नेख्टने उस पम्फ्लेटकी एक छपी कापी पाकर उसे आग्सबुर्गमें "अल्गेमाइन जाइटुंग" पत्रमें भेज दिया, जिसका कि वह कितने ही वर्षोंसे संवाददाता रहता आया था। पम्फ्लेटके साथ भेजे गये अपने पत्रमें उसने लिखा था, कि यह एक सम्भ्रांत जर्मन-निर्वासितका लिखा हुआ है और इसमें उल्लिखित दोषारोप प्रमाणित किये जा सकते हैं।

"अल्गेमाइन जाइटुंग" ने उसे प्रकाशित कर दिया, जिस पर फोग्टने पत्रके ऊपर मानहानिका दावा कर दिया। पत्रने लीबक्नेख्टसे सबूत माँगे। लीबक्नेख्टने ब्लिंडसे जब इसके बारेमें पूछा, तो उसने कहा कि उससे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है, और न मैंने पम्फ्लेट लिखा है। यद्यपि उसे बाध्य होकर इतना मानना पड़ा, कि पम्फ्लेटकी कुछ बातें मैंने मार्क्सको बतलाई थीं, तथा उनमेंसे कुछको अर्कहार्टके पत्र "दि फ्रीप्रेस" में छपवाया था। आग्सबुर्गमें अभी मुकदमा खुला नहीं था, इसी समय १० नवंबर (१८५६) को जर्मन महाकवि शिलेरकी शताब्दी मनानेकी तैयारी हुई। इसमें एक और वैमनस्य उठ खड़ा हुआ : देशके बाहरके जर्मनोंने हर जगह महोत्सवकी तैयारी की थी, लन्दनमें भी उसकी तैयारी हुई, जिसके प्रबन्धको किंकलकी मंडलीने अपने हाथमें कर लिया और उसने लन्दनके प्रशियन दूतावासके लोगोंको भी निमंत्रित किया, दूसरी तरफ जर्मन सर्वहारा निर्वासितोंको उससे अलग रखनेकी कोशिश की। ऐसी स्थितिमें मार्क्स और एंगेल्स उसके साथ सहानुभूति नहीं रख सकते थे। उनको आश्चर्य हुआ जब फ्राइलिग्रथने किंकलके भाषणके बाद वहाँ एक कविता पढ़ी। उसके बाद किंकलके पिट्ठू वेटजीख उपनाम वेटाने कविकी प्रशंसा करते हुये पत्रमें एक लेख छाप दिया, जिसके अन्तमें मार्क्सपर भी आक्रमण किया। मार्क्स और फ्राइलिग्रथ के बीचके इस सबके कारण वैमनस्य पैदा हो गया, लेकिन दोनोंकी मित्रता अकस्मात् नहीं हुई थी, इसलिये दो-एक पत्रोंकी लिखा-पढ़ीके बाद १८५६ ई० के समाप्त होनेके साथ यह वैमनस्य भी खतम हो गया।

१८६० ई० के नववर्षके समय फोग्टने "अल्गेमाइन जाइटुंगके विरुद्ध

मेरी कार्रवाई" के नामसे एक पुस्तक छापी, जिसमें मुकद्मेकी सारी कार्रवाई और सबूत पूरी तौरसे बड़ी शुद्धताके साथ सम्मिलित किये गये। साथ ही उसने मार्क्सपर भी आक्रमण करते हुये अपने एक पहले लेखको उद्धृत किया, जिसमें मार्क्सको गुन्डोकी मडलीका नेता बतलाया था और पितृभूमिके लोगोंको तंग करके उनसे पैसे ऐंठनेवाला कहनेसे भी आनाकानी नहीं की थी: "एक पत्र नहीं, बल्कि सैकडो पत्र लोगोके पास जर्मनी भेजे गये, जिनमे धमकी दी गई, कि एक निश्चित रकम यदि निश्चित पते और निश्चित तिथि-पर नहीं भेजेंगे, तो इस या उस क्रातिकारी कार्रवाईमें भाग लेनेके लिए उनके भेदको खोल दिया जायगा।" फोग्टने, सच्ची बातोंके साथ सोलहो आना झूठी बातोंको मिलाकर मार्क्सके ऊपर, ऐसे कठोर आक्षेप किये थे, कि जिनमे क्या सच है क्या झूठ है, इसका पता लगाना मुश्किल था। जर्मनीमें इस पुस्तकसे बड़ी सनसनी फैली और मार्क्सके विरोधी सारे बूर्ज्वा-प्रेसने उसका स्वागत किया। "नेशनल जाइटुंग" ने फोग्टकी पुस्तकके आधारपर दो लम्बे सम्पादकीय लेख लिखे। जनवरीके अन्तमें जब पत्रकी कापियाँ लन्दन पहुँची, तो वहाँ मार्क्सके परिवार—विशेषकर फ्राउ मार्क्स—को बहुत धक्का लगा। लन्दनमें फोग्टकी पुस्तक कहीं नहीं मिली, तो मार्क्सने फ्राइलिग्रथसे पूछा कि तुम्हारे "मित्र" फोग्टने कोई कापी भेजी होगी, उसे देना। फ्राइलिग्रथको यह बहुत बुरा लगा और उसने कहा, कि फोग्ट मेरा मित्र नहीं है और न मैंने उससे कापी पाई।

अपने ऊपर वैयक्तिक आक्रमणका जवाब देना मार्क्स पसन्द नहीं करते थे, लेकिन इस वक्त वह उसे अत्यन्त आवश्यक समझते थे, साथ ही "नेशनल जाइटुंग" के ऊपर मानहानिका दावा करनेका भी उन्होंने निश्चय कर लिया। खास कर अपनी बीबी और लड़कियोंके ऊपर जो कायरतापूर्ण आक्षेप उस पत्रने किये थे, उसके लिये न कुछ करना वह पसन्द नहीं कर सकते थे। मार्क्सने पहले ब्लिंडसे फोग्टके बारेमें किये गये आक्षेपका सबूत माँगा, लेकिन उसने आनाकानी की। एंगेल्सका ख्याल था, कि हेर फोग्टपर जो दोष लगाये गये, उन्हें ब्लिडने स्वय गढ़ा। इसके बारेमें पूरी जाँच-पड़ताल करनेके बाद ४ फर्वरी-को मार्क्सने "दि फ्री प्रेस" में एक घोषणा निकाली, कि बिना नामका छपा

पम्फ्लेट होलिंगरके प्रेसमें नहीं छपा, यह कहना गलत है। कार्ल बिलंड भूठा है, अगर वह इसे अनुचित समझता हो, तो मेरे ऊपर अंग्रेजी अदालतमें मुकदमा कर सकता है। बिलंड को मुकदमा चलानेकी हिम्मत कहाँ थी, हाँ, उसने "अलगेमाइन जाइटुंग" में अपना एक लम्बा वक्तव्य प्रकाशित कराया, जिसमें फोग्टकी निन्दाकी, और उसके ऊपर रिश्वत लेनेका आक्षेप किया, साथ ही उक्त पम्फ्लेटका लेखक होनेसे इन्कार किया। मार्क्स इतनेसे जान छोड़ने वाले नहीं थे, उन्होंने मजिस्ट्रेटके सामने वीहेसे यह वक्तव्य दिलवाया, कि वीहेने "डास फोल्कमें"* छापने के लिये उस पम्फ्लेटको कम्पोज किया था, और गैली प्रूफका संशोधन ब्लिंडके हाथों हुआ था, जिसे मैं पहचानता हूँ। मुझे वक्तव्य देनेसे होलिंगर और ब्लिंडने रोका। पहलेने पैसेका लोभ दिलाकर और दूसरेने भविष्यमें कृपा रखनेके वादेसे। इस इजहारके बाद ब्लिंडपर मुकदमा चलाया जा सकता था, लेकिन उसके परिवारके ख्यालसे मार्क्सने वैसा नहीं किया। मार्क्सने वीहेके इजहारकी एक कापी लुई ब्लांकके पास भेज दी, जो ब्लिंडका मित्र था, जिसमें यह भी लिखा था, कि क्यों मैंने आगे कार्रवाई करना छोड़ दिया।

इस तरह फोग्ट-कांडकी जड़ तक पहुँचनेके बाद अब उसका जवाब देना था, लेकिन उससे पहले फ्राइलिग्रथके साथ मनमुटावका दूर करना आवश्यक था। मार्क्सने कविके पास वीहेके इजहार और ब्लिंडके विरुद्ध अपने वक्तव्यकी कापी भेजी, लेकिन कविने उसका कोई जवाब नहीं दिया। मार्क्सने फिर लिखा: "यदि मैंने किसी तरह तुमको नाराज किया हो, तो मैं किसी समय भी अपनी भूलको खुशीसे माननेके लिये तैयार हूँ। कोई भी मानवीय बात मेरे लिये पराई नहीं हो सकती।...हम दोनों अच्छी तरह जानते हैं, कि वर्षों तक हममेंसे हरेकने अपने ढंगसे अत्यन्त निःस्वार्थ भावसे अपने निजी हितोंकी अवहेलना करते हुये अत्यन्त मेहनती और अत्यन्त दुःखपीड़ित वर्गके झंडेको ढोंगियोंके सिरके ऊपर रक्खा। इतिहासके प्रति यह एक क्षुद्र अपराध होगा, यदि हम

---

* "Das Volk".

छोटी-छोटी बातोंमें, किसी गलतफहमीके कारण अलग-अलग बह चलें। पत्रको समाप्त करते हुये मार्क्सने कविके प्रति अपनी गहरी मित्रताके भावको प्रकट किया। फ्राइलिग्रथने मित्रताके लिये आगे बढ़े हाथको अपने हाथमें लिया जरूर लेकिन पूरी तौरसे नहीं, जैसा कि उसके पत्रके अन्तिम भागसे मालूम होता है, "भविष्यमें भी मैं स्वतन्त्र, केवल अपने अधीन अपनी जानमें उचित कामको करनेके लिये स्वतन्त्र रहना चाहता हूँ।"

फोग्टके ऊपर मुकदमा चलानेके बारेमें लाजेलकी राय नहीं थी और सच-मुच मुकदमा करनेपर प्रशियन अदालतने सबूतके अपर्याप्त होनेके कारण उसे खारिज भी कर दिया। अपीलमें भी वही बात हुई। अब मार्क्सको पुस्तकके रूपमें जवाब देनेके सिवा और कोई चारा नहीं था। लेकिन, पुस्तक लिखने तथा फोग्टके उठाये सभी अफवाहों और दोषोंको दूर करनेके वास्ते दुनियाके भिन्न-भिन्न भागोंमें बिखरे हुये लोगोंसे लिखा-पढ़ी करके सामग्री जमा करना जरूरी था। उसमें काफी समय लगा और अन्तमें १७ नवम्बर १८६० ई० को हेर फोग्टके नामसे मार्क्सने अपनी पुस्तक तैयार की। मार्क्सकी यह कृति तब तक पुनः प्रकाशित नहीं हुई, जब तक कि बोल्शेविक-क्रान्तिके (१९१७ ई०) सफल होनेके कितने वर्षों बाद मास्कोके मार्क्स-एंगेल्स-लेनिन प्रतिष्ठानने उसे प्रकाशित नहीं किया। पुस्तक छोटी नहीं, बल्कि १९२ घने छपे हुये पृष्ठोंमें समाप्त हुई थी, जिसे साधारण तौरसे छपनेपर दूनी जगहकी आवश्यकता होती। भाषाके चमत्कारको दिखलानेमें यह एक सुन्दर साहित्यिक कृति है। पुस्तकका विषय रूखा था, लेकिन उसमें मार्क्सने बड़ी रोचकता भर दी है, साथ ही जगह-जगह मुहावरों और उद्धरणोंसे पता लगता है, कि मार्क्सका प्राचीन और अर्वाचीन साहित्यसे कितना विस्तृत परिचय था। मार्क्सके इस काममें लोगोंने जगह-जगहसे बहुतसी ज्ञातव्य बातें भेजी थीं। एक-एक करके अपने ऊपर किये गये सभी आक्षेपोंका मार्क्सने जवाब दे, फोग्टके ऊपर आक्रमण किया। फ्रांसमें नकली बोनापार्तके शासनके खतम होनेके बाद जो कागज-पत्र राष्ट्रीय प्रति-रक्षाको सरकारने प्रकाशित किये, उनमें अगस्त १८५९ ई० में फोग्टके हस्ताक्षर-वाली एक रसीद भी मिली, जिसमें तीस चाँदीके सिक्कोंके पानेकी स्वीकृति दी

गई थी। मार्क्सने अपनी पुस्तकमें लिखा था, कि हेर फोग्टको बोनापार्तने अपने पक्षमें प्रोपेगेंडा करनेके लिये पैसा दिया था। इस पुस्तकसे तत्कालीन यूरोपके कई भीतरी पहलुओंपर प्रकाश पड़ता है। लोदर बुखेरने पुस्तकको समसामयिक इतिहासका एक संग्रह ग्रंथ बतलाया था, लाजेलने हरेक दृष्टिसे "मास्टरपीस" कहा था। एंगेल्सने इसे खंडन-मंडनकी सर्वश्रेष्ठ पुस्तक माना "१८ वीं बूमियेरसे भी; यद्यपि "१८ वीं बुमेरका" जितना स्थायी महत्व आज भी है, उतना "हेर फोग्ट" का नहीं रहा। आक्षेप और खंडन-मंडन करते समय भी मार्क्स कहीं नीचे नहीं उतरे। फ्राउ मार्क्सके अनुसार "हमारा पुराना शत्रु रूगे भी मानता है, कि यह किताब एक सुन्दर प्रहसन है।" एंगेल्सने जर्मनीमें पुस्ताक छपवानेकी सलाह दी, लेकिन मार्क्सने लन्दनके एक तरुण जर्मन प्रकाशकको लाभान्वित करना चाहा और छापनेके लिये भी पचीस पौंड अग्रिम दिया। पुस्तक छप तों गई, लेकिन जर्मनीमें उसके बेचनेका कोई प्रबन्ध नहीं किया जा सका। मार्क्सके अग्रिम दिये पैसोंमेंसे कुछ नहीं लौटा। यही नहीं, बल्कि प्रकाशकके पार्टनरने धमकी देकर छपाईके सारे खर्चको मार्क्ससे वसूल किया—पचीस पौंड अग्रिम देते वक्त मार्क्सने कोई कागज-पत्र नहीं लिखवाया था।

४. घरेलू स्थिति

फोग्टने फ्राउ मार्क्स (श्रीमती मार्क्सके) ऊपर जो घृणित आक्षेप किये थे, उसके कारण जेनी हृदयको भारी आघात लगा था। कई रातें उन्हें नींद नहीं आई और स्वास्थ्य खराब होने लगा, तो भी मार्क्सके जवाबकी शुद्ध कापी तैयार करनेमें उन्होंने भारी मेहनत की। इस कामके समाप्त होते-होते जेनी चारपाईपर पड़ गई। डाक्टरने चेचककी बीमारी बतलाई और बच्चोंको तुरन्त घरसे अलग करनेके लिये कहा। बच्चे लीबक्नेख्टके पास भेज दिये गये और मार्क्स तथा घरकी अनुरक्त नोकरानी लेनचेन देमुथ जेनीकी सेवा-सुश्रुशा करने लगे। वह ज्वालाके मारे तड़फड़ाती रहीं, लेकिन मार्क्स एक घंटेके लिये भी पत्नीके पाससे हटनेको तैयार नहीं थे। जेनी एक सप्ताह तक जीवन और मृत्युके झूलेमें झूलती रहीं। खैरियत यही हुई, कि दो बार चेचकका टीका लगा चुकी थीं, इसलिये

परम अनिष्ट नही होने पाया। बीमारीके पजेसे छूटनेके बाद भी उन्हें बहुत दिनों तक दुर्बल रहना पडा। डाक्टरने बतलाया खैरियत हुई जो बीमारी कि हो गई नही तो जिस तरहका मानसिक परिताप और क्षोभ उनके ऊपर पड रहा था, उसके कारण और कोई भयकर आफत सिरपर आती। फ्राउ मार्क्सके रोग-मुक्त होनेके साथ ही अब अपनी शारीरिक और मानसिक परेशानीके कारण मार्क्स बीमार पड गये, जिसमे आर्थिक चिन्ता भी कारण थी, क्योंकि "हेरफोग्ट" मे घाटा ही घाटा सहना पडा था और उधर न्यूयार्क ट्रिब्यून अब आधा ही पारिश्रमिक दे रहा था। बीमारीसे उठनेके बाद मार्क्सने इधर-उधरसे कुछ पैसा लानेका निश्चय किया, जिसके बारेमे उनकी पत्नीने फ्राउ वेडेमेयरको लिखा था : "अपने बाप-दादों तथा तम्बाकू और पनीरकी भूमि हालैंड तक धावा मारने जा रहे हैं ताकि अपने चचासे कुछ प्राप्त करनेकी कोशिश करें।" यह पत्र जेनीने १६ मार्च १८६१ को लिखा था। इन सारे कष्टोंमे तीनों लडकियाँ पिता-माताके आनन्दकी सबसे बडी साधन थी। सात सालकी जेनी 'अपने बाप जैसी काले बालों, काली आँखों और साँवले शरीरवाली थी। पन्द्रह सालकी लोरा अधिकतर माँ जैसी थी, उसके बाल घुँघराले तथा भूरे, उसकी पुतलियाँ माँकी तरह चमकीली तथा हरे रंगकी थीं। दोनो बडी लडकियाँ बडी सुरूप थीं, लेकिन उनमें किसी तरहका व्यर्थका अभिमान छू नहीं गया था। दोनों माँ-बापको तो प्रिय थी ही, लेकिन सबसे छोटी एलिनोर घरकी प्रिय गुडिया थी, जिसे प्यारसे टूसी कहा जाता था। माँने उसके बारेमे लिखा था : यह बच्ची उस वक्त पैदा हुई, जबकि हमारा बेचारा नन्हा एडगर मरा। हमारे हृदयमें उसके प्रति जो प्रेम और कोमल भाव थे, उन सबको हमने उसकी बहनके ऊपर स्थानातरित कर दिया, और दोनो बडी बहने माँकी तरह उसकी देखभाल करती हैं। साथ ही इतना प्यारके लायक, चित्र जैसा सुन्दर और स्वभावका मधुर बच्चा पाना मुश्किल होगा।...हम सब ऊँचे स्वरसे उसके सामने परियोंकी कहानियाँ पढते-पढते थक जाते हैं, लेकिन हमारी बुरी गति हो, अगर नीली चिड़िया या नन्हे हिमश्वेत...की कहानीका एक शब्द भी छोड जायें। इन परियोंकी कहानियोंके सुननेके कारण लड़कीने जर्मन सीख लिया और वह उसे अत्यन्त शुद्ध तथा

व्याकरणानुसार बोलती है, और साथ ही अँग्रेजी भी यों ही सीख गई है। बच्ची कार्लको बहुत प्रिय है। उसकी हँसी, उसकी मीठी-मीठी बातें बापकी सारी परेशानियाँ दूर कर देती हैं। फिर जेनी अपने अनुरक्त मित्र तथा नौकरानी लेनचेन की तारीफ करती अपने पतिकी बातको दोहराती है: वह कहेगा, कि इसके (लेनचेन) के रूपमें तुम्हें एक भारी निधि मिली है। वह सोलह वर्षोंसे हमारे साथ है, हमारे जीवनके उतार-चढ़ावका उसने बड़ी बहादुरीसे सामना किया।

हालेंडमें मार्क्सका अभियान सफल रहा। वह वहाँ अपने चचा फिलिप मार्क्ससे मिले। फिर बर्लिन गये। इच्छा थी पार्टीका मुखपत्र निकालनेके लिये कुछ पैसा जमा करें। प्रशियाके तख्तपर अलहेल्म बैठा था, जिससे जनवरी १८६१में सार्वजनिक क्षमा प्रदानकी घोषणा की थी, जिसीके कारण मार्क्सको जर्मनी जानेका सुभीता मिला था। लाजेलने बर्लिनमें उनका स्वागत किया। बर्लिनमें मार्क्सको कोई आकर्षण नहीं मालूम हुआ। लाजेलने स्वयं पत्र निकालनेका सुझाव रक्खा और सम्पादकके लिये अपने साथ मार्क्स और एंगेल्सको रखनेका भी प्रस्ताव किया। लेकिन, मार्क्सका लाजेलपर उतना विश्वास नहीं था। प्रशियामें उदारवादका दिखावा चाहे कितना ही किया जाय, लेकिन वह मार्क्स जैसे आदमीको अपने भीतर पचा नहीं सकती थी। लाजेलने भी कोशिश की कि मार्क्सको फिर प्रशियन नागरिकता का अधिकार मिल जाये, लेकिन सरकारके जवाब देह मंत्रियोंने उसे स्वीकार नहीं किया।

बर्लिनसे प्रस्थान करके मार्क्स अपने मित्रोंसे मिलने कोलोन गये, खासकर बुढ़िया माँसे भेंट करना वह जरूरी समझते थे। मईके आरम्भमें फिर वह लंदन लौट गये। बर्लिनमें रहते वीनाके पत्र "डी प्रेस" से उन्होंने बातचीत की, और पत्रने प्रत्येक लेखका एक पौंड और प्रत्येक रिपोर्टका दस शिलिंग देना स्वीकार किया। इसी समय "न्यूयार्क ट्रिब्यून" से भी सम्बन्ध बेहतर हो गया। इस तरह रुपयोंकी आमदनी कुछ बढ़ी जरूर, लेकिन पुराने कर्जे पूरी तरह अदा नहीं हो सके। बीमारी और जर्मनीकी यात्रामें खर्च भी अधिक हो गया।

१८६२ ई० में हालत बेहतर होनेकी जगह वह और खराब हो गई। "डी प्रेस" से जो आशा थी, वह पूरी नहीं हुई। मार्चमें मार्क्सने एंगेल्सको

लिखा था : "मुझे इसकी अधिक पर्वाह नहीं है, कि वह सबसे अच्छे लेखों... को नहीं छापते, लेकिन आर्थिक तौरसे मेरे लिये यह बर्दाश्तसे बाहरकी बात हो जाती है, जब कि वह चार या पाँच लेखोंमें सिर्फ एकको छापते और उसीका पारिश्रमिक देते हैं। जिससे पैसा पाँतीवाले लेखकके दर्जेसे भी मुझे नीचे गिरना पड़ता है।" इसी साल "न्यूयार्क ट्रिब्यून" से सम्बन्धविच्छेद हो गया, कारण शायद अमेरिकाका गृह-युद्ध था। यद्यपि यह युद्ध मार्क्सके लिये वैयक्तिक घाटेका कारण हुआ, लेकिन राजनीतिक सम्भावनाओंके बढ़ जानेके कारण वह फिर अपने वैयक्तिक कष्टोंको भूल गये। मार्क्सने अमेरिकन गृह-युद्धके बारेमें उत्तरी राज्योंके अंतिम विजयपर अपना पूरा विश्वास प्रकट किया, और सितम्बर में अपने मित्रको लिखा था, "जहाँ तक यकियों (अमेरिकनों) का सम्बन्ध है, मैं अब भी पूरी तरह विश्वास रखता हूँ, कि वे (उत्तरी राज्य) विजयी होंगे। जिस तरह वह लड़ाइयाँ लड़ रहे हैं, वह इतने दिनों तक धोखा-धड़ीसे शासन करनेवाले बूर्ज्वा-गणराज्यके लिये बिल्कुल स्वाभाविक है। दक्षिणी रियासतोंका शासन कुलीनशाही है और युद्ध करनेके लिये कुलीनशाही ज्यादा अनुकूल है, खास करके दक्षिणी रियासतोंकी कुलीनशाही, जहाँपर कि सारा उत्पादक श्रम निगर (हब्शी) करते हैं, और चालीस लाख गोरे पेशेसे लुटेरे हैं। लेकिन यह सब होते हुये भी मैं अपने सिरकी बाजी लगानेके लिये तैयार हूँ, कि अन्तमें इन पट्ठोंको सबसे बुरे दिन देखने होंगे।" मार्क्सका विचार अन्तमें सच निकला।

आर्थिक कठिनाइयाँ बहुत बढ़ चुकीं थीं, पानी नाक तक आ गया था। मार्क्सने ४८ वर्षकी उमरमें किसी रेलवे कम्पनीकी नौकरी भी करनी चाही थी, लेकिन लिखावट अच्छी न होनेके कारण उसमें उन्हें सफलता नहीं मिली। आर्थिक अवस्था जैसे-जैसे खराब होती गई, वैसे-वैसे मार्क्सको बार-बार बीमार पड़ना पड़ा। पुरानी पेटकी बीमारीके अतिरिक्त अब जहरबादके फोड़ेका भी आक्रमण हुआ, जो कि कई वर्षों तक पिंड छोड़नेके लिये तैयार नहीं था। बीबीका स्वास्थ्य भी बिल्कुल खराब हो चुका था। लड़कियोंके पास कपड़ा और जूता नहीं था, कि स्कूल पढ़नेके लिये जायें। उनकी सहेलियाँ उस वक्त

इंगलैंडकी महान प्रदर्शनी देखने जाया करती थीं, लेकिन अपनी गरीबीके कारण मार्क्सकी लड़कियाँ मन मारे घरमें बैठी रहतीं। बड़ी लड़की लौरा अब इस अवस्थाकी हो गई थी, कि अपनी स्थितिको समझे, इसलिये वह घुल-घुलकर मरी जा रही थी, बाप-माँको बतलाये बिना एक बार उसने रंग-मंच पर जानेके लिये शिक्षा लेनी भी शुरू की थी।

अन्तमें अवस्था यहाँ तक बुरी हो गई, कि मार्क्सने अपना सारा फर्नीचर घरके मालिकके लिये छोड़ देनेका निश्चय किया और यह भी कि अपने कर्ज देनेवालोंको दिवालिया होनेकी सूचना दे दें, दोनों लड़कियोंको अपने मित्रोंके द्वारा किसी परिवारमें गवर्नेस रखवा दें, अनुरक्त लेनशेन देमोथको कोई और काम दिलवा दें और अपनी छोटी लड़की तथा बीबीके साथ गरीबोंके लायक किसी कोठरी में चले जायँ।

लेकिन, एंगेल्सने मार्क्सके इस निश्चयको पूरा होने नहीं दिया। १८६० ई० के वसन्तमें एंगेल्सके पिता मर गये और एरमेन तथा एंगेल्स फर्ममें उनको अच्छा स्थान मिल गया, जिससे आगे वह पार्टनर भी बन सकते थे। लेकिन, इसी समय अमेरिकन गृह-युद्धके हो जानेके कारण व्यवसाय की हालत अच्छी नहीं रही और उन्हें स्वयं अपना खर्च कम करना पड़ा। तो भी एंगेल्सने मार्क्स की सहायता करके उनको उनके इरादेसे बाज रक्खा। १८६३ ई० के आरंभिक महीनोंमें एंगेल्सको भी एक भारी दुःखका सामना करना पड़ा। दस वर्षोंसे वह एक आइरिश तरुणी मेरी बर्न्सके साथ पति-पत्नीके तौरपर किन्तु समाजके मुहर बिना रहते आये थे। इसी साल मेरी मर गई। एंगेल्सको भारी मानसिक आघात लगा। मार्क्सको इसके बारेमें लिखते हुये उन्होंने कहा था : "मैं अपने भावोंको बिल्कुल ही वर्णित नहीं कर सकता। बेचारी लड़की पूरे दिलसे मुझे प्यार करती थी।" एंगेल्सको आशा थी, कि मार्क्सके लिये सान्त्वना अधिक शब्दोंमें प्रकट करेंगे, लेकिन जो शब्द जवाबमें मिलें, वह थोड़े और निर्बल थे, जिसके बाद घरकी आर्थिक कठिनाइयोंका रोना था। एंगेल्सको मार्क्सका यह बर्ताव बुरा लगा। एंगेल्सने भी पत्रका जवाब कुछ देरसे ही देना अच्छा समझा और मार्क्सने भी कुछ और दिल ठंढा हो जाने तक अपने मित्रको लिखनेकी

जल्दी नहीं की। फिर मार्क्सने चिट्ठी लिखते वक्त "हृदयहीन होने" से इन्कार करते हुये यह स्वीकार किया, कि मैंने उचित सहानुभूति प्रकट करनेमें कोताहीसे काम लिया। एंगेल्सको सबसे बड़ी शिकायत यह थी, कि श्रीमती मार्क्सने उनके इस दुःखमें एक भी सहानुभूतिका शब्द नहीं लिख भेजा। इसपर मार्क्सने लिखा : "स्त्रियाँ विचित्र जन्तु हैं, उनमें अत्यन्त बुद्धिमान भी। सबेरे मेरी स्त्री मेरीकी मृत्यु और तुम्हारे दुःखके लिये इतनी रो रही थी, कि वह अपने दुर्भाग्य को बिलकुल भूल गई, जो कि उसी दिन ऊपर पड़ा था, लेकिन शामको वह अनुभव करने लगी, मानो तब तक दुनियामे कोई जानता ही नही, दुःख क्या है, जब तक कि घरमें कर्ज उगाहनेके लिये अमीन न आ जाय, या बच्चोंके खिलानेकी चिन्ता न हो।"

एंगेल्सने अपने सारे भावोंको भूलकर तुरन्त लिखा : "कोई आदमी वर्षों तक एक स्त्रीके साथ रहनेके बाद, हो नहीं सकता, कि वह उसकी मृत्युपर भारी दुःख न अनुभव करे। मैं अनुभव करने लगा, कि उसके साथ मेरी जवानी भी कब्रमें दफना दी गई। जिस समय मैंने तुम्हारा पत्र पाया, उस समय तक अभी वह दफनाई नहीं जा चुकी थी। साफ कहूँ, तुम्हारा पत्र एक सप्ताह तक मेरे सिरमें चक्कर काटता रहा, मैं उसे भुला नही सकता था। खैर, तुम्हारे अन्तिम पत्रने सब-ठीक कर दिया। और मै दिलसे अत्यन्त प्रसन्न हूँ, कि मैंने मेरीके साथ अपने सबसे पुराने और सबसे अच्छे मित्रको नहीं खो दिया।" यह प्रथम और अन्तिम मनमुटाव था, जो कि इन दोनो मित्रोंके सारे जीवनमे एक दूसरेके प्रति देखा गया।

एंगेल्सने दौड़-धूप करके एकसौ पौंड इकट्ठा करके दिया, जिससे मार्क्सकी स्थिति कुछ सुधरी और उन्हें अपने घरको छोड़ दूसरी जगह जानेके लिये मजबूर नहीं होना पड़ा। इस प्रकार १८६३-ई० का साल किसी तरह गुजर गया, जिसके अन्तमें मार्क्सकी माँ मर गई, लेकिन माँसे शायद बहुत थोड़ा ही बहुत दायभागका मिला। हाँ, विलहेल्म वोल्फने आठ या नौ सौ पौंड मार्क्सके लिये छोड़े थे, जिससे उनको बड़ी सहायता मिली। विलहेल्म वोल्फ १८६४ ई० मे मरा, जिसका मार्क्स और एंगेल्सको बहुत दुःख हुआ। मरते समय

वोल्फकी अवस्था अभी ५५ साल हीकी थी। वह कुछ ही वर्षोंके निर्वासित जीवनके बाद मैन्चेस्टरमें कुछ कारबार करने लगा था और मरनेसे कुछ ही समय पहले बापकी वरासतमें से भी कुछ सम्पत्ति उसे मिली थी। वोल्फने अपने धनका उपयोग इससे बढ़कर अच्छा नहीं समझा, कि उसे अपने गुरुके चरणोंमें भेंट कर दें। मार्क्सने पीछे अपने अमर ग्रंथ "डास कपिटाल" के प्रथम भागको "अविस्मरणीय मित्र, और सर्वहाराके बहादुर, ईमानदार और भद्र अग्रदूत" कहकर विल्हेल्म वोल्फको समर्पित किया था। १८६३ ई० के साथ मार्क्सके जीवनसे सारी कठिनाइयाँ और चिन्तायें यद्यपि समाप्त नहीं हो गईं, लेकिन वह फिर उसी मात्रामें कभी नहीं लौटीं। इसका एक कारण यह भी था, कि सितम्बर १८६४ ई० में एंगेल्स अब अपने फर्ममें पार्टनर हो गये थे और तबसे वह और अधिक परिमाणमें लगातार सहायता देने लगे थे।

५. लाजेल आन्दोलन

जुलाई १८६२ ई० में लाजेल लन्दन आया। यह वह समय था, जब कि मार्क्स-परिवार भीषण आर्थिक कष्टमें पड़ा हुआ था, तो भी मार्क्स-पत्नी शिष्टाचार-प्रदर्शन करनेमें किसी तरह पीछे नहीं रहना चाहती थीं। लाजेलको घरकी स्थितिका कोई पता नहीं था। कई सप्ताहों तक लाजेलकी मेहमानी होती रही और जानेके समय ही उसे वास्तविकता का पता लगा। फिर उसने वर्षके अन्तमें पन्द्रह पौंड देनेकी बात कहते हुये यह भी बतलाया कि एंगेल्स या किसी दूसरे की जमानत पर मेरे खातेसे मार्क्स हुण्डी भी ले सकते हैं। मार्क्सने बोर्कहाइम की सहायतासे चार सौ थालर लेना चाहा, इस पर लाजेलने एंगेल्सकी जिम्मेवारी चाही, जिसका साफ मतलब था कि वह मार्क्स पर विश्वास नहीं करता है। मार्क्सको यह बहुत बुरा लगा, लेकिन एंगेल्सने उन्हें समझाया और जमानत देना स्वीकार कर लिया। उस समय तो लेनदेन हो गया, लेकिन अन्तमें यही मार्क्स और लाजेलमें गलतफहमीका एक भारी कारण बना। राजनीतिक मतभेद भी उठ खड़ा हुआ था, जिसके कारण १८६३ ई० के आरम्भमें मार्क्सने लाजेलके साथ पत्र-व्यवहार बन्द कर दिया था। लाजेल

अपने गुरु मार्क्सकी हरेक बातका मूल्य समझता था, लेकिन अपनी कमजोरियों-के कारण वह उन्हें असन्तुष्ट कर बैठा। मार्क्स अतिमानव नहीं थे—और दुनियामें ढोंगी ही अतिमानव हो सकते हैं। मार्क्स साफ कहते थे, कि मानवके लिये सम्भव कोई भी बात मेरे लिये पराई नहीं है। लाजेल मार्क्स और एंगेल्स-के जीवनमें प्राप्त अनुयायियोंमे अत्यन्त चमत्कारिक व्यक्ति था, लेकिन वह अपने गुरुद्वयके मौलिक सिद्धान्त—ऐतिहासिक भौतिकवाद—को अच्छी तरह कभी न समझ पाया। हेगेलके बारेमे कहा जाता है, कि शैय्या पर पड़े हुये उसने अपने शिष्योंके बारेमें कहा था उनमेंसे केवल एकने मुझे समझा, और उसने भी गलत समझा। लाजेलने मार्क्सके मूल्य-सिद्धान्तके एक ही अंशको स्वीकार किया, जो कि उसके वैधानिक और दार्शनिक दृष्टिसे दुनियाके देखनेके लिये अनुकूल था: आम सामाजिक श्रम-समय—जो कि मूल्यका निर्णय करता है, अपनी मेहनतकी पूरी उपज कमकरको प्राप्त करनेके लिये आम सामाजिक उत्पादन आवश्यक कर देता है। लेकिन मार्क्सके लिये मूल्य-सिद्धान्त उत्पादनके पूँजीवादी ढंगकी सभी पहेलियोंका हल था। मूल्य और अतिरिक्त मूल्यके निर्माणकी ऐतिहासिक प्रक्रिया के तौरपर यह कुंजी थी, जोकि अनिवार्यतया समाजकी पूँजीवादी व्यवस्थाको समाजवादी व्यवस्थामे बदलकर रहेगी। लाजेल उस भेदको नहीं देख सका, जो कि उपयोग-मूल्यको पैदा करनेवाली श्रम-शक्ति और विनिमय-मूल्यको पैदा करनेवाली श्रम-शक्तिके परिणामस्वरूप होती है। श्रमका सौदेके रूपमें मौजूद उसका दोहरा स्वरूप मार्क्सके लिये "मौलिक बात" थी, जिसके ऊपर ही राजनीतिक अर्थशास्त्रका समझना निर्भर करता था।

मार्क्स और लाजेल दोनोकी मृत्युके बाद एंगेल्सने लाजेलके ढगकी सराहना की थी। १८८६-८७ ई० में युक्तराष्ट्र अमेरिकामें सर्वहारा-आन्दोलन बढ़ने लगा किन्तु उसके प्रोग्राम गलत-सलत थे। उसी समय एंगेल्सने अपने मित्र सोर्गको लिखा था: "आन्दोलनमें नये-नये दाखिल होनेके लिये किसी देशमें सबसे पहला बड़ा कदम जो उठाना है, वह है कमकरोंका एक स्वतन्त्र राजनीतिक दलके रूपके संगठित करना, जैसे भी हो उसके लिये एक निश्चित कमकर पार्टी तैयार करना।" आगे एंगेल्सने बतलाया, कि ऐसे दलने जिस प्रोग्रामको

स्वीकार किया है, अगर उसमें गड़बड़ी, बहुत त्रुटियाँ हों, तो भी कोई पर्वाह नहीं, क्योंकि यह अनिवार्य है और वह दोष कुछ समयके लिये ही होते हैं।" इसी समय अमेरिकाके दूसरे पार्टी-मित्रोंको भी उन्होंने लिखा था, कि मार्क्स-वादी सिद्धान्त कैथलिक चर्चकी तरह निर्भ्रान्त होनेका दावा नहीं करता, बल्कि वह विकासकी प्रक्रियाकी व्याख्या करता है। मजूर-वर्गके प्रथम सक्रिय करनेके समय विचारोंकी गड़बड़ी अनिवार्यतया होती है। उसे और भी जटिल बनानेके लिये ऐसे विचारोंको कमकरोंके गलेके नीचे नहीं उतारना चाहिये, जिन्हें कि उस समय वह पचा नहीं सकते और जिन्हें पीछे वह स्वयं अपनी इच्छासे स्वीकार करेंगे।" अपनी बातोंके समर्थनमें एंगेल्सने अपने और मार्क्सके जर्मनीके कार्यकारी वर्षोंके समयके मनोभावको बतलाते हुये कहा: "१८४८ ई० के वसन्तमें हम जर्मनी लौटकर जनतंत्रतावादी पार्टीमें शामिल हो गये, क्योंकि मजूर-वर्गके कानोंमें अपनी बात पहुँचानेका वही एकमात्र साधन थी। यद्यपि हम पार्टीके अत्यन्त आगे बढ़े हुये अंग थे, लेकिन तो भी हम उसके एक हिस्से ही थे" "नोये राइनिशे जाइटुंग" जिस तरह कम्युनिस्ट घोषणापत्रका जिक्र करनेसे अपनेको बचाता रहा, उसी तरह एंगेल्सने अमेरिकन साथियोंको भी बतलाया, कि उसे तुरन्तका अपना शास्त्र तुम्हें नहीं बना लेना चाहिये, क्योंकि मार्क्सके दूसरी कितनी ही साधारण कृतियोंकी तरह अमेरिकन कमकरोंके लिये इस समय उनका समझना मुश्किल है। कमकर पहले-पहल आन्दोलनमें आ रहे हैं। अब भी वह सैद्धान्तिक बातोंमें बेसूल-सालके तथा अत्यन्त पिछड़े हैं: हमें प्रतिदिनके व्यावहारिक आन्दोलनको आगे बढ़ानेके लिये सहारा लेना चाहिये, जिसके लिये हमें एक बिल्कुल नये साहित्यकी आवश्यकता है। जब एक बार अमेरिकन कमकर थोड़ा बहुत ठीक रास्तेपर चल पड़ेंगे, तो घोषणापत्र उनपर प्रभाव डाले बिना नहीं रहेगा लेकिन इस समय बहुत ही कम कमकरोंपर प्रभाव डाल सकेगा।

लाजेलका मतभेद अपने गुरुओंसे रहा, लेकिन ३ सितम्बर १८६४ को लाजेलकी मृत्युकी खबर पाकर फ्राइलिग्रथने जब एंगेल्सको ३ सितम्बर १८६४ को उसके बारेमें तार दिया, तो दूसरे ही दिन एंगेल्सने जवाब दिया: "तुम

समझ सकते हो, कि इस खबरने मुझे कितना हैरान कर दिया। निजी तौरसे लाजेल कुछ भी रहा हो, साहित्यिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोणसे कुछ भी रहा हो, लेकिन राजनीतिक तौरसे वह निश्चय ही जर्मनीके अत्यन्त बढ़िया दिमागो मेंसे एक था। हमारे लिये इस समय वह अत्यन्त अनिश्चित मित्र था और यह भी बहुत कुछ निश्चित है, कि भविष्यमें वह निश्चित शत्रु होता, लेकिन जो कुछ हो, यह देखकर हमें बहुत कष्ट हो रहा है, कि चरमपंथी दलके कम या बेशी सक्षम पुरुषोंको जर्मनी किस तरह नष्ट कर रही है। कारखानेवालो और प्रगतिशील सूअर कितना आनन्द मना रहे होंगे।—आखिर, जर्मनीमें लाजेल ही एक ऐसा आदमी था, जिससे वह डरा करते थे।

मार्क्सने कुछ दिनों बाद ७ सितम्बरको लिखा था: "पिछले कुछ दिनों लाजेलकी मृत्यु मुझे बडी बुरी तरहसे परेशान कर रही है। आखिर, वह पुराने गारदोंमेंसे एक था और हमारे शत्रुओंका शत्रु: जो सब कुछ होते भी मुझे इसका बहुत अफसोस है, कि पिछले कुछ वर्षोंमे हमारे सम्बन्ध अच्छे नहीं थे, यद्यपि दोष उसका था।" कौंटेस हाट्जफेल्टके पास सहानुभूतिका पत्र लिखते हुये मार्क्सने कहा था: वह युद्धमें अचिलेसकी तरह तरुण मरा। कुछ सालो बाद लाजेलके उत्तराधिकारी श्वाइट्जेरको पत्र लिखते हुये मार्क्सने कहा था: लाजेलकी सेवा अमर है।

अध्याय १४

प्रथम इन्टर्नेशनल (१८६४ ई०)

१. इन्टर्नेशनलकी स्थापना

प्रथम इन्टर्नेशनलकी स्थापनाके बारेमें मार्क्स-एंगेल्स प्रतिष्ठानने जो सामग्री प्रस्तुत की है, उससे निम्न बातें मालूम होती हैं।

२१ फर्वरी १८६४ को एक कमेटीने पैरिसके कमकरोंको लन्दन-विश्व-प्रदर्शनीमें अपना प्रतिनिधि भेजनेके लिये लिखा था। दो लाख कमकरोंने मिलकर दो सौ प्रतिनिधि चुने, जिनमेंसे पहला दल १६ जुलाईको और अन्तिम दल १५ अक्तूबर १८६२ को पैरिससे लन्दनके लिये रवाना हुआ। "वर्किंग मैन" (कमकर मनुष्य) पत्रकके सम्पादकके सुझाव पर फ्रेंच कमकरोंके स्वागतके लिये जुलाईमें लन्दनमें एक कमेटी बनाई गई। ५ अगस्तको वहाँके फ्रीमेसन हालमें एक बैठक हुई, लेकिन बूर्ज्वा बैठक होनेके कारण लन्दनके मजदूर परिषद् (ट्रेड कौंसिल) ने उसमें भाग नहीं लिया। फ्रेंच-प्रतिनिधियोंमेंसे कुछ ने, जिसमें इमारती कमकर तोलें भी शामिल था, लन्दनकी मजदूर सभाओंसे सम्बन्ध स्थापित किया। फ्रेंच-प्रतिनिधियोंके दो टुकड़े हो गये, जिनमें बोनापार्ती दलके विरोधी अलग हो गये, तोलें आदि इसीमें थे। २ जुलाई १८६३ को सेन्ट जेम्स हालमें एक सभा हुई, जिसमें लन्दन मजदूर सभाओ एवं अ-बोनापार्ती फ्रेंच कमकरोंके प्रतिनिधि शामिल हुये। २३ जुलाईमें लन्दन-मजदूर सभाने फ्रेंच-प्रतिनिधियोंके साथ ओल्डवेलीके "बेल्इन" (घंटासराय) में एक अधिवेशन किया। पाँच सदस्योंकी एक कमेटी नियुक्त की गई, जिसे फ्रेंच कमकरोंके पास अपील तैयार करनेका काम सौंपा गया। १० नवम्बरको "बैल इन"की दूसरी बैठकमें यह अभिभाषण (अपील) "स्वीकार किया गया, जो ५ दिसम्बर १८६३ के मधुच्छत्र" * में प्रकाशित हुआ। फ्रेंच कमकरोंका जवाब आनेमें आठ महीने लगे। जवाबको सेन्ट मार्टिन हालकी एक सार्वजनिक सभामें

* Beehive

२८ सितम्बर १८६४ को पढ़ा और उसपर बहस की गई। मार्क्स उस समय मचपर मौजूद थे। लेकिन उन्होंने उसमें भाषण द्वारा भाग नहीं लिया। मार्क्सने एकेरियसको बोलनेके लिये प्रस्ताव किया। एक अस्थायी कमेटी चुनी। गई, जिसमे जर्मन कमकरोंकी ओरसे प्रतिनिधित्व करने के लिये एकेरियस और मार्क्स चुने गये। इसी सभामें अंग्रेज और फ्रेंच अभिभाषणोंके आधारपर, सूचना और बहसके लिये इन्टर्नेशल एसोसियेशन को एक अतर्राष्ट्रीय सगठनके तौरपर निर्माण करनेका निश्चय किया गया। इस एसोसियेशनके नियमोपनियम तैयार करनेके लिये जो सबकमेटी बनी उसमे मार्क्स भी रक्खे गये। नवम्बर, १९१८ के बाद आस्ट्रियन पुलिसके दस्तावेज कागज पत्रोके देखनेपर पता लगा, कि जार्ज एकेरियसने आस्ट्रियन पुलिसको जेनरल कौसिलकी गुप्त रिपोर्टें भेजी थीं। मार्क्सने उस समय भी उसपर सन्देह प्रकट किया था।

इस प्रकार इन्टर्नेशनल वर्किंग मेन्स एसोसियेशन (अन्तर्राष्ट्रीय कमकर सभा) लन्दनके सेन्ट मार्टिन हालकी एक बड़ी सभामें लाजेलकी मृत्युके कुछ सप्ताहों बाद २८ सितम्बर १८६४ को स्थापित किया गया। इन्टर्नेशनलका सर्वहाराके संघर्षमे बहुत ऊँचा स्थान है। शोषणमें कोई हाथ न रखने तथा सारी शोषितों को स्वतन्त्र करनेकी स्वाभाविक भावनाके कारण सर्वहारामें अन्तर्राष्ट्रीय वैमनस्य और झगड़ेके भावोंके पैदा होनेका कारण नहीं है, इसलिये खुले और साफ दिलसे यदि किसी वर्गका अन्तर्राष्ट्रीय संगठन एक ही उद्देश्यके लिये हो सकता है, तो सर्वहारा ही का। और यह प्रथम इन्टर्नेशल दुनियाके सर्वहारों का इस तरहका पहला सगठन था। यह देख ही चुके हैं, कि फ्रासके दो लाख कमकरोंने अपने प्रतिनिधियोंके चुननेमे भाग लिया था, इसलिये इन्टर्नेशनल की स्थापनाके विचार आरम्भ ही से बहुत व्यापक थे। उत्पादनका पूँजीवादी तरीका विरोधका कारण नहीं, बल्कि उसका स्वरूप ही है, वह आधुनिक राज्यों को बनाने और बिगाड़ने दोनोका काम करता है। सौदेके फैलाव और बाजारों के विस्तारके लिये एक ओर वह राज्योंकी सीमाओंको नष्ट करता है, तो दूसरी ओर छोटे राज्योकी सीमाओंको नष्ट कर उन्हें नये रूपमे सगठित करता है। व्यापारिक प्रतियोगिता और बाजारोंकी छीना-झपटीके कारण वह राज्योंमे भीषण

वैमनस्य और संघर्ष पैदा करता है। व्यापक परिमाणमें इतने बड़े युद्धों को कराना उसीका कामहै। जब तक उत्पादनका पूँजीवादी ढंग मौजूद रहेगा, जब तक बढ़ती हुई टेक्नीकके साथ कल-कारखाने केवल नफेके लिये बाजारके वास्ते भारी परिमाणमें माल पैदा करते रहेंगे, तब तक लड़ाइयोंसे मुक्ति नहीं हो सकती; तथा मानव भ्रातृभाव केवल जीभसे कहनेकी बात रहेगी। बड़े पैमाने के उद्योग-धन्धे एक ओर शान्ति और स्वतन्त्रताके गीत गाते हैं, तो दूसरी ओर राष्ट्रोंको नयेसे नये हथियारोंसे सज्जित होकर खूनी लड़ाइयोंके लिये तैयार करते हैं।

दुनियामें युद्ध और अशान्तिका कारण यह विरोध तभी नष्ट होगा, जब कि उत्पादनका यह ढंग खतम हो जायेगा। सर्वहारा अपनी मुक्तिका प्रयत्न अपनी राष्ट्रीय सीमाओंके भीतर ही करते हैं, लेकिन सभी सर्वहारे एक नावमें बैठे हुये हैं, सबको एक तरहसे शोषणसे मुक्त हो स्वच्छन्द और सुखी जीवन बितानेकी लालसा है, और सो भी लाभ-शुभके आधार पर नहीं; इसलिये सर्व-हारोंके राष्ट्रीय संगठनोंके अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों में परिणत होनेमें इसके सिवाय कोई भारी रुकावट नहीं है, कि पूँजीपतियोंके राष्ट्रीय दलाल सर्वहाराका नेतृत्व करते उन्हें भूल-भुलैया में डाल अपने उद्देश्यसे दूर रखते हैं—जैसा कि इंगलैंड की मजदूर पार्टी और अमेरिकाके मजदूर-संगठन कर रहे हैं। लेकिन, सर्वहारा के लिये मुक्ति-का रास्ता अपने अन्तर्राष्ट्रीय वर्ग-सहयोगसे ही होकर जाता, इसलिये यह गुमराह करने वाले चिरकाल तक सफल नहीं हो सकते। सर्वहारा की अन्तर्राष्ट्रीय भावनाको पूँजीवादी और उनके समर्थक राष्ट्रीयता-विरोधी बत-लाते हैं। वह कहते हैं, कि अन्तर्राष्ट्रीयतावादी अपने दिलमें कभी राष्ट्रीय भावना नहीं रख सकता। विरोधोंके ही समागमको वह अपने भीतर चारों ओर देखते हैं, इसीलिये उनको यह समझमें नहीं आता, कि सच्ची राष्ट्रीयता और अन्तर्राष्ट्रीयताके भावोंमें कोई विरोध नहीं है। मानव-बंधुताका अपने देश-भाइयोंके प्रेमके साथ कोई विरोध नहीं है। अगर इस तरहका भाई-चारा न हो, तो एक देशके सर्वहारोंको दबानेके लिये दूसरे देशके सर्वहारोंको उनके मालिक इस्तेमाल कर सकते हैं।

कम्युनिस्ट घोषणा पत्र ने दुनिया भरके सर्वहारोंको एक हो जानेका सन्देश दिया था, इसलिये यदि उसके प्रकाशित होनेके सोलह वर्ष बाद इटर्नेशनलकी स्थापना हो, तो यह कोई विचित्र बात नहीं थी। घोषणाके प्रकाशित होनेके आस-पास ही फ्रांसमें क्रान्ति, इंगलैंडमे चार्टिस्ट-आन्दोलन जैसा जबर्दस्त संघर्ष, और जर्मनी तथा इतालीमें राष्ट्रीय स्वतन्त्रताके लिये सशस्त्र विद्रोह हुये। उसके बाद ही सर्वहारा एक स्वतन्त्र शक्तिके तौर पर युद्धके मैदान में उतरे। सभी जगह यह संघर्ष असफल रहे, लेकिन उसी अर्थमें, जिस तरह की प्रथम साल बढ़कर जमीकन्द अपनेको घरतीके भीतर सडा असफल सा जान पड़ता है, पर, अगले साल वह और अधिक शक्ति दिखलाते हुये दूना-तिगुना रूप धारण करता है, सर्वहारोका कोई प्रयत्न विफल नही कहा जा सकता, बल्कि यह असफलतायें उसको आगेके लिये और शक्ति प्रदान करती हैं, अपने भूलोंसे सीख लेनेका मौका देती हैं। फ्रांसमे क्रान्तिके असफल होनेके बाद कमकर-वर्गमे जो निराशा और अवसाद पैदा हुआ, उसके कारण, समूह रूपेण कुछ करना असम्भव था। लेकिन, अपने विरोधियोके प्रति तीव्र रोष तो उनमें था ही। उनके एक भागको लुई ब्लाकने अपनी ओर खीचा। उसके सामने कोई वास्तविक समाजवादी प्रोग्राम नहीं था। वह आतंकवादीके तौर पर षड्-यंत्र और अतिसाहस द्वारा राजशक्ति पर अधिकार करना चाहता था। प्रूधों भी कमकरोंको उटोपियन हवाई किला दिखलाकर वास्तविक संघर्षसे पथभ्रष्ट करना चाहता था। "१८वीं बूमेरमे" मार्क्सने लिखा था, कि किस तरह प्रूधों का आन्दोलन पुराने संसारको बदलनेके वास्तविक सामुदायिक प्रयत्नोको छोड वैयक्तिक प्रयत्न और हृदय-परिवर्तन द्वारा सर्वहाराको मुक्त करना चाहता था—जैसा कि उससे सौ वर्ष बाद आज भी कुछ गाधीवादी करना चाहते हैं, चाहे वह प्रयत्न तजर्बे द्वारा हजार बार असफल साबित हुये हो। गुमराह करने के लिये, जनताकी क्षीण स्मृतिसे फायदा उठानेमे चालाक कब पीछे रह सकते हैं? इंगलैंडमें चार्टिस्ट-आन्दोलनके खतम हो जाने पर वहाँ भी फ्रांसकी तरह ही पथभ्रष्टता देखी गई। राबर्ट ओवेन जैसा महामना उटोपियन समाजवादी अब भी वहाँ जिन्दा था। यद्यपि वह बहुत बूढा था, किन्तु उसके अनुयायी क्रमशः

एक स्वतंत्र-विचारक धार्मिक सम्प्रदायके रूपमें परिणत हो गये, जैसा कि गांधी के अनुयायी आजकल दीख रहे हैं। ओवेनके अनुयायियोंके साथ-साथ किंग्स्ले और मौरिसका ईसाई समाजवाद भी फैलने लगा। अंग्रेज मजदूर सभायें भी अपने तुरन्तके हितोंकी ओर ही ध्यान देती, राजनीतिक संघर्षोंसे अलग रहना चाहती थीं। पीछे तो जब इंगलैंड के मजदूर-संगठनों और मजदूर-सभाओंकी बागडोर वहाँकी हिजड़ी भ्रष्ट नेताशाहीके हाथमें चला गया, तो उसने उन्हें और गुमराह करके दुनियाके सफल सर्वहारोंके विरोधी नहीं तो तटस्थ रखने का पूरा प्रयत्न किया।

लेकिन, जैसा कि मार्क्सने बतलाया है, आर्थिक संकट सर्वहाराको प्रबुद्ध तथा लड़ाकू बनानेके लिये मुख्य कारण होते हैं। जिस साल १८५७ ई० में भारतमें स्वतन्त्रता-युद्ध लड़ा जा रहा था, उसी समय दुनियामें एक जबर्दस्त व्यापारिक संकट आया था। उसके दो साल बाद १८६० ई० उत्तरी और दक्षिणी अमेरिकन राज्योंके गृह-युद्धने भी इस संकटमें आगमें घीका काम दिया। १८५७ ई० के व्यापारिक संकटने फ्रांसमें मजदूरोंको बेकार और किसानोंको अनाजकी सस्तीके कारण पामाल करना शुरू किया। इसे वह चुपचाप सह नहीं सकते थे। पूँजीवादी सरकारको भय लगा कि कहीं इस क्रोधाग्निकी बलि हम न चढ़ जायँ। ऐसे समय हमेशा पूँजीवादी भीतरसे लोगोंका ध्यान हटाने, तथा असाधारण राजनीतिक स्थिति पैदा करनेके लिये अपने विरोधमें लगनेवाली क्रांतिकी शक्तिको विदेशी युद्धमें डालनेकी कोशिश करते हैं। साथ ही बोनापार्ती सरकारने देशमें भी कमकरोंके भावोंको दमन द्वारा दबाना चाहा। यद्यपि उसने मजदूर-सभाओंके संगठित करनेकी अनुमति दे रक्खी थी, लेकिन वह कोई भी। राजनीतिक अधिकार देनेके लिये तैयार नहीं थी। राजनीतिक संगठनोंके विरोधी कानून बनाकर फ्रेंच सरकारने १८५३ से १८६६ ई० के बीचमें ३६०९ मजदूरोंको सजा दी, और ७४९ संगठनोंके ऊपर संगठन-विरोधी-कानूनका प्रयोग किया। फ्रेंच बुर्ज्वाजीने शाम और दाम दोनोंसे काम लिया—कैद किये हुये कम-करोंमें बहुतोंके दंड उसने माफ कर दिये, और १८६२ ई० में लन्दनमें

होनेवाली महान् प्रदर्शनीमें फ्रेंच कमकरों द्वारा प्रतिनिधियोंके भेजे जानेका समर्थ भी किया।

हम देख चुके हैं, कि फ्रेंच मजूरोंने अपने दो सौ प्रतिनिधि चुनकर लन्दन भेजे थे। इसके लिये एक सौ पचास पेशोंके पचास पोलिंग (वोट देने के) स्टेशन कायम किये गये थे। जो प्रतिनिधि लन्दन गये, उनकी यात्राका खर्च कुछतो चन्देसे पूरा किया गया और कुछ सरकारी और म्युनिसिपैलिटीके खजानेसे दिया गया—सरकारी खजाने और म्युनिसिपैलिटीमेंसे प्रत्येकने बीस-बीस हजार फ्राक प्रदान किये थे। इस उदारतासे फ्रासके बूर्ज्वा समझते थे, कि मजदूर हमारे कृतज्ञ होंगे। लेकिन, मजदूरोंने उनकी आशा पर पानी फेर दिया, जब कि १८६३ ई० के चुनावोंमे पेरिस मे सरकारी उम्मीदवारोंको केवल ८२ हजार वोट मिले, जब कि उनके विरोधियोंको १ लाख ५३ हजार—इससे पहले १८५७ ई० वाले चुनावमें सरकारी उम्मीदवारोंको १ लाख ११ हजार और उनके विरोधियोंको ६६ हजार वोट मिले थे। सगठन-विरोधी कानूननको ढीला करनेसे मजदूरोंके भावोंमें कुछ परिवर्तन आये, इसके लिये बोनापार्तने मई १८६४ में एक कानून बनाया। इंगलैडमे इस तरहका एक कानून १८२५ ई० मे ही पास हो चुका था। इंगलैंडके मजदूरोने, जब अधिक मजूरी और कामके घटेकी कमीकी मॉग की, तो वहॉके पूँजीपतियोंने फ्रास, बेल्जियम, जर्मनी और दूसरे देशोंसे सस्ती विदेशी श्रम-शक्ति (मजूरों) को ले आनेकी धमकी दी। इसी समय अमेरिकन गृह-युद्धके छिड जानेसे कपासकी आमदनी रुक गई और मैन्चेस्टर तथा लकाशायरके कपडेके कारखानोके मजदूरोंमें भारी बेकारी फैल गई। इगलैड प्रधान-मन्त्री पामर्स्टन नहीं चाहता था, कि अमेरिकन गृह-युद्धमे दास-प्रथाके जबर्दस्त हामी तथा सबसे अधिक प्रतिक्रियावादी दक्षिणी रियासतें हार खाये, इसलिये वह उनके पक्षमे होकर युद्धमें दखल देना चाहता था, लेकिन इसी समय सेन्ट जेम्स हालमे जान ब्राइटकी अध्यक्षतामे एक जबर्दस्त सभा हुई, जिसने पामर्स्टनके इरादेका जबर्दस्त विरोध किया। १८६४ ई० के वसन्तमे इतालीका मुक्तिदाता गेरीबाल्दी जब लन्दनमे आया, तो उसका जबर्दस्त स्वागत किया गया। इस प्रकार हम देख रहे हैं, कि कम-

करोंमें अन्तर्राष्ट्रीयताकी भावना जग रही थी। १८६२ ई० में महान् प्रदर्शनीके समय अँग्रेज कमकरों और फ्रेंच कमकर-प्रतिनिधियोंका जो मेल-मिलाप हुआ, वह उसी अन्तर्राष्ट्रीय भावनाका सूचक था।

जैसा कि हम बतला चुके हैं, २८ सितम्बर १८६४ को प्रोफेसर बीसली * की अध्यक्षतामें फ्रेंच प्रतिनिधियोंका स्वागत करनेके लिये लन्दनके सेन्ट मार्टिन हालमें एक सभा हुई। दोनों देशोंके कमकर वर्गने आपसमें भाईचारा स्थापित किया। इसी सभामें इन्टर्नेशनल (अन्तर्राष्ट्रीय) कमकर एसोसियेशन (सभा) के नियमोपनियम बनानेके लिये एक कमेटी बनाई गई, इसका भी जिक्र हम कर चुके हैं। इस कमेटीमें कार्ल मार्क्स भी सम्मिलित हुये थे, जिनका नाम तत्कालीन अखबारोंने सभी मेम्बरोंके अन्तमें छापा था। इस मीटिंगमें मार्क्सने सक्रिय भाग नहीं लिया था, लेकिन भाषण करनेवालोंमें उन्होंने इकेरियसका नाम दिया था। अभी मार्क्सको अपना वैज्ञानिक कार्य अधिक महत्वका मालूम होता था, तब भी अन्तर्राष्ट्रीय संगठनकी इस प्रथम भावनाको वह बिल्कुल महत्वहीन नहीं समझते। उसी समय उन्होंने वेडेमयर और अपने दूसरे मित्रोंको लिखा था : हालमें जो इन्टर्नेशनल कमकर-कमेटी बनाई गई, वह महत्वहीन बेमहत्वकी नहीं है। इसके अँग्रेज मेम्बर मुख्यतः मजदूर सभाओंके मुखिया हैं, अर्थात् लन्दनके मजदूर-स्वामी, जिन्होंने गेरीबाल्दीके स्वागतके लिये जबर्दस्त संगठन किया और सेंट जेम्स हालमें विशाल सभाकी, जिसने पामर्स्टन-को उत्तरी राज्योंके विरुद्ध लड़ाई घोषित करनेके इरादेसे बाज रक्खा। जहाँ तक फ्रांसीसियोंका सम्बन्ध है, कमेटीके मेम्बर बहुत महत्व नहीं रखते, लेकिन वह पेरिसके कमकरोंके साक्षात् प्रतिनिधि हैं। उन इतालियन एसोसियेशनोंसे भी सम्बन्ध स्थापित किया गया है, जिन्होंने कि हाल ही में नेपल्समें अपनी कांग्रेस की थी। यद्यपि वर्षोंसे मैं बराबर किसी संगठनमें भाग लेनेसे इन्कार करता रहा हूँ, लेकिन इस बार इसीलिये स्वीकार किया, कि यहाँ कुछ वास्तविक भलाइ करनेकी संभावना है।

---

* Beesly

मार्क्सका नाम कम महत्व समझकर अंग्रेज अखबारोंने कमेटीके मेम्बरोंकी सूचीके अन्तमें छापा था, लेकिन वही इस संगठनके प्रधान नेता बन गये और बिल्कुल स्वाभाविक रीतिसे यह इसीलिये हुआ, कि मजदूरोंके दर्शनका प्रधान-आचार्य और उनके संगठन और संघर्षके श्रेष्ठ पथ-प्रदर्शक वही हो सकते थे। कमेटीने नये मेम्बरोंको भी जोड़ा गया और इस प्रकार उनकी संख्या पचास हो गई। इनमे आधी सख्या अंग्रेज कमकरोंकी थी, बाकीमे सबसे मजबूत टोली जर्मनोकी थी, जिनमें मार्क्स, इकेरियस, लेस्नेर, लाखनेर, फ्लान्डर थे, जो सभी विलुप्त कम्युनिस्ट लीगके मेम्बर रह चुके थे। कमेटीमे फ्रासके ६ इतालीके ६, पोलन्द और स्वीजर्लैंडमेंसे प्रत्येकके २-२ मेम्बर थे। कमेटीने प्रोग्राम और नियमोपनियम बनानेके लिये एक सब-कमेटी नियुक्त की, जिसमे मार्क्स भी चुने गये, लेकिन बीमारी तथा निमत्रणोके पीछे पहुँचनेके कारण वह इस सब-कमेटीकी बैठकोंमें शामिल नही हो सके। सब-कमेटीने मार्क्सके बिना अपने कामको करना चाहा। मेजिनीके प्राइवेट-सेक्रेटरी मेजर वोल्फ, अंग्रेज बेस्टन और फ्रासीसी लुबेज कोशिश करके हार गये, पर काम करनेमे सफल नही हुये। अन्तमे मार्क्सको हस्तावल देना पड़ा। उनके दिमागमे तो यह सभी बाते पहलेसे ही सोची और स्पष्ट थीं। उन्होंने दूसरे मसौदेको बेकार और उनकी बातोसे पूरी तौरसे मुक्त कर मजदूर-वर्गके लिये एक अभिभाषण तैयार किया, जिसका ख्याल सेंट मार्टिन हालकी मीटिंगमें नहीं आया था। इस अभिभाषण द्वारा १८४८ ई० में प्रकाशित कम्युनिस्ट घोषणापत्रके बादके मजदूर-वर्गके इतिहास-पर प्रकाश डाला गया। इस अभिभाषणमे १८४८ ई० के बादके सोलह वर्षोंके मजदूर वर्गके इतिहासको भूमिकाके तौरपर रक्खा गया। सब-कमेटीने मार्क्सके तैयार किये अभिभाषणको तुरन्त स्वीकार कर लिया, हाँ केवल जहाँ-तहाँ अधिकार और कर्त्तव्य, सत्य, नैतिकता और न्याय जैसे कुछ वाक्य जोड़ दिये। लेकिन, जैसा कि एंगेल्सके पास भेजे अपने पत्रमें मार्क्सने लिखा था : मैंने इन शब्दों-को ऐसी जगह रख दिया है, कि जहाँ यह कोई नुकसान न कर सकते। मार्क्स-ने "उद्घाटन अभिभाषण और अस्थायी नियम तैयार किये थे, उन्हें कमेटीने भी बड़े उत्साहके साथ स्वीकार कर लिया। मार्क्सके इस अभिलेखकके बारेमें

पीछे प्रोफेसर बीसलीने घोषित किया था, कि मध्य-वर्गके विरुद्ध मजदूर-वर्गके पक्षका एक दर्जन पन्नोंमें इतना अत्यन्त जबर्दस्त और प्रभावशाली प्रतिपादन इससे पहले कभी नहीं लिखा गया। आरंभमें ही इसमें इस बातका उल्लेख किया गया था, कि १८६४ ई० के बीचके सोलह वर्षोंमें मजदूर-वर्गके दुःख और कठिनाइयाँ कम नहीं हुईं, यद्यपि इन्हीं सोलह वर्षोंमें औद्योगिक विकास और व्यापारिक प्रसार जितना हुआ, उतना पहले कभी नहीं देखा गया। अभि-भाषणमें अपनी बातकी पुष्टिके लिये सरकारी नील-पुस्तिकाओं और वित्त-मन्त्री (ग्लेड्सटन)के भाषणोंमें दिये हुये आंकड़ोंसे की थी। ग्लेडसटनके अनुसार "धन और शक्तिकी मतवाला बनानेवाली वृद्धि" का फायदा केवल सम्पत्तिवाले वर्गने उठाया। इसका एक ही अपवाद यह था, कि इंगलैंडके कमकरोंका एक बहुत छोटा सा भाग कुछ अधिक वेतन पाने लगा, यद्यपि चीजोंके दाम बढ़ जानेके कारण उसका वास्तविक मूल्य उतना नहीं बढ़ा, जितना कि दिखलाया जाता था। आगे कहा था : सभी जगह मजदूर-वर्गका भारी जनसमूह दुःखों और कष्टोंमें उससे कहीं अधिक गहरा और व्यापक रूपमें डूबा, जितने कि ऊपरी वर्गवाले सामाजिक स्तरमें ऊपर उठे। युरोपके सभी देशोंको देखनेसे इस अकाट्य सत्यसे कोई पक्षपातहीन शोधकता इन्कार नहीं कर सकता। इसे सिर्फ वही लोग इन्कार कर सकते हैं, जिनका कि दूसरोंके दिलमें धोखेवाली आशा जगानेमें अपना स्वार्थ सधता है। मशीनों की पूर्णता और उद्योग तथा कृषिमें साइन्सके उपयोग, अथवा संचार-यातायातके साधन और उपाय नये उपनिवेश और प्रवासन, नये बाजारों पर विजय अथवा मुक्त-व्यापार, ये सभी बातें मिलकर भी मजूर-वर्गके कष्टको खतम करनेमें सफल नहीं हो सकतीं। बल्कि इसके विरुद्ध स्थितियोंके झूठे आधारपर श्रमकी सृजनात्मक शक्तिका हरेक नया विकास सामाजिक विरोधको बढ़ाता तथा सामाजिक झगड़ोंको तीव्रतर करता है। आर्थिक प्रगतिके मतवाला बनानेवाले इसी कालमें भुखमरी ब्रिटिश साम्राज्यकी राजधानीमें एक सामाजिक प्रतिष्ठानके दर्जे पर पहुँच गई। काल इतिहासके पन्नोंमें "पूँजीके" बहुत तीव्र गतिसे लौटने तथा औद्योगिक एवं

व्यापारिक संकटके नामसे मशहूर सामाजिक महामारीके विस्तृत प्रहार और भारके प्रभावका काल है।

"अभिभाषणमें १८५० ई० के बादवाली शताब्दीमें मजदूर वर्गके आन्दोलनकी असफलताओंका भी जिक्र किया गया था, लेकिन साथ ही उसकी असफलता का दो सफलताओंका भी जिक्र किया गया था : इंगलैंडमें दस घटेके काम के लिये कानूनका बनाना जिसका कि प्रभाव अंग्रेज सर्वहारोपर पडा" इसलिये दस घटा बिल (विधेयक) केवल एक बडी व्यवहारोपयोगी सफलता ही नही थी, बल्कि वह सैद्धान्तिक विजय भी थी, क्योंकि यहाँ पहली बार बूर्ज्वाजीके राजनीतिक अर्थशास्त्रको मजूर-वर्गकी राजनीतिक अर्थनीतिने पराजित किया। "इससे भी बड़ी विजय को-ओपरेटिव (सहयोगी) आन्दोलनकी हुई। मजदूरोंने सहयोगके सिद्धान्तके आधारपर कल-कारखाने खोले और उन्हें सफलतापूर्वक चलाया। इस महान् सामाजिक तजर्बेका मूल्य बहुत भारी है :" बहस करनेकी जगह इन सहयोगी (सहकारी) कल-कारखानों ने "सिद्ध कर दिया, कि कमकरोंके एक वर्गको काम देनेवाले मालिकोंके एक वर्गके न रहनेपर भी बड़े पैमानेपर आधुनिक साइन्सके कानूनोंके अनुसार उत्पादन सम्भव है। धन उत्पादन करनेके लिये मजदूरोंके हथियारोको कमकरोंके ऊपर शोषक प्रभुताके हथियारोंके तौरपर इजारेदारीकी आवश्यकता नहीं। मजूरी-श्रम भी दास-श्रम तथा किसानी अर्ध-दासता सर्फ (Seoydorm) की तरह एक अस्थायी तथा गौण रूप है, जिसे कि सहकारी श्रमके सामने लुप्त होनेके लिये बाध्य होना पड़ेगा—यह सहकारी श्रम अपने कठिन कामको स्वेच्छासे खुशीके साथ बिना दिक्कतके कर सकता है।" तो भी, सहकारी श्रम, जो कि समय-समयके प्रयत्नो तक ही अपनेको सीमित रख ससता है—पूँजीके इजारेदारीको तोड नही सकता। "शायद इसीलिये उच्च वर्ग, अपने विचारोंके लिये हृदयसे।"

आगे अभिभाषणमें लिखा गया था, कि कमकरोंमे फिर चेतना बढी है, जिसको हम इगलैंड, फ्रास, जर्मनी और इतालीमे मजदूर वर्गीय-आन्दोलनके पुनर्जागरणके रूपमे हम देख रहे हैं और साथ ही मजदूरोंको राजनीतिक तौरसे पुन.सगठित करनेके प्रयत्नके रूपमें देख रहे हैं। "मजदूरोके पास सफलताकी

एक कुंजी-संख्या मौजूद है। लेकिन तराजूमें संख्याका वजन भारी होता है, जब कि वह एक संगठनमें एक जूट तथा एक सचेतन लक्ष्यकी ओर ले जायें।" पिछले तजर्बेसे मालूम होता है, कि सभी देशोंके कमकरोंके बीच भाईचारेकी जो आवश्यकता है, उसकी उपेक्षा और अपनी मुक्तिके लिये किये जानेवाले सभी संघर्षोंमें कन्धे से कन्धा मिलाकर उनके खड़े होनेके उत्साहको रोकनेका फल सदा उनके अपने एक दूसरेसे असंबद्ध प्रयत्नोंमें आम तौरसे असफल होनेका कारण बनता है। इसी विचारने सेन्ट मार्टिन हालकी मीटिंगको इन्टर्नेशनल कमकर एसोसियेशनके कायम करनेकी प्रेरणा दी। अभिभाषणका अन्त भी "कम्युनिस्ट घोषणापत्र" की तरह ही निम्न वाक्यों द्वारा किया गया था : "सभी देशोंके सर्वहारों, एक हो जाओ।"

इन्टर्नेशनलके अस्थायी नियमोंका भी इसी तरह गम्भीरतापूर्वक गुम्फन किया गया था : मजूर-वर्गकी मुक्ति स्वयं कमकरोंका अपना करणीय है। मजूर-वर्गकी मुक्तिका संघर्ष विशेषाधिकार रखनेवाले एक नये वर्गको स्थापित करनेका संघर्ष नहीं है, बल्कि यह वर्ग-शासनको बिल्कुल उठा देनेका संघर्ष है। कमकरों की आर्थिक पराधीनता उन लोगोंके कारण है, जो कि श्रमके हथियारों जीवनके स्रोतोंपर एकाधिकार रखते हैं। इसका परिणाम सब तरहकी गुलामी : सामाजिक कष्ट, बौद्धिक मुखंडीपन और राजनीतिक पराधीनता है। इसलिये मजदूर-वर्गकी आर्थिक मुक्ति वह बड़ा लक्ष्य है, जिसके साधन सभी राजनीतिक आन्दोलनोंको पास होने चाहिये। अब तक इस लक्ष्यको प्राप्त करनेके सारे प्रयत्न इसलिये विफल हुये, कि प्रत्येक देशके भिन्न-भिन्न मजदूर वर्गके समूहों और भिन्न-भिन्न देशोंके मजदूर वर्गोंके बीच एकताका अभाव था। मजदूरोंकी मुक्ति न स्थानीय कृत्य है, और न राष्ट्रीय, बल्कि यह सामाजिक कृत्य है। यह ऐसा कृत्य है जो कि उन सभी देशोंके सामने है, जहाँ आधुनिक समाज मौजूद है। इसको सफलतापूर्वक तभी पूरा किया जा सकता है, जब कि सभी देशोंके बीच बाकायदा सहयोग हो।

इन्टर्नेशनलका नेतृत्व एक जनरल कौंसिल (महापरिषद्) के हाथमें थी, जिसमें भिन्न-भिन्न देशोंके कितने ही मजदूर शामिल थे। लेकिन, जब तक कि

जेनरल कौंसिल चुनी नहीं गई तब तक सेन्ट मार्टिन हालकी सभा द्वारा नियुक्त कमेटी ही इस कामको करती रही। जेनरल कौंसिलका कृत्य था : भिन्न-भिन्न देशोंके मजदूर वर्गीय संगठनोंके बीच अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध स्थापित करना, प्रत्येक देशके कमकरोंको दूसरे देशोंके कमकरोंके कामोंके सम्बन्धमें सूचना देना, भिन्न-भिन्न देशोंके मजूर-वर्गोंकी स्थितिके सम्बन्धमें आँकड़े जमा करना, सभी मजूर-वर्गीय संगठनोंके सामान्य हितोंके प्रश्नों पर विचार करना, अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ा उठ खड़ा होनेके समय सभी सम्बद्ध संगठनोंकी ओरसे एक ही साथ काम करना, इन्टर्नेशनलके कामके बारेमें नियमपूर्वक रिपोर्टें प्रकाशित करना और इसी प्रकारके और काम।

जेनरल कौंसिलका निर्वाचन काग्रेसके हाथमें था, जो कि वर्षमें एक बार हुआ करेगी, वही कौंसिलके स्थान और दूसरी काग्रेसकी जगह और समयका निर्णय करेगी। आवश्यकता पड़ने पर जेनरल-कौंसिल नये मेम्बर क्वाप्ट कर (जोड़) सकती थी, और जरूरत पड़ने पर अगली काग्रेसके स्थानको बदल सकती है, किन्तु वह उसे स्थगित नहीं कर सकती। भिन्न-भिन्न देशोंके मजदूर-संगठन इन्टर्नेशनलसे सबद्ध होने पर भी अपनी संगठन-सम्बन्धी स्वतन्त्रताको कायम रख सकते हैं। कोई भी स्वतन्त्र स्थानीय सगठन जेनरल-कौंसिलसे सीधे सम्बन्ध स्थापित कर सकता था, लेकिन आम तौरसे यह स्वीकार किया गया था, कि राष्ट्रीय आधार पर उनका संगठन अधिक उपयोगी होगा।

इन्टर्नेशनल यद्यपि एक बड़े दिमागकी उपज नहीं थी, लेकिन उसके पीछे एक बड़ा दिमाग—मार्क्सका दिमाग—काम कर रहा था, इसमें सन्देह नहीं।

२. प्रथम कान्फ्रेंस (लन्दन)

यद्यपि मार्क्स इस समय बार-बार बीमारीका कष्ट भोग रहे थे और अपने वैज्ञानिक कार्यको पूरा करनेके लिये भी वह अधीर थे, लेकिन तब भी वह इन्टर्नेशनलके लिये समय और शक्ति देनेमे कमी नहीं नहीं करते थे। जल्दी ही यह सबको मालूम होने लगा, कि इन्टर्नेशनलके वास्तविक "मुखिया" मार्क्स हैं। इसके लिये उन्हें अपनेको आगे बढानेकी जरूरत नहीं थी। मार्क्सको सस्ती

प्रसिद्धिके प्रति अपार घृणा थी। पर, इस अन्तर्राष्ट्रीय आन्दोलनको ठीकसे संचालित करनेके लिये आवश्यक सभी गुण असाधारण मात्रामें मार्क्सके ही पास मौजूद थे। ऐतिहासिक विकासके कानूनको बड़ी गहराई तक और साफ-साफ देखनेकी क्षमता उसमें थी, और वह पूरी शक्तिके साथ लक्ष्यकी ओर बिना इधर-उधर भटके उस महान् संगठनको ले जा सकते थे। लेकिन, साथ ही उनका रास्ता कंटकाकीर्ण था। मेम्बरोंमें वैयक्तिक झगड़े और वाद-विवाद उठ खड़े होते थे, विशेषकर इतालियन और फ्रेंच मेम्बरोंमें, जिनके दूर करनेमें मार्क्सको बड़ी परेशानी उठानी पड़ती थी। अंग्रेज मेम्बरोंके साथ उन्हें कम कठिनाईका सामना करना पड़ता था। उस वक्तके अंग्रेज कमकर काफी आगे बढ़े हुये थे। उन्होंने अमेरिकन गृह-युद्धमें दक्षिणी रियासतोंका पक्ष लेनेसे अपनी सरकारको बाज रक्खा, और जब अब्राहम लिन्कन दुबारा अमेरिका का राष्ट्र-पति निर्वाचित हुआ, तो उसके पास उन्होंने अभिनन्दन भेजा। मार्क्सने इस अभिनन्दनको तैयार किया, जिसमें नये प्रेसीडेन्ट लिन्कनको "मजूर वर्गका (ऐसा) पुत्र" सम्बोधित किया गया था, जिसे एक दासताबद्ध जातिके मुक्त करनेके लिये भव्य संघर्ष करनेका काम सौंपा गया था। लिन्कनने भी इस अभिनन्दनका ऐसी गर्मजोशीके साथ जवाब दिया, जिसे सुननेके लिये लन्दनके पूँजीवादी पत्र तैयार नहीं थे।

२६ जून १८६५ को जेनरल-कौंसिलके सामने मार्क्सने एक अभिभाषण "मूल्य, दाम और लाभ" के नामसे पढ़ा, जिसका वैज्ञानिक मूल्य कहीं अधिक था। इसका उद्देश्य था कौंसिलके कितने ही मेम्बरोंके इस विचारका खंडन करना, कि मजूरीकी आम वृद्धि मजूरोंके लिये किसी वास्तविक कामकी नहीं होगी, इसलिये मजदूर-सभायें हानिकारक हैं। इस विचारका आधार यह गलत धारणा थी कि सौदेका मूल्य मजूरीके ऊपर निर्भर करता है, और यदि पूँजी-पति आज चारकी जगह पाँच शिलिंग मजूरी देगा, तो कल वह बढ़ती हुई माँग के पूरा करनेके लिये मालको चारकी जगह पाँच शिलिंग बेचेगा। मार्क्सने बतलाया कि यद्यपि वह बहुत ही उथले किसिमका तर्क है, और वह वस्तुओंके बिल्कुल अप्रधान रूपको लेता है, लेकिन तब भी इसमें जो अर्थशास्त्रीय प्रश्न

आते हैं, उनकी व्याख्या करना आसान नहीं है। लेकिन, मार्क्सने एक घंटेके भीतर इस गंभीर प्रश्नकी बड़ी सुन्दर व्याख्या करदी।

इन्टर्नेशनलको पहली सफलता दिखलानेका मौका मताधिकारके सुधारके लिये बढते हुये आन्दोलनके सम्बन्धमे प्राप्त हुई। १ मई १८६५ को मार्क्सने एंगेल्सको सूचित किया : "सुधार लीग हमारा काम है। बारह (छ मजूर-वर्ग और छ मध्य-वर्गके प्रतिनिधियों) मेम्बरोमेंसे सारे मजूर-वर्गीय प्रतिनिधि हमारी जेनरल-कौंसिलके मेम्बर हैं, जिनमे इकेरियस भी हैं। हमने मजूरोकी आँखोंमे धूल झोंकनेके मध्य-वर्गके सारे प्रयत्नको निष्फल कर दिया। अगर इस प्रयत्न द्वारा इंगलैंडमे राजनीतिक मजूर वर्गीय-आन्दोलन। पुनर्जन्ममे सफलता हुई, तो हमारे एसोसियेशन (इन्टर्नेशनल) ने युरोपियन मजूर-वर्गके लिये उससे कहीं अधिक काम कर लिया, जोकि किसी दूसरे तरीकेसे सम्भव हो सकता था, और सो भी बिना अपने बारेमे हल्ला-गुल्ला किये बगैर। यहाँ इसमें सफलताकी पूरी संभावना है।" ३ मईको एंगेल्सने जवाब दिया : "बहुत थोड़े से समयमे और बहुत थोडा प्रयत्न करके इन्टर्नेशनल एसोसियेशनने वस्तुतः एक जबर्दस्त स्थान अपने लिये बना लिया।"

१८६५ ई० मे बुशेल्समे इन्टर्नेशनलकी प्रथम कांग्रेस करनेकी बात सोची गई थी। फ्रासके मेम्बर अपनी सारी शक्ति वैयक्तिक झगडोंमें लगा रहे थे। डर था कि बुशेल्सकी कांग्रेसमें भी वही रागिनी न अलापी जाय। बड़ी मुश्किल से मार्क्सको इसमें सफलता प्राप्त हुई, कि बुशेल्समें सार्वजनिक कांग्रेस करनेकी जगह लन्दनमें एक आन्तरिक कान्फ्रेंस की जाय, जिसमे मुख्य-मुख्य कमेटियोंके प्रतिनिधि सम्मिलित हो और जिसका काम भावी कांग्रेसके लिये प्रारम्भिक विचार-विनिमय करना हो। कान्फ्रेंस २५-२६ सितम्बर १८६५ को लन्दनमें हुई। इसमे जेनरल कौंसिलके प्रतिनिधि, उसके सभापति ओडेगेर, जेनरल सेक्रेटरी क्रेमर, मार्क्स और इन्टर्नेशनल उनके दो सहायक इकेरियस और युग (लन्दनमें रहनेवाला एक स्विस घडीसाज, जो कि अँग्रेजी, फ्रेंच और जर्मन एक समान बोल सकता था) शामिल हुये। फ्रासके प्रतिनिधि तोलें, फ्रीबुर्ग और लिमूसिन थे, जोकि सभी आगे इन्टर्नेशनलको छोड देने वाले थे, लेकिन

उनके साथ १८४८ ई० का मार्क्सका पुराना मित्र शिली* और एक दूसरा फ्रेंच कमकर वर्लिन† भी थे—वर्लिन पीछे पेरिस-कमूनके समय शहीद हुआ। इसी तरहसे स्वीजलैंड, बेल्जियम भी प्रतिनिधि आये। कान्फ्रेंसकेसामने सबसे पहले खर्चचलानेके लिये पैसेका सवाल था। पता लगा, इन्टर्नेशनलकी प्रथम वर्षकी कुल आमदनी ३३ पौंड थी। मेम्बरी चन्देके बारेमें कोई निश्चय नहीं हो सका, लेकिन यह स्वीकार किया गया, कि प्रचार तथा दूसरे खर्चोंके लिये एक सौ पचास पौंडका फंड उगाहा जाय, जिसने अस्सी पौंड इंगलैंडमें, चालीस पौंड फ्रांसमें और दस-दस पौंड बेल्जियम तथा स्वीजलैंडमें जमा किया जाय। इंगलैंडकी स्थितिपर जेनरल-सेक्रेटरी क्रेमरने ‡ अपनी रिपोर्ट दी। फ्रीबुर्ग और तोलैंने बतलाया, कि फ्रांसमें इन्टर्नेशनलका अच्छा स्वागत हो रहा है। बेकेर और दुपलेने स्वीजलैंडके बारेमें संतोषजनक रिपोर्ट दी। जेनरल-कौंसिलकी ओरसे मार्क्सने प्रस्ताव किया, कि इन्टर्नेशनलकी पहली कांग्रेस १८६६ के सितम्बर या अक्तूबरमें जेनेवामें की जाये। स्थानके बारेमें सभी एक मत हुये, लेकिन समयके बारेमें फ्रेंच प्रतिनिधियोंके जोर देनेपर उसे मईका अन्तिम सप्ताह रक्खा गया।

कान्फ्रेंसकी निजी बैठकें पूर्वाह्णमें युंगकी अध्यक्षतामें हुआ करतीं और अपराह्णमें ओड्गेरकी§ अध्यक्षतामें बहुत कुछ सार्वजनिक बैठकें होतीं। पूर्वाह्ण हमें जिन प्रश्नोंपर ऊहापोह करके कोई निर्णय किया जाता, उनके ऊपर शामकी सभाओंमें बहस होती। इन सभाओंमें मुख्यतः कमकर शामिल होते।

३. आस्ट्रिया-प्रशिया-युद्ध (१८६५ ई०)

आस्ट्रिया और प्रशिया दोनों ही जर्मन (ड्वाश) जातियाँ हैं। जर्मनी अभी पूरी तौरसे एक राष्ट्र नहीं बन पाया था और भिन्न-भिन्न राजवंशोंके सुभीतेके लिये वह अलग-अलग राज्योंमें बँटा हुआ था। प्रशिया जर्मन-राज्योंमें सबसे शक्तिशाली और बड़ा था। उसकी इच्छा रहती थी, कि सारे जर्मनीको एक राज्यमें बदल दिया जाय, लेकिन, आस्ट्रियाका राजवंश हान्सबर्ग अपनेको

* Schily. † varlin. ‡ Cremer. § Odgler.

पवित्र रोमन साम्राज्यका उत्तराधिकारी और सभी जर्मन जातियोंका संरक्षक मानता था, इसलिये वह नहीं चाहता था, कि प्रशियाका होहेनजुलर्न जैसा हल्का राजवंश सभी जर्मनोंका मुखिया बन जाये, इसलिये वह बराबर प्रुशियाके मनोरथको विफल करनेका प्रयत्न किया करता था। ऐसी स्थितिमे आस्ट्रिया और प्रुशियाके बीचमें संघर्ष होना स्वाभाविक था। इस सघर्षके बारेमें कहनेसे पहले मार्क्सकी घरेलू कठिनाइयोंके बारेमें कुछ कहना जरूरी है।

(मार्क्स परिवार)—३१ जुलाई (१८६५ ई०) को मार्क्सने एंगेल्सको सूचित किया, कि पिछले दो महीनोंसे हमारा परिवार बन्धक रखकर जी रहा है : "मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ, कि इस चिट्ठीको लिखने की जगह मुझे अपनी अँगुली काट डालना अधिक अच्छा था। यह सचमुच ही असह्य है, कि आदमी अपने जीवनका आधा परवशतामें बिताये। मेरे दिलको सिर्फ यही समझकर सतोष है, कि तुम और मैं दोनों भागीदार हैं—मेरा काम है अपना समय सिद्धान्त तथा पार्टी-सम्बन्धी कामोंके लिये देना। मुझे मालूम होता है, कि इस घरमे रहना हमारी औकातसे बाहर है। इस साल और सालोकी अपेक्षा हम कुछ अच्छी तरह रहे, लेकिन अपने बच्चोंका सम्बन्ध स्थापित करनेके लिये इसके सिवाय अवसर देनेका कोई ऐसा रास्ता नहीं था, जिसमें कि वह अपना भविष्य सुरक्षित कर सके। यह कहनेकी आवश्यकता नहीं, उन्होंने जो कुछ अब तक भुगता है, उसको देखते इससे थोड़ा सा सतोष हुआ। मैं समझता हूँ, तुम मेरी इस बातसे सहमत होगे, कि शुद्ध कारबारकी दृष्टिसे देखनेपर भी पूरी तौरसे सर्वहारा जैसा पारिवारिक जीवन उपयुक्त न होगा, यद्यपि जहाँ तक मेरी स्त्री और मेरा सम्बन्ध है, यह अच्छा होता, अथवा यदि लड़कियाँ नहीं हमारे लड़के होते।" एंगेल्सने तुरन्त अपने मित्रके पास सहायता भेजी। लेकिन, कई वर्षों तक मार्क्स आर्थिक चिन्ताओंसे मुक्त नहीं हो सके।

उसी साल (१८६५) के ५ अक्तूबरको लॉदेर बुखेर* का एक पत्र मिला जिसने मार्क्सकी आर्थिक कठिनाई दूर करनेके लिये एक नया रास्ता बतलाया।

* Lother Bucher.

बुखेर पहले राजनीतिक निर्वासित था, जो पीछे जर्मनी लौटकर प्रुशियन सरकार का नौकर हो गया। उसने प्रस्ताव किया, कि "स्टाटसान्जाइगेर"* नामक मासिक पत्रमें मार्क्स लेख लिखें, खास तौरसे मालबाजारकी गतिविधिके सम्बन्धमें मासिक रिपोर्ट दिया करें, जिसके लिये काफी पारिश्रमिक दिया जायगा। बुखेरने फ्राउ मार्क्स और तरुण महिलाओं, विशेषकर सबसे नन्हींका अभिनन्दन करते पत्रको समाप्त करते हुये लिखा था : "तुम्हारा आज्ञाकारी और सम्मानपूर्ण सेवक।" मार्क्सने अपना सारा क्रांतिकारी जीवन प्रुशियन सरकारके भिक्षा माँगनेके लिये नहीं बिताया था। उन्होंने बुखेरके प्रस्तावको माननेसे इनकार कर दिया। कहा जाता है, बुखेरने यह प्रस्ताव महामंत्री बिस्मार्ककी रायसे किया था, यह मालूम ही है, कि प्रुशियाके नेतृत्वको आगे बढ़ाते सारी जर्मनीको एक राज्यमें परिणत करनेका काम बिस्मार्कने किया था। बुखेर मार्क्सको इस प्रलोभन द्वारा खरीदना चाहता था। मार्क्ससे निराश हो बुखेरने डॉ० डूरिंगके सामने वही प्रस्ताव रक्खा जिसने उसे मंजूर किया।

आर्थिक कठिनाइयोंसे भी ज्यादा परेशानीकी बात यह थी, कि इन्टर्नेशनलके कामों में फँसे रहनेके कारण मार्क्सका वैज्ञानिक कार्य रुक गया था, साथ ही स्वास्थ्य अधिक और अधिक खराब होता जा रहा था। १० फर्वरी १८६६ को एंगेल्सने उन्हें लिखा था : "तुम्हें सचमुच कुछ ऐसा करना चाहिये, जिसमें इस कारबंकल (जहरबाद) से छुट्टी मिले।...कुछ समयके लिये अपने रातके कामको बन्द कर दो और अधिक नियमित जीवन बिताओ।" १३ फर्वरीको मार्क्सने अपने मित्रको जवाब देते हुये लिखा : "कल मैं फिर एक बुरे फोड़ेके मारे पीठके बल पड़ गया, जो कि उरुसंधिमें निकला है। अगर मेरे पास अपने परिवारके लिये पर्याप्त पैसा होता और मेरी पुस्तक खतम हो गई होती, तो मैं इसकी बिल्कुल पर्वाह नहीं करता, कि मैं आज कब्रिस्तानमें पहुँचूँ या कल।" एक सप्ताह बाद दूसरी भयंकर सूचना मिली, जिसे सुनकर एंगेल्सने अपने मित्रको जोर देकर कहा, कि कुछ सप्ताह कामसे विश्राम लेकर मारगेट चले जाओ।

---

* Staatsanzeiger.

मारगेटमें पहुँचकर मार्क्स बहुत जल्दी प्रकृतिस्थ हो गये। उन्होंने अपनी लड़की लौराको लिखा था: "मैं वस्तुतः इस बातसे बहुत खुश हूँ, जो कि होटलमें न जा मैं एक निजी घर में ठहरा हूँ। होटलमें रहने पर मुझे स्थानीय राजनीति, घरेलू दुराचार-कथाओं और पड़ोसियों की ऊटपटाँग बातोंसे परेशान होना पड़ता। तो भी मैं नहीं कह सकता हूँ, कि मै किसीकी पर्वाह नहीं करता और कोई मेरी परवाह नहीं करता, क्योंकि आखिर यहाँ मेरी घर माल-किन है, जो कि खम्भेकी तरह बहरी है, और उसकी लड़कीकी आवाज सदा फटी-फटी सी रहती है। जो भी हो, ये अच्छे लोग हैं, मेरा ध्यान रखते हैं और बीचमें दखल नहीं देते। मैंने चहलकदमी करनेकी आदत डाल ली है। दिनका अधिक भाग मैं खुली हवामें घूमता रहता हूँ, और १० बजे सो जाता हूँ। मैं कुछ नही पढ़ता, लिखता भी कम, धीरे-धीरे मैं निर्वाणकी स्थितिमें पहुँचनेकी कोशिश कर रहा हूँ, जिसे कि बौद्ध धर्म मानव-आनन्दकी पराकाष्टा मानता है।" इस पत्रके नीचे एक छोटा सा चुटकी लेनेका वाक्य लिखा हुआ था, जिससे आनेवाली घटनाकी पूर्वसूचना मिलती है: "वह छोटा शैतान लाफार्ग अब भी मुझे अपने प्रूधोंवादसे परेशान कर रहा है। मैं समझता हूँ, वह तब संतुष्ट नहीं होगा, जब तक कि मैं उसकी खोपड़ीमें कुछ समझकी बात नहीं डाल देता।" मार्क्स अभी मारगेटहीमें थे, इसी समय जर्मनीके ऊपर मँडराते युद्ध-बादलोंमें पहली बिजली चमकती दिखाई पड़ी। ८ अप्रैलको बिस्मार्कने आस्ट्रियाके विरुद्ध इतालीके साथ एक आक्रमणात्मक मित्रताकी संधि की, और दूसरे दिन उसने गेरमानिक-डीट (जर्मन जातियोंकी पार्लियामेन्ट) से कहा, कि आम मताधिकारके आधारपर निर्वाचित एक जर्मन पार्लियामेन्ट बुलाई जाय, जो कि जर्मन सरकारोंके पास रखनेके लिये लीगके एक सुधारपर विचार करे। मार्क्सने इसके बारेमें अपने विचार प्रकट करते हुये कहा था: "मालूम होता है जर्मन बूर्ज्वाजी थोड़ा सा विरोध करनेके बाद बिस्मार्कके प्रस्तावको स्वीकार कर लेगी, क्योंकि आखिर बूर्ज्वाजीका वास्तविक धर्म तो बोनापार्त-वाद है।"

इसी समय अपने नये मित्र हनोवरवासी डॉ० कुगेलमानको लिखे पत्रमें भी

उन्होंने इन्हीं विचारों-को प्रकट किया। बहुत तरुणाईसे ही कुगलमान मार्क्स और एंगेल्सका समर्थक था। उसने बड़े प्रयत्नसे उनकी सारी कृतियोंका संग्रह किया था; लेकिन, उसका मार्क्सके साथ साक्षात् परिचय १८६२ ई० में ही हो पाया, जिसमें फ्राइलिग्रथ का हाथ भी था। कूगेलमान जल्दी ही मार्क्सका विश्वासपात्र हो गया। उसके नाम मार्क्सने बहुत से ऐतिहासिक और सैद्धान्तिक महत्वके पत्र लिखे।

किसी भी वास्तविक परिस्थितिको अच्छी तरह देखे बिना किसी भी निर्णय का प्रकट करना बहुत मुश्किल है। मार्क्स और एंगेल्स का संबंध इस समय जर्मनीसे टूट चुका था, और वर्षोंसे वहाँकी घटनाओंका पूरा पता नहीं था। इसीलिये एंगेल्सने प्रुशियाकी सैनिक योग्यताका ठीकसे मूल्यांकन नहीं कर पाया। जब प्रुशियाकी विजयकी खबर उन्हें मिली, तो उन्हें अपनी इच्छाके विरुद्ध वास्तविकताको स्वीकार करना पड़ा। २५ जुलाईको एंगेल्सने इसी बातको स्वीकार करते हुये लिखा था : "जर्मनीकी स्थिति इस समय मुझे बिल्कुल सीधी सी मालूम होती है। जबसे बिस्मार्क ने प्रुशियन सेनाके साथ अपनी योजनाको पूरा किया, और इतनी जबर्दस्त सफलता प्राप्त की, तबसे जर्मनीमें "घटनाओं-का विकास" इतने निर्णायक रूपसे हुआ, कि दूसरोंकी तरह हम भी चाहे पसन्द करें या न करें इन तथ्योंको पक्के होनेको स्वीकार करना होगा।...कमसे कम इसका एक अच्छा पहलू भी है, वह यही कि यह स्थितिको आसान बना देता है, और छोटी-छोटी बकवासोंको हटाकर क्रान्तिको अपना काम करनेके लिये आसानी पैदा कर देती है। जो भी हो, जर्मन पार्लियामेन्ट, प्रुशियन चेम्बर (भवन) से बिल्कुल अलग चीज है। अब सभी छोटे-छोटे राज्योंकी विशेषतायें आन्दोलनमें घसिट आयेंगी, निकृष्टतम स्थानीयताको मजबूत करने-वाले प्रभाव नष्ट कर दिये जायेंगे, और पार्टियाँ केवल स्थानीय होनेकी जगह वस्तुतः राष्ट्रीय बन जायेंगी।"

कोयनिग्रात्जके* युद्धने आस्ट्रियाके खिलाफ अपना फैसला दे दिया, जर्मनी अब एक शक्तिशाली बूर्ज्वा-सामन्तशाही राज्य था।

* Koniggrati

४. जेनेवा-कांग्रेस (१८६६ ई०)

मईमें इन्टर्नेशनलकी प्रथम कांग्रेसके किये जानेका निश्चय किया गया था, लेकिन उस समय जर्मनी और आस्ट्रियाके युद्धके कारण उसे सितम्बर तकके लिये स्थगित करना पड़ा। अपने अस्तित्वके दूसरे वर्षमें इन्टर्नेशनलने और तेजी से प्रगति की। जेनेवा उस समय युरोपके आन्दोलनका एक महत्वपूर्ण केन्द्र बन गया था। स्वीजर्लैंडके जर्मन-भाषाभाषी तथा फ्रेंच-इस्तालियन भाषा-भाषी दोनों भागोंके कमकरोंने अपने पार्टी-संगठन कायम किये थे। जर्मन-स्विस "डेर वोरबोटे" नामक एक मासिक प्रकाशित होता था, जिसका सम्पादक तपा हुआ क्रान्तिकारी बेकर था। इस पत्रमें प्रथम इन्टर्नेशनलके बारेमें जाननेकी बहुत महत्वपूर्ण सामग्री मौजूद है। पत्र जनवरी १८६६ में निकलना शुरू हुआ। बेल्जियमसे "ला त्रिबून दु पिप्ल" नामक एक दूसरा पत्र निकाला जाता था, जिसे मार्क्स जेनेवाके दोनों पत्रकी तरह ही इन्टर्नेशनलका अपना पत्र मानते थे। फ्रांसमें भी इन्टर्नेशनलने काफी प्रगति की थी। मार्क्स और एंगेल्स रूसी जारशाहीको प्रति-क्रान्तिका जबर्दस्त और शक्तिशाली गढ़ मानते थे, इसलिए वह रूसके प्रभावका विरोध करते थे। फ्रेंच प्रतिनिधि इससे सहमत नहीं थे। फर्वरी १८६६ में इन्टरनेशनलके फ्रेंच भागने जेनरल-कौंसिलके पोलिश प्रश्नको कांग्रेसके कार्यक्रममें रखनेका जबर्दस्त विरोध किया। वह कहते थे: कैसे पोल एकताको पुन: स्थापित करनेके द्वारा कोई रूसी प्रभावके विरोध करने-की बात सोच सकता है, जब कि एक ओर रूस अपने यहाँ किसान अर्ध-दासोंको मुक्त कर रहा है, जब कि पोल अभिजात्य-वर्ग और पादरी वैसा करनेसे इन्कार करते हैं। आस्ट्रिया-प्रुशियाकी लड़ाईमें भी इन्टर्नेशनलके फ्रेंच मेम्बरोंने जेनरल-कौंसिलमें बड़ी कठिनाइयाँ पैदा कीं। इसी सिलसिलेमें उन्होंने मार्क्स "बड़े अच्छे मित्रों" लाफार्ग और लोगोंके* ऊपर भी व्यंग किया था—ये दोनों पीछे मार्क्सके दामाद बने, यद्यपि उस समय वह "प्रूधोंके धर्मदूत" बने हुये थे।

लेकिन इन्टर्नेशनलकी शक्तिका सबसे बड़े आधार फ्रांस नहीं बल्कि अंग्रेजी

---

* Longuet

मजूर-संघ थे। मार्क्सको अँग्रेज मजदूरोंकी उस विशाल सभासे बड़ी प्रसन्नता हुई, जो कि सेन्ट मार्टिन हालकी बैठकसे कुछ सप्ताह पहले इन्टर्नेशनलके नेतृत्वमें मतदानके सुधारके पक्षमें हुई। मार्च १८६६ में व्हिग (उदार) ग्लेड्सटनके उदार मंत्रिमंडलने सम्पतिदानके सुधारके सम्बन्धमें एक बिल (विधेयक) उपस्थित किया, लेकिन वह सुधार ग्लेड्डसटनके अपने दलके कुछ आदमियोंको बहुत उग्र मालूम हुआ और वह टोरियोंकी ओर चले गये, जिसके कारण उदार सरकार टूट गई और उसके स्थानपर डिजराइलीका टोरी मंत्रिमंडल कायम हुआ। डिजराइलीने उक्त सुधारोंके सवालको अनिश्चित कालके लिए स्थगित रखना चाहा, जिसपर जबर्दस्त आन्दोलन शुरू हो गया। ७ जुलाईको मार्क्सने एंगेल्सको लिखा था :—"लन्दनमें मजदूरोंके प्रदर्शन बड़े अद्भुत हैं। जो हमने १८४६ ई० के बाद अब तक इंगलैंडमें जो देखा, उनसे तुलना करने-पर यह केवल इन्टर्नेशनलका काम है। उदाहरणार्थ ट्रेफलगार स्क्वायरके प्रदर्शनका नेता लुकरेफ्ट हमारी कौंसिलका मेम्बर है। "ट्रेफलगार स्क्वायर" में बीस हजार आदमियोंकी सभामें लुकरेफ्टने* व्हाइटहाल गार्डेन्समें एक प्रदर्शन करनेका प्रस्ताव किया, "जहाँ हमने एक बार राजाके सिरको काट फेंका था।" थोड़े ही समय बाद साठ हजार आदमियोंका एक बड़ा प्रदर्शन हाइड पार्कमें हुआ, जिसने कि गरीब-गरीब विद्रोहका रूप धारण कर लिया।

इंगलैंडकी मजदूर सभाओंने अपने आन्दोलनको आगे बढ़ानेमें इन्टर्नेशनलकी सेवाओंको स्वीकार किया, वह दिल खोलकर इन्टर्नेशनलकी आर्थिक सहायता भी करती थीं। पाँच हजार मेम्बरोंवाली चमारोंकी सभा पाँच पौंड वार्षिक चन्दा देती थी, नौ हजार मेम्बरोंवाली बढ़इयोंकी सभा दो पौंड और तीनसे चार हजार मेम्बरवाले ईंट जोड़नेवाले एक पौंड वार्षिक देते थे।

लेकिन, इंगलैंडमें सुधार-आन्दोलनने मजदूरोंकी लड़ाकू प्रवृत्तिका दम घोंट दिया। दिवर्कमेन्स एडवोकेट (कमकरोंका वकील) साप्ताहिक १८६५ ई० में इन्टर्नेशनलका पत्र माना गया था लेकिन अब फर्वरीमें उसने अपना नाम

---

* Lucraft.

The Commonwealth दि कामन वेल्थ ही नहीं बदल दिया, बल्कि बूर्ज्वा मतदान-सुधारकोंकी सहायता प्राप्त करनेके लिये उसने इन्टर्नेशनलको भी भुला दिया।

मार्क्स जेनेवा-कांग्रेसमें सम्मिलित नहीं हुये, क्योंकि उस वक्त वह अपने शोध-कार्यमें बहुत व्यस्त थे। उन्होंने लन्दनसे जानेवाले प्रतिनिधियोंके लिये एक वक्तव्य तैयार किया, जिसमें कमकरोंके बीचमें तुरन्तके सहयोग एवं वर्गके तौरपर मजदूरोंके संगठनकी तुरन्तकी आवश्यकताओंके लिये काम करनेपर जोर दिया। इस वक्तव्य (मेमोरेंडम) का महत्व प्रोफ़ेसर बीसलीके "उद्घाटन अभिभाषण के बारेमें कहे गये शब्दों में था : इसमें थोड़े से पन्नोंमें पहलेसे भी अधिक अच्छे ढग और पूरी तौरसे अन्तर्राष्ट्रीय सर्वहाराकी तुरन्तकी माँगोंको संक्षेपमें कहा गया है। जेनरल-कौंसिलके अध्यक्ष ओड्गेर उसके जेनरल-सेक्रेटरी केनर तथा एकेरियस और युंग कौंसिलके प्रतिनिधियोंके तौरपर जेनेवा-कांग्रेसमें सम्मिलित हुये।

कांग्रेस ३-८ सितम्बरको हुई। उसमें साठ प्रतिनिधि आये थे। मार्क्स इस कांग्रेसके कामको आशासे अधिक बेहतर कहा था, यद्यपि "पेरिसके भद्रपुरुषों" के बारेमे उनकी भारी शिकायत थी : "उनके दिमाग खोखले" प्रूधनीवाक्योंसे भरे हुये हैं। वह साइन्स की बातें बघाड़ते बिलकुल ही अज्ञ हैं। वह सभी क्रान्तिकारी कार्रवाइयों अर्थात् वर्ग-संघर्षसे उत्पन्न होनेवाले एकताबद्ध सामाजिक आन्दोलनों—जो राजनीतिक साधनो (उदाहरणार्थ कामके दिनकी कानूनी सीमा) द्वारा किये जा सकते हैं—को तुच्छ दृष्टिसे देखते हैं। स्वतन्त्रता और सरकार-विरोध अर्थात् अधिकारीय व्यक्तिवादके विरोध—के बहाने ये भद्र-पुरुष—जिन्होंने कि घोर अन्धाधुन्धी स्वेच्छाचारको सोलह वर्षों तक सिर झुकाकर सहन किया और अब भी सहन कर रहे हैं, एवंवस्तुत : एक भद्दे बूर्ज्वा आर्थिक-व्यवस्था प्रूधोंवाद का उपदेश करते हैं।"

प्रतिनिधियोंमें इन फ्रेंचोंकी संख्या एक-तिहाई होनेसे काफी मजबूत थी। यद्यपि अन्तमें उन्हें कोई लाभ नहीं हुआ, लेकिन बात बघारनेमें वह पीछे नहीं रहे। उन्होंने प्रस्ताव रक्खा कि केवल शारीरिक काम करनेवाले कमकर

ही इन्टर्नेशनलके मेम्बर स्वीकार किये जायें, और दूसरे हटा दिये जायें, किंतु वह स्वीकृत नहीं हुआ। उनके धार्मिक प्रश्नों-सम्बन्धी प्रस्तावको भी नहीं स्वीकार किया गया। सबसे ज्यादा खराब तथा तोलें और फ्रीबुर्ग द्वारा उपस्थिति जो प्रस्ताव स्वीकृत किया गया था। उसमें "भ्रष्टताका सिद्धान्त" घोषित करते हुये स्त्रियोंका स्थान घरके भीतर बतलाया गया था। उसका विरोध बर्लिन तथा दूसरे फ्रेंच प्रतिनिधियोंने स्वयं किया। लेकिन उसके साथ जेनरल कौंसिलका भी एक प्रस्ताव स्वीकार करके उसके विषदंत तोड़ दिये गये। इसमें शक नहीं फ्रेंच प्रतिनिधियोंने प्रूधोंवादकी कुछ बातें घुसानेमें सफलता पाई। जेनरल-कौंसिलका नया चुनाव हुआ। उसका हेडक्वार्टर लन्दनमें रक्खा गया। कांग्रेसने कौंसिलपर सारी दुनियाके मजूर-वर्गकी स्थितिके विवरण-सहित आँकड़े तथा इन्टर्नेशनलकी दिलचस्पीकी सभी बातोंपर क्षमतानुसार रिपोर्ट निकालनेका काम सौंपा था। खर्चके लिये निश्चय किया गया था कि इन्टर्नेशनलका प्रत्येक मेम्बर ३० साँतीम (.३ फ्रांक) वार्षिक चन्दा दे, एक अथवा डेढ़ पेन्स सभी मेम्बरोंको अपनी सदस्यता-कार्डके शुल्कके अतिरिक्त देना चाहिये। प्रोग्राम-सम्बन्धी उसके निर्णय महत्वपूर्ण थे, जिनमें मजूरोंकी रक्षा और मजदूर-सभाओं-के बारेमें निर्णय किया गया था। वयस्क स्त्री-पुरुष (१८ वर्षसे ऊपर के) कमकरोंके लिये अधिकसे अधिक प्रतिदिन आठ घंटा काम होना चाहिये। रातके कामका विरोध किया गया। स्त्रियोंको सिर्फ रातके ही कामसे नहीं, बल्कि उनके स्वास्थ्य और सदाचारके लिये हानिकारक सभी कामोंसे अलग रहनेकी माँग की गई। मजदूर-सभाओंके बारेमें कहा गया, कि उनका काम केवल उचित ही नहीं बल्कि आवश्यक है। मजदूर सभायें (ट्रेड यूनियन) सर्वहारा-की एकमात्र शक्ति, अर्थात् पूँजीवादके केन्द्रीकृत सामाजिक शक्तिके विरुद्ध इस्तेमाल करनेकी एकमात्र साधन है, और जब तक कि उत्पादनका पूँजीवादी ढंग मौजूद है, तब तक मजदूर सभाओंके बिना कोई काम करना सम्भव नहीं। यही नहीं बल्कि मजदूर-सभायें अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धोंको स्थापित करके अपनी कार्रवाइयोंको समष्टित कर सकती हैं।

सब मिलाकर जेनेवा-कांग्रेसके निर्णयोंसे मार्क्सको बहुत आशा बँधी। १३

अक्तूबर १८६६ को कुगेलमान्‌को उन्होने लिखा था : लन्दन मजदूर-परिषद्* (जिसका मन्त्री हमारा प्रेसीडेंट ओडगर है) इस समय एक सुझावपर विचार कर रही है, कि वह अपनेको इन्टर्नेशनलका अंग घोषित करे। यदि इस प्रस्तावको उसने स्वीकार कर लिया, तो एक वर्षमें यहाँका मजदूर-वर्ग हमारे नियंत्रणमें आ जायेगा, और हम आन्दोलनको और ज्यादा अच्छी तरहसे आगे ले चल सकेंगे।" लेकिन कौंसिलने इस प्रस्तावको ठुकरा इन्टर्नेशनलके साथ बहुत मित्रतापूर्ण सम्बन्ध कायम करनेको स्वीकार किया।

अपने जन्मके प्रथम वर्षमें भी इन्टर्नेशनलके नेता आगेके लिये बड़ी सफलताकी आशा रख सकते थे, लेकिन साथ ही वह यह भी समझ सकते थे, कि यह सफलतायें कुछ निश्चित सीमाओं के भीतर ही हो सकती हैं। मार्क्सको तब भी एक व्यवहारवादी आदर्शवादीके तौर पर काग्रेस कामोंसे संतोष हुआ। जेनेवा-काग्रेसके समय ही बालटिमोरमें अमेरिकन मजदूरोंकी काग्रेस हुई, जिसने आठ घंटे कामके दिनकी मॉग घोषित करते हुये कहा : पूँजीवादकी वेड़ीसे पूर्ण तौरसे मजदूरोंको मुक्त करनेके लिये इस मॉगका पूरा होना सबसे जरूरी और पहला काम है।

* Trade Council

अध्याय १५

"कपिटाल" (१८६६-७८ ई०)

१. प्रसव वेदना

मार्क्स वर्षोंसे अपने अमर ग्रंथ "डास कपिटाल" (पूँजी) के लिखनेमें लगे हुये थे। इसके लिये उन्हें वर्षों तक करीब-करीब रोज दस-दस घंटे ब्रिटिश म्युजियममें संग्रहीत ग्रंथों, विवरणों और आँकड़ोंमें डूबा रहना पड़ता था। अब वह समय नजदीक आ गया था, जब कि इस दीर्घकाल-व्यापी श्रमके प्रथम फलको प्रकट किया जाय। इसी व्यस्तताके कारण वह जेनेवा-कांग्रेसमें सम्मिलित नहीं हुये, क्योंकि वह कमकरोंके हितके लिये कांग्रेससे भी अधिक इस ग्रंथके महत्वको समझते थे। इस समय वह "कपिटाल" के प्रथम जिल्दकी प्रेस-कापी अन्तिम तौरसे तैयार कर रहे थे। इसकी सामग्री यद्यपि वर्षोंसे जमा की जा रही थी, लेकिन लिखना १ जनवरी १८६६ से शुरू हुआ। इतनी अधिक "प्रसव-वेदना" के कारण लिखनेका काम बड़ी तेजीसे हुआ। यह प्रसव-वेदना साधारण मनुष्यकी गर्भावस्थाके महीनोंसे दूने वर्षों तक चलती रही और कैसी आर्थिक तथा दूसरी कठिनाइयोंके बीच मार्क्सने इस कामको जारी रक्खा, यह हम बतला चुके हैं। कई बार मार्क्सने ग्रंथ समाप्तिका काल निश्चित किया, लेकिन हर समय अवधि बढ़ती गई। १८५१ ई० में "पाँच सप्ताह" में समाप्त होनेकी बात कही, लेकिन १८५९ ई० में अभी भी "छ सप्ताह" की देरी थी। मार्क्स अपनी कृतिके स्वयं जबर्दस्त आलोचक थे, इसलिये उसमें जान-बूझकर कोई त्रुटि नहीं रहने देना चाहते थे। एंगेल्स जल्दी समाप्त करनेके लिये कितना ही जोर देते, लेकिन उसका कोई फल न होता। १८६५ ई० के अन्तमें काम यद्यपि खतम हो गया, लेकिन जो हस्तलेख अभी तैयार हुआ था, उसे केवल मार्क्स ही प्रेस में देने लायक बना सकते थे, यह काम एंगेल्सके मानका भी नहीं था। जनवरी १८६६ से मार्च १८६७ तक लगकर मार्क्सने "कपिटाल"

की प्रथम जिल्दको प्रेसके लिये सुन्दर ढगसे उसी रूपमें तैयार किया, जिस रूपमें कि वह आज हमारे सामने है। करीब दो शताब्दियोंके परिश्रमस्वरूप जो प्रचुर सामग्री जमा हुई थी, उसका प्रथम भाग इस जिल्दके रूपमें सर्वतोभद्र रूपेण मार्क्सने तैयार किया। सवा वर्षमे लगाकर पालिश करनेका काम जिस वक्त पूरा कर रहे थे, उसी समय मार्क्सका स्वास्थ्य ही नहीं खराब था, बल्कि (फर्वरी १८६६ ई०) वह भयंकर बीमारीमे भी पड़ गये थे। कर्जके बोझके कारण चिन्तायें अलग बहुत बढ़ी हुई थीं और इसी बीचमे उन्हें इन्टर्नेशनलकी जेनेवा-काग्रेसके लिये भी कठोर परिश्रम करना पड़ा।

नवम्बर १८६६ में हस्तलेखका पहला बडल हाम्बुर्गमें प्रकाशक ओटो माइज्नेरके पास भेजा गया, जिसने इससे पहले प्रशियन सैनिक समस्याके ऊपर एंगेल्सकी एक छोटी सी पुस्तकको प्रकाशित किया था। अप्रैल १८६७ मे पुस्तकके बाकी हस्तलेखको मार्क्स अपने साथ हाम्बुर्ग ले गये। मार्क्सको माइज्नेर "भला आदमी" मालूम हुआ। थोडी सी बातचीतके बाद सब शर्तें निश्चित हो गईं। मार्क्स तब तक जर्मनीमें रहनेके लिये उत्सुक थे, जब तक कि लाइपजिग (जहाँ पुस्तक छप रही थी) से प्रथम प्रूफ आ जाये। इसी बीचमें वह अपने मित्र कुगेलमानसे मिलने हनोवर गये, जहाँ उनका बडा स्वागत-सत्कार हुआ। कुगेलमान-परिवारमे उन्होंने कुछ सप्ताह बड़े आनन्दके साथ बिताये, जिसके बारेमें उन्होंने लिखा था: "जीवनके रेगिस्तानमे एक अत्यन्त आनन्दमय और अनुकूल हरियावल।"

हनोवरके शिक्षित लोगोने मार्क्सके साथ जिस तरहका सन्मान और सहानुभूति दिखलाई, वैसी अभी तक उन्हें नहीं मिली थी, इसलिये ४६ वर्षकी अवस्थामे मार्क्सको उससे बहुत प्रसन्नता होनी ही चाहिये थी। २४ अप्रैलके पत्रमे उन्होने एगेल्सको लिखा था, "तुम जानते हो, शिक्षित बूर्ज्वाजीके बीच हम दोनोकी प्रसिद्धि उससे कहीं अधिक है, जितना कि हम सोचते हैं।" २७ अप्रैलके पत्रमे एगेल्सने जवाब देते मार्क्सकी अमर कृतिका जिक्र करते हुये लिखा था: "मैं हमेशा अनुभव करता था, कि यह सौरी किताब, जिस पर कि तुम इतने लम्बे अर्सेसे काम कर रहे थे, तुम्हारे सभी दुर्भाग्योंका कारण

है कि उन दुर्भाग्यों पर काबू पानेमें तुम तब तक समर्थ नहीं होगे, जब तक कि तुमने इस भारको हटा नहीं दिया। इसके न पूर्ण करनेने शारीरिक, बौद्धिक और आर्थिक तौरसे तुम्हें बहुत नीचे की ओर घसीटा। मैं अच्छी तरह समझता हूँ, कि अब जब कि अन्तमें उससे मुक्ति ले ली, तो तुम अपनेको एक दूसरा ही आदमी समझो। विशेषकर अब जब तुम दुनियामें फिर लौटोगे, तो देखोगे, कि यह उस तरहकी अवसाद करनेवाली चीज नहीं है, जैसा कि पहले थी।" इसी पत्रमें एंगेल्सने अपने बारेमें लिखा कि मैं जल्दी ही "सौरे व्यवसाय" से अपनेको मुक्त करनेमें सफल हूँगा, क्योंकि अब फर्ममें पार्टनर होनेके बाद जिम्मेवारियाँ बहुत बढ़ जानेसे मेरी हालत मुश्किल हो गई है।

७ मईकी चिट्ठीमें मार्क्सने लिखा था: "मुझे पक्की आशा और विश्वास है, कि इस वर्षके अन्त तक मैं आदमी बन जाऊँगा, कमसे कम इस अर्थमें, कि अपनी आर्थिक स्थितिको पूरी तौरसे सुधार करनेमें समर्थ हो मैं अन्तमें अपने पैरों पर खड़ा हो सकूँगा। तुम्हारे बिना मैं कभी अपनी कृतिको पूरा नहीं कर सकता था। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ, कि मेरी आत्मापर सदा यह ख्याल एक बड़े बोझकी तरह रहता है, कि तुम अपनी अद्भुत योग्यताको बनियापनमें बरबाद कर रहे हो, उसे मेरे लिये बेकार रख रहे हो और इस सबके ऊपर मेरी सारी दुखदायक परेशानियोंके लिये कष्ट उठा रहे हो। लेकिन मार्क्स अपने पत्रके अनुसार वर्षके अन्तमें क्या अपने जीवनभर अपनेको आर्थिक तौरसे निश्चिन्त नहीं बना सके। हाँ, अब विपदाओंने जैसे कठोर रूपमें उनका पीछा करना छोड़ दिया।

मार्क्सको उनका पिता 'हृदयहीन' कहता था, दूसरे कितने ही मिलनेवाले भी उन्हें रूखे स्वभावका समझते थे। लेकिन, इस हृदयहीन पुरुषके पास कितना महान् हृदय था, यह अपने एक समर्थक खान-इंजीनियर सिगफ्रीड मेयर—जो कि किसी समय अमेरिका चला जानेवाला था—के नाम लिखे उनके एक पत्रसे मालूम होगा: "तुम मेरे बारेमें बहुत बुरे तौरसे सोच रहे होगे, और खास करके इसलिये जब मैं तुम्हें कहता हूँ कि तुम्हारे पत्र मेरे लिये बड़े आनन्दकी चीज ही नहीं थे, बल्कि जिन कठिनाइयोंसे भरे समयमें वह मिले थे,

उन्होंने मुझे वास्तविक सान्त्वना दी। यह ज्ञान मेरी बडी क्षतिपूर्ति करनेवाला था, कि हमारी पार्टीके लिये एक योग्य तथा उच्च सिद्धान्तोवाला आदमी प्राप्त हुआ है। इसके अतिरिक्त तुम्हारे पत्र मेरे लिये वैयक्तिक तौरसे मित्रताके ऐसे गर्मागरम शब्दोंमें सदा लिखे होते थे। ऐसे आदमीके लिये, जो कि सरकारी दुनियाके कठोर संघर्षमे लगातार लगा हुआ हो। अच्छा तो, तुम पूछोगे कि तब मैंने क्यों नहीं तुम्हें जवाब दिया? इसीलिये कि मैं लगातार कब्रके किनारे मॅडरा रहा था और जब कि अपनेमें काम करनेकी क्षमतावाले समयके एक-एक मिनटको मै अपनी उस पुस्तकको समाप्त करनेमे लगानेके लिये मजबूर था, जिसके लिये मैंने अपने स्वास्थ्य, अपने आनंद और अपने परिवारको बलिदान कर दिया। मैं आशा करता हूँ, कि इस व्याख्याको और अधिक बढ़ानेकी आवश्यकता नहीं है। तथाकथित 'व्यावहारिक' पुरुषों और उनकी बुद्धिपर मैं हॅसता था। अगर मेरा चमड़ा बैलके जैसा (मोटा) होता, तो भी यह स्वाभाविक था, कि मैं मानवताके दुःखोंकी तरफसे पीठ फेरकर केवल अपने चमड़ेका ख्याल न करता। लेकिन, मेरी वह अवस्था नहीं है, इसलिये अगर अपनी पुस्तकको कमसे कम हस्तलेखके रूपमें बिना पूरा किये मै मर जाता, तो मैं अपनेको अत्यन्त अव्यावहारिक समझता।" मार्क्सको किन भावनाओने "कपिटाल" (पूॅजी) को पूरा करनेके लिये अठारह वर्षों तक घोर तपस्याका जीवन बितानेके लिये मजबूर किया, यह उपरोक्त पक्तियोंसे स्पष्ट है।

हनोवरमें रहनेके समय वहॉके एक एडवोकेट वार्नेबोल्डने* यह सूचना उनके पास पहुॅचाते बतलाया, कि बिस्मार्क आपकी महान् प्रतिभाको जर्मन-जनताके उपयोगके लिये इस्तेमाल करना चाहता है। मार्क्सका ख्याल था: "इस पट्ठेके बौद्धिक क्षितिजमे अपने सोचनेके तरीकेकी यह विशेषता है, जो कि यह हरेक आदमीको अपने जैसा समझता है।"

विस्मार्कसे तो कोई सम्बन्ध स्थापित नहीं हो सका, लेकिन जब मार्क्स जर्मनी

---

* Warnebold.

से लन्दन लौट रहे थे, तो स्टीमरमें उन्हें एक जर्मन-तरुणी मिली, जो बिस्मार्क-की सम्बन्धी थी। लड़की मरदाना, करीब-करीब सैनिक रोब-दाबकी थी। जब उसे मालूम हुआ, कि उसका सहयात्री भी लन्दन जा रहा है, तो उसने उनसे रेलवे-ट्रेनके बारेमें जानकारी हासिल करनी चाही। मालूम हुआ, उसे अपनी ट्रेन पानेके लिये कुछ घंटों तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। मार्क्सने उसका दिल बहलानेके लिये इन घंटोंको साथमें हाइड-पार्कमें टहलते बितानेकी इच्छा प्रकट की। कुगेलमानको उन्होंने इसके बारेमें लिखा था : "मालूम हुआ कि उसका नाम एलिजावेथ फान पुटकामर* था, और वह बिस्मार्ककी भांजी थी, जिसके साथ अभी बर्लिनमें वह कुछ सप्ताह रही थी। उसे सारी सेना-सूची कंठाग्र थी, क्योंकि उसका परिवार हमारी सेनाको सम्मानित भद्र पुरुषोंको प्रदान करता है।...वह बहुत बड़ी आनन्दी और सुशिक्षिता लड़की थी, लेकिन अन्त-स्तल तक आभिजात्यवर्गीय थी। उसे यह जानकर कम आश्चर्य नहीं हुआ, कि वह लाल हाथोंमें पड़ गई है।" लेकिन तरुणीको जान पड़ता है इस जान-कारीसे कोई खेद नहीं हुआ। उसने मार्क्सकी इस कृपाके लिये उन्हें अपने पत्रमें दिलसे धन्यवाद दिया। यही नहीं उसके माता-पिताने भी अपनी लड़कीके प्रति इस "हृदयहीन" की विशाल-हृदयताकी बात सुनकर उन्हें बहुत धन्यवाद भेजा।

लन्दन पहुँचकर मार्क्स अपनी पुस्तकके प्रूफ शोध कर भेजते रहे, लेकिन मुद्रककी सुस्तीसे उनको कई मर्तबे झुँझुलाना पड़ता था। १६ अगस्त १८६७ के भिनसारके दो बजे एंगेल्सको मार्क्सने अभी-अभी अन्तिम प्रूफ देखकर समाप्त करनेकी सूचना देते हुये लिखा था : "सो यह जिल्द अब समाप्त हो गया। यह सम्भव हो सका, इसके लिये मैं केवल तुम्हें धन्यवाद दूँगा। तुम्हारे बलि-दानोंके बिना, तीनों जिल्दोंके लिए विशाल मात्रामें जो कार्य करना पड़ा, उसे मैं शायद कभी नहीं कर सकता था। मैं हृदयसे धन्यवाद देते हुये तुम्हारा आलिंगन करता हूँ। अभिनन्दन, प्रेमपूर्वक मेरे प्रिय मित्र!"

---

* Puttkamer.

२. प्रथम जिल्द

"कपिटाल" मार्क्स की अमर और वैज्ञानिकतापूर्ण कृति है, जिसे पढ़नेका धैर्य बहुत कम लोगोंको होता है। उसके प्रथम भागको संक्षेपसे यहाँ देना भी वाञ्छनीय नहीं है, लेकिन कुछ शब्द इसके बारेमें यहाँ लिखने जरूरी हैं। १८५६ ई० में "राजनीतिक अर्थशास्त्रकी आलोचना" मार्क्सने लिखी थी, जिसमे मालों* (पण्यो) और पैसेके स्वभावके बारेमें लिखा गया था। "कपिटाल" की प्रथम जिल्दके प्रथम अध्यायमें उसीको संक्षेपसे लिखा गया है। जर्मन् प्रोफेसर प्रथम अध्यायको "रहस्यवादकी बात" कहकर नाक-भौं सिकोडते थे। मार्क्सने यहाँ कहा था : "पहली नजर डालनेपर माल आसानीसे समझी जानेवाली एक मामूली सी चीज मालूम होती है। किन्तु, इसका विश्लेषण करने पर मालूम होता है, कि यह अत्यन्त दुरूह वस्तु अतिभौतिक सूक्ष्मताओं और धर्मशास्त्रीय चालाकियोंसे भरी हुई चीज है। जहाँ तक उपयोग-मूल्यके रूपमें यह पाई जाती है, इसमें कोई भी रहस्यवाद जैसी बात नहीं है।...काष्ठका आकार बदल जाता है, जब हम उसकी एक मेज बनाते हैं, तो भी मेज काष्ठ ही, एक साधारण तौरसे प्रत्यक्ष देखी जानेवाली चीज रहती है। पर जैसेही यह माल (सौदा) के रूपमे प्रकट होती है, वैसे ही यह सर्वातिरिक्त† तथा साथ ही अप्रत्यक्षकरणीय बन जाती है। वह अपने चारों पैरोंके बल पृथिवीपर दृढता-पूर्वक केवल खड़ी ही नहीं होती, बल्कि दूसरे मालोंके सम्बन्धमें उलटे सिर खडी होती है, और अपरिचितके लिये उसका काष्ठका सिर उससे कहीं विचित्र मन-मानापन विकसित करता है, जितना कि बिना मानवी सहायताके वह नाचना आरम्भ करके करता है।"

पहली जिल्दके पहले अध्यायके वर्णविन्यास और लिखावट लेखनकलाकी दृष्टिसे अद्वितीय है। मार्क्स पहले मालके बारेमे कहते हैं, फिर आगे यह बतलाते हैं कि किस तरह पैसा‡ पूँजी (कपिटाल) के रूपमें परिणत होता है। अगर समान मूल्योको मालके परिचार (परिभ्रमण) में समान मूल्यपर विनि-

---

* Commodities. † Trancendental ‡ Money.

मय किया जाता है, तो कैसे पैसेवाला आदमी उनके मूल्यपर मालोंको खरीदकर उन्हींके मूल्यपर बेंचते भी अपने दिये मूल्यसे अधिक मूल्य प्राप्त करता है? इसलिए वर्त्तमान सामाजिक सम्बन्धोंमें वह मालको मालके बाजारमें ऐसे विचित्र स्वभावका पाता है, कि उसका उपभोग नये मूल्यका स्रोत बन जाता है। यह माल है श्रम-शक्ति, जो जीवित कमकरके रूपमें मौजूद है। कमकरके अपने जीवन और परिवारको कायम रखनेके लिये कुछ मात्रामें खाद्य वस्तुओंकी आवश्यकता होती है—उसका परिवार कमकरके मरजानेके बाद आगे भी सजीव श्रम शक्तिके बने रहनेकी गारंटी करता है। खाद्य वस्तु आदिकी इस मात्राके पैदा करनेके लिए जो श्रम-समय आवश्यक है, वही श्रम-शक्तिका मूल्य है। तथापि, मजूरीके रूपमें यह मूल्य जो दिया जाता है, वह उस मूल्यसे बहुत कम है, जिसे कि श्रम-शक्तिका खरीदार कमकरसे निचोड़नेमें समर्थ होता है। उसकी मजूरीके रूपमें मूल्यकी जगह लेनेवाले आवश्यक श्रम-समयके ऊपर और अधिक जो कमकरका अतिरिक्त श्रम है, वही अतिरिक्त-मूल्यका ऐसा स्रोत है, जो कि लगातार बढ़ते हुये पूँजी-संचयनका स्रोत है। कमकरका मुफ्तमें लिया यह श्रम समाजके सभी श्रम न करनेवाले मेम्बरोंमें बाँटा जाता है, और वह सारी सामाजिक व्यवस्था इसीपर आधारित है, जिसमें हम रहते हैं।

(१) पूँजीवाद—बिना मजूरी दिये (मुफ्तका) श्रम निश्चय ही आधुनिक बूर्ज्वा-समाजका केवल अपना गुण (विशेषता) नहीं है। जब तक दुनियामें सम्पत्तिमान् और सम्पत्तिहीन वर्ग मौजूद है, तब तक सम्पत्तिहीन वर्गको हमेशा मुफ्तका श्रम करना पड़ेगा, जब तक कि समाजके एक भागके हाथमें उत्पादनके साधनोंकी इजारादारी है, तब तक कमकर चाहे स्वतन्त्र हो या अस्वतन्त्र, उसे उससे कहीं अधिक समय तक काम करना पड़ेगा, जितना कि उत्पादन-साधनोंके स्वामियोंसे खाद्य-वस्तु आदिको प्राप्त कर अपना अस्तित्व कायम रखनेके लिये समयकी आवश्यकता है। मजूरी-श्रम उस मुफ्त श्रम-व्यवस्थाका केवल एक विशेष ऐतिहासिक रूप है, जो कि समाजके वर्गोंके रूपमें विभाजित होनेके समयसे मौजूद रहती चली आई है, और जिसे ठीकसे समझने-के लिये, इसी रूपमें उसकी परीक्षा करनी होगी।

अपने पैसेको पूँजीके रूपमें परिणत करनेके लिये पैसेवाले आदमीको बाजारमें स्वतन्त्र कमकरोंको प्राप्त करना होगा—स्वतन्त्र दोहरे अर्थोंमें, सबसे पहले यह, कि वे अपनी श्रम-शक्तिको मालके तौरपर बेचनेमें स्वतन्त्र हैं, और दूसरे यह कि उनके पास बेचनेके लिये और कोई चीज नहीं है। स्वतन्त्र इस अर्थमें भी कि स्वतन्त्र रूपसे अपनी श्रम-शक्तिके प्रयोगके लिये आवश्यक कोई साधन उनके पास मौजूद नहीं है। यह ऐसा सम्बन्ध है, जिसका आधार प्राकृतिक नियम नहीं है, क्योंकि प्रकृति न एक ओर मालो, पैसेके स्वामियोंको पैदा करती; और न दूसरी ओर उनको पैदा करती है, जिनके पास अपनी श्रम-शक्तिके सिवा और कुछ नहीं है। इसके साथ ही यह बात भी है, कि इतिहासके सभी कालोंके लिये एक सा सामाजिक सम्बन्ध नहीं है, बल्कि वह ऐतिहासिक विकासके एक लम्बे कालका परिणाम-अनेक आर्थिक परिवर्तनों और सामाजिक उत्पादनके पुराने रूपोंकी सारी परम्पराओंके पतन और विलोपकी उपज है।

पूँजीका आरम्भ स्थान है मालका उत्पादन। माल-उत्पादन, माल-परिभ्रमण और विकसित माल-परिभ्रमण, व्यापार—ये उन स्थितियोंको पैदा करते हैं, जिनके भीतर पूँजी विकसित होती है। आधुनिक पूँजीका इतिहास आधुनिक विश्व-व्यापार और आधुनिक विश्व-बाजारके पैदा होनेसे सोलहवीं सदीमे शुरू होता है। गँवार अर्थशास्त्रियोंका यह समझना केवल भ्रम मात्र है, कि अत्यन्त प्राचीन कालमें एक समय परिश्रमी पुरुषार्थी पुरुषों की एक छोटीसी मंडली थी, जिन्होने धनको जमा किया और दूसरी ओर आलसी और निठल्ले आदमियोंका एक भारी समुदाय था, जिनके पास बेचनेके लिये अपना देह छोड़ और कोई चीज नही रह गई थी—यह बेकारकी बात है। इसी तरह अधकचरे ज्ञानके साथ बूर्ज्वा-इतिहासकार अर्थ-उत्पादनके सामन्तवादी ढंगके विलोप और कमकरकी स्वतन्त्रताका वर्णन करते हैं, लेकिन साथ ही सामन्तवादी ढंगके विकासका पूँजीवादी ढंगमें विकसित होना नहीं बतलाते। उनका यह आदिम धन-संचयका वर्णन गप्से बढकर नहीं है। दास और अर्धदासकी तरह कमकर न अब उत्पादन-साधनकी वस्तुओंमें परिगणित किया जाता, न वह अपने लिये काम करनेवाले किसान या शिल्पकारकी तरह उत्पादन-साधनका रखनेवालाही

रह जाता है। अँग्रेजी इतिहासके आधारपर मार्क्स बतलाते हैं कि कैसे बहुसंख्यक जनसमूहको लगातार कितने ही हिंसात्मक और पाशविक उत्पीड़नों द्वारा उत्पादन साधनों, भूमि और अन्नसे वंचित किया गया। उन्होंने इसे प्रारम्भिक संचयन-वाले अध्यायमें बतलाया है। इस प्रकार आहार आदिमें स्वावलम्बी बनानेवाले सारे साधनोंसे वंचित करके ऐसे स्वतंत्र कमकरोंकी सृष्टि की गई, जिनको पूँजी-वादी उत्पादन-शैलीकी आवश्यकता थी। पूँजी इस प्रकार रोम-रोममें खून और कीचड़से लतपथ होकर संसारमें आई, जैसे ही वह अपने संसारमें खड़ी हुई, वैसे ही उसने अपनी श्रम-शक्तिके उपयोगके लिये आवश्यक साधनोंसे कमकरके बिलगावको केवल कायम ही नहीं रक्खा, बल्कि इस बिलगावको लगा-तार बढ़ते हुये पैमानेपर पुनः उत्पन्न किया।

मुफ्त श्रमके पुराने रूपोंसे इस श्रम-शक्तिका भेद इसी बातका परिणाम है, कि पूँजीका गमनागमन असीम है और अतिरिक्त-श्रमके लिये पूँजीकी जठराग्नि कभी न तृप्त होनेवाली है। जिन समाजोंमें किसी मालका उपयोग-मूल्य, उसके विनिमय-मूल्यसे अधिक महत्व रखता है, उनमें आवश्यकताओंके विस्तृत चक्कर के भीतर कम या बेशी अतिरिक्त-श्रम सीमित रहता है, लेकिन उत्पादन के इस ढंगकी प्रकृति परिणामतः अतिरिक्त-श्रमके लिये असीम माँग नहीं पैदा करती। जब मालका विनिमय-मूल्य उपयोग-मूल्यसे अधिक महत्व रखता है तब स्थिति बिलकुल भिन्न हो जाती है। पराई श्रम-शक्ति द्वारा माल-उत्पादन करनेके अतिरिक्त श्रमको चूसने और श्रम-शक्तिको शोषण करनेमें पूँजी-शक्ति, निष्ठुरता और प्रभुता की दृष्टिसे सीधे जबर्दस्ती लिये गये बेगार-श्रमपर आधारित उत्पादनके सभी पुराने ढंगोंको मात करती है। पूँजीके लिये मुख्य वस्तु न श्रमकी प्रक्रिया है और न उपयोग-मूल्योंका उत्पादन, बल्कि उसका मुख्य लक्ष्य है उपयोग, विनिमय-मूल्योंका उत्पादन, जिनसे कि लगे मूल्यसे-अधिक मात्रामें मूल्य निचोड़ा जा सके। पूँजीपतिकी अतिरिक्त-मूल्यकी प्यास कभी नहीं तृप्त हो सकती। विनिमय-मूल्योंका उत्पादन ऐसी किसी सीमाको नहीं स्वीकार करता, जो कि तुरन्तकी आवश्यकताओंकी पूर्तिके द्वारा उपयोग-मूल्योंके उत्पादनसे बनाई जाती है।

जिस प्रकार माल उपयोग और विनिमय-मूल्योंका सम्मिश्रण है, उसी तरह माल-उत्पादनकी प्रक्रिया, श्रम-प्रक्रिया और मूल्य सृजन करनेवाली प्रक्रिया-का सम्मिश्रण है। मूल्य-सृजन करनेकी प्रक्रिया उस जगह तक चलती रहती है, जहाँ मजूरीके रूपमें चुकाये गये श्रम-शक्तिके मूल्यका स्थान समान मात्रावाला मूल्य लेता है। इस स्थानसे परे वह अतिरिक्त-मूल्य उत्पादन करनेकी प्रक्रिया उपयोग करनेकी प्रक्रियाके रूपमें विकसित होता है। वह श्रम-प्रक्रिया और उप-योग करनेकी प्रक्रियाके सम्मिश्रणके तौरपर पूँजीवादी उत्पादनकी प्रक्रिया, माल-उत्पादनका पूँजीवादी रूप बन जाता है। श्रम-प्रक्रियामे श्रम-शक्ति और उत्पा-दन-साधन दोनो मिलकर काम करते हैं। वही उपयोग करनेकी प्रक्रियामें पूँजी-का अश स्थिर और चल पूँजीके रूपमें प्रकट होता है। स्थिर-पूँजी उत्पादनकी प्रक्रियामे उत्पादन-साधनों, कच्चे मालों, सहायक सामग्री, उत्पादनके हथियारों—के रूपमे परिणत हो अपने मूल्यको नहीं बदलती। चल-पूँजी उत्पादनकी प्रक्रियामें श्रम-शक्तिके रूपमें परिवर्तित होती है, और उसका मूल्य बदल जाता है : वह अपने निजी मूल्यको पैदा करती है, फिर मूल्य से अधिक और ऊपर अतिरिक्त-मूल्य पैदा करती है, जो कि परिस्थितियोंके अनुसार मात्रामें बड़ा या छोटा हो सकता है।

(२) अतिरिक्त मूल्य—इस तरह विवेचन करनेके बाद मार्क्सने अतिरिक्त-मूल्यके परीक्षणमें हाथ लगाया। अतिरिक्त-मूल्य दो रूपोमें प्रकट होता है, सापेक्ष-अतिरिक्त-मूल्य और परम-अतिरिक्त-मूल्य। इन दोनों प्रकारके मूल्योंने पूँजीवादी उत्पादनके ढगके इतिहासमें भिन्न-भिन्न किन्तु निर्णायक पार्ट अदा किये हैं।

परम अतिरिक्त-मूल्य उस समय पैदा होता है, जब कि पूँजीपति कमकरसे उस समयसे आगे काम करवाता है, जिसकी कि उसे अपनी श्रम-शक्तिके पुनरु-त्पादनमें आवश्यकता होती है। अगर पूँजीपतिका बस चलता, तो वह अपने कामका दिन चौबीस घटेका रखता, क्योंकि जितना ही बड़ा कामका-दिन होगा, उतना ही अधिक अतिरिक्त-मूल्य पैदा किया जा सकेगा। लेकिन दूसरी ओर कमकरका यह समझना बिल्कुल उचित है, कि अपनी मजूरीके उत्पादनकी

आवश्यकतासे अधिक और ऊपर जितना भी घंटा, हमें काम करनेके लिये मजबूर किया जाता है, वह अन्यायपूर्वक हमारा निचोड़ना तथा अत्यधिक श्रम-समयके लिये अपने स्वास्थ्यका खोना है। पूँजीपति और कमकरके बीचमें कामके दिनकी लम्बाईके सम्बन्धमें संघर्ष उसी दिनसे आरम्भ हुआ, जब कि ऐतिहासिक तौरसे प्रथम बार स्वतन्त्र कमकर बाजारमें दीखे जाने लगे। वह संघर्ष आज तक चला आ रहा है। पूँजीपति लाभ-शुभके लिये लड़ता है, चाहे वह व्यक्तिगत तौरसे भलेमानुस हो या गुण्डा। अपने सहयोगी दूसरे पूँजीपतियोंके साथ उसकी जो प्रतियोगिता है, वह उसे मजबूर करती है, कि मनुष्यकी बर्दाश्तकी सीमा जहाँ तक है, वहाँ तक कामके दिनको बढ़ानेके लिये हरेक तरहकी सम्भव कोशिशें करें। दूसरी ओर कमकर अपने स्वास्थ्यको कायम रखने तथा काम करने, खाने, सोनेके अतिरिक्त दूसरे मानवीय जीवनके कामोंमें लगानेके लिये प्रतिदिन कुछ स्वतन्त्र घंटोंको बचानेके लिये लड़े। मार्क्सने बड़े शक्तिशाली शब्दोंमें इंगलैंड-के मजदूर वर्ग और पूँजीपति वर्गके बीचके पचास साल तक चलते बड़े पैमानेके उद्योगके पैदा होनेके समयसे गृह-युद्धका वर्णन किया है। प्रकृति और रीति-रिवाज, आयु और पुरुषस्त्री भेद तथा दिन और रातने सर्वहाराके शोषणके ऊपर जितनी रोक लगा रक्खी थी, उन्हें तोड़ फेंकनेके लिये बड़े पैमानेके उद्योग-धंधेने पूँजीपतियोंको तब तक मजबूर किया, जब तक कि दोनोंका संघर्ष इस तरह चलता रहा, जब तक कि दस घंटा-बिलने कानूनका रूप नहीं धारण कर लिया। इस कानूनको पूँजीपतियोंके साथ संघर्ष करके मजदूर वर्गने जीता। पूँजी अत्यन्त शक्तिशाली सामाजिक बाधा है, वह अपने साथ स्वतन्त्र ठेका करके कमकरोंको अपने और अपनी जाति वालोंको मृत्यु और दासताके रूपमें बेचनेके लिये मजबूर करती है।

सापेक्ष अतिरिक्त-मूल्य उस समय पैदा होता है, जब कि श्रम-शक्तिके उत्पादनके लिये आवश्यक श्रम-समय कम करके उसे अतिरिक्त-श्रममें लगाया जाता है। श्रम-शक्तिका मूल्य उन उद्योग-धन्धोंमें श्रम-शक्तिकी उत्पादकताकी वृद्धि द्वारा किया जाता है, जिनकी उपज श्रम-शक्तिके मूल्यको निर्धारित करती है। इस मतलबसे उत्पादन-शैलीमें लगातार भारी परिवर्त्तन-श्रम-प्रक्रियाकी

टेक्नीक और समाजवादी स्थितियोंमें क्रान्ति उपस्थित करना आवश्यक है। इसके आगे मार्क्स बड़े पैमानेके उद्योगके भीतरकी बहुत सी बातो—सहकारिता, श्रम और माल-निर्माणके विभाजन, मशीन आदिका—कितने ही अध्यायोंमें वर्णन करते हैं।

मार्क्सने सिर्फ यही नहीं बतलाया, कि मशीन और बड़े पैमानेके उद्योग-धन्धेने पहलेके इतिहासमे पाये जानेवाले पहलेके उत्पादनके ढंगोंकी अपेक्षा अधिक दुःख और दारिद्र्य ही पैदा किया, बल्कि वह साथ ही पूँजीवादी समाजके लगातार भारी परिवर्त्तनोके कारण और अधिक ऊँचे सामाजिक रूपके लिए रास्ता तैयार करते हैं। फैक्टरी-सम्बन्धी कानून उत्पादन-प्रक्रियाके अप्राकृतिक रूपके प्रति समाजकी प्रथम सचेतन और बाकायदा प्रतिक्रिया थी। जब समाज कारखानों और फैक्टरियोंमें श्रमको कानूनबद्ध करता है, उस समय यह केवल पूँजीके शोषण-सम्बन्धी अधिकारोंमें दखल देना जैसा मालूम होता है। लेकिन परिस्थितियाँ जल्दी ही समाजको इसके लिए मजबूर करती हैं, कि वह घरेलू श्रमको भी कानूनबद्ध करे, मातापिताके अधिकारोंमे दखल दे। इस प्रकार बड़े पैमानेका उद्योग-धन्धा पुरानी पारिवारिक व्यवस्था तथा तदनुकूल पारिवारिक श्रमके साथ पुराने पारिवारिक सम्बन्धोको खतम कर देती है। "पूँजीवादी व्यवस्थाके द्वारा पुरानी पारिवारिक व्यवस्थाका विलोपन चाहे कितना ही भयकर और घृणास्पद कृत्य क्यो न जान पड़े, किन्तु उत्पादनकी सामाजिक प्रक्रियामें स्त्रियों, तरुणों और बच्चोंको घरेलू क्षेत्रसे बाहर निकल एक निर्णायक पार्ट अदा करनेका अधिकार दे बड़े पैमानेका उद्योग परिवारके उच्चतर रूप तथा स्त्री-पुरुष के सम्बन्धके बारेमें एक नया आर्थिक आधार पैदा करता है। वस्तुतः यह उसी तरह बेवकूफीकी बात है, जैसे कि खिस्तानी-जर्मनिक परिवारके रूपको परम मान लिया जाय या, प्राचीन रोमन रूप अथवा प्राचीन ग्रीक रूप अथवा उसके प्राच्य रूपको परम सत्य मान लिया जाय। यह रूप विकासकी ऐतिहासिक सीढ़ियोंको बतलाते हैं। यह भी उसी तरह स्पष्ट है, कि स्त्री-पुरुषो और भिन्न-भिन्न आयुवाले मजूरोंका इस प्रकार एकताबद्ध होना उपयुक्त स्थितियोंमें मानव-प्रगतिके स्रोतके रूपमें परिणत हो सकता है, यद्यपि अपने अनियंत्रित पशुता-

पूर्ण पूँजीवादी रूपमें (जिसमें कि कमकर उत्पादन प्रक्रियाके लिये जीते हैं, न कि उत्पादन-प्रक्रिया कमकरोंके लिये) यह भ्रष्टाचार और दासताका गन्दा स्रोत है। "कमकरको नीचे गिराकर जो मशीन अपना पुछल्ला बनाती है, वह साथ ही ऐसी सम्भावनाको भी पैदा करती है, जिसमें कि समाजकी उत्पादक-शक्तियाँ इतनी हद तक बढ़ जायँ, कि बिना किसी अपवादके समाजके सभी व्यक्ति-मानव-प्राणीके योग्य विकासकी एक सी सम्भावनाओंका उपभोग कर सकें। यह एक ऐसी बात है, जिसे कार्यरूपमें परिणत करनेमें सभी पुराने समाज असमर्थ थे।

परम-अतिरिक्त-मूल्य और सापेक्ष-अतिरिक्त-मूल्यके उत्पादनका परीक्षण करनेके बाद मार्क्सने राजनीति अर्थशास्त्रके इतिहासमें पहले-पहल आये मजूरीके बुद्धिवादी सिद्धांतका प्रतिपादन किया। मालका दाम उसका पैसेके रूपमें प्रकट किया जानेवाला मूल्य है, और मजूरी श्रम-शक्तिका दाम है। श्रम स्वयं मालके बाजारमें नहीं आता, बल्कि वह सजीव साकार कमकरके रूपमें आता है। कमकर अपनी श्रम-शक्तिको बेचनेके लिये रखता है, और श्रम मालकी श्रम-शक्तिके उपभोगके रूपमें ही केवल प्रकट होता है। श्रम मूल्योंका द्रव्य और आन्तरिक परिमाण है। लेकिन, वह स्वतः अपना कोई मूल्य नहीं रखता। तो भी, श्रम मजूरीके रूपमें अपना पारिश्रमिक पाते दिखाई पड़ता है, क्योंकि कमकर अपनी मजूरीको श्रम पूरा कर लेनेके बाद ही पाता है। जिस रूपमें मजूरी मिलती है, वही अपने भीतर कामके दिनके विभाजनके चिन्होंको मुफ्त या नमुफ्त श्रम-समयके रूपमें भली-भाँति छिपाये रखता है। दासोंके लिये इससे बिल्कुल उल्टी बात थी। दास सभी समय-उस समय भी जब कि वह अपनी खाद्य-वस्तुके मूल्यके उत्पादनके लिये ही काम करता होता था—अपने मालिकके लिये काम करता होता था। जान पड़ता था उसका सारा श्रम मुफ्तका है। लेकिन मजूर दास-श्रमके प्रति इस धारणाके विरुद्ध मजूरी-श्रमका सारा श्रम—जिसमें मुफ्त श्रम वाला अंश भी शामिल है—नमुफ्त सा मालूम होता है। दास-श्रमके बारेमें सम्पत्ति-सम्बन्ध इस तथ्यको ढाँक देता है, कि दास अपने श्रमके कुछ समयमें अपने लिये काम करता है। मजूरी-श्रम-व्यवस्थामें यह पैसेका सम्बन्ध

ही है, जो कि इस तथ्यको ढाँक देता है, कि मजूरी पाने वाला कमकर कुछ समय मुफ्तमें काम करता है। इसलिये हम मूल्य तथा श्रम-शक्तिके दामके मजूरीके रूपमें या स्वयं श्रमके मूल्य और दामके रूपमें परिणत होनेको निर्णायक महत्त्वको समझ सकते हैं। इसी दिखलावेके ऊपर पूँजीपतियों और कमकरों दोनोंकी सारी कानूनी धारणायें आधारित हैं। उत्पादनके पूँजीवादी ढंगके सभी रहस्यापादन तथा पूँजीवादी उत्पादन द्वारा स्वतन्त्रताका भ्रम पैदा करना और गँवारू राजनीतिक अर्थशास्त्रकी कमकरोंके प्रति सभी बेहूदगियाँ यही हैं वे चीजें हैं, जो कि वास्तविक अवस्थाको छिपाकर हमें उल्टी दिशामें भटकाना चाहती हैं।

मजूरीके दो मुख्य रूप हैं : समयके अनुसार मजूरी और कामके अनुसार मजूरी (खंड-मजूरी)। कामके दिनको अस्थायी तौरसे कम करने पर मजूरी कम हो जाती है, लेकिन स्थायी तौरसे उसे कम करने पर मजूरी बढ जाती है। जितना ही बडा कामका दिन होगा, उतनी ही मजूरी कम होगी। कामके अनुसार मजूरी या खड-मजूरी समयानुसार मजूरी का ही एक परिवर्तित रूप है। पूँजीवादी उत्पादन-प्रक्रियाके लिये यही सबसे अनुकूल मजूरीका रूप है। यह पूँजीपतियोंके वास्ते इसलिये अधिक सुभीतेका है, क्योंकि तब उन्हें देख-रेखकी आवश्यकता नहीं रह जाती, और साथ ही मजूरी काटनेके लिये कई बहाने उन्हें मिल जाते हैं। दूसरी ओर कामके अनुसार मजूरीका ढंग कमकरोंके लिये बहुत असुविधायें पैदा करता है : अधिक काम करनेकी लालचसे अधिक परिश्रम करके कमकर अपनेको बुरी तौरसे थका देता है। इस प्रयत्नमें उसकी मजूरीकी कम होनेकी नौबत आती है। मजूरोंके भीतर अधिक पैसा कमानेके लिये जो होड होती है, उसके कारण उनकी एकताको नुकसान पहुँचता है। इसके कारण पूँजीपतियों और कमकरोंके बीच मेंट—सरदार आदि जैसी जोंकें आ मौजूद होती हैं, जो कि कमकरोंकी मजूरीका काफी भाग अपने पाकेटमें डालती हैं।

अतिरिक्त-मूल्य और मजूरीके बीचके आपसी सम्बन्ध, उत्पादनकी पूँजीवादी शैली पूँजीपतिके लिये केवल पूँजीको ही नहीं, बल्कि कमकरके लिये गरीबीको भी लगातार पुनरुत्पादित करती रहती है। एक ओर पूँजीपति-वर्ग है, जिसके

पास सभी खाद्य-सामग्री, सभी कच्चा-माल और सभी उत्पादन-साधन हैं, और दूसरी ओर कमकर-वर्ग-मानवताका विशाल जनसमूह है, जो कि अपनी श्रम-शक्तिको पूँजीपतियोंके हाथमें खाद्यकी उस मात्राके वास्ते बेंचनेके लिये मजबूर है, जो कि अधिक से अधिक इतना ही कर सकती है, कि कमकरको काम करनेकी स्थितिमें कायम रक्खे और सर्वहारोंकी एक नई पीढ़ीको पैदा करानेमें सहायक हो। लेकिन पूँजी केवल अपनेको फिरसे उत्पन्न ही नहीं करती, बल्कि वह अपने परिमाणको लगातार बढ़ाती भी जाती है।

(२) **पूँजी संचयन**—मार्क्सने पहली जिल्दके अन्तिम भागमें "संचयन-की प्रक्रिया" की व्याख्या की है। पूँजीसे केवल अतिरिक्त मूल्य ही नहीं पैदा होता, बल्कि अतिरिक्त मूल्यसे पूँजी भी पैदा होती है। जो अतिरिक्त-मूल्य पैदा किया जाता है, हर साल उसका एक भाग सम्पत्तिमान् वर्गोंमें बाँटा जाता है जिसे वह आयके तौर पर उपभोग करते हैं। लेकिन, इस विभाजित अति-रिक्त मूल्यका दूसरा भाग पूँजीके रूपमें भी संचित होता रहता है। इस प्रकार जो मुफ्त-श्रम लाभ-शुभके रूपमें कमकरोंसे छीना गया है, वह आगे उनसे और भी मुफ्त श्रम छीननेके लिये साधन बन जाता है; और उत्पादनके प्रवाहमें आरम्भमें जो पूँजी लगाई गई थी, वह प्रत्यक्षतः संचित पूँजीकी तुलनामें एक नगण्य मात्रामें रह जाती है; अर्थात् अतिरिक्त-मूल्य अथवा अतिरिक्त-उपज, जो कि फिरसे ऐसी पूँजीके रूपमें परिणत की जाती है (जो चाहे आरम्भमें संचित करनेवालेके हाथमें काम कर रही हो, या दूसरेके हाथमें) वह साक्षात् तौरसे संचितकी हुई पूँजीकी तुलनामें नगण्य सी मालूम होती है। माल-उत्पादन और माल-परिभ्रमणके आधार पर स्थापित वैयक्तिक सम्पत्तिका कानून अपनेको बिल्कुल उलटे रूपमें अपने आन्तरिक और अनिवार्य द्वन्द्वात्मकताके कारण परिणत कर देता है। माल-उत्पादनके कानून वैयक्तिक श्रममें सम्पत्ति-अधि-कारको उचित बतलाते जान पड़ते हैं। समान अधिकार वाले मालिक एक दूसरेके मुकाबिलेमें खड़े होते हैं। दूसरे मालको केवल अपने मालकी बिक्रीसे ही वह प्राप्त कर सकते हैं और अपना माल केवल श्रम द्वारा ही उत्पादित करा सकते हैं। पूँजीपतिके पक्षमें सम्पत्ति अब दूसरेके मुफ्त-श्रम या उसकी

उपजको मार लेनेका अधिकार दीख पडती है, और कमकरोंकी तरफ देखने पर उनकी उपजके उडा लेनेकी असंभवनीयता सी दीख पड़ती है।

पूँजीवादी संचयनका साधारण नियम निम्न प्रकार है: पूँजीकी वृद्धिमें इसका चल अंश अर्थात् वह भाग भी शामिल है जो कि श्रम-शक्ति में बदला है। अगर पूँजीकी बनावट अपरिवर्तित रहे, यदि उत्पादनके साधनोंकी कुछ मात्राको सदा उसे गतिशील रखनेके लिये उतनी ही मात्रामे श्रम-शक्तिकी आवश्यकता हो, तो यह स्पष्ट है, कि श्रम-शक्तिकी आवश्यकता पूँजीकी वृद्धिके अनुपातसे बढ़ेगी, जितनी ही जल्दी पूँजी बढ़ेगी, कमकरोंके जीवनयापनके लिये धनकी आवश्यकता भी उतनी ही जल्दी बढ़ेगी। जिस प्रकार सीधा-सादा पुनरुत्पादन स्वयं लगातार पूँजी संबन्धको पुनरुत्पादित करता है, इसी प्रकार पूँजीका संचयन बडी मात्रामें पूँजी-संबन्धको पुनरुत्पादित करता है। एक ओर पूँजीपति अथवा बड़े पूँजीपति बढ़ते हैं और दूसरी ओर अधिक संख्यामें मजूरी-कमकर बढ़ते हैं। इस प्रकार पूँजीके संचयनका अर्थ है सर्वहाराकी भी वृद्धि। मान लो, यह वृद्धि कमकरोंके लिये अत्यन्त अनुकूल अवस्थामे होती है: उनकी अपनी अतिरिक्त उपजका अधिक भाग—जो कि बराबर बढता हुआ पूँजीके रूपमें परिवर्तित होता है—उनके पास वेतनके साधनोंके रूपमे लौटता है, और इस प्रकार वह अपने-अपने भोगकी वस्तुओंको बढ़ा सकते हैं, कपडा सामान आदि अधिक उदारतासे अपने लिये खरीद सकते हैं। तथापि किसी तरह भी पूँजी-पतियोंकी तरफ उनकी परतंत्रताका सम्बन्ध नहीं बदलता, उसी तरह जैसे एक दासको कितना ही अच्छी तरह खिलाया-पहनाया जाय, वह दास छोड़ और नहीं हो सकता। कमकरोंको हमेशा कुछ परिमाणमें मुफ्तका श्रम देना ही पड़ेगा। हो सकता है मुफ्त श्रम मात्रा कम होती जाय, लेकिन यह मात्रा उतनी दूर तक कम नहीं हो सकती, जिसमें कि वह उत्पादनकी प्रक्रियाके पूँजीवादी रूपको भारी खतरेमें डाल दे। अगर मजूरी इस सीमासे ऊपर उठी, तो लाभ-शुभका आकर्षण बोझिल हो जायगा और पूँजीका संचयन सुस्त होते-होते वह यहाँ तक पहुँच जायगा, कि मजूरी पुनः उसके उपयोगकी आवश्यकताओंके अनुकूल तल-पर गिर जायेगी।

तथापि तभी, जब पूँजीका संचयन अपने स्थिर-अंशों और चल-अंशोंके बीचके सम्बन्धमें बिना किसी परिवर्त्तनके होता है, तो वह ऐसी सोनेकी जंजीर होगा, जिसे कि मजूरी-कमकर अपने लिये स्वयं गढ़ते हैं। वास्तविक तौरसे देखने पर संचयनकी प्रक्रियाके साथ-साथ पूँजीकी सजीव बनावटमें एक बड़ी क्रांति पैदा होती है। श्रमकी बढ़ती हुई उत्पादकता उत्पादन-साधनोंके समूहको उससे अधिक शीघ्रताके साथ बढ़ाती है, जितनी शीघ्रतासे कि श्रम-शक्तिका समूह उनमें सम्मिलत होता है। पूँजीके संचयनके अनुपातसे श्रम-शक्तिकी माँग बढ़ती नहीं बल्कि अपेक्षाकृत घटती है। जो पूँजीका संचयन होता है, वह अपने संचयनसे पृथक एक दूसरे रूपमें उसी प्रभावको पैदा करता है, क्योंकि पूँजीवादी प्रतियोगताके कानूनके कारण बड़े पूँजीपति छोटे पूँजीपतियोंको निगलते जाते हैं। तब संचयनकी प्रक्रियासे जो अधिक पूँजी तैयार हुई है, उसे अपनी मात्राकी अपेक्षा बराबर कम से कम कमकरोंकी आवश्यकता होती है। उसी समय पुरानी पूँजी जो कि नई बनावटमें पुनरुत्पादित हुई है—अपने पहलेके रक्खे हुए कमकरोंमें से अधिकाधिककी छँटनी करती है। इस प्रकार वहाँ कमकरोंका एक सापेक्ष अतिरिक्त-समूह पैदा होता है—सापेक्ष पूँजीके उपयोगकी आवश्यकताके ख्यालसे—और इस प्रकार औद्योगिक रिजर्व-सेना तैयार हो जाती है, जिसे बुरे या मंदीके समय अपनी श्रम-शक्तिके मूल्यसे कम मजूरी मिलती है, साथ ही उसे लगातार नौकरी भी नहीं मिलती, और जो काम न मिलनेके समय सार्वजनिक सहायताकी मुहताज होती है! इसके साथ ही वह हर समय काममें लगे कमकरोंके प्रतिरोधको निर्बल बनानेमें सहायता करती उनकी मजूरीके तलोंको नीचे गिराती है।

(४) सर्वहारा—यह औद्योगिक रिजर्व-सेना (बेकार मजूर) पूँजी संचयनकी इस प्रकिया अथवा पूँजीवादी आधारपर धनकी वृद्धिकी आवश्यक उपज है, जो साथ ही यह उत्पादनके पूँजीवादी ढंगके रक्षक पुर्ज़ेका काम करती है। श्रमकी उत्पादकताके विकासके साथ तथा पूँजीके संचयन द्वारा, श्रमके उत्पादनके विकासके साथ पूँजीके एकाएक विस्तारकी शक्ति भी बढ़ती है, जिसके लिए तुरन्त नई बाजारों अथवा उत्पादनकी नई शाखाओंमें कामपर

लगानेके लिये, दूसरे क्षेत्रोंमें उत्पादनके काममें बाधा डाले बिना कमकरोंके भारी समूहकी जरूरत होती है। आधुनिक उद्योग-धन्धेकी उल्लेखनीय धारा छोटे-छोटे टूटनोंके साथ औसत कार्यप्रवणता, बड़े जोरके साथ उत्पादन तेजी और मन्दीके दशवार्षिक चक्करका रूप-औद्यगिक रिजर्व सेनाके लगातार निर्माण, उसके कम या बेशी काममें खपने और पुनर्निर्माणपर आधारित है। सामाजिक ढंग, काममें लगी पूँजीका परिणाम, उसकी वृद्धिका विस्तार और शक्ति, और इसलिए कमकर जनताके परम विस्तार और उसके श्रमकी उत्पादकता जितनी ही अधिक बढ़ती है, उसीके अनुसार अपेक्षाकृत मात्रासे अधिक जनसंख्या अथवा औद्योगिक रिजर्वसेना बढ़ती है, इसका तुलनात्मक आकार-प्रकार धनकी वृद्धिके साथ बढता जाता है। कार्यरत औद्योगिक सेनाकी अपेक्षा जितनी ही अधिक आद्योगिक रिजर्व सेना (बेकार मजदूर) होंगे, उतने ही अधिक कमकरोंके वह भाग होंगे, जिनकी गरीबी अपने श्रमके उत्पीडनके उलटे अनुपातमें है। और अन्तमें जितना ही अधिक मजूर-वर्गका लाबेकार भाग अधिक होगा, उतना ही बडी औद्योगिक रिजर्व सेना, और उनकी संख्या अधिक होगी, जिनको कि सरकारी तौरसे भिखमंगा या दरिद्र बतलाया जाता है। पूँजीवादी संचयनका यह परम सामान्य कानून है।

उपरोक्त कानूनके अनुसार पूँजीवादी संचयनके विकासका ऐतिहासिक झुकाव देखा जाता है। पूँजीके सचयन और केन्द्रीकरणके साथ-साथ दृढ़ता-पूर्वक आगे बढ़ते हुये पैमानेपर श्रम-प्रक्रियाके सहकारी रूपकी निम्न प्रकार वृद्धि होती है : उत्पादन सजग हो साइन्सके टेक्नीको का उपयोग, जमीनका सगठित और सम्मिलित कर्षण, उत्पादनके साधनोका उस रूपमें परिवर्तित करना, जिसमे कि वह केवल मिलकर ही लोगों द्वारा इस्तेमाल किये जा सके, और सामाजिक श्रमके सयुक्त उत्पादन-साधनोंके रूपमें इस्तेमाल करके उत्पादन साधनोंके खर्चको कम करना। अब उन महासेठोंकी संख्या लगातार कम होती जाती है, जो कि इस औद्योगिक परिवर्त्तनकी प्रक्रियाके सभी लाभों पर हाथ साफ करते इजारादारी करते हैं। महासेठोंकी संख्याकी कमीके अनुसारही दरिद्रता उत्पीड़न, दासता, पतन और शोषणका परिमाण बढ़ता है, लेकिन उसके साथ

मजदूर वर्गका क्षोभ अपने परिमाण में बढ़ता मजूर वर्गका ही मजूर-वर्गको उत्पादनकी पूँजीवादी प्रक्रिया की बनावटकी सहायतासे प्रशिक्षित, एकजूट और संगठित करता है। अंततः पूँजीकी इजारादारी, उसके नीचे बढ़े उत्पादनके ढंगके लिये वेड़ी बन जाती है। उत्पादन-साधनोंका केन्द्रीकरण और श्रमका समाजीकरण बढ़ते-बढ़ते उस सीमापर पहुँच जाता है, जब कि वह पूँजीवादी खोलके भीतर अपनेको बन्द नहीं रख सकता। उसी समय पूँजीवादी वैयक्तिक सम्पत्तिकी अन्तिम घड़ी आ जाती है, और लूटनेवाला स्वयं लुट जाता है।

वैयक्तिक श्रमके आधारपर वैयक्तिक सम्पत्ति पुनः स्थापित होती है, लेकिन वह पूँजीवादी युगकी सफलताओंके आधारपर ही स्वतन्त्र कमकरोंके सहयोग और और भूमि तथा उत्पादन-साधनोंमें उनकी सम्मिलित सम्पत्तिके रूपमें श्रम द्वारा उत्पादित-आधारपर। यह स्वाभाविक है, कि उत्पादनके सामाजिक ढंगपर आधारित पूँजीवादी सम्पत्तिका सामाजिक सम्पत्तिके रूपमें व्यवहारतः परिवर्तित करना उतना कठिन और दुष्कर काम नहीं है, जितना कि वैयक्तिक श्रमपर आधारित बिखरी हुई सम्पत्तिका पूँजीवादी सम्पत्तिके रूपमें परिवर्तित करना। पहली अवस्थामें विशाल जनसमूहको थोड़ेसे लुटेरोंने लूटकर अपनी सम्पत्ति बनाई, दूसरी अवस्थामें विशाल जनसमूह थोड़े से लुटेरोंके हस्तगत सम्पत्तिको अपनी बनायेगा।

३. द्वितीय और तृतीय जिल्द

यह बतला चुके हैं, कि मार्क्सने अपने महान् ग्रंथकी तीनों जिल्दोंका हस्तलेख अपने जीवनमें ही तैयार कर लिया था, लेकिन उसके एक भागको प्रथम जिल्दके रूपमें प्रेसके लिये तैयार करनेमें उनका एक वर्षसे अधिकका समय लगा था। बिना प्रेस कापी तैयार किये ही वह दूसरी और तीसरी जिल्दके हस्तलेखको छोड़ गये थे। यदि एंगेल्स जैसा योग्य सहकारी और उत्तराधिकारी न मिलता, तो बाकी दोनों जिल्दोंको छापेका मुँह देखना—विशेष कर मार्क्सकी इच्छाके अनुरूप—नहीं हो सकता था। इसमें शक नहीं, यदि मार्क्स स्वयं अपने हाथसे इस कामको कर जाते, तो वह बाकी दोनों जिल्दें भी प्रथम जिल्दकी तरह ही

सर्वतोभद्र रूपसे हमारे सामने होतीं। लेकिन, मार्क्सका जीवन आगेके सोलह वर्षोंमें एक ओर जहाँ अध्ययन तथा दूसरे कामोंमें व्यस्त था, दूसरी ओर उनका स्वास्थ्य सुधरनेकी जगह गिरता ही जा रहा था, जिसके कारण वह इस कामको नहीं कर सके। मार्क्सकी छोड़ी हुई सामग्री कितने ही स्थलों पर अस्त-व्यस्त और संकेत रूपमें थी। इसे १८६१ से १८७८ ई० तकके समयमें बीच-बीचमें विराम लेते हुये मार्क्सने जमा किया था। मार्क्सका कभी अपने महान् ग्रंथके बारेमें यह ख्याल नहीं था, कि वह एक निर्भ्रान्त कम्युनिस्ट बाइबलका स्थान लेगा। वह यही आशा रखते थे, कि इसको देखकर आगे आनेवाले मनीषी और भी वैज्ञानिक अनुसन्धान करते सत्यके पास पहुँचनेकी कोशिश करेंगे। दूसरी और तीसरी जिल्दें वस्तुतः पहली जिल्दके आवश्यक परिशिष्ट तथा विकास हैं, तो भी सारी मार्क्सीय शास्त्रशैलीको समझनेके लिये उनकी अनिवार्य आवश्यकता है। पर, बाकी दोनों जिल्दों तक न पहुँच सकनेवाले पहली जिल्दके सहारे मार्क्सीय तत्वसे वंचित नहीं रहते। पहली जिल्दमें मार्क्सने राजनीतिक अर्थ-शास्त्रके मूल प्रश्न—धनकी उत्पत्ति कैसे, लाभका स्रोत क्या—की विवेचना की है। मार्क्सके अनुसन्धानके पहले इस प्रश्नका उत्तर परस्पर भिन्न दो तरीकोंसे दिया जाता था। पूँजीवादी दुनियाके "वैज्ञानिक" समर्थक पूँजीवादी धनकी व्याख्या करते सत्यपर पर्दा डालनेकी कोशिश करते कहते हैं : हरेक मालिकको अपनी पूँजीको खतरेमें डालनेकी क्षतिपूर्ति, कारबारके "बौद्धिक प्रबन्ध" के इनाम आदि उत्पादक कामोंके लिये पूँजी देनेकी उदारताकी क्षतिपूर्ति, मालोंके दामोंमें बराबर बुद्धिका परिणाम यह धन है। इन व्याख्याकारोंका उद्देश्य सदा यही रहा है, कि भगवान् या पूनर्जन्मके माननेवालोंकी तरह मुट्ठीभर लोगोको धनाढ्यता और विशाल जनसमुदायकी गरीबीको उचित ठहराया जाये।

मार्क्ससे पहलेके बूर्ज्वा-समाजके आलोचक जितने भी समाजवादी सम्प्रदाय थे, वह पूँजीपतियोंके धनको धोखाधडी, कमकरोंसे चोरी आदि कहकर छुट्टी ले लेते थे।

प्रथम जिल्दमें मुख्यतः मूल्यके कानून और उसके कारण पैदा हुई मजदूरी और अतिरिक्त-मूल्य अर्थात—इस बातकी व्याख्या की गई है, कि कैसे मजूरी-

श्रमकी उपज अपनेको स्वाभाविकरूपेण बिना हिंसा या जालसाजीके एक ओर मजूरी-कमकरकी कौड़ियोंमें और दूसरी ओर पूँजीपतियोंके लिये अप्रयास लब्ध अपार धनके रूपमें परिणत करती है। "कपिटाल" की प्रथम जिल्दका सबसे बड़ा ऐतिहासिक महत्व है, यह दिखलाना कि शोषण केवल तभी खतम किया जा सकता है, जब कि श्रम-शक्तिकी बिक्री अर्थात, मजूरी-व्यवस्थाका खातमा कर दिया जाय।

द्वितीय जिल्द—"कपिटाल" की दूसरी जिल्दमें मार्क्स प्रसंगवश बतलाते हैं, कि पूँजीवादी जीवनका अत्यावश्यक अंग है पावना*। यही उत्पादन और मालके बाजार पूँजीके इन दो रूपोंके बीच एवं वैयक्तिक पूँजीके अनियमित से दिखाई पड़नेवाले संचारके बीच जोड़नेवाली शृंखला है। यही उत्पादनका समाजमें उत्पादन और उपभोगका स्थायी प्रचार (परिभ्रमण) सारे समाजके तौर पर वैयक्तिक पूँजियोंकी गड़बड़ीमें इस स्थायी प्रचारको बराबर गतिशील बनाये रखता है। वह इस प्रकार काम करता है, कि पूँजीवादी उत्पादनके लिये आवश्यक स्थितियाँ खतरेमें न पड़ें : उत्पादनके साधनोंका उत्पादन, कमकर-वर्गको कायम रखने और पूँजीपति-वर्गके बराबर अधिकाधिक धनी होनेको कायम रखा जाये—अर्थात समाजकी सभी पूँजीके अधिक बढ़ते हुये संचयन और कार्यरत होनेके कायम रख जाये। दूसरी जिल्दमें मार्क्स इस बातकी खोज करते हैं, कि कैसे वैयक्तिक पूँजीकी असंख्य विपथस्थ गतियोंसे एक सम्पूर्ण पूंजी विकसित होती है, कैसे सम्पूर्ण (जीको इस गमनागमन, बाजारकी तेजीके वर्षोंके अतिरिक्त, घन और आर्थिक संकटके वर्षोंके ध्वंसके बीच, वह आगा-पीछा करता, पुनः-पुनः ठीक अनुपातमें पहुँचता है। किन्तु उसका यह काम और अधिक जबर्दस्त और भारी परिमाणमें लौटकर उसी तरफ चल पड़ता है ! किस तरह इससे और भी अधिक शक्तिशाली और भारी आकारोंमें उस चीजका विकास होता है, जो कि आजकलके समाजके लिये—समाजके अपने अस्तित्व को कायम रखने और अपनी आर्थिक प्रगतिका केवल साधनमात्र है ! वह

---

* Credit.

उसको भी विकसित करता है, जो कि इसका लक्ष्य है, अर्थात् पूँजीका लगातार बढ़ते हुये संचयन। मार्क्सने अन्तिम हल यहाँ नहीं बतलाया है, लेकिन अर्थशास्त्री ऐडम स्मिथके बादके सौ वर्षोंमे पहली बार उन्होने सम्पूर्ण पूँजीको निश्चित नियमोकी मजबूत नींव पर स्थापित किया है।

ऐसा होने पर भी पूँजीपति अपने कंटकाकीर्ण मार्गको पूरी तौरसे नही पार कर सकता, क्योकि यद्यपि लाभ पैसेके रूपमें लगातार बढते हुये परिमाणमें बन रहा है, तो भी समस्या उठ खडी होती है, कि लूटको बॉटा कैसे जाय? पूँजीपतियोंके बहुतेरे भिन्न-भिन्न समुदाय लूटपर अपना-अपना दावा पेश करते हैं। कारखाना-मालिक के अतिरिक्त व्यापारी अपना दावा रखता है, ऋण देनेवाला पूँजीपति और भूमिपति भी इसमे हिस्सा बॅटाना चाहते हैं। हरेकने मजूरी-कमकर के शोषण और उसके मजूरों द्वारा पैदा किये मालोके बेंचनेमे हाथ बॅटाया है, इसलिये उनमेंसे प्रत्येक लाभ-शुभमें अपना हिस्सा माँगता है। यह बॅटवारा जितना देखनेमें सीधा-साधा लगता है, व्यवहारमे वह उससे कहीं अधिक पेचीदा है, क्योंकि कारखानेवालोंमें स्वयं कारखानोंसे तुरन्त प्राप्त लाभोके अनुसार भारी मतभेद है। उत्पादनकी एक शाखामें माल पैदा किये जाते और तुरन्त बेचे जाते हैं, तथा थोड़ेसे समयके भीतर पूँजी और उसके साथ सामान्य अतिरिक्त-मूल्य व्यवसायमें लौट आता है। ऐसी स्थितिमे कारबार और लाभ बडी तेजीसे होते हैं। लेकिन, उत्पादनकी दूसरी शाखाओंमें उपज वर्षों तक रुकी रहती, लम्बे समयके बाद ही लाभ देती है—जैसे भारी उद्योग-धन्धेमे। उत्पादनकी कुछ शाखाओंमें मालिकको अपनी पूँजीके अधिकतर भागको उत्पादनके निर्जीव साधनो, इमारतो, कीमती मशीनों आदि—अर्थात ऐसी चीजोमें लगाना पडता है, जो कि लाभ बनानेके लिये चाहे कितनी ही आवश्यक क्यो न हों, लेकिन स्वयं लाभ नहीं प्रदान करती। उत्पादनकी दूसरी शाखाओंमे ऐसी शाखाये भी हैं, जिनमे ऐसी चीजोमे मालिकको अपनी बहुत थोडीसी पूँजी लगानी पडती है और उसका अधिकाश भाग वह उन कमकरोंके काममें लगानेमे खर्च करता है, जिनमें से हरेक पूँजीपतिके लिये सोनेका अण्डा देनेवाली परिश्रमी बत्तक है।

इस प्रकार वैयक्तिक पूँजीपतियोंके बीच लाभ कमानेकी प्रक्रियामें भारी मतभेद खड़ा हो उठता है। बूर्ज्वा-समाजकी दृष्टिमें यह मतभेद पूँजीपति और कमकरके बीच होनेवाले विलक्षण "विनिमय" की अपेक्षा बहुत अधिक तुरन्तका "अन्याय" (अनौचित्य) है। उनके सामने केवल यही समस्या है, कि कैसे ऐसा प्रबन्ध किया जाय, जिसमें लूटका विभाजन "उचित" रूपसे हो सके और हरेक पूँजीपति "अपने भाग" को पा ले। सबसे बढ़कर बात यह एक ऐसी समस्या है, जिसे बिना किसी सजग और व्यवस्थित योजनाके अनुसार हल करना है, क्योंकि आजकलके समाजमें उत्पादन जैसे ही वितरणमें भी अराजकता है। सामाजिक उपायके अर्थमें वस्तुतः यहाँ कोई "वितरण" है ही नहीं, और जो कुछ होता है, वह है केवल विनिमय, मालका परिभ्रमण, क्रय और विक्रय।

तृतीय जिल्द—"कपिटाल" की तीसरी जिल्दमें मार्क्स इस सवालका जवाब देते हैं, कि कैसे अनियमित मालका विनिमय प्रत्येक वैयक्तिक शोषकको और शोषकोंके प्रत्येक भिन्न समुदाय सर्वहाराकी श्रम-शक्ति द्वारा उत्पादित धनमें भाग प्राप्त करने देता है, जो कि पूँजीवादी समाजकी दृष्टिमें पूँजीपति या पूँजी-का "अधिकार" माना जाता है। प्रथम जिल्दमें मार्क्सने पूँजीकी उत्पत्तिकी विवेचना करते हुये लाभ कमानेके रहस्यको खोला। दूसरी जिल्दमें उन्होंने कारखाने और बाजारके बीच, समाजके उत्पादन और उपभोगके बीच पूँजीके गमनागमनका वर्णन किया। इस तीसरी जिल्दमें उन्होंने सारे पूँजीपति-वर्गके बीच लाभके वितरणका विवेचन किया है। वह हर वक्त पूँजीवादी समाजके तीन मौलिक सिद्धान्तोंको आधार मानते हुये ऐसा करते हैं: प्रथम, यह कि पूँजीवादी समाजमें जो कुछ घटित होता है, वह स्वेच्छाचारी शक्तियोंके परि-णामस्वरूप नहीं, बल्कि निश्चित तथा नियमपूर्वक काम करनेवाले नियमोंके अनुसार होता है, चाहे वह नियम स्वयं पूँजीपतियोंको अज्ञात हों। द्वितीयतः, यह कि पूँजीवादी समाजके आर्थिक सम्बन्ध हिंसा, लूट और धोखा-धड़ीपर आधारित नहीं है, और तृतीयतः, सारे समाजकी गतिविधि पर नियंत्रण करने-वाली यहाँ कोई सामाजिक बुद्धि काम नहीं कर रही है। पूँजीवादी अर्थशास्त्रकी

सभी घटनाओं और सभी सम्बन्धोंको पूँजीवादी समाजके विनिमय-यन्त्रके आधार पर—अर्थात् उससे उत्पन्न होनेवाले मूल्य और अतिरिक्त मूल्यके कानूनके आधार पर—मार्क्स एकके बाद सुव्यवस्थितरूपसे नंगा करके रख देते हैं।

तीनों जिल्दोंवाले इस महान् ग्रंथको पूरी तौरसे लेनेपर पहली जिल्दने मूल्य, मजूरी और अतिरिक्त-मूल्यके कानूनका प्रति विवेचन, तथा आजकलके समाजके आधारको नंगा करके रख दिया है, और दूसरी तथा तीसरी जिल्दोंने इन आधारोंके ऊपर खडी इमारतको दिखलाया। दूसरी तरहसे कहनेपर पहली जिल्दने सामाजिक शरीरके हृदयको दिखलाया है, जो कि सजीव रसको पैदा करता है। दूसरी तथा तीसरी जिल्दोंने सामाजिक शरीरमें किस तरह रक्तका संचार और शोषण होता है, इसे बतलाया है। दूसरी और तीसरी जिल्दोंने पूँजीवादी दुनियामें नियमपूर्वक होनेवाली तेजी-मन्दीके संकटके बारेमें पूरी अन्तर्दृष्टि देनेका प्रयत्न किया है।

४. "कपिटाल" का स्वागत

एंगेल्सने प्रथम जिल्दके तैयार हो जानेके बाद मार्क्सके बारेमें जो आशा प्रकट की, कि अब "तुम बिलकुल दूसरे ही आदमी बन जाओगे" वह आंशिक रूपसे ही पूरी हुई। मार्क्सके स्वास्थ्यमें जो सुधार हुआ, वह भी स्थायी नहीं था। आर्थिक परेशानी अब भी कम नहीं हुई। इसी समय बल्कि मार्क्सने जेनेवामें जाकर रहनेका विचार सिर्फ इस ख्यालसे किया था, कि वहाँ सस्तेमें रहा जा सकता है। लेकिन, वह लन्दनके ब्रिटिश-म्युजियमको कैसे छोड सकते थे? उनको आशा थी, कि शायद "कपिटाल" का अंग्रेजी अनुवाद यहाँ रहते प्रकाशित हो सके, इससे भी उन्होंने लन्दनसे जानेका ख्याल छोड दिया। परिवारके व्यक्तियोंके जीवनमें जो परिवर्तन हुये, उनसे उन्हें सन्तोष जरूर हो सकता था। १८६६ ई० के अगस्तमें मार्क्सकी द्वितीय कन्या लौराका ब्याह चिकित्साशास्त्रके विद्यार्थी पावल लाफार्गके साथ होना निश्चित हो गया, लेकिन यह तै कर लिया गया था, कि ब्याहसे पहले लाफार्गको अपनी मेडिकल कालेज

की पढ़ाई खतम कर देनी होगी। लीयेगमें* विद्यार्थी-काँग्रेसमें भाग लेनेके कारण पेरिस युनिवर्सिटीने लाफार्गको दो सालके लिये निकाल दिया था। इन्टर्नेशनलके सम्बन्धमें वह लन्दन आया। पहले वह प्रूधोंका अनुयायी था और तोलेंके कार्डको वहाँ रख आनेके शिष्टाचारके अतिरिक्त मार्क्सके साथ उसका कोई सम्बन्ध नहीं था, लेकिन होनी कुछ दूसरी ही थी, जैसा कि मार्क्सने एंगेल्सको लिखा था : "पहले इस नौजवानने मेरे साथ सम्बन्ध स्थापित किया, लेकिन देर नहीं हुई कि उसने बापकी अपेक्षा बेटीको अधिक आकर्षक पाया। वह एक भूतपूर्व प्लान्टर-परिवारकी एकमात्र सन्तान है और उसकी आर्थिक स्थिति काफी अच्छी है।" मार्क्सके वर्णनानुसार लाफार्ग सुन्दर, बुद्धिमान, कर्मठ, शरीरसे सुविकसित और सुहृदय, किन्तु थोड़ा सा बिगड़ा हुआ था। लाफार्ग क्यूबा-द्वीपके सन्तियागो शहरमें पैदा हुआ था, लेकिन जब अभी वह नौवर्षका ही था, तभी उसके पिता-माता उसे फ्रांस ले आये। उसकी दादी मुलाटो थी, अर्थात् दादीके द्वारा निग्रो-रक्त उसके शरीरमें बह रहा था, जिसे लाफार्ग खुले तौरसे स्वीकार करता था। लेकिन इसका असर उसके चमड़ेपर बहुत हलका सा, तथा आँखोंमें अधिक सफेदीके सिवा और कुछ नहीं था। उसमें कुछ ज़िद्दीपन भी था, जिसके कारण कभी-कभी मार्क्स कुछ रंज और मजाक करते हुये उसे "निग्रो खोपड़ी" कह देते थे। ससुर-दामादका सम्बन्ध हमेशा बहुत अच्छा रहा। मार्क्सके लिये लाफार्ग केवल उनकी प्रिय पुत्री लौरा-के आनन्दमें सहायक दामाद ही नहीं था, बल्कि वह उनके बौद्धिक दायभागका विश्वासपात्र रक्षक तथा योग्य और मेहनती सहायक भी था।

इस समय मार्क्सकी मुख्य परेशानी अपनी किताबके बारेमें थी। २ नवम्बर १८६७ को उन्होंने एंगेल्सको लिखा था : "मेरी पुस्तकके भाग्य में क्या है यह मुझे खिन्न कर देता है। मैं कुछ नहीं सुन और देख पाया। जर्मन बड़े अच्छे पट्ठे हैं। अंग्रेजों, फ्रेंचों और बल्कि इतालियनोंके भी लग्गू-भग्गूके तौरपर इस क्षेत्रमें उनकी सफलताओं से निस्सन्देह वह मेरी कृतिकी उपेक्षा करनेका अधिकार

* Liege.

रखते हैं। वहाँके हमारे मित्र नही जानते, कि कैसे आन्दोलन करना चाहिये। इस बीच हमें रूसी चालको देखते प्रतीक्षा करनी होगी। रूसी कूटनीति और सफलताका रहस्य धैर्य है, लेकिन हम केवल एक बार ही जिन्दगी पानेवाले गरीबी प्राणी हैं, इस बीचमें भुखमरीके शिकार हैं।" "कपिटाल" की प्रथम जिल्दके प्रकाशित हुये दो ही महीने हुये थे। इतने बीचमे पुस्तककी वास्तविक और पूरी समालोचना करना संभव नही था, तो भी एंगेल्स और कुगेलमानने भरसक उसके बारेमें प्रचार करनेकी हरेक कोशिश की। कितने ही पत्रोमे "कपि-टाल" के बारेमें पहले हीसे सूचना प्रकाशित करनेमें भी उन्होने सफलता पाई। एक जीवनी-सम्बन्धी विज्ञापन छपानेका भी प्रबन्ध किया गया, जिसको रोकते हुये मार्क्सने लिखा था : "मैं समझता हूँ, इस तरहकी बात हितकी जगह अनिष्ट ज्यादा कर सकती है। जो भी हो मै इसे साइन्सके आदमीकी प्रतिष्ठाके प्रति-कूल समझता हूँ। उदाहरणार्थ बहुत दिन पहले मेयरके विश्वकोषने मुझसे जीवनी-सम्बन्धी नोट माँगे थे, अपेक्षित सूचना देनेकी बात तो अलग रही, मैंने उनके पत्रका जवाब तक नही दिया। हरेक आदमीकी अपनी रुचि होती है"। एंगेल्सने जो जीवनी-सम्बन्धी लेख लिखा था, अन्तमें वह योहान याको-बीके पत्र "डी जूकुन्फ्ट" में प्रकाशित हुआ, उसे पीछे लीबक्नेख्टने "डेमोक्राटिशे-वोखेन्ब्लाट"* में पुनः प्रकाशित किया।

पीछे "कपिटाल" की कुछ अच्छी समालोचनायें छपी, जिनमें एक लीब्क-नेख्टके उक्त पत्रमे छपी। लासेलके शिष्य श्वाइट्जेरने "सोजियाल डेमोक्राट†" में अपनी आलोचना प्रकाशित की, योजेफ डीट्जगेनने भी एक आलोचना छपाई। श्वाइट्जरकी आलोचनासे मार्क्सको यह संतोष हुआ, कि उसने किताबको पूरी तौरसे पढा और उसके महत्वको समझा था। डीट्जगेनका नाम मार्क्सने यहाँ पहली बार सुना और उसके सक्षम दार्शनिक दिमाग को उन्होंने पसन्द किया।

१८६७ ई० में ही एक "विशेषज्ञ" ने भी मार्क्सके इस ग्रंथपर कलम चलाई

---

* Demo Kratishes Wochenblatt † Sozial demokrat

और यह था प्रोफेसर युगेन डूरिंग* मार्क्ससे निराश होनेके बाद जिसे बिस्मार्क्सने अपनी नौकरीमें रक्खा था। डूरिंगने मेयर्सके विश्वकोषके एक परिशिष्टमें "कपिटाल" की आलोचना छपाई। मार्क्स इस आलोचनासे असंतुष्ट नहीं हुये। एंगेल्स डूरिंगकी आलोचनाको उतनी अच्छी दृष्टिसे नहीं देखते थे। पीछे डूरिंगने ग्रंथको बुरी तरहसे लथाड़ा।

कवि फ्राइलिग्रथके साथ १८५६ ई० से मार्क्सका मित्रतापूर्ण सम्बन्ध था, यद्यपि कभी-कभी उसमें मामूली गड़बड़ी भी हो जाती थी। कविने बहुत सालों तक एक जर्मन बैंककी लन्दन शाखामें काम किया था। प्रायः साठ वर्षकी अवस्थामें बैंकके बन्द हो जानेपर बुढ़ापेमें उन्हें अपने मित्रों और साहित्य-प्रेमियों द्वारा संचित की जानेवाली निधिसे जीवनयापनके प्रबन्ध होनेकी आशा थी और वह जर्मनी जानेके लिये तैयार थे। "कपिटाल" की प्रति पाकर कविने उसके लिये धन्यवाद तथा तरुण लाफागके साथ लौराके ब्याहका हृदयसे अभिनन्दन भेजा। पुस्तकको पढ़कर भी उसने हर्ष प्रकट किया, और कहा कि इसकी सफलता यद्यपि तुरन्त और सनसनी पैदा करनेवाली नहीं होगी, लेकिन वह बहुत गहरी और स्थायी वस्तु होगी। मार्क्सका पुराना साथी रूगे कम्युनिज्मका अब जबर्दस्त विरोधी था। मार्क्सके साथ भी उसका सम्बन्ध बहुत दिनोंसे बिगड़ा हुआ था, लेकिन उसने ग्रंथको युगप्रवर्त्तक, बड़ी चमत्कारिक और आँखोंको चौंधिया देनेवाली कृति कहनेमें संकोच नहीं किया। मार्क्सने उसकी विद्वत्ता गम्भीरता और उसकी कुशाग्र बुद्धिकी सराहना की।

"कपिटाल" जर्मन भाषामें लिखा गया और उसीमें वह पहले-पहल प्रकाशित हुआ। इसे शायद, आकस्मिक घटना नहीं कहना होगा, कि प्रथम जिल्द के छपनेके दूसरे ही साल उसके रूसी अनुवादके तैयार होनेके बारेमें १२ अक्तूबर १८६७ को कुगेलमानने मार्क्सको सूचित किया : पितरबुर्गके एक प्रकाशकने रूसी अनुवादको छपाना शुरू किया है, वह उसमें देनेके लिये मार्क्सका फोटो माँग रहा है। रूस, उसके शासन और समाजकी मार्क्स हमेशा कड़ी आलोचना किया करते थे और एक तरह वह रूसियोंसे निराश से थे,

* Eugene Duhring

लेकिन रूसी ही उनकी इस महान् अमरकृतिके प्रथम कदरदान निकले। मार्क्स के दिखलाये मार्गके अनुसार उन्होने ही पहले-पहल दुनियामें कम्युनिस्ट राज्य कायम किया। "कपिटाल" ही नही बल्कि मार्क्सकी पुस्तक "अर्थशास्त्रकी आलोचना" की बिक्री भी रूस जितनी अधिक कही नहीं हुई। रूसी "कपिटाल" १८७२ ई० में प्रकाशित हुआ। अनुवादक दानियलसन अपने उपनाम "निकोलाई-ओन" के नामसे ज्यादा प्रसिद्ध था। "कपिटाल" के महत्वपूर्ण अध्यायोके अनुवादमे एक साहसी तरुण क्रान्तिकारी लोपातिनने मदद की थी, जिसका मार्क्ससे १८७० ई० में परिचय हुआ था। यद्यपि मार्क्सके राजनीतिक विचार रूसी शासकोको मालूम थे, लेकिन तो भी उन्होने पक्के वैज्ञानिक ढगसे लिखे होनेके कारण ग्रंथको प्रकाशित करनेकी आज्ञा दे दी। २७ मार्च १८७२ में पुस्तक प्रकाशित हुई। और २५ मई तक तीन हजारके संस्करणकी एक हजार कापियाँ बिक गईं। इसी समय फ्रेंच अनुवाद छपने लगा था और द्वितीय सस्करणमें जर्मन मूल-ग्रंथ भी दो भागोंमे निकाला जाने लगा था। फ्रेंच अनुवादमें ज० रायको मार्क्सने स्वयं काफी सहायता करते शिकायत की थी: अनुवाद सुधारनेसे कम समय लगता, यदि मैं स्वय उसे फ्रेंचमें कर डालता। इससे एक बात जरूर हुई कि "कपिटाल" का फ्रेंच अनुवाद उतना ही प्रामाणिक है, जितना कि जर्मन मूल। जर्मनी, रूस और फ्रासकी अपेक्षा इगलैंडमें "कपिटाल" की प्रथम जिल्दको कम सफलता मिली। सिर्फ एक छोटी सी आलोचना "सटर्डे रिव्यू" * में निकली, जिसमे कहा गया था, कि मार्क्समें अत्यन्त रूखी अर्थशास्त्रीय बातोंको भी सुन्दर रूपसे रखनेकी प्रतिभा है। दूसरी लम्बी आलोचना एगेल्सने एक और पत्रिका † के लिये लिखी, लेकिन "अत्यंत रूखा" कहकर उसे सम्पादकने लौटा दिया। पीछे प्रोफेसर बीसलीके प्रयत्नसे पत्रिकाने उसे स्वीकार किया। मार्क्स अपने जीवनमें "कपिटाल" के अँग्रेजी अनुवादको नहीं देख सके।

---

* The Saturday Review † The Fortnightly Review

अध्याय १६

इन्टर्नेशनलका मध्याह्न

"कपिटाल" के प्रथम जिल्दके प्रकाशित होनेके थोड़े ही समय बाद २-८ सितम्बर १८६७ को लोजान* में इन्टर्नेशनलकी द्वितीय कांग्रेस अधिवेशन हुई, लेकिन जेनेवाकी प्रथम कांग्रेसके मुकाबिलेमें यह नीचे स्तरकी साबित हुई।

१. पश्चिमी यूरोपमें

इन्टर्नेशनल को कार्यक्षेत्रमें आये तीन साल हो रहे थे, लेकिन जुलाईमें जेनरल कौंसिलने कांग्रेसमें काफी संख्यामें प्रतिनिधियोंके भेजनेकी जो अपील की थी, उसमें पहले जैसी बात नहीं थी। अपने यहाँकी प्रगतिकी रिपोर्ट करनेमें भी कितने ही देशोंने ढिलाई की। सिर्फ स्वीजलैंड और बेल्जियमने इसमें तत्परता दिखलाई थी। बेल्जियममें मार्शियान† में हड़तालियोंकी हत्या की गई थी, जिसके कारण वहाँके सर्वहारामें उत्तेजना फैली हुई थी। १८४८ ई० से पहले सामाजिक समस्याओंके बारेमें जर्मनी की अधिक दिलचस्पी थी, लेकिन अब उसका सारा ध्यान राष्ट्रीय एकताकी ओर लगा हुआ था। फ्रांसमें भी इन्टर्नेशनलकी प्रगति नहीं हो पाई, लेकिन १८६७ ई० के वसन्तमें पैरिसके पीतलके कमकरोंमें उत्तेजना फैली, जब कि मालिकोंने तालाबन्दी की, किंतु कमकर अपने संघर्षमें अन्तमें विजयी हुये। अपीलमें और देशोंकी स्थितिका वर्णन करते हुये इंगलैंडके मजदूर-आन्दोलनकी शिथिलताकी शिकायत की गई, तो भी जनताके दबावके कारण अनुदार प्रधानमंत्री डिजराइलीके अपने पूर्वगामी ग्लेडस्टोनके विग (उदार) मंत्रिमण्डलकी अपेक्षा भी अधिक विस्तृत मताधिकार देनेके लिये मजबूर होना पड़ा। अब नगरके हरेक घरका प्रत्येक भाड़ेदार भाड़ेकी रकमका कुछ ख्याल किये बिना वोटर स्वीकार किया गया था। युक्तराष्ट्र अमेरिकाका जिक्र करते हुये इस बात पर सन्तोष प्रकट किया गया, कि वहाँके कमकरोंने कितनी ही रियासतोंमें आठ घंटेके कार्य दिन मनवानेमें सफलता पाई।

---

* Lausanne † Mar chienne

जेनरल-कौंसिलके प्रतिनिधिके तौरपर इकेरियस और दुपो काग्रेसमें शामिल हुये। युंगकी अनुपस्थितिमें काग्रेसकी अध्यक्षता दुपोंने की। प्रतिनिधियोंकी संख्या ७१ थी, जिनमें जर्मन प्रतिनिधि थे कुगेलमान, एफ० ए० लॉगे* लुडविग बुखनेर और लाडेनडोर्फ—लाडेनडोर्फ अच्छा बूर्ज्वा-जनतन्त्रतावादी, लेकिन कम्युनिज्मका सख्त विरोधी था। जर्मनोसे कहीं अधिक सख्या फ्रेंच और इतालियन प्रतिनिधियोंकी थी, जिनमे प्रूधोके अनुयायी प्रधानता रखते थे। काग्रेसमें मार्क्सने कोई भाग नहीं लिया। उसके प्रस्ताव और निर्णय भी परस्पर विरोधी हुये। सैद्धान्तिक निर्णयोकी अपेक्षा काग्रेसके व्यावहारिक कार्य अधिक लाभदायक थे। इसी समय "शान्ति और स्वतन्त्रता लीगके" नामसे एक बूर्ज्वा-संगठन कायम हुआ था, जिसकी प्रथम काग्रेस इन्टर्नेशनलकी काग्रेसके थोड़े ही समय बाद होने जा रही थी। उसने कमकरोंका सहयोग भी मॉगा था, जिसके बारेमें काग्रेसका सीधा-सादा जवाब था : जहॉ-कहीं भी उसके द्वारा हमारे हितों-को आगे बढाया जा सकता है, हम खुशीसे तुम्हारा समर्थन करेंगे।

काग्रेसके समाप्त होनेके कुछ ही दिनों बाद एक घटना घटी, जिसका परि-णाम बहुत व्यापक हुआ। १८ सितम्बर (१८६७) के दोपहरको हथियारबन्द सिनफिनो (आयरलैंडके देशभक्तो) ने एक जेलखानेकी गाड़ीको घेर लिया, जिसमे दो सिनफिन बन्दी ले जाये जा रहे थे। गाडीके दरवाजेको तोडकर पुलिसके एक सिपाहीको गोली मार अपने साथियोको छुडा लिया। असली आदमियोंको पकडनेमे अग्रेज सरकार कभी सफल नहीं हुई। कानून और व्यवस्थाके नामपर कितने ही दूसरे निरपराध आदमियो को पकड़कर उनपर हत्याका मुकदमा चलाया गया। कोई ठीक सबूत नहीं मिल सका, तो भी उन्हें मृत्युदड देकर फॉसीपर चढा दिया गया। इसके कारण इगलैंडमें बडी सनसनी फैली और दिसम्बरमें कमकरो और निम्न-मध्यम-वर्गके मोहल्ले क्लेर्केनवेलके जेलखानेकी दीवारको सिनफिनोने उड़ा दिया, जिससे बारह आदमी मारे गये और सैकडों घायल हुये। इन्टर्नेशनलका इससे कोई सम्बन्ध नहीं था। उसने

---

* Lange.

क्लेरकेनवेलकी दुर्घटनाको एक बेवकूफीकी बात कहकर सिनफिनोंके लिये अधिक हानिकारक बतलाया, क्योंकि इसके कारण अंग्रेज मजदूरोंकी सहानुभूति वह खो सकेंगे। लेकिन अंग्रेज सरकारने सिनफिनोंके साथ उसी तरह साधारण चोर-डाकू अपराधियोंकी तरह बर्ताव किया, जिस तरह हम भारतमें अभी थोड़े ही दिनों पहले देख चुके हैं। इस अमानुषिक बर्तावको देखकर मार्क्सको जो क्षोभ हुआ, उसे जून १८६७ के एंगेल्सको लिखे पत्रमें उन्होंने प्रकट किया: "यह जुगुप्सनीय सुअर अपनी अंग्रेज मानवताकी शेखी बघाड़ते हैं, जब कि वह अपने राजनीतिक बन्दियोंके साथ हत्यारों, जालसाजों, अप्राकृतिक व्यभिचारियोंकी अपेक्षा बेहतर बर्ताव नहीं करते"। एंगेल्सको आयर्लैंडके क्रान्तिकारियोंके प्रति और भी अधिक सहानुभूति थी, जिसका एक कारण यह भी था, कि उनकी मृतप्रिया मेरीकी बहन एलिजाबेथ बर्न्स (एंगेल्स-पत्नी) एक जबर्दस्त आइरिश देशभक्त थी।

आयर्लैंडकी स्वतन्त्रताके प्रति मार्क्सकी भी जबर्दस्त सहानुभूति थी। बिना काफी अध्ययन और मननके मार्क्सकी कोई प्रवृत्ति हो नहीं सकती थी। आयर्लैंडकी परतन्त्रताके इतिहासका गम्भीरतापूर्वक अध्ययन कर वह इस नतीजेपर पहुँचे थे, कि आयर्लैंडकी स्वतन्त्रताके बिना इंगलैंडका मजूर-वर्ग स्वतन्त्र नहीं हो सकता, जिसका स्वतन्त्र होना यूरोपीय सर्वहाराकी स्वतन्त्रताके लिये आवश्यक है। इंगलैंडमें सामन्ती जमींदारों और पूँजीवादी बनियोंका अजब गठबन्धन था, आयर्लैंडकी भूमिका बहुत बड़ा भाग अंग्रेज जमींदारोंके हाथमें था, जिनका जमा हुआ पैर उखाड़ना सर्वहारा-स्वतन्त्रताके लिये आवश्यक था। उनको विश्वास था, कि आइरिश लोगोंको जैसे ही स्वतन्त्रता मिलेगी, जैसे ही वह अपनी विधान-सभायें और सरकार निर्वाचित करेंगे, वैसे ही विदेशी अंग्रेज जमींदार दूधकी मक्खीकी तरह वहाँसे निकाल दिये जायेंगे। क्योंकि इन विदेशी जमींदारोंके प्रति आइरिश जनताकी जबर्दस्त घृणा थी। अंग्रेज पूँजीपतियोंके लिये आयर्लैंड कारखानोंके लिये सबसे सस्ते दामसे ऊन और दूसरी चीजें प्रदान करता था, और अपने सस्ते मजदूरोंको देकर इंगलैंडके मजदूरोंकी माँगोंको कमजोर करनेमें सहायता करता था। उनकी गरीबी, निरक्षरता और सस्तेपनके

कारण अंग्रेज मजदूर उनके साथ समानताका बर्ताव नहीं करते। उन्हे सफेद चमड़ेवाला नीगर समझते थे। यह भेदभाव अमेरिका तकमे दोनों देशोंसे गये मजदूरोंमे मिलता था, जहाँ आइरिश उतनी हीन अवस्थामे नहीं थे। इंगलैंडमें सर्वहारा-क्रान्तिके सूत्रपातके लिये यह आवश्यक था, कि आइरिश लोगोंके इंगलैंडके जुएसे निकाला जाय। इसीलिये इन्टर्नेशनल हमेशा खुलकर आयर्लैंडका पक्ष लेती और इगलैंडके मजदूरोपर जोर देता, कि वह अपने पड़ोसी-देशकी स्वतन्त्रताको सहानुभूतिकी दृष्टिसे देखें और उसमे सहायता करें।

पिछले वर्षोंमे मार्क्सने आयर्लैंडके प्रश्नपर बराबर ध्यान दिया। जब तीन सिनफिनोको मेन्चेस्टरमे मृत्युदण्ड दिया गया, तो इन्टर्नेशनलकी जेनरल-कौंसिल-ने अंग्रेज-सरकारके पास आवेदनपत्र भेजनेके लिये संगठन किया, लेकिन अंग्रेज शासक क्यो उसे मानने लगे? उन्होने उन्हें फाँसीपर चढ़ा दिया। इसपर इन्टर्नेशनलने इसके विरुद्ध जबर्दस्त सभायें कर इस फाँसीको कानूनी हत्या घोषित की। जिसके कारण अंग्रेज सरकार नाराज हो गई और मौकेसे फायदा उठाकर फ्रेंच सरकारने भी इन्टर्नेशनलपर आक्रमण किया। इससे पहले तीन साल तक बोनापार्तने इन्टर्नेशनलके मामलेमें कोई हस्तक्षेप नही किया था। वह चाहता था, कि इन्टर्नेशनलके आन्दोलन द्वारा फ्रांसके पूँजीपति उसके प्रतिकूल घबरा जायँ। पैरिसमें इन्टर्नेशनलका अपना ब्यूरो था। जेनेवा-कांग्रेसने अपनी कार्यवाही वहींको स्वीजरलैंडमें उत्पन्न किन्तु इंगलैंडके नागरिक बन गये एक स्विस पुरुषके हाथ जेनरल-कौंसिलके पास भेजा था। फ्रांसकी सीमापर उसे छीन लिया गया और विरोध करनेपर फ्रेंच-सरकार कानमे तेल डाले पड़ी रही। इसपर अंग्रेज विदेश-विभागने अपनी प्रजाके साथ ऐसे बर्तावके लिये विरोध प्रकट किया, तब लुटेरोंको कागज-पत्र लौटानेके लिये मजबूर किया गया। बोना-पार्तको इन्टर्नेशनल कैसे पसन्द आ सकता था? १८६६ ई० में मजदूरोंने अनेक हड़तालेंकी और उत्तरी जर्मनी लीगके साथ लुग्जम्बुर्गको लेकर झगड़ा उठ खड़ा हुआ। उस समय पैरिसके मजदूरोंने बर्लिनके मजदूरोंके साथ भाईचारा का सम्बन्ध स्थापित किया। यह सब बातें थीं, जिससे बोनापार्त अब इन्टर्नेशनलके खिलाफ कुछ करनेके लिये तैयार हो, सिनफिन-षड्यन्त्रका

उसे केन्द्र कहा। सिनफिन अंग्रेजोंके लिये कड़वी घूँट थे। इस बहाने बोनापार्तने एक ओर इन्टर्नेशनलको ध्वस्त करना चाहा और दूसरी ओर अंग्रेजों को खुश करना। बिना वारंटके रातको इन्टर्नेशनलके ब्यूरोके बीस मेम्बरोंके घरों पर पुलिसने छापा मारकर गिरफ्तार किया। ६-२० मार्चको मुकदमा चलाकर पन्द्रह मेम्बरोंको अपराधी करार दे उनमेंसे हरेकको सौ फ्रांकका जुरमाना कर, ब्यूरोको बन्द कर दिया गया। फैसलेकी अपील बेकार साबित हुई। मुकद्मेके फैसलेके बाद नये मेम्बरोंका ब्यूरो स्थापित किया गया, लेकिन २२ मईको नये ब्यूरोके नौ मेम्बर भी अदालतमें पेश किये गये, जिनके मुकद्मेके पैरवी वर्लिनने बड़ी योग्यतासे की, किन्तु उन्हें तीन महीनेकी सजा मिले बिना नहीं रही। फ्रेंच सरकारकी यह तत्परता बतलाती है, कि पैरिसके मजदूरोंमें इन्टर्नेशनलका प्रभाव बढ़ चला था।

बेल्जियममें भी वहाँकी सरकारने मजदूरोंपर प्रहारका मौका हाथसे जाने नहीं दिया। वहाँके न्याय-मन्त्री दे बाराने* पार्लियामेन्टमें इन्टर्नेशनलके खिलाफ जहर उगलते हुये उसे दबानेकी धमकी देते कहा, कि इन्टर्नेशनलकी अगली कांग्रेस ब्रुशेल्समें नहीं होने पायेगी। लेकिन बेल्जियमके मेम्बर उसकी धमकीसे नहीं डरे और उन्होंने खुला पत्र लिखकर मन्त्रीको जवाब दिया, कि चाहे न्याय-मन्त्री पसन्द करें या न करें इन्टर्नेशनलकी अगली कांग्रेस ब्रुशेल्समें होके रहेगी।

२. मध्य-युरोपमें

१८६६ ई० में जो मन्दी और आर्थिक संकट पूँजीवादी देशोंमें आया था, उसके कारण वहाँ चारों ओर हड़तालें होने लगी थीं। इन हड़तालोंके संगठन करनेमें यद्यपि जेनरल-कौंसिलका साक्षात् हाथ नहीं था, लेकिन उसकी सहानुभूति हड़तालियोंके साथ थी और जहाँ तक होता था सलाह-मशौरे और दूसरी तरहसे वह उनकी सहायता करती थी। सबसे बड़ी बात उसने यह की थी, कि भिन्न-भिन्न देशों के मजदूरोंमें एकता स्थापित करके हड़ताल तोड़नेवाले सस्ते मजूर पूँजी-

* De Bara.

पतियोंको विदेशसे पाने नहीं दिया था। उन्होंने मजदूरोंको बतलाया, कि तुम अपनी मजूरीको ठीक स्तरपर तभी कायम रख सकते हो, जब कि अपने विदेशी साथियोंके मजूरी-सम्बन्धी संघर्षमें सहायता करो। इसके कारण जहाँ हड़ताल तोड़नेमें पूँजीपतियोंको कठिनाई हो रही थी, वहाँ इस अन्तर्राष्ट्रीय भाईचारेसे कमकरोंकी हिम्मत बढ़ी हुई थी। इसीलिये सच हो या झूठ शासक सबकी जिम्मेवारी इन्टर्नेशनलपर थोपते थे। प्रत्येक हड़ताल इन्टर्नेशनल द्वारा चालित हड़ताल मानी जाती, और हरेक हड़तालके बाद इन्टर्नेशनलकी शक्ति और बढ़ जाती।

बूर्ज्वाजीने हड़तालोंको तोड़ने तथा मजदूरोंको पस्तहिम्मत करनेमें कोई कसर नहीं उठा रक्खी। उन्होंने कमकर-परिवारोंको उनके क्वार्टरोंसे निकाल बाहर किया, दूकानोंको उधार सौदा देनेसे रोका। स्वीजलैंडके पूँजीपतियोंने तो यहाँ तक धृष्टता की, कि अपने आदमी लन्दन भेजकर पता लगाया, कि इन्टर्नेशनलको पैसे कहाँ से मिलते हैं। मार्क्सने व्यंग करते हुए कहा था : "अगर यह भले तथा पक्के क्रिस्तान यदि ईसाइयतके आरम्भिक दिनोंमें रहते, तो इन्होंने रोममें धर्मदूत पालके बैंक-एकौंटके बारेमें जाँच करवाई होती।" सारी कोशिश करनेपर भी बाजेल स्वीजलैंडमें मकान बनानेवाले मजदूरोंने जो हड़ताल की थी, वह टूट नहीं सकी और मजूर इन्टर्नेशनलके पक्षपाती बने रहे। अन्तमें जब उनकी विजय हुई तो उन्होंने एक बड़ा जलूस निकाला और बाजारके चौरस्तेपर बड़ी सभा करके अपना विजयोत्सव मनाया। उन्हें सभी देशोंसे सहा-यता मिली थी। उनके संघर्षका प्रभाव एटलान्टिक पार युक्तराष्ट्र अमेरिकामें भी दिखाई पड़ा, जहाँपर एफ० ए० जोर्गे द्वारा इन्टर्नेशनल अपनी जड़ जमा रही थी—सोर्गे* १८१८ ई०में देशसे राजनीतिक शरणार्थी हो निकलकर और अब न्यूयार्कमें संगीतका अध्यापक था।

हड़ताली आन्दोलनने जर्मनीमें भी इन्टर्नेशनलके लिए रास्ता साफ किया। अभी तक वहाँकी छिट्-फुट् टुकड़ियाँ इन्टर्नेशनलको जानती थीं। लाजेलके

---

* Sorge.

बाद उसके अनुयायियोंका नेतृत्व धीरे-धीरे श्वाइट्जेरके हाथमें गया, जो कि उत्तरी जर्मन पार्लियामेन्टके लिए एल्बरफेल्ट बर्मेनों* से मेम्बर चुना गया, जब कि उसका पुराना प्रतिद्वन्द्वी तथा मार्क्सका एक योग्य शिष्य लीबक्नेख्ट स्टोलबेर्ग-श्नीबेर्ग† से चुना गया। १८५६ ई० की शरद्में लीबक्नेख्टने सेक्शन जनता पार्टी कायम करनेमें भाग लिया था। लीगने समाजवादी नहीं, बल्कि उग्रवादी-जनतांत्रिक प्रोग्राम स्वीकार किया था और १८६८ ई० से लाइपजिगसे "डेमोक्राटिशे वोखेनब्लाट"‡ के नामसे अपनी पार्टीका मुखपत्र निकालना शुरू किया था। श्वाइट्जेर "अल्गेमाइनेर ड्वाशेर अर्बाइटेर्वेराइन"§ नामके अपने दलके पत्रका सम्पादक था। श्वाइट्जेर और लीबक्नेख्टमें बराबर नोंक-झोंक रहती थी। यद्यपि उसके गुरु लाजेलका मार्क्सके साथ बहुत अच्छा सम्बन्ध नहीं था, लेकिन लाजेल मार्क्सके कामके महत्त्वको समझता था। श्वाइट्जेरने जर्मन कमकरोंमें "कपिटाल" की प्रथम जिल्दका प्रचार करनेमें लीबक्नेख्टसे भी अच्छा काम किया था। अप्रेल १८६८ ई० में उसने मार्क्ससे भी कुछ सलाह माँगी थी। यद्यपि निजी तौरसे श्वाइट्जेरका सम्बन्ध उतना अच्छा नहीं कहा जा सकता, लेकिन मार्क्स भी श्वाइट्जेरके मजदूर-आन्दोलनके "समझदारी और जोर" के साथ नेतृत्व करनेकी सराहना की, और जेनरल-कौंसिलमें सदा वह श्वाइट्जेरका जिक्र पराये आदमीकी तरह नहीं करते। उसे जर्मनीके मजदूर-नेताओंमें सबसे अधिक योग्य और कर्मठ मानते थे। १८६८ ई० के अगस्तके अन्तमें हाम्बर्गमें अल्गेमाइनेर ड्वाशेर अर्बाइटेरवेराइन" (श्वाइट्जेरके मजदूर संगठन) का बड़ा अधिवेशन हुआ, जिसमें इन्टर्नेशनलसे सम्बद्ध करनेका प्रस्ताव श्वाइट्जेरने स्वयं रक्खा। उसका संगठन इन्टर्नेशनलके उद्देश्योंके साथ अपनी सहानुभूति प्रकट कर सकता था, उससे सम्बन्ध करनेमें उसे गैर कानूनी होना पड़ता। अधिवेशनने मार्क्सको मजदूर वर्गके लिए उनकी वैज्ञानिक सेवाओंके लिये जर्मन कमकरोंका धन्यवाद स्वीकार करनेके लिये निमंत्रित किया, लेकिन मार्क्स ब्रुशेल्स-कांग्रेसकी तैयारीमें व्यस्त होनेसे नहीं आ सके। इस

* Elberfeld-Barmen. † Stollberg Schneeberg. ‡ Demokratisches Wochenblat. § Allgemeiner Dentscher Arbeiter verein.

अध्वार लाजेलके समयसे चले आते बिलगावकी खाईं श्वाइट्ज़ेरके प्रयत्नसे बहुत कुछ मिट गई, लेकिन मार्क्सके शिष्य लीवक्नेख्ट और श्वाइट्जेरकी प्रतिद्वंद्विता अब भी उसी तरह जारी रही। मार्क्सने श्वाइट्जेरको कई पत्र लिखे, विशेषकर १३ अक्टूबर १८६८ के पत्रमें इसी बातका समर्थन मिलता है। बड़े अधिवेशनके कुछ दिनों बाद नूरेम्बेर्गमें जर्मन कमकर संगठनोंके एसोसियेशनकी कांग्रेस हुई और इसने भी बहुमतसे इन्टर्नेशनलके नियमोंको अपना राजनीतिक प्रोग्राम स्वीकार किया, और "डेमोक्राटिशे वोखेनब्लाट" को उसका पत्र स्वीकार किया। कुछ सप्ताह पीछे "डेमोक्राटिशे वोखेनब्लाट" ने बड़े-बड़े अक्षरोंमें घोषित किया, कि स्टूटगार्टमें जर्मन जनता-पार्टीकी कांग्रेसने नूरेम्बेर्गके प्रोग्रामको स्वीकार करनेका निश्चय किया है। श्वाइट्जेर और लीवक्नेख्ट*के संगठन नियमों और प्रोग्रामोंमें एक दूसरेके बहुत नजदीक आ गये, और मार्क्सने दोनोंके बीचमें पड़कर जर्मन मजदूर-वर्गके आन्दोलनको एक करनेकी कोशिश भी की, किन्तु उसमें सफलता नहीं हुई। आन्दोलन जितना ही बढ़ता गया, उतना ही मार्क्स को संगठनकी ओर विशेष ध्यान देनेकी आवश्यकता थी, आपसी फूटको अधिक बढ़नेसे वही रोक सकते थे।

३ बकुनिन

हम बतला चुके हैं कि किस तरह रूगेके सम्बन्धसे रूसी क्रांतिकारी मिखाइल बकुनिनका मार्क्ससे परिचय हुआ। आगे चलकर बकुनिनने अराजकतावादका दूसरा रास्ता लिया, पीछे निराश हो जार और जारशाहीका खुशामदी बनकर जान छुड़ानेकी कोशिश करनेवाले बकुनिनका प्रभाव कमकरोंके एक भागपर उस समय और पीछे भी रहा। ६-१३ सितम्बर १८६८ को ब्रुशेल्समें इन्टर्नेशनलकी तीसरी कांग्रेस हुई। पहले और पीछे भी होनेवाली कांग्रेसोंकी अपेक्षा इस कांग्रेसमें सबसे अधिक प्रतिनिधि आये थे, जिनमें अधिक संख्या बेलजियनोंकी थी। फ्रेंच प्रतिनिधि पंचमांश थे, इङ्गलैण्डके ११, जिनमें जेनरल-कौंसिलके ६ सदस्योंमें एकेरियस, युंग, लेसनेर† तथा मजूर-संघी लुक्राफ्ट भी थे।

---

* Liebknecht † Lessner.

स्वीजलैंडसे ८ प्रतिनिधि आये थे, लेकिन जर्मनी अपने ३ ही प्रतिनिधि भेज सकी थी, जिनमें कोलोनसे आनेवाला मोजेज हेस था। श्वाइट्जेरको* भी निमंत्रण मिला था, लेकिन अपने किसी मुकदमेके कामसे वह जर्मनी नहीं छोड़ सका, पर एक सन्देश भेजकर उसने इन्टर्नेशनलके उद्देश्योंके साथ अपने संगठनकी सहानुभूति घोषित की, और बतलाया कि कानूनी बाधाके कारण हम इन्टर्नेशनलके साथ अपनी संस्थाको सम्बन्धित नहीं करा सकते। अपनी आयुके चौथे सालमें इन्टर्नेशनलकी शक्ति और धारा पहलेसे भी ज्यादा बढ़ गई थी। यद्यपि मार्क्सने इस कांग्रेसके प्रस्तावोंको तैयार करनेमें भाग नहीं लिया था, लेकिन कांग्रेसकी कार्रवाईसे उनको असंतोष नहीं था। हाम्बर्ग और नूरेन्बेर्गकी कांग्रेसोंकी तरह इस कांग्रेसने भी अन्तर्राष्ट्रीय सर्वहाराकी ओरसे अपने लिए किये मार्क्सके वैज्ञानिक कार्यकी सराहना करते हुये धन्यवाद दिया। जेनेवाके प्रतिनिधियोंके जोर देनेपर इन्टर्नेशनलने युद्धके बादलोंको सिरपर मँडराते देख उसके विरुद्ध आम हड़तालका प्रस्ताव स्वीकार किया था, जिसे मार्क्सने मूर्खतापूर्ण बतलाया, पर "शान्ति स्वातंत्र्य लीगसे" सम्बन्ध-विच्छेद करनेके निर्णयको पसन्द किया। लीगकी द्वितीय कांग्रेस कुछ ही समय पहले बर्न (स्वीजलैंडमें) हुई थी, जिसमें उसने इन्टर्नेशनलसे मित्रता करनेका प्रस्ताव किया था लेकिन इन्टर्नेशनल-ने उसको कड़ा जवाब देते हुए प्रस्ताव किया कि लीगको बन्द कर देना चाहिये और उसके मेम्बरोंको इन्टर्नेशनलके भिन्न-भिन्न भागोंमें सम्मिलित हो जाना चाहिये। बकुनिन लीगकी प्रथम कांग्रेसमें सम्मिलित हुआ था, ब्रुशेल्सकी कांग्रेस-के कुछ ही महीने पहले इन्टर्नेशनलमें शामिल हुआ था। जब इन्टर्नेशनलने लीगके खिलाफ अपना प्रस्ताव पास कर दिया, तो उसने लीगकी बर्न-कांग्रेसमें अब सभी राज्योंके खतम करनेका प्रस्ताव करते हुये उसके ध्वंसपर सभी देशोंके "स्वतंत्र उत्पादक एसोसियेशनों (सभाओं) के फेडरेशन (संघ)" की स्थापना करनेका समर्थन लिया। लेकिन, वहाँ उसकी बात नहीं चली। अब बकुनिनने योहान फिलिप, वेकेर तथा दूसरे कितने ही अल्पमतमें रहे व्यक्तियोंके साथ

---

* Schweitzer.

मिलकर "समाजवादी जनतन्त्रता (अन्तर्राष्ट्रीय) मैत्री*के" नामसे एक दूसरा इन्टर्नेशनल खड़ा किया, जिसने बिना किसी शर्तके इंटर्नेशनलमें सम्मिलित होनेका निश्चय किया। बकुनिनके एलाएंस (मैत्री) की स्थापनाकी घोषणा बेकरने "डेर फोरबोटेके" सितम्बर अकमे प्रकाशित कर इसका उद्देश्य घोषित करते हुए कहा, कि फ्रास, इताली और स्पेनमें—जहाँ कि "मैत्री"का प्रभाव है—वह इंटर्नेशनलका अंग बनकर रहेगी। तीन महीने बाद १५ दिसम्बर १८६८ को बेकरने जेनरल-कौंसिलसे प्रार्थना की, कि "मैत्री" को इटर्नेशनल स्वीकार कर ले। लेकिन, इसी बीचमें फ्रेंच और बेल्जियन फेडरल कौंसिलने इस प्रार्थनाको अस्वीकार कर दिया था। एक सप्ताह बाद २२ दिसम्बरको बकुनिनने जेनेवासे मार्क्सको लिखा : "मेरे प्रिय मित्र, मै इस समय सदासे अच्छी तरह और साफ तौरसे जानता हूँ, कि तुम आर्थिक क्रातिके महान् पथका अनुसरण करते हमें अपने साथ चलनेके लिए निमन्त्रित करते उन लोगोंकी निंदा करते हुए कितने ठीक रास्तेपर थे, जो कि अशतः और कभी-कभी पूरी तौरसे राजनीतिक साहसोंकी पगडडियोंमे हमारी शक्तियाँ बरबाद कर रहे थे। इस वक्त मैं अब वही काम कर रहा हूँ, जो कि तुम पिछले बीस सालसे कर रहे थे। बर्न काग्रेसमे बूर्ज्वाजीके साथ मेरे पक्के और सार्वजनिक सम्बंध विच्छेदके बादसे कमकरोकी दुनियाके सिवाय मेरा अब न कोई दूसरा समाज है और न कोई दूसरा वातावरण। मेरी पितृभूमि अब इंटर्नेशनल है, जिसके प्रधान-संस्थापकोंमें तुम हो। इस प्रकार मेरे प्रिय मित्र, तुम देखते हो कि मैं तुम्हारा शिष्य हूँ, जिसका मुझे अभिमान है। मेरे अपने मनोभाव और वैयक्तिक सम्मतियोंके बारेमें यह बात है।" हो सकता है उस समय यह शब्द बकुनिनके हृदयसे निकले हों।

बकुनिनने कितने ही सालो बाद प्रूधो और मार्क्सके बीचमें तुलना करते हुये लिखा था : "मार्क्स एक बहुत गम्भीर और संजीदा अर्थशास्त्रीय विचारक है। प्रूधों की अपेक्षा उसको एक सबसे जबर्दस्त सुभीता यह भी है, कि वह

---

* Alliance.

वस्तुतः एक भौतिकवादी है। प्रूधोंने पुराने विज्ञानवादकी परम्पराओंसे अपनेको मुक्त करनेकी बहुत कोशिश की, तो भी वह अपने सारे जीवनमें वैसा ही विज्ञानवादी बना रहा, किसी क्षण वह बाइबलकी ओर झुकता तो दूसरे क्षण रोमन कानूनकी ओर (जैसा कि मैंने उसकी मृत्युसे दो महीने पहले कहा था), वह सदा सिरसे पैर तक एक शास्त्रान्ती (वेदान्ती) रहा। उसका यह बड़ा दुर्भाग्य था, कि उसने कभी प्राकृतिक विज्ञानका अध्ययन नहीं किया और न उसके ढंगको अपनाया। उसके पास एक मजबूत नैसर्गिक बुद्धि थी, जो उड़ती हुई उसे ठीक रास्ता बतला जाती, लेकिन अपनी बुद्धिके बुरी और विज्ञानवादी आदतोंके कारण वह अब पथभ्रष्ट हो पुनः-पुनः अपनी पुरानी गलतियोंमें पड़ जाता। इस प्रकार प्रूधों एक स्थायी परस्पर विरोधोंका समूह बन गया, यद्यपि एक शक्तिशाली प्रतिभावान् और क्रान्तिकारी विचारकके तौरपर वह लगातार विज्ञानवादके मायावादसे लड़ता रहा, पर उसे हटानेमें सफल नहीं हुआ।"
बकुनिनने मार्क्सके बारेमें लिखा था, "विचारकके तौरपर मार्क्स ठीक रास्तेपर है। उसने इस सिद्धान्तको जमा दिया कि इतिहासमें सभी धार्मिक, राजनीतिक और वैधानिक विकास आर्थिक विकासोंके कारण नहीं बल्कि उनके कार्य हैं। यह बहुत बड़ा और लाभदायक विचार है, लेकिन इसका सारा श्रेय मार्क्सको नहीं है। उससे पहले भी बहुतोंने इसका कुछ पता पाया था और अंशतः इसको व्यक्त भी किया था, लेकिन अन्तिम इसका श्रेय मार्क्सको देना ही पड़ेगा, क्योंकि उसने इस विचारको वैज्ञानिक तौरसे विकसित किया और इसे अपने सारे आर्थिक विचारोंका आधार बनाया। दूसरी ओर मार्क्सकी अपेक्षा प्रूधों स्वतन्त्रता के विचारको अधिक अच्छी तरह समझता और पसन्द करता था। जिस समय सिद्धान्तों और शेखचिल्ली शाहियोंके आविष्कारमें नहीं लगा रहता था, उस समय प्रूधोंके पास क्रान्तिकारीकी प्रामाणिक निसर्गज बुद्धि होती थी। वह शैतान-को मानता और अराजकताकी घोषणा करता था। यह बिल्कुल सम्भव है कि मार्क्स प्रूधोंकी अपेक्षा भी बेहतर बुद्धिपूर्वक स्वातन्त्र्य व्यवस्थाको विकसित करे, लेकिन उसके पास प्रूधों जैसी निसर्गज बुद्धि नहीं है। एक जर्मन और यहूदी होनेके कारण वह सिरसे पैर तक अधिकारवादी है।"

बकुनिनने प्रूधोंके अराजकतावादमें मार्क्सवादी ऐतिहासिक भौतिकवादकी पुट डालकर अपना एक नया पंथ खड़ा किया। प्रूधोंसे बकुनिनका अध्ययन अधिक विस्तृत था, वह मार्क्सको उसकी अपेक्षा अच्छी तरह जानता था, लेकिन उसने जर्मन-दर्शनका अध्ययन नहीं किया था और न पश्चिमी युरोपके वर्ग-संघर्षका गहराईसे अध्ययन किया था। अर्थशास्त्रमें तो वह पूरा भकुवा था, जो कि उसके लिये प्रूधोंके प्राकृतिक विज्ञानके अज्ञानसे भी अधिक हानिकारक था।

१८४८ के गर्मियोंमें—जब कि बकुनिनके साथ मार्क्सका परिचय अभी बहुत दिनोंका नहीं था, "नोये राइनिशे जाइटुंग" में बकुनिनपर आक्षेप किया गया, कि वह रूसी सरकार का एजेन्ट है। यद्यपि इसका पूरा प्रमाण न होनेके कारण यह आक्षेप हटा लिया गया और पीछे बर्लिनमें मिलनेपर मार्क्स और बकुनिनकी पुरानी मित्रता फिर कायम हो गई, और प्रशियन सरकार द्वारा निष्कासित होनेपर "नोये राइनिशे जाइटुंग" ने उसका पक्ष भी लिया था, लेकिन बोल्शेविक-क्रान्तिके बाद जारशाहीके दफ्तर जब खुले, तो मालूम हुआ कि "नोये राइनिशे जाइटुङ्ग" का १८४८ ई० वाला आरोप गलत नहीं था। ग्राफ ओर्लोफके सुझावपर बकुनिनने जारके पास उस समय अपना "प्रायश्चित्त नामा" भेजा था, जब कि आस्ट्रियन सरकारने उसे पकड़कर जारशाही पुलिसके हाथमे दे दिया। इस प्रायश्चित-पत्रको १५ सितम्बर १८५१ को बकुनिनने लिखकर खतम कर तुरन्त ही जारके पास भेज दिया था। जारने अपने युवराज-को उसे पढनेके लिये दे दिया और फिर दुःख्यात ओखराना (खुफिया पुलिस) के दफतरमें दाखिल कर दिया गया। लेनिनग्रादमें केन्द्रीय अभिलेखागारमें १६१६ ई० में मिलने पर "प्रायश्चित" को तुरन्त ही प्रकाशित कर दिया गया। १४ फर्वरी १८५७ का लिखा जारके नाम बकुनिनका एक पत्र भी मिला था, जिसे भी प्रकाशित कर दिया गया। इन दोनों अभिलेखों द्वारा बकुनिन यही चाहता था, कि उसको कड़ा दण्ड न दिया जाय। उसने अपराध स्वीकार करने वाले पापीके तौरपर अपनी प्रार्थना जारके सामने रखा। १४ फर्वरी १८५७ वाला पत्र तो "प्रायश्चित" से भी भद्दा है: "किस नामसे मैं अपने अतीत जीवनको पुकारूँ ? मृगतृष्णा और निष्फल प्रयत्नोंसे आरम्भ करके उसका अन्त अपराधों

में हुआ।...मैं अपनी भूलों, अपनी कुदृष्टियों और अपने अपराधोंपर लानत भेजता हूँ...।" जारशाहीके चरणोंमें पड़े इस पुराने पापीका दिखलाया राजनीतिक मार्ग किस तरहका होगा, इसे कहनेकी अवश्यकता नहीं, लेकिन जिस तरह त्रोत्स्की, राय या दूसरे पथपतितोंके अनुयायी आजभी मिल सकते हैं, उसी तरह बकुनिनके भक्तोंका भी अभाव नहीं है।

१८६७ ई० की शरद्में बकुनिन जेनेवामें जाकर रहने लगा। वहाँ उसने अपनी स्थापित की हुई गुप्त सभाके पक्षमें "शान्ति-स्वातंत्र्य लीगको" करनेकी कोशिश की। उसमें असफल होनेके बाद इन्टर्नेशनलके साथ सम्बन्ध जोड़नेकी कोशिश की। मार्क्सके दिलमें अब भी क्रान्तिकारी बकुनिनके लिये सहानुभूति थी। वह दूसरोंके आक्षेपोंसे उसकी रक्षा करनेका प्रयत्न करते थे। बकुनिनने समाजवादी जनतंत्रता मैत्री (एलायन्स) के लिये जिस दिन जेनरल-कौंसिलको पत्र लिखा, उस समय तक उसने बेकेरकी भेजी हुई प्रार्थनाको अस्वीकार कर दिया था और इस अस्वीकृतिमें मार्क्सका बड़ा हाथ था।

बकुनिनने अब भी आशा नहीं छोड़ी और २२ जूनको उसके संगठनने घोषित किया, कि अब मैत्रीको बन्द कर इसके भिन्न-भिन्न विभागोंको इन्टर्नेशनल का विभाग बन जाना चाहिये। जेनेवा-विभाग, जिसका नेता बकुनिन था, इन्टर्नेशनलमें जेनरल-कौंसिलके एकमतसे ले लिया गया। बकुनिनने अपनी गुप्त सभाको भी तोड़ देनेकी बात की थी, लेकिन वह किसी न किसी रूपमें मौजूद रही। १८६६ ई० की शरद् तक बकुनिन कभी जेनेवा-सरोवर, कभी जेनेवा और कभी वेवे अथवा क्लारेन्समें रहता था। फ्रेंच इतालियन भाषी स्विस कमकरोंपर उसका काफी प्रभाव था। जनवरी १८६६ में बकुनिनकी प्रेरणासे उन्होंने एक संयुक्त फेडरल कौंसिल बनाई और उसकी ओरसे काफी प्रभावशाली "ला एगालेते" (समानता) नामक एक साप्ताहिक निकाला, जिसमें बकुनिन, वेकेर, एकेरियस, बर्लिन तथा इन्टर्नेशनलके दूसरे प्रमुख सदस्योंके लेख निकला करते थे।

४. चौथी कांग्रेस (१८६६ ई०)

इन्टर्नेशनलकी चौथी कांग्रेस ५ और ६ सितम्बर (१८६६ ई०) को

बाज़ेलमें* हुई, जिसमें इन्टर्नेशनलके पाँचवें वर्षके कामोका लेखा-जोखा लिया गया। इस समय भी युरोपमें कमकरोंका वर्ग-संघर्ष चल रहा था, इन्टर्नेशनलकी शक्ति और प्रभाव कम होनेकी जगह बढ़ता जा रहा था। बूर्ज्वाजी और उनकी सरकारोंने अब इन्टर्नेशनलको खूनी पंजेसे दबानेका निश्चय कर लिया। इंगलैंड मे भी हड़ताली खनको और सेनाके साथ खूनी मुठभेड़ हुई। ल्वारकी खानवाले इलाकेमे शराबी सिपाहियोंने रिकामेरीके† पास खूनकी होली खेली और बीस आदमियोंको मार डाला, जिनमें दो स्त्रियाँ और एक बच्चा भी था। बेल्जियम की सरकार इंगलैंडकीसे भी आगे थी, जिसके बारेमें मार्क्सने लिखा था: "पृथ्वी अपनी कक्षापर अपनी वार्षिक यात्राको उससे अधिक निश्चिततापूर्वक नहीं पूरा करती, जितना कि बेल्जियम सरकार अपने कमकरोके वार्षिक खूनकी होलीको।" "१८६८ ई० के वसन्तमें नये मताधिकारके अनुसार इंगलैंडमें प्रथम चुनाव हुआ, लेकिन थैलीशाहोके सामने एक भी कमकर पार्लियामेन्टके लिये नहीं चुना गया। ग्लेडस्टोनका मंत्रिमण्डल फिर शासनारूढ़ हुआ, लेकिन उसके दलने निर्वाचनके समयकी बातोंका कुछ भी न ख्याल कर आयर्लैंडके साथ समझौता या मजदूरोंकी शिकायतोको दूर करनेकी कोई कोशिश नहीं की। १८६९ ई० में बर्मिंघममें इंगलैंडकी मजदूर-सभाओं (ट्रेडयूनियनो) की वार्षिक कांग्रेस हुई, जिसमे अपील की गई, कि ब्रिटेनके सभी मजूर-संगठनोंको इन्टर्नेशनलके साथ सम्बन्धित हो जाना चाहिये, यह इसीलिये नहीं, कि वह मजूर-वर्गके हितोंका समर्थक है, बल्कि इसलिये भी कि इन्टर्नेशनलके सिद्धान्त ही दुनियाके लोगोंके बीच स्थायी शान्ति कायम कर सकते हैं। १८३९ ई० की गर्मियोंमें इंगलैंड और युक्तराष्ट्र अमेरिकामे लडाई छिड़नेका डर पैदा हो गया था। मार्क्सने उस समय युक्तराष्ट्र की राष्ट्रीय मजदूर संघके लिये एक अभिभाषण तैयार किया, जिसमें लिखा था: "युद्धका रोकना अब यह तुम्हारी बारी है। युद्धका अनिवार्य परिणाम होगा अटलान्टिकके दोनो किनारोंके बढते हुये मजदूर-वर्गीय आन्दोलनोंका पीछे हटना।" फ्रांसमें मजदूर-वर्गकी गतिविधिसे परेशान हो पुलिस इन्टर्नेशनलके नये समर्थकोंका दमन कर रही थी। जर्मनीमें अवस्था कुछ भिन्न थी, क्योंकि राष्ट्रीय

---

* Basle. † Ricamarie.

प्रश्नको लेकर वहाँ मजूरोंमें फूट पड़ गई थी। १८६६ ई० के बाद आस्ट्रिया-हुंगरीमें मजूर-आन्दोलन जड़ पकड़ता आगे भी बढ़ रहा था।

सब मिलाकर बड़ी अच्छी स्थिति थी, जब कि सितम्बरके प्रथम सप्ताहमें बाजेलमें इन्टर्नेशनलकी चौथी कांग्रेस बैठी। उसमें ७८ प्रतिनिधि नौ देशोंसे आये थे। जेनरल-कौंसिलके चार प्रतिनिधि थे—एकेरियस* युंग† एपलगर्थ‡ और लुकफ्ट। फ्रांसके २६, बेल्जियमके ५, जर्मनीके १२, आस्ट्रियाके २, स्वीजर्लैंडके २३, इतालीके ३, स्पेनके ४ और युक्तराष्ट्रके १ प्रतिनिधि थे। लीबक्नेख्ट और मोजेज हेस भी थे, और बकुनिन भी। सभापतिका पद युंगने सँभाला। कांग्रेसके सामने सबसे बड़ी सैद्धानिक समस्या थी जमीनकी सम्मिलित मिलकियत, तथा दायभागके अधिकारका प्रश्न। पहला प्रस्ताव ब्रुशेल्स-कांग्रेसने तै कर लिया था, इसलिये उसके बारेमें बहुत बहस-मुबाहिसेकी जरूरत नहीं पड़ी। २४ वोटोंसे कांग्रेसने निश्चय किया, कि समाजको भूमिपर सम्मिलित मिलकियत कायम करनेका अधिकार है, और ५३ वोटोंसे वह भी तै किया कि सारे समाजके हितके लिये ऐसी कार्रवाईकी जरूरत है। दायभागके उत्तराधिकार-के बारेमें जेनरल-कौंसिलने एक रिपोर्ट तैयार की थी, जिसमें मार्क्सकी समर्थ लेखनीका थोड़ेसे शब्दोंमें बहुत से भावोंको प्रकट करनेका चमत्कार देखनेमें आता है: दूसरे सारे बूर्ज्वा-विधानोंकी तरह उत्तराधिकारके विधान (कानून) भी उत्पादन-साधनोंमें निजी सम्पत्ति पर आधारित समाजके आर्थिक संगठनका कानूनी परिणाम हैं। उत्तराधिकार-सम्बन्धी कानून कारण नहीं बल्कि कार्य—आर्थिक संगठनोंका कानूनी परिणाम है। दासोंको दायभागमें पानेका अधि-कार दासताका कारण नहीं था, बल्कि दासता दासोंके दायभागमें पानेके अधिकारका कारण थी। यदि उत्पादन-साधनोंको निजी सम्पत्तिकी जगह सम्मिलित सम्पत्ति बना दिया जाय, तो सामाजिक महत्वके तौरपर दायभागका अधिकार लुप्त हो जायगा, क्योंकि तब आदमी अपने उत्तराधिकारियोंको उतना ही दायभागके तौरपर छोड़ सकेगा, जो कि अपने जीवनमें उसके पास है।

---

* Eccarius. † Gung. ‡ Applearth.

इसलिये मजूर-वर्गका प्रधान लक्ष्य है उन संस्थाओंको तोड देना, जो कि बहुतों के श्रमके फलको लूटनेके लिये आर्थिक शक्तिको चन्द हाथोमें देती हैं। किन्तु, उससे पहले सामाजिक क्रांतिके आरम्भ करनेके तौरपर दायभागके कानूनको उठा देनेकी घोषणा उसी तरह फजूलकी होगी, जिस तरह खरीदारो और विक्रेताओंके बीच शर्तनामेके कानूनको तब उठा देनेकी घोषणा, जब कि आजकलकी माल-विनिमयकी व्यवस्था जारी है। ऐसी घोषणा सिद्धान्तमे गलत और व्यवहारमें प्रतिक्रियाकारी होगी। दायभागके अधिकारमे तभी फेर-फार उसी संक्रान्ति कालमें किया जा सकता है, जब कि एक ओर समाजका वर्तमान आर्थिक आधार हटाया नहीं गया है, और दूसरी ओर समाजको पूरी तौरसे रूपान्तरित करनेके लिये आवश्यक कार्रवाइयोंको पूरा करनेके वास्ते मजूर वर्गके पास काफी शक्ति आ चुकी है। संक्रान्तिकालीन कार्रवाईके तौरपर जेनरल-कौंसिल मृत्यु करके बढाने और दायभागके अधिकारोंको सीमित करनेको परिवारके दायभागके अधिकारसे अलग सिफ़ारिश करती है।

लेकिन, जिस कमीशनको यह सवाल सपुर्द किया गया था, उसने दायभाग अधिकारके उठा देनेको मजूर-वर्गकी मौलिक मॉग घोषित की। इसका समर्थन बकुनिनने किया। वस्तुतः बकुनिनका ही यह प्रस्ताव भी था। लेकिन, अन्तिम फैसला इसके बारेमें कुछ नहीं हो सका, क्योंकि उसके पक्षमे काफी प्रतिनिधि नहीं थे। तो भी इस प्रस्तावके सम्बन्धमें जो विचार प्रकट किये गये थे, उनसे भूमि-सम्बन्धी प्रस्तावका प्रभाव भिन्न-भिन्न देशोमें देखा गया। प्रस्तावको फ्रेंच, इतालियन, स्पेनिश, पोलिश और रूसी भाषाओंमें अनुवादित करके खूब बाँटा गया। लन्दनमें "भूमि और श्रम-संघकी" एक बड़ी सभामें स्थापना करते नारा लगाया गया "भूमि लोगोंके लिये!"

मार्क्स बाजेल-काग्रेसकी कार्रवाइयोंसे बहुत संतुष्ट हुये। उस समय वह अपनी बड़ी लड़की जेनीके साथ स्वास्थ्य-सुधारके लिये जर्मनीमें यात्रा कर रहे थे। २५ सितम्बरको उन्होंने हनोवरसे अपनी लड़की लौराको लिखा: "मुझे यह जानपर प्रसन्नता हुई, कि बाजेल-काग्रेस समाप्त हो गई। उसके निष्कर्ष अपेक्षाकृत अच्छे हैं।" बकुनिन भी काग्रेसकी कार्रवाईसे मार्क्ससे अधिक

निराश नहीं हुआ। कहा जाता है, बकुनिन अपने दायभागके उत्तराधिकारवाले प्रस्ताव द्वारा मार्क्सको हराना चाहता था, लेकिन यह बात समसामयिक अभिलेखोंसे गलत साबित होती है।

बकुनिनकी आर्थिक अवस्था खराब हो गई थी। उसकी बीबीको बच्चा होनेवाला था। उसने लोकार्नोमें बसकर वहाँसे मार्क्सके "कपिटाल" की प्रथम जिल्दका रूसीमें अनुवाद करनेका निश्चय किया। उसके एक भक्तने एक रूसी प्रकाशकको भी ठीक कर लिया और अनुवादके परिश्रमिकके तौरपर निश्चय किये गये बारह सौ रूबलोंमेंसे तीन सौ बकुनिनके पास पहुँच भी गये। बकुनिनको रूसी एजेन्ट कहनेवालोंकी अब भी कमी नहीं थी, जिसका जवाब वह भी "जर्मन यहूदी" कहकर देता था, यद्यपि लासेल और मार्क्सको वह अपवाद बतलाता था। रूसी क्रान्तिकारी विचारक हेर्त्सेन बकुनिनके पक्षमें था, लेकिन वह यह पसन्द नहीं करता था, कि छोटे-मोटे "जर्मन यहूदियों" पर आक्रमण किया जाय और मार्क्सको अछूता रक्खा जाय। २८ अक्तूबरको बकुनिनने इसका कारण बतलाया, कि मैं क्यों मार्क्सपर आक्रमण करनेसे अपनेको रोकता हूँ: "चाहे कितनीही बुरी चालें उसने हमारे साथ चलीं कमसे कम मैं समाजवादके लिये उसकी जबर्दस्त सेवाओंकी उपेक्षा नहीं कर सकता, जिसे कि उसने अन्तर्दृष्टि, शक्ति और निःस्वार्थ भावसे प्रायः पचीस वर्षों तक किया है। इसमें निस्सन्देह वह हम सबसे आगे बढ़ा-चढ़ा है। वह इन्टर्नेशनलका एक संस्थापक, बल्कि मुख्य संस्थापक था और मेरी दृष्टिमें यह एक ऐसी जबर्दस्त सेवा है, जिसको मैं सदा स्वीकार करूँगा, चाहे मार्क्सने हमारे खिलाफ कुछ भी किया हो।" लेकिन बकुनिनका मार्क्सके ऊपर सीधे आक्रमण न करनेका एक कारण यह भी था, कि इन्टर्नेशनलके तीन-चौथाई लोग मार्क्सके ऊपर आक्षेप करनेपर उसके विरोधी हो जाते।

बकुनिन और मार्क्सके अनुयायियोंका झगड़ा बढ़ता ही गया। १८ फर्वरी (१८७० ई०) के एक पत्रमें बकुनिनपर कुछ पैसे-कौड़ीके मामलेमें सन्देह प्रकट किया गया, जिसका सबूत बकुनिनके एक अनुयायी कतकोफके आधारपर दिया गया था। कतकोफ अपनी जवानीमें बकुनिनका अनुयायी रह चुका था,

लेकिन पीछे प्रतिक्रियावादियोंके दलमें मिल गया। मार्क्सने इस आक्षेपको ठीक न कहकर लिखा : "पैसा उधार लेकर काम चलाना रूसियोंमें साधारण सी बात है।" बकुनिनका विरोध यद्यपि बढ़ रहा था, लेकिन मार्क्सको इसका सन्तोष था, कि इन्टर्नेशनल अब रूसी क्रान्तिकारियोंमें जड़ पकड़ रही है—यह भी उल्लेखनीय बात है, कि इसी समय (१८७० ई० में) लेनिनने जन्म लिया था, जिन्हें कि मार्क्सका सबसे योग्य उत्तराधिकारी होनेका सौभाग्य प्राप्त होनेवाला था।

इसी साल ४ अप्रैलको ला शो-दे-फोंद* मे फ्रेंच-इतालियनभाषी स्विस फेडरेशनकी द्वितीय वार्षिक कांग्रेस हुई। बकुनिन मैत्रीकी जेनेवा शाखाने इन्टर्नेशनलमें सम्बन्धित था। उसने कांग्रेससे माँग की, कि फेडरेशन इन्टर्नेशनलको स्वीकार करे और हमें भी फेडरेशनमे दो प्रतिनिधि भेजनेकी आज्ञा दी जाय। ऊतिनने† इसका विरोध करते हुये आक्षेप किया, कि यह सब बकुनिन-की चाल है। इसके कारण कांग्रेसमें फूट पड़ गई। बकुनिनके पक्षमें १८ वोट और विपक्षमें २१ आये। अल्पमत पक्षने निर्णयको स्वीकार नहीं किया, जिसके कारण दो कांग्रेसें बन गईं।

५. आयर्लैंड और फ्रांस

१८६९-७० ई० के जाड़ोंमें फिर मार्क्सका स्वास्थ्य खराब हो गया, लेकिन अब लगातार पीछा करनेवाली आर्थिक कठिनाइयाँ नहीं रह गई थीं। ३० जून (१८६९) को एंगेल्सने "सौरे व्यवसाय" से छुट्टी ले ली थी, इससे छः महीने पहले उन्होंने मार्क्ससे पूछा था, कि ३५० पौंड वार्षिकसे काम चल जायेगा या नहीं। एंगेल्सने अपने फर्मके साथ ऐसा बंदोबस्त किया था, कि जिसमें पाँच-छः वर्षों तक यह रकम मार्क्सको बराबर मिलती रहे। एंगेल्सने इस प्रबन्धसे पाँच-छ ही वर्ष नहीं, बल्कि अपने अन्तिम समय तकके लिये मार्क्सकी आर्थिक कठिनाइयाँ दूर हो गई थीं। इस समय दोनों मित्रोंका ध्यान आइरिश-समस्यामें लगा हुआ था। एंगेल्सने आइरिश-आन्दोलनके ऐतिहासिक विकासका

---

* La Chauxde Fords † Utin

विस्तारपूर्वक अध्ययन किया था। मार्क्सने इन्टर्नेशनलकी जेनरल-कौंसिलपर जोर दिया था, कि वह आइरिश-आन्दोलनका समर्थन करे, अनियमित तौरसे दंडित सिनफिनोंकी आम माफीकी माँग करे, जिनके साथ कि जेलमें बहुत बुरा बर्ताव किया जा रहा था। जेनरल-कौंसिलने आइरिश जनताकी अपने अधिकारोंके लिये लड़नेमें दृढ़ता, उदारता और हिम्मतकी सराहना की। उसने ग्लेड्स्टोनकी नीतिकी निन्दा की, जिसने कि निर्वाचनके दिये हुये वचनको तोड़कर आइरिश देशभक्तोंको आम माफी देनेसे इन्कार कर दिया, और उसके लिये ऐसी शर्तें पेश कीं, जो कि आयर्लैंडवालोंके लिये अपमानजनक थीं। आइरिश-आन्दोलनमें मार्क्सकी सबसे बड़ी लड़की जेनी भी भाग ले रही थी। उसकी सफलताको देखकर मार्क्सको बड़ी प्रसन्नता हुई। इंगलिश पत्र आयर्लैंड-वासियोंके ऊपर होते बर्बरतापूर्ण अत्याचारों पर मौन रहना चाहते थे। जेनी मार्क्सने बन्दी सिनफिनोंके ऊपर होते अत्याचारों का वर्णन कई लेखोंमें लिखकर विलियमके नामसे रोकफोर्टके पत्र "मार्सेइ"* में छपाया—१८५० वाली शदाब्दीमें मार्क्सने भी विलियमके नामसे लेख लिखे थे। जेनीके लेख बड़े जोरदार थे। वह फ्रेंच पत्रमें निकलकर यूरोपमें इंगलैंडकी भारी बदनामी कर रहे थे। इसपर ग्लेड्स्टोनको मजबूर हो सिनफिनोंको जेलसे मुक्त करना पड़ा। "मार्सेइ" नकली बोनापार्तका जबर्दस्त विरोधी था। बोनापार्त इन्टर्नेशनलके मेम्बरोंसे बहुत नाराज था। उसने बम-षड्यन्त्रमें भाग लेनेका दोष लगाकर उन्हें फँसाना चाहा। लेकिन षड्यन्त्रको साबित करना जब असम्भव हो गया, तो वह दोष तो हटा लिया गया। पुलिसने इन्टर्नेशनलके मेम्बरोंके पास एक गुप्त-संकेत वाले कागज-पत्र पकड़नेकी घोषणा की। ताम्रकार शातें† ने इस अदालतके सामने अपने साथियोंकी ओरसे जबर्दस्त सफाई दी। तब भी ६ जुलाईको बोनापार्ती सरकार एक सालके जेल और एक साल नागरिक अधिकारसे वंचित करनेका दंड दिलानेमें सफल हुई, यद्यपि उसके थोड़े ही समय बाद वह सरकार सदाके लिये खतम हो गई। शातेंने पीछे पेरिस-कम्यूनके मेम्बरके तौरपर बहुत काम किया।

---

* Marseillaiz † Chatuin

अध्याय १७

पेरिस कम्यून

१. सेदाँकी पराजय (१८७० ई०)

१८४८ ई० की जर्मन-क्रान्तिके असफल होनेके बाद प्रशियन सरकारने जनताकी शक्तिको दूसरी ओर करनेके लिये सभी जर्मनोंकी एकताके आन्दोलन को बढ़ाना शुरू किया। वस्तुतः यह एकता का प्रयत्न नहीं, बल्कि सभी जर्मन राज्योंपर प्रशियाका प्रभुत्व कायम करना था। जहाँ तक सारे जर्मन भाषा-भाषियोंकी एकताका सवाल है, इसमे मार्क्स, और एंगेल्स, लाजेल और स्वाइट-जेर, लीबक्नेख्ट और बेबल पूरी तौरसे सहमत थे। लेकिन कोनिग्रात्जमे* आस्ट्रियाको हराकर प्रशिया जिस जबर्दस्त शक्तिको प्राप्त कर लिया था उसे वह अब प्रतिक्रान्तिके लिये इस्तेमाल करनेको तैयार थी। उसे देखकर उन्हें यह मानना पडा, कि ऐसी स्थितिमें राष्ट्रीय क्रान्तिकी सम्भावना नही है। उन्होंने यह भी समझा कि प्रशियाकी इस सफलतासे वर्ग-संघर्षके लिये स्थिति और अनुकूल होगी, इसलिये मार्क्स और एंगेल्स, तथा लाजेलके उत्तरा-धिकारी श्वाइटजेरने "उत्तर-जर्मन-लीग" को स्वीकार किया, जिसे कि प्रशिया-ने स्थापित किया था। लेकिन, लीबक्नेख्ट और बेबेल उत्तर-जर्मन लीगकी अपेक्षा वृहत्तर जर्मनीके ही समर्थक रहे, १८६६ ई० के बाद भी उत्तर-जर्मन लीगके ध्वसके लिये काम कर रहे थे।

इस निर्णयके बाद १८७० ई० मे फ्रास और प्रशियाके बीच होनेवाली लड़ाईके प्रति भी उनका दृष्टिकोण निश्चित हो चुका था। उन्होंने इस युद्धके तुरन्तके उन कारणोंके बारेमे अपनी कोई राय नहीं दी, जो कि थे : बिस्मार्क स्पेनेके सिंहासनपर एक होहेनजोलेर्न राजकुमारको बैठाना चाहता था और बोनापार्त अपने वंशके राजकुमारको अथवा बोनापार्त जर्मनीके खिलाफ फ्रास-आस्ट्रिया-इतालीका एक सयुक्त मोर्चा बनाना चाहता था। बोनापार्त आस्ट्रियाको

---

* Konıggratz

अपनी ओर खींचकर जर्मनीकी राष्ट्रीय एकताके विरुद्ध काम कर रहा था, इस-लिये वह मानते थे कि जर्मनी जो कार्रवाई कर रही है, वह अपनी प्रतिरक्षाके लिये है। २३ जुलाईको इन्टर्नेशनलकी जेनरल-कौंसिलकी ओरसे प्रकाशित होने-वाले अभिभाषणको मार्क्सने तैयार किया था, जिसमें कि घोषित किया गया कि १८७० ई० की युद्ध-योजना १८५१ ई० के कूप-द-एता (राजविराधीका) एक सुधरा हुआ रूप है, लेकिन यह द्वितीय साम्राज्य (नकली बोनापार्ती वंश) के लिये मौतकी रस्सी होगी, जिससे वह उसी तरह खतम होगा, जिस तरह कि उसका आरम्भ हुआ। तो भी यह भूलना नहीं चाहिये, कि यह युरोपकी सरकारें तथा शासक-वर्ग ही थे जिन्होंने कि बोनापार्तके एक पुनः स्थापित साम्राज्यके लिये अठारह वर्षों तक पाशविक प्रहसन खेलना सम्भव कर दिया। जहाँ तक जर्मनीका सम्बन्ध है, यह युद्ध प्रतिरक्षात्मक है, लेकिन जर्मनीको इस स्थितिमें डालने में किसने मजबूर किया? किसने लुई बोनापार्तको जर्मनीसे युद्ध करनेके लायक बनाया प्रशियाने कोनिग्रातज़*के युद्धसे पहले बिस्मार्कने बोनापार्तके साथ मिलकर षड्यंत्र रचा और कोनिग्रात्जके बाद बिस्मार्कने कठोर दासतामें पड़े फ्रांसके विरुद्ध स्वतन्त्र जर्मनीकी स्थापना नहीं बल्कि द्वितीय साम्राज्यकी सारी घृणित चालों और धोखा-धड़ियोंको इस तरह इस्तेमाल किया, कि बोनापार्तीय शासन-व्यवस्था राइनके दोनों किनारोंपर स्थापित हो गई। इसका परिणाम युद्ध छोड़कर और क्या हो सकता था? यदि जर्मन मजदूर-वर्ग वर्तमान युद्धके पक्के प्रतिरक्षात्मक रूपको छोड़कर उसे फ्रेंच जनताके विरुद्ध युद्धके रूपमें परिणत होने देता है, तो विजय और पराजय दोनों एक समान खतरनाक होगी। तथाकथित स्वतन्त्रताके लिये युद्धोंके कारण जर्मनीकी भोगी सारी तकलीफें और दुःख और भी जबर्दस्त रूपमें बढ़ेंगी। इसमें मार्क्सने यह भी लिखा था, कि बोनापार्ती आक्रमणके विरुद्ध अपनी रक्षाके लिये अपने अधिकारके तौरपर जर्मन जो भी सहानुभूति पानेकी आशा रखते हैं, वह उन्हें नहीं मिल सकेगी, यदि उन्होंने प्रशियन सरकारको कसाकों (ज़ारशाही सैनिकों) से सहायता मांगनेका अवसर दिया।

---

* Koniggratz

इस अभिभाषणसे दो दिन पहले २१ जुलाईको उत्तर-जर्मन राइखस्टाग (पार्लियामेन्ट) ने बारह करोड डालर युद्धके खर्चके लिये स्वीकार किये। लाजेलके अनुयायियोने पार्लियामेन्टमें इसके पक्षमें वोट दिया, लेकिन लीब-क्नेख्ट और वेबेलने किसी ओर वोट नहीं दिया। अपने लोगोंमें भी कितनोंने उनके इस आचरणको पसन्द नहीं किया।

प्रशियाकी सेनाओंका प्रतिरोध बोनापार्तकी सेना नहीं कर सकी, और सेदॉकी लडाईमें उसकी घोर पराजय हुई। लुई बोनापार्त बन्दी बना और द्वितीय साम्राज्य ध्वस्त हो गया। पैरिसमें बूर्ज्वा गणराज्यकी घोषणा हुई। पैरिसके पहलेके देपुतियो (पार्लियामेन्ट सदस्यों) ने गणराज्यकी बागडोर अपने हाथमें ले अपनेको राष्ट्रीय प्रतिरक्षा सरकार घोषित किया। जर्मनोंके लिये अब यह लडाई राष्ट्रीय प्रतिरक्षाका युद्ध नहीं रह गया। प्रशियाके राजाने उत्तर-जर्मन-लीगके नेताके तौरपर अनेक बार घोषित किया था, कि हम फ्रेंच जनताके विरुद्ध नहीं, बल्कि फ्रेच सम्राट्की सरकारके विरुद्ध युद्ध कर रहे हैं। पैरिसकी नई सरकार जर्मनीको क्षतिपूर्ति देनेके लिये तैयार थी, लेकिन बिस्मार्क पैसेसे सन्तुष्ट नहीं था, वह तो फ्रासकी भूमि अलसेस और लोरेनको चाहता था, जिसके लिये उसने युद्धको जारी रखना जरूरी समझा। इन्टर्नेशनलने बेकार ही इतने दिनों तक प्रयत्न नहीं किया। उसका प्रभाव कमकर जनतापर होना जरूरी था। ५ सितम्बरको ब्रुन्सविक कमेटीने मजदूर-जनताको फ्रेच गणराज्यके साथ सम्मान सहित शान्तिके पक्षमे तथा अलसेस और लोरनेके हडपनेके विरुद्ध प्रद-र्शन करनेकी अपील की। इस अपीलमें कमेटीके नाम लिखे मार्क्सके पत्रका कुछ अश भी उद्धृत किया गया था। अपीलपर दस्तखत करनेवाले सैनिक अधि-कारियों द्वारा गिरफ्तार हो बेडी डालकर ६ सितम्बरको लोत्जेनके किलेमें पहुँ-चाये गये। योहान याकोबी को भी राजबन्दी बनाकर वहीं भेज दिया गया, क्योंकि उसने कोनिग्सबेगमें फ्रेच भूभागके हडपनेका विरोध किया था: "कुछ दिनो पहले हम लोग प्रतिरक्षात्मक युद्ध लड रहे थे, अपनी प्रिय पितृभूमिके लिये धर्मयुद्ध लडाई कर रहे थे, लेकिन आज यह विजयका युद्ध यूरोपमें जर्मनिक जातियोंकी सर्वप्रभुता स्थापित करनेका युद्ध है।" प्रशियाके सैनिक

अधिकारियोंने चारों ओर अत्याचार और दमनका राज्य स्थापित कर दिया। जिस दिन ब्रुन्सविक कमेटीके मेम्बरोंको जर्मनीमें गिरफ्तार किया गया, उसी दिन इन्टर्नेशनलकी जेनरल-कौंसिलने मार्क्स और कुछ अंशमें एंगेल्स द्वारा तैयार किये अभिभाषणको प्रकाशित किया, जिसमें प्रशियाकी अनुचित महत्वाकांक्षा और देश-विजयकी भावनाकी सख्त निन्दा की गई। प्रशियाका दावा था कि अल्सेस और लोरेन पुराने समयमें जर्मन साम्राज्यके अंग थे। इसपर अभिभाषणने लिखा था: "यदि पुराने ऐतिहासिक अधिकारोंके साथ यूरोपके नक्शेको फिरसे बनाया जाय, तो हमें यह न भूलना चाहिये कि जहाँ तक कि उसके प्रशियाके भूभागका सम्बन्ध है ब्रांडेनवर्गका निर्वाचक (शासक) किसी समय पोलिश गणराज्यका सामन्त था।" अभिभाषणमें उन लोगोंका भी मुँह-तोड़ जवाब दिया गया था, जो कहते थे कि प्रशियाकी भौतिक गारंटीके लिये अलसेस और लोरेनका हमारे हाथमें रहना आवश्यक है। एंगेल्सने सैनिक दृष्टिसे इसपर विवेचना करते हुये बतलाया था, कि यदि राष्ट्रोंके भीतर सीमाओं के निर्धारित करनेमें सैनिक सुभीतेका ख्याल रक्खा गया, और इस सिद्धान्तको मान लिया गया, तो आस्ट्रियाको वैनिसके प्रदेश तथा मिनसियों रेखा * तकको लेनेका अधिकार होगा और फ्रांसको पेरिसकी रक्षाके लिये राइन नदीकी माँग करनेका हक होगा। पैरिस को निश्चय ही उत्तर-पश्चिमसे आक्रमण होनेका उससे कहीं ज्यादा खतरा है, जितना कि बर्लिनको दक्षिण-पश्चिमसे। अगर सैनिक ख्यालसे राष्ट्रीय सीमान्त निर्धारित किये जाने लगे, तो भिन्न-भिन्न दावोंका अन्त नहीं होगा, क्योंकि हरेक सैनिक स्थिति अवश्य कहीं पर कमजोर होती है, और उसके लिये और अधिक भूभागको अपनेमें मिलाकर सदा मजबूत करनेकी इच्छा की जा सकती है। अन्तमें, इस तरीकेसे स्थापित की गई सीमायें कभी अन्तिम नहीं हो सकतीं, क्योंकि उन्हें विजेताओं द्वारा पराजितोंपर जबर्दस्ती लादा जायगा, और इस प्रकार वह नये युद्धोंका बीज बोयेंगी।"

अभिभाषणमें फ्रांसके बारेमे लिखते हुये कहा गया था, कि गणराज्यने

* Mincio Line

सिंहासनको फेंका नहीं, बल्कि केवल खाली उसकी पीठको अपने हाथमें ले लिया है। सामाजिक सफलताके तौरपर नहीं, बल्कि राष्ट्रीय प्रतिरक्षाके उपायके तौरपर घोषित किया गया है। गणराज्य एक अस्थायी सरकारके हाथमें है, जिसमें दुःख्यात ओर्लियाँ-पक्षी और कितने ही बूर्ज्वा गणवादी सम्मिलित हैं। उनमें वह लोग भी मौजूद हैं, जिन्होंने कि १८४८ के जूनके विद्रोहका विरोध किया था। विभागोका बँटवारा भी बुरी तरहसे हुआ है। सेना और पुलिस जैसे महत्वपूर्ण विभाग ओर्लियानियोके हाथ हैं और बात बनानेवाले विभाग नामधारी गणवादियोके हाथमें। नई सरकारने जो पहले कदम उठाये हैं, उनसे साफ है कि उसने द्वितीय साम्राज्यसे उसकी ध्वंसराशिको नहीं, बल्कि उसके मजदूर-वर्गके प्रति भयको दायभागमें पाया है।

इस प्रकार फ्रेंच मजदूर-वर्ग अत्यन्त कठिन स्थितिमें है। शत्रुके दरवाजो पर होनेके समय नई सरकारको उखाड़ फेंकना दुस्साहसपूर्ण मूर्खता होगी। फ्रेंच कमकरोंको अपने नागरिकताके कर्त्तव्य पालन करने होंगे, लेकिन उन्हें १७९२ ई० की राष्ट्रीय स्मृतियोंको अपनेपर काबू नहीं करने देना चाहिये, धोखा नहीं खाना चाहिये, जैसा कि फ्रेंच किसानोंने प्रथम साम्राज्यकी राष्ट्रीय स्मृतियोंमें धोखा खाया था। उन्हें अतीतको दोहराना नहीं, बल्कि भविष्यका निर्माण करना है। उन्हें धैर्य और दृढ़तापूर्वक गणराज्यने जो स्वतन्त्रता प्रदान की है, उसके साधनोंको अपने वर्गको अच्छी तरह संगठन करनेमें लगाना चाहिये। उन्हे फ्रांसके पुनरुद्धार और हमारे संयुक्तकरणीय—सर्वहाराकी मुक्ति—के लिये भीम जैसी शक्ति प्रदान करना होगा। गणराज्यका भाग्य उनकी शक्ति और बुद्धिपर निर्भर करता है।

इस अभिभाषणने फ्रेंच कमकरोंमें एक नया जोश पैदा किया। उन्होंने अस्थायी सरकारके विरुद्ध संघर्ष करनेका ख्याल छोड़ अपने नागरिकके कर्त्तव्य पालन किये विशेषकर राष्ट्रीय गारदके रूपमें संगठित पेरिसके सर्वहारोंने फ्रेंच राजधानीकी वीरतापूर्ण प्रतिरक्षाके लिए मुख्य तौरसे भाग लिया। १७९२ ई० की राष्ट्रीय स्मृतियोंसे उन्होने अपनेको अन्धा नहीं होने दिया और वर्गके तौरपर बड़ी तत्परतासे अपना संगठन किया। जर्मन कमकरोंने भी अपने करणीयको

पूरा करनेमें कम योग्यताका परिचय नहीं दिया। दमन और जबर्दस्त खतरेकी पर्वाह न करके लाजेली और आइजेनाख दोनों कमकर-समूहोंने फ्रेंच गणराज्यसे सम्मानपूर्ण सन्धि करनेकी माँग की, जब दिसम्बरमें उत्तर-जर्मन-पार्लियामेन्ट फिर युद्धके नये खर्चपर वोट देनेके लिये इकट्ठा हुई, तो दोनों समूहोंके प्रतिनिधियोंने अपना वोट खिलाफ दिया। लीबक्नेख्ट और वेबेलने विशेष तौरसे बड़ी निर्भयताका परिचय दिया, जिसके कारण पार्लियामेन्टके सत्रके खतम होनेपर दोनोंको भारी देशद्रोहके मुकदमेमें फँसा दिया गया।

उस सालके जाड़ोंमें मार्क्सके ऊपर फिर कामोंकी भीड़ थी। अगस्तमें डाक्टरोंने उन्हें समुद्रके किनारे भिजवाया था, लेकिन वहाँ उन्हें जबर्दस्त कामका सामना करके चारपाईपर पड़ा रहना पड़ा। उस महीनेके अन्तमें जब लन्दन लौटे, तो उनके स्वास्थ्यमें बहुत सुधार नहीं हुआ था। जेनरल-कौंसिलके अधिकांश लोग पैरिस चले गये थे, इसलिए उसकी अन्तर्राष्ट्रीय लिखा-पढ़ीकी सारी जिम्मेवारी मार्क्सने अपने ऊपर ले ली थी। १४ सितम्बरके अपने पत्रमें उन्होंने कूगेलमानको लिखा था, कि ३ बजे सबेरेसे पहले मुझे चारपाईपर जानेका मौका नहीं मिलता, लेकिन साथ ही यह आशा प्रकट की थी कि एंगेल्स लंदनमें बसनेके लिए आ रहे हैं, इसलिये मुझे कुछ आराम मिलेगा। इसमें सन्देह नहीं कि मार्क्स आशा रखते थे कि फ्रेंच गणराज्य प्रशियाकी विजयके युद्धके साथ सफलतापूर्वक प्रतिरोध कर सकेगी। १३ दिसम्बरको मार्क्सने कूगेलमानको लिखा था: "जान पड़ता है जर्मनीने केवल बोनापार्त, उसके जेनरलों और उसकी सेनाको ही नहीं बल्कि उसके साथ सारी साम्राज्यवादी व्यवस्थाको भी निगल लिया, जो कि राइनके वृत्तोंवाले देशके हरेक गाँवों और गढ़ोंमें घर कर रही है।" प्रशियन विजेता जिस तरहका कठोर बर्ताव पराजित फ्रेंच लोगोंके साथ कर रहे थे, उससे बड़ा क्षोभ हो रहा था। यह ठीक है कि अँग्रेजोंने यही काम भारत, जमैका आदिमें किया है, लेकिन फ्रेंच हिन्दू, चीनी या निग्रो (हब्शी) नहीं है और न प्रशियन भगवान्‌के भेजे अँग्रेज। यह होहेनजुलेर्न वंशका विचित्र विचार है, कि अपनी स्थायी सेनाके हारकर छिन्न-भिन्न हो जानेपर जो लोग अपनी प्रतिरक्षाका प्रयत्न जारी रखते हैं, वह अपराधी

हैं।" फ्रेडरिक विलियमको भी यही विचार प्रथम नेपोलियनके युद्धमें सता रहे थे।

बिस्मार्कने पेरिसपर बमबारी करनेकी धमकी दी थी, जिसे मार्क्सने झूठी चाल बतलाई: "सम्भवताके सभी कानूनोंके अनुसार इस तरहकी कार्रवाई पेरिसका बहुत ज्यादा बिगाड नहीं कर सकती। मान लो कुछ बाहरके मोर्चे उड़ा दिये गये, कुछ जगहोंपर प्रतिरक्षाकी पंक्ति टूट गई, तो इससे कितना फायदा होगा, जब कि हम जानते हैं कि घिरे हुये लोगोंकी संख्या घेरनेवालोंसे कहीं अधिक है! पैरिसको पराजित करनेके लिए एक ही वास्तविक उपाय है और वह है उसे भूखे मारना।" मार्क्स कोई सैनिक विशेषज्ञ नहीं थे, लेकिन पैरिसकी बमबारीके बारेमें जो बात उन्होंने कही थी, वही सलाह रून* छोड़कर बिस्मार्कके सभी प्रधान जेनरलोंने दी थी। जब बिस्मार्कने बहुत उदारताका नाट्य करते हुये कहा कि फ्रेंच सरकार प्रेस और पार्लियामेन्टमें विचारोंको स्वतन्त्रतापूर्वक प्रकट करनेमें बाधा डाल रही है, तो मार्क्सने १६ जनवरी १८७१ के "डेली न्यूज" में इसे "बर्लिनका व्यंग" कहते हुये बतलाया था, कि पुलिस-राज्य द्वारा गला घुटते जर्मनीसे यह आवाज निकल रही है: "फ्रांस—और सौभाग्यसे उसकी सारी ही आशायें अपने लिए खतम नहीं हो चुकी हैं—इस समय केवल अपनी ही राष्ट्रीय स्वतन्त्रताके लिये नहीं, बल्कि जर्मनी और युरोपकी स्वतन्त्रताके लिये लड़ रहा है।" सेदाँकी पराजयके बाद अब इस लड़ाईके बारेमें मार्क्स और एंगेल्सका क्या रुख था, यह ऊपरके वाक्यसे मालूम होगा।

२. फ्राँसमें गृह-युद्ध

२८ जनवरी १८७१ को पैरिसने आत्मसमर्पण किया। बिस्मार्क और जूले फाब्रेने† मिलकर आत्मसमर्पणकी शर्तोंके बारेमें जो समझौता तैयार किया था, उसमें यह साफ तौरसे मंजूर कर लिया गया था, कि पैरिसके राष्ट्रीय गारदको अपने हथियार रखनेका अधिकार होगा। राष्ट्रीय एसेम्बलीका जो निर्वाचन हुआ, उसमें राजवादी-प्रतिगामियोंका बहुमत था। उसने पुराने षड्यंत्री थियेर‡

* Roon, † Gules Favre. ‡ Thiers.

को गणराज्यका राष्ट्रपति चुना। अल्सेस और लोरेनको हाथसे देने और पाँच मिलियार्डन (अरब) फ्रांक क्षतिपूर्ति स्वीकार करनेके बाद राष्ट्रीय एसेम्बलीने पैरिसको निःशस्त्र करनेका निश्चय किया, क्योंकि बूर्ज्वा थियेर और प्रतिक्रियावादी जमींदार हथियारबद्ध पैरिसको क्रांतिसे कम भयङ्कर नहीं समझते थे। १८ मार्चको थियेरने राज्यकी सम्पत्तिका बहाना करके राष्ट्रीय गारदकी तोपोंको जब्त करना चाहा, यद्यपि उन्हें राष्ट्रीय गारदने घिरावेके समय अपने खर्चपर ढाला था और २८ जनवरीको उन्हें राष्ट्रीय गारदकी सम्पत्ति स्वीकार किया गया था। बनिये थियेरके प्रयत्नको गारद स्वीकार करनेके लिए तैयार नहीं हुआ, उसके खिलाफ जो सेना भेजी गई, वह बिगड़कर जनताकी ओर हो गई, और इस प्रकार गृह-युद्ध आरम्भ हो गया।

३. कम्यूनकी स्थापना

पैरिस अब दो दलोंमें विभक्त हो गई : एक ओर थियेरकी सरकार हथियार चमकाने लगी, जिसकी पीठपर जर्मन विजेता थे, और दूसरी ओर पैरिसकी साधारण जनता थी, जिसने २६ मार्च (१८७१ ई०) को कम्यूनके नामसे अपनी सरकार स्थापित की। कम्यूनके अधीन पैरिसके कमकरोंने अद्भुत साहस और बलिदानका परिचय दिया, जब कि थियेरके वेरसाई दलने कानून और व्यवस्थाके नामपर कायरतापूर्ण पाशविकता दिखलानेमें हद कर दी।

मार्क्सने १२ अप्रेलको कूगेलमानको लिखा था : "कैसा पक्का और जबर्दस्त उत्साह, कैसी ऐतिहासिक आत्मप्रेरणा और कैसा आत्मत्याग ये पैरिसवाले दिखला रहे हैं। छ महीनेकी भुखमरी और ध्वंसके बाद—जिसको लानेमें प्रकट शत्रुकी अपेक्षा भीतरी विश्वासघातियोंका हाथ ज्यादा रहा—वह विद्रोहके लिए उठ खड़े हुये, मानो फ्रांस और जर्मनीके बीच कोई लड़ाई ही नहीं हुई है, मानो प्रशियाकी संगीनें अस्तित्व नहीं रखतीं, मानो शत्रु पैरिसके फाटकोंपर मौजूद नहीं है। इतिहासमें इतने भव्य रूपका कोई उदाहरण नहीं मिलता। अगर पैरिसवाले पराजित होंगे, तो अपनी 'भलमनसाहत' के कारण ही। जब सेना और राष्ट्रीय गारदके प्रतिक्रियावादी अंश मैदान छोड़कर हट गये,

तो उन्हें तुरन्त वेरसाईके ऊपर कूच करना चाहिये था, लेकिन उनकी सदाशयताकी भावनाने उन्हें गृह-युद्ध छेड़ने नहीं दिया। मानो पैरिसको निहत्था करनेका प्रयत्न करके थियेरने वैसी कोशिश नहीं की। चाहे पैरिसवाले विद्रोहमें पराजित भी हों, तो भी जूनके विद्रोहके बादसे हमारी पार्टीका अत्यन्त यशस्वी काम यही होगा।" तुलना करो इन स्वर्गपर आक्रमण करनेवाले तीनोंकी प्रशिया-जर्मन पवित्र-रोमन-साम्राज्यके भक्त दासोंसे।

मार्क्सने यहाँपर पैरिस कम्यूनको "अपनी पार्टी" का काम बतलाया है। उनका यह कहना अयुक्त नहीं था, क्योंकि कम्यूनका मेरुदण्ड पैरिसका मजदूर-वर्ग था, विशेषकर इन्टर्नेशनलके पैरिसके सदस्य कम्यूनके सबसे निर्भय और योग्य योद्धा थे, यद्यपि कौंसिलमें वह अल्पमतमें थे। बूर्ज्वाजी उस समय इंटर्नेशनलके नामसे चिढ़ती थी, और युरोपके सभी देशोमे सभी गड़बड़ियो और संघर्षोंका कारण उसे मानती थी। पैरिसके पुलिसके अखबारने १६ मार्चको एक पत्र छापकर यह दिखलानेकी कोशिश की, कि इंटर्नेशनलको कम्यूनका श्रेय नहीं देना चाहिये, जिसपर मार्क्सने "टाइम्स" मे पत्र छपवाकर कहा कि वह उक्त पत्र झूठी जालसाजीका नतीजा है। मार्क्स जानते थे कि इटर्नेशनलने कम्यूनको नहीं बनाया, लेकिन उसके आरम्भसे ही इटर्नेशनल उसका अभिन्न अंग हो गया था। कम्यूनकी कौंसिलमें ब्लाकेके अनुयायियोका बहुमत था। उसके बाद अल्पमत यद्यपि इन्टर्नेशनलसे संबध रखता था, लेकिन उसके विचार अधिकतर प्रूधोंके थे, इस प्रकार दोनों ही पक्ष मार्क्सके समर्थक नहीं थे। कम्यूनके कालमें मार्क्सने उसके अल्पमतके साथ संबंध कायम रखनेकी कोशिश की। मार्क्सके पत्रके जवाबमें (जो कि लोक-कार्य-विभागके एक प्रतिनिधि ल्यूफ्राकेलके पास सुरक्षित रहा) २५ अप्रैलको लिखा गया : "मुझे बडी खुशी होगी, यदि आप यथासम्भव मुझे अपनी सलाहसे सहायता करें, क्योंकि इस समय लोक-कार्य-विभागमें जो भी सुधार मैं करना चाहूँ, उसके लिए मैं पूरी तौरसे जिम्मेवार हूँ। तुम्हारे पिछले पत्रकी एक या दो पंक्तियाँ इस बातको बतलानेके लिए काफी थीं, कि तुम सभी लोगों और सभी कमकरों, खासकर जर्मन कमकरोंको यह समझानेके लिए हर सम्भव तरीकेसे प्रयत्न

करोगे कि पैरिस कम्यूनकी बांबा आदमके जमानेवाली जर्मन-कम्यूनसे कोई समानता नहीं है। जो भी हो, इसके बारेमें हमारे उद्देश्यके लिये आप अच्छी सेवा करेंगे।" मार्क्सने इस पत्रका क्या जवाब, क्या सलाह दी थी, इसका पता नहीं। फ्रैंकल और वर्लिन द्वारा भेजा गया दूसरा पत्र भी खो गया, लेकिन उसके जवाबमें १३ मईको मार्क्सने जो लिखा था, उसके कुछ अंश निम्न प्रकार हैं: "पत्रवाहकसे मैंने बात की है। क्या यह अच्छा विचार नहीं होगा, कि वेरसाइके लुच्चे* के लिए ऐसे विश्वासघाती कागजोंको एक सुरक्षित स्थानमें रख दिया जाय? इस तरहकी सावधानीकी कार्रवाईसे कोई हानि नहीं हो सकती। बोर्दोसे एक पत्र मुझे मिला है, जिससे मालूम होता है, कि पिछले म्युनिसिपल चुनावमें इंटर्नेशनलके चार मेम्बर विजयी हुए। अब मुफस्सिलमें भी घटनायें घटने लगी हैं, यद्यपि दुर्भाग्यसे उनका प्रभाव स्थानीय तथा शान्तिपूर्ण है। हमने दुनियाके सभी कोनोंमें जहाँपर भी हमारे संबंध हैं—कितने ही सौ पत्र आपके बारेमें लिखे हैं। अस्तु, आरम्भसे ही मजूर-वर्ग कम्यूनके पक्षमें है। अँग्रेज बूर्ज्वा अखबार भी प्रारम्भिक शत्रुताके भावको अब छोड़ चुके हैं। समय-समय-पर उनके कालमोंमें एकाध अनुकूल लेख घुसेड़नेमें मैं सफल हुआ हूँ। मुझे जान पड़ता है, कि कम्यून महत्त्वहीन विवरणों और वैयक्तिक झगड़ोंमें अपना बहुत सा समय बरबाद कर रही है। यह स्पष्ट है कि उसमें सर्वहाराके अतिरिक्त दूसरोंके प्रभाव भी काम कर रहे हैं। लेकिन इससे कोई हर्ज नहीं, यदि अंतिम समयमें तुम अपनेको ठीकठाक कर सको।" अन्तमें मार्क्सने इस जल्दी कार्रवाई करनेकी आवश्यकतापर यह कहते जोर दिया, कि तीन दिन पहले फ्रांकफोर्त (माइन तटीय) में जर्मनी और फ्रांसके बीच सन्धि हो चुकी है। कम्यूनको दबा देनेके लिए अब बिस्मार्क भी थियेरकी तरह ही उत्सुक है, विशेषकर इस ख्यालसे कि संधिपर हस्ताक्षर होनेके साथ ही युद्धकी क्षतिपूर्तिकी अदायगीका काम शुरू हो जायगा। मार्क्सने कम्यूनके पास अपने सलाह-मशौरेके पत्रों द्वारा दिये, लेकिन कम्यूनके भीतर सीधे भाग लेनेकी इच्छा नहीं प्रकट की, जैसा कि उन्होंने पीछे कम्यूनकी असफलताके बाद किया। कम्यूनकी जिम्मेवारी उन्होंने

* Canaille.

अपने ऊपर ली, लेकिन वह चाहते थे कि स्वयं जा वहाँ अधिनायक बननेका ख्याल छोड़ स्थानीय लोगोंको सब काम अपनी इच्छा अनुसार करने देना चाहिये।

२८ मईको कम्यूनके अन्तिम योद्धा मैदानमे गिरे। मार्क्स कम्यूनकी रोज-रोजके जीवनको कितनी बारीकीसे देख रहे थे, यह इसीसे मालूम होगा, कि उसके दो दिन बाद उन्होने जेनरल-कौंसिलके सामने "फ्रासमें गृह-युद्ध" के नामसे एक अभिभाषण पेश किया। यह मार्क्सकी लेखनीसे निकली अत्यन्त चमत्कारिक कृतियोंमे से है, और आज तक कम्यूनके बारेमे जितनी जिल्दें निकली हैं, उसके भीतर यह हीरेकी तरह चमकता है। जंगलके बीचसे अपने पथको ढूँढ़ निकालना, कूड़े-करकटके बीचसे वास्तविक तत्वको चुनना मार्क्सका ही काम था। अभिभाषणके दो, चौथे और अन्तिम अनुच्छेदमे पहिले घटना-क्रमका वर्णन किया गया है, उसमें उन सच्चाइयोंका प्रकाश किया गया है, जिसके एक वाक्यका भी पीछे कभी खंडन नहीं हुआ। पैरिस कम्यूनको मार्क्स मानव-इतिहासकी अद्वितीय घटना मानते थे। इतिहासमे यही पहली बार सर्व-हारोने एक बड़े नगरके शासनको हाथमें लेकर अपनी सूझ और साधनोके अनुसार भीषण शत्रुओसे लडते हुये राज्य चलानेकी कोशिश की थी। २६ मार्चसे २८ मई तक अद्भुत वीरता और निःस्वार्थताके साथ इस ऐतिहासिक और महान् शासन तजर्बेको उन्होने कर दिखाया था। भविष्यमें सर्वहाराके स्थायी शासन दुनियाके बड़े-बड़े देशोंमें कायम होंगे। एक समय सारे विश्वमें वर्गहीन समाज स्थापित करके सर्वहारा अपना शासन स्थापित करेंगे, लेकिन यही हमेशा कहना पड़ेगा, कि दो महीनेके पैरिस कम्यूनका शासन इतिहासकी इस प्रकारकी पहली घटना है। अपने इस निबन्ध द्वारा मार्क्सका काम कम्यूनके विस्तृत इतिहास लिखनेका नहीं था। वह अपनी लेखनी द्वारा कम्यूनके सम्मानकी प्रतिरक्षा करना चाहते थे, जिसे कि शत्रु कलंकित करनेका प्रयत्न करते थे। इसे खडनात्मक रूपमें कम्यूनके वकीलके तौरपर मार्क्सने लिखा था। "प्रत्येक क्रान्तिमें क्रान्तिके वास्तविक प्रतिनिधियोंसे बिल्कुल भिन्न आचरणवाले लोग अपनेको दूसरोंकी पंक्तिमें घुसेड देते हैं। इनमेंसे कुछ पहिलेकी क्रातियोंके

अवशेष हैं, जिनके साथ उनका पूरा गठबंधन है। ऐसे लोग वर्तमान क्रांतिको समझनेमें असमर्थ हैं, लेकिन अपनी प्रसिद्ध हिम्मत और उच्च चरित्रबल या शायद केवल परंपराके कारण साधारण जनतापर उनका अब भी काफी प्रभाव है। दूसरे ऐसे लोग भी होते हैं, जो कि केवल हल्ला-गुल्ला करनेवाले हैं, जो विद्यमान सरकारके विरुद्ध वर्षों उसी तरहकी बकवास दोहराते रहते हैं। इस प्रकार झूठे ढोंगोंसे उन्हें प्रथम श्रेणीके क्रांतिकारी होनेकी ख्याति मिल जाती है। १८ मार्चके बाद ऐसे लोग भी वहाँ प्रकट हुये, कितनी ही बार इन्होंने प्रधान पार्ट भी अदा किया। जहाँ तक उनसे हो सका, उन्होंने उसी तरह मजूर-वर्गकी वास्तविक कार्रवाईमें बाधा डाली, जैसा कि पहलेकी सारी क्रांतियोंके पूरे विकासमें डाला था।" मार्क्सने बतलाया कि ये लोग अनिवार्यतया आ मौजूद होनेवाली बुराइयाँ थीं। अगर समय मिला होता, तो ऐसे लोगोंसे कम्यूनने छुट्टी ले ली होती, लेकिन उसे तो केवल दो महीनेका समय मिला था।

अभिभाषणके तीसरे अनुच्छेदमें कम्यूनके ऐतिहासिक रूपकी विवेचना की गई थी, जिसका खास महत्त्व है। मार्क्सने सूक्ष्मदर्शिताके साथ कम्यून और उस जैसी मालूम होनेवाली दूसरी ऐतिहासिक संस्थाओंके बारेमें मध्ययुगीन कम्यूनसे प्रशियाकी पौर (म्युनिसिपल) व्यवस्थाके भेदको बतलाया: "केवल एक बिस्मार्क...केवल (उसके जैसे) मनोभाव पैरिस कम्यूनको १७९१ ई० के पुराने फ्रेंच म्युनिसिपल संविधानके अनुकरण करनेकी चाह रखनेका श्रेय देनेकी बात कह सकते हैं। प्रशियन पौर म्युनिसिपल-व्यवस्थाने अपने पौर शासन-प्रबन्धमें केवल प्रशियन राज्य-मशीनका एक मामूली सा पुर्जा बननेका रूप लिया था।" मार्क्सने बतलाया कि यह कम्यून वस्तुतः एक राजनीतिक ढाँचा था, जो कि आसानीसे अपनेको बढ़ा सकता था, जब कि सभी शासनके ढाँचे केवल मुख्यतः दमनकारी रूप रखते थे: "इसका वास्तविक रहस्य यह था, कि वह सारतः मजूर-वर्गकी सरकार थी और उत्पादक और हड़पक वर्गोंके बीचके संघर्षसे पैदा हुई थी। यह अन्तिम राजनीतिक ढाँचा आविष्कृत हुआ था, जिसके अधीन श्रमकी आर्थिक मुक्ति हो सकती थी।

यद्यपि कम्यूनके प्रोग्राम और कार्रवाइयाँ विस्तारपूर्वक नहीं तैयार हुई थीं, लेकिन उसने अपने दो महीनेके जीवनमें व्यवहारतः राज्य-संचालनके लिये जो कुछ किया था, उसके आधारपर मार्क्सने बतलाया, कि कम्यूनने ऐसी नीतिका अनुसरण किया, जिसका एक मुख्य उद्देश्य राज्यका ध्वंस था—राज्य अपने अत्यन्त भ्रष्टाचारपूर्ण (द्वितीय साम्राज्यके) रूपमें समाजके शरीरपर एक "जोंकसी वृद्धि" से अधिक कुछ नहीं था, जो कि समाजकी शक्तिको चूसकर उसके स्वतन्त्र विकासमें बाधा डाल रहा था। कम्यूनकी पहली डिग्री (घोषणा) द्वारा स्थायी सेनाको हटाकर उसकी जगह हथियारबन्द जनताको स्थापित किया गया। कम्यूनने अब तक सरकारकी केवल हथियार बनी पुलिस-शक्तिको सभी राजनीतिक अधिकारोंसे बंचित करके उसे कम्यूनके लिये जवाबदेह औजारके रूपमें परिणत कर दिया। पुरानी सरकारके भौतिक हथियार-स्वरूप स्थायी सेना और पुलिसको खतम करनेके बाद कम्यून उसके दमनके आध्यात्मिक हथियार-पादरियोंकी शक्तिको तोड़ने चली। उसने अपनी घोषणा द्वारा सम्पत्तिके मालिकके तौरपर सभी चर्चोंको खतम कर उनकी सम्पत्ति छीन ली। उसने सभी शिक्षा-संस्थाओंको जनताके लिये निःशुल्क खोल दिया, और राज्य तथा चर्चकी ओरसे ऐसी संस्थाओंमें होनेवाली सारी बाधाओंसे हटा दिया। अन्तमें कम्यूनने पुरानी नौकरशाहीको जड-मूलसे खतम कर दिया, जब कि उसने जजों (न्यायाधीशों) सहित सभी सरकारी अफसरोंको निर्वाचित तथा किसी समय भी बर्खास्त कर देनेका नियम बना राज्यके नौकरोंका सर्वाधिक वेतन छ हजार फ्रांक (वार्षिक) निश्चित कर दिया। कम्युनिस्ट-घोषणापत्रमें मार्क्सने यद्यपि सर्वहारा-क्रान्ति द्वारा बूर्ज्वा-राज्यकी राजनीतिक संस्थाओं और शासन-यंत्रके खतम करनेकी बात उठा देनेकी बात लिखी थी, लेकिन वहाँ उन्होंने इसे धीरे-धीरे होनेकी बात कही थी। पैरिस कम्यूनके तजर्बेने बतला दिया कि क्रान्तिकी सफलताके लिये पुराने शासन-यन्त्रका—पुरानी नौकरशाहीका—तुरन्त खातमा बहुत जरूरी है। क्रान्तिकी बात तो छोड़िये, हमारे भारत जैसे देशमें कुछ अधिक सुधार करनेमें भी अंग्रेजोंके समयसे चली आती नौकरशाही आज सबसे जबर्दस्त बाधा दीख पड़ रही है। क्रान्तिके लिये इस शासन-यंत्रका तुरन्त उखाड फेंकना जरूरी है. यही

समझकर जून १८७२ में कम्युनिस्ट-घोषणापत्रके नये संस्करणके प्राक्कथनमें मार्क्स और एंगेल्सको अपनी पुरानी राय बदलनी पड़ी और कहना पड़ा कि विजयी कमकर राजशक्ति पर अधिकार करके पहले ही से तैयार राज्य-यन्त्रका अपने उद्देश्यके लिये इस्तेमाल नहीं कर सकते। इस बातको जारकी नौकरशाही-को हटाकर सोवियतों (जन-निर्वाचित पंचायतों) के रूपमें नये शासन-यंत्रको स्थापित करके रूसी-क्रान्तिने सफलता पाई, इसे आज सभी जानते हैं।

अपने अभिभाषणका उपसंहार करते हुये मार्क्सने लिखा था: "कमकरों और उनके कम्यूनकी पेरिस हमेशा नये समाजके यशस्वी सन्देशवाहकके तौर-पर सदा याद की जायगी। उसके शहीद मजदूर-वर्गके विशाल हृदयमें प्रतिष्ठा-पित रहेंगे। उसके ध्वंसकर्ता अभी ही इतिहास द्वारा घृणास्पद साबित हो गये हैं। वह ऐसे अभिशापसे अभिशप्त हैं, जिस अभिशापसे उनके पादरियों और पुरोहितोंकी प्रार्थनायें उन्हें मुक्त नहीं कर सकतीं।" अभिभाषणका प्रभाव तुरन्त देखा गया, जब कि चारों ओरसे मार्क्सपर बागबाणकी वर्षा होने लगी। मार्क्सने कूगलमानको इसके बारेमें लिखा था: "इस (अभिभाषण) ने शैतानके कूल्हे-पर ठोकर मारी है। इस क्षण लन्दनमें सबसे अधिक गाली खानेवाले और धमकाये जानेवाला आदमी होनेका सम्मान मुझे प्राप्त है। यह मेरे लिये अच्छा है, बीस सालके लम्बे और ऊबा देनेवाले दलदलमें रहनेवाले मेंढक जैसे बेकारसे एकान्तवासके बाद इसने मेरे लिये अच्छा किया। सरकारी पत्र "ऑब्जर्वर" मुझपर मुकदमा चलानेकी धमकी तक दे रहा है। आवें वह यह भी कोशिश करके देख लें।" जैसे ही यह बवंडर शान्त हुआ, मार्क्सने घोषित किया कि अभिभाषणका लेखक मैं हूँ। आगे चलकर मार्क्सके ऊपर आक्षेप किया गया, कि उन्होंने कम्यूनकी सारी जिम्मेवारी लेकर इन्टर्नेशनलको खतरेमें डाल दिया, लेकिन मार्क्स कम्यूनको इन्टर्नेशनलसे अलग करके देख नहीं सकते थे, और न वह इतिहासको झुठलाना चाहते थे।

४. इन्टर्नेशनल और पेरिस कम्यून

पेरिस कम्यूनके बाद इन्टर्नेशनलके शत्रुओंकी संख्या और बढ़ गई। दुनियामें चारों ओरके प्रतिक्रियावादी उसे खुलकर गालियाँ देने लगे, जिसका

एक यह फायदा जरूर हुआ, कि उसके कारण इंगलैंडके अखबारोंमे जेनरल-कौंसिलको जवाब देनेका मौका मिला, जो घाटेका सौदा नहीं था। इन्टर्नेशनलके लिये एक बडी समस्या और उठ खडी हुई थी, कम्यूनके नष्ट कर दिये जानेपर उसके लिये काम करनेवाले बहुसंख्यक लोग वेल्जियम, स्वीजलैंड विशेषकर लन्दनमें भाग गये। इन्टर्नेशनलके पास पैसेकी शक्ति नहीं थी और इन शरणार्थियोंको सहायता करनेके लिये पैसे जमा करनेके वास्ते बहुत मेहनत करनी पडती थी। कई महीनो तक उसका सारा प्रयत्न इसी ओर लगा रहा। अब सरकारोंने भी इन्टर्नेशनलको खतम करनेका बीडा उठाया। युरोपके सभी देशोंमें उसके खिलाफ सरगर्मीसे काम होने लगा। कोशिश यह भी की गई, कि सभी देशोंकी सरकारें मिलकर एक साथ हमला कर दें, और वर्ग-चेतना रखनेवाले सर्वहारोंको दबा दें, लेकिन आपसके विरोधी स्वार्थोंके कारण सभी सरकारें एकताबद्ध नहीं हो सकीं। ७ जून १८७१ को फ्रेंच सरकारकी ओरसे जूले फाव्रेने दूसरी सरकारोंके पास परिपत्र भेजा था, लेकिन बिस्मार्क तकने भी उसकी ओर कोई ध्यान देनेकी आवश्यकता नहीं समझी, यद्यपि वह जानता था कि जर्मन समाजवादी जनतांत्रिकताके लाजेलीय और आइजेनाख दोनो दल कम्यूनके समर्थक थे। कुछ समय बाद स्पेनकी सरकारने भी इसके लिये सरगर्मी दिखलाई, और उसके विदेश-मन्त्रीने सभी सरकारोंके पास परिपत्र भेज कर कहा: "यह काफी नहीं है कि सरकारें अलग-अलग इन्टर्नेशनलके विरुद्ध आवश्यक कडे उपाय काममें लायें, और अपने-अपने देशोंमें उसके विभागोंके खिलाफ कडा कदम उठायें। सभी सरकारोंको एकताबद्ध हो इस पापको खतम करनेके लिए एकताबद्ध होना चाहिये। शायद इसका कुछ प्रभाव पडता, लेकिन अंग्रेज सरकारने इसका उत्तर बड़े उपेक्षापूर्वक दिया और लार्ड ग्रेनविलने कहा: "इस देशमें इन्टर्नेशनलने अपने कामोंको मुख्यत: हडतालोंमें सलाह देने तक सीमित रक्खा है, और ऐसी कार्रवाईको समर्थन करनेके लिये उसके पास बहुत ही सीमित फण्ड है। इन्टर्नेशनलकी क्रान्तिकारी योजनायें केवल उसके विदेशी मेम्बरोंकी राय हैं। ब्रिटिश कमकरोंसे उसका कोई सम्बन्ध नहीं है, जिनका कि ध्यान मुख्यत: मजूरीके सम्बन्धमें रहता है। विदेशी इंगलैंडमें देशके कानूनकी दृष्टिसे

वही अधिकार रखते हैं, जो कि ब्रिटिश प्रजाजन, इसलिये उनके खिलाफ़ बिना दूसरे कारणोंके कोई कार्रवाई नहीं की जा सकती।"

यद्यपि शत्रुओंने मिलकर इन्टर्नेशनलके विरुद्ध धर्मयुद्ध छेड़नेका मौका नहीं पाया, लेकिन यूरोपके भिन्न-भिन्न देशोंमें उसकी शाखाओंको दमनका सामना करना पड़ा था। इस दमनसे भी ज़्यादा इन्टर्नेशनलके लिये बुरी बात हुई कि इंगलैंड, फ्रांस और जर्मनीके जिस मजदूर-वर्गपर उसका बहुत ज्यादा भरोसा और अभिमान था, उसमें अब शिथिलता पैदा होने लगी थी। फ्रांसमें थियेर और फाब्रेकी राजवादी-प्रतिगामी राष्ट्रीय एसेम्बलीने इन्टर्नेशनलके विरुद्ध जबर्दस्त कानून पास किया, जिसने फ्रेंच मजदूर-वर्गको लुंज बना दिया, यह इस कारण भी कि इससे पहले ही खूनकी होली खेलकर उसे दबाया जा चुका था इन कसाइयोंने इतने हीसे सन्तोष नहीं किया, बल्कि स्वीजलैंड और इंगलैंडकी सरकारोंसे वहाँ भागकर शरण लेनेवाले कम्यूनियोंको लौटानेकी माँग की। इसके बाद इन्टर्नेशनलके जेनरल-कौंसिलका सम्बन्ध फ्रेंच कमकरोंसे टूट गया। उसने उनके प्रतिनिधिके तौरपर कम्यूनमें भाग लेनेवाले इन्टर्नेशनलके पुराने मेम्बरों तथा कुछ नये व्यक्तियोंको भी ले लिया। लेकिन, यद्यपि इसका उद्देश्य था कम्यूनको सम्मानित करना, लेकिन इसके कारण आपसमें जो संघर्ष उठ खड़ा हुआ, उसके कारण इन्टर्नेशनलको बहुत नुकसान पहुँचा। नवम्बर १८७१ तक फ्रेंच शरणार्थियोंके इस तू-तू मैं-मैंसे परेशान होकर मार्क्सको लिखना पड़ा : "उनके पक्षमें अपने करीब पाँच महीनोंको खर्च करने और अभिभाषणमें उनके सम्मानके लिये लड़नेका मुझे यह पारितोषिक मिल रहा है।"

एक तरफ़ फ्रेंच शरणार्थियोंकी यह दशा थी, दूसरी तरफ अँग्रेज कमकरोंने भी इन्टर्नेशनलसे अपना हाथ खींच लिया। लुक्राफ्ट, ओडगेर जैसे जेनरल कौंसिलके प्रमुख मेम्बरोंने मार्क्सके फ्रांसमें गृह-युद्धवाले अभिभाषणके कारण कौंसिलसे इस्तीफा दे दिया। अब अँग्रेज मजूर-सभाओंका लक्ष्य था पूँजीवादी समाजके आधारपर मजूरोंकी हालतमें सुधार करना, जिसके लिये वह कोई उग्र क्रान्तिकारी संघर्ष करनेके लिये तैयार नहीं थे। इंगलैंडका मजूर-वर्ग इन्टर्नेशनलकी सहायता तब तक ही चाहता था, जब तक कि उसके दबाव से सुधार-

बिल पास हो जाये। जब सुधार-बिल पास हो गया, तो मजूर-नेताओंने पार्लिया-मेन्टमें अपने लिये जगह बनानेके लिये उदार-दलियोंकी खुशामद करनी शुरू की। इंगलैंडके मजूर-वर्गके इन्टर्नेशनलसे अलग हो जानेपर मार्क्सने साफ तौरसे कह दिया था, कि इन्होंने उदार-मंत्रालयके हाथमें अपनेको बेच दिया। १८७०-७१ ई० में इंगलैंडकी मजूर-सभाओं और मजूर-वर्गके अधिकाश भाग तथा उनके सभी नेताओंने जो रास्ता अख्तियार किया, तो "वही रफ्तार बेढगी जो पहले थी सो अब भी है।" मजूर-सभाओंके नेता १८७१ ई० में ही कहने लगे थे—जैसा कि उनमेंसे एकने रायल-कमीशनके सामने गवाही देते हुये कहा था—कि हड़तालें कमकरों और उनके मालिकों दोनोंके पैसे और शक्तिकी केवल मूर्खतापूर्ण बरबादी है। इंगलैंडके जिन कमकर संगठनोंने अब भी इन्टर्नेशनलके साथ अपना सम्बन्ध बनाये रक्खा था, उन्होंने भी मॉग की, कि हमारे लिये एक खास फेडरल कौंसिल कायम की जाये। मार्क्सको अन्तमें इसे मानना पड़ा। पेरिस कम्यूनके पतनके बाद नई क्रान्तिकी सम्भावना दूर हो गई थी, इसलिये मार्क्स अब जेनरल-कौंसिलके प्रति उतनी लगन नहीं दिखला सकते थे। फेडरल कौंसिलकी स्थापनाके बाद, जहॉ तक इंगलैंडका सम्बन्ध था, इन्टर्नेशनल का बाकी बचा असर भी खतम होने लगा। उधर बकुनिन् भी अपनी नेताशाही कायम करनेके लिये चालें चल रहा था।

अध्याय १८

इन्टर्नेशनलकी अवनति

१. अवसाद

१८६९ ई० में बाजेलकी कांग्रेसने पेरिसमें इन्टर्नेशनलकी दूसरी कांग्रेस बुलानेका निश्चय किया था, लेकिन वहाँकी राजनीतिक स्थिति ऐसी नहीं थी, कि पेरिसमें कांग्रेस की जाती, इसलिये जुलाई १८७० ई० में जेनरल-कौंसिलने मयेन्स* में कांग्रेसका अधिवेशन करनेका निश्चय किया। प्रशिया और फ्रांसकी लड़ाईने मयेन्समें भी कांग्रेसको होने नहीं दिया। भिन्न-भिन्न देशोंकी सरकारें जो दबाव डाल रही थीं, उससे मालूम हो रहा था, कि वहाँसे प्रतिनिधियोंका आना सम्भव नहीं होगा। इसपर जेनरल-कौंसिलने यही निश्चय किया, कि १८६५ ई० की तरह लन्दनमें एक निजी कान्फ्रेंस की जाय और सार्वजनिक कांग्रेस बुलानेका ख्याल छोड़ दिया जाय। इस कान्फ्रेंसमें बहुत कम संख्यामें लोग (कुल २३) उपस्थित हुये थे। कान्फ्रेंस १७-२३ सितम्बर तक रही। इन प्रतिनिधियोंमें ६ बेल्जियम, २ स्वीजलैंड और १ स्पेनसे आये थे। इन्टर्नेशनलके ऊपर जो जबर्दस्त आक्रमण शत्रुओंकी ओरसे हो रहे थे, उससे कान्फ्रेंसको बचाना था।

लन्दन-कान्फ्रेंसने बाजेल-कांग्रेसके कार्यको जारी रखते हुये कुछ प्रस्ताव स्वीकृत किये, जिनका मतलब था स्वतन्त्र एसोसियेशनों और स्वावलम्बी शाखाओंका जेनरल-कौंसिलके हाथमें पूर्णतया केन्द्रित एक संगठन रूप देना। जेनरल-कौंसिलको यह भी अधिकार दिया गया, कि वह अगली कांग्रेस या उसकी जगहपर कान्फ्रेंस करनेके स्थान और समयका निश्चय स्वयं करे। स्वीजलैंड अब इन्टर्नेशनलका प्रधान अवलम्ब रह गया था, लेकिन वहाँ भी पैरोंके नीचेसे जमीन खिसकने लगी, जब "जर्मन-भाषी शाखा"—जेनेवामें

---

* Mayence

इन्टर्नेशनलकी सबसे पुराना और सबसे मजबूत संगठनमें फूटमें पकड़कर १८७१ ई० में "स्विस कमकर पार्टीका" निर्माण हुआ। १८७२ ई० में मार्क्स और एंगेल्सने इन्टर्नेशनलको खतम सा समझकर उसके साथ सहयोग देना छोड़ दिया। १८७४ ई० में एंगेल्सने स्वीकार किया, कि इन्टर्नेशनलका समय अब खतम हो गया है—एक नये इन्टर्नेशनलके—सभी देशोंकी सभी सर्वहारा पार्टियोंकी मैत्री—पुराने इन्टर्नेशनलके स्थानपर आनेके लिये मजदूर-वर्ग-आन्दोलनको ऐसी ही आम पराजयकी हुई आवश्यकता है, जैसी कि उसने १८४९-१८६४ ई० के बीचके समयमे खाई थी।

२. हेग-कांग्रेस (१८७२ ई०)

जेनरल-कौंसिलके ५ मार्च (१८७२ ई०) वाले परिपत्रने सूचित किया, कि वार्षिक कांग्रेस सितम्बरके आरम्भमें होगी; किन्तु इसी बीचमे मार्क्स और एगेल्सने तै किया कि जेनरल-कौंसिलका आफिस न्यूयार्कमें हटा दिया जाय। कुछ लोगोंका कहना है, कि मार्क्स और एगेल्सने इस तरह इन्टर्नेशलकी अन्त्येष्ठि करके छुट्टी लेनी चाही, लेकिन यह बात गलत मालूम होती है, जब कि हम देखते हैं, कि आगे भी वह भरसक इन्टर्नेशनलका समर्थन करते उसे जीवित रखना चाहते थे। कुगेलमानको २९ जुलाईके पत्रमें मार्क्सने जो लिखा था, उससे भी इसी बातकी पुष्टि होती है: "इन्टर्नेशनल कांग्रेस (हेगमें २ सितम्बरको शुरू होनेवाली) इन्टर्नेशनलके लिये जीवन और मरणका सवाल है। उससे अलग होनेसे पहले मैं कमसे कम ध्वंसकारी शक्तियोंसे उसकी रक्षा करना चाहता हूँ।" यह विनाशकारी शक्तियाँ लन्दनमें जेनरल-कौंसिलके रहनेपर बहुत खतरनाक साबित हो रही थीं, इसीलिये मार्क्स और एगेल्सने मुख्य-कार्यालयको न्यूयार्कमे ले जानेका प्रयत्न किया। इकेरियस और युग वर्षोंसे मार्क्सके बहुत विश्वासपात्र सहकारी रहते चले आये थे, लेकिन अब उनका भी सम्बन्ध बिगड़ने लगा, और मई १८७२ में मार्क्स और इकेरियसका सम्बन्ध-विच्छेद हो गया, जब कि इकेरियसने इन्टर्नेशनलके जेनरल-सेक्रेटरीके साप्ताहिक वेतन पन्द्रह शिलिंगको दूना करनेकी इच्छा प्रकट की। इकेरियसने समझा था, कि

मेरे बिना काम नहीं चलेगा, इसलिये मजबूर होकर मेरी माँग माननी पड़ेगी। इकेरियसकी जगह पर अंग्रेज जान हेल्सको जेनरल-सेक्रेटरी निर्वाचित किया गया। इसी समय युंगका एंगेल्ससे मनमुटाव हो गया। हेल्स यद्यपि इन्टर्नेशनलके खिलाफ इकेरियसके प्रयत्नोंको विफल करनेमें समर्थ हुआ क्योंकि उसे अंग्रेज मजदूर-वर्गका समर्थन प्राप्त था, लेकिन पीछे वह स्वयं खुलकर जेनरल-कौंसिलका विरोध करने लगा, जिसपर अगस्तमें उसे अपने पदसे हटा दिया गया। जेनरल-कौंसिलके फ्रेंच सदस्योंपर ब्लांकेकी विचारधाराका अधिक प्रभाव था। मार्क्सको डर लगने लगा था, कि कहीं ब्लांकीय जेनरल-कौंसिलपर अधिकार न कर लें।

हेग-कांग्रेस २-७ सितम्बर १८७२ को हुई, जिसमें ६१ प्रतिनिधि शामिल हुये थे, और अब भी बहुमत मार्क्सके पक्षमें था। इन प्रतिनिधियोंमें जर्मन ८ थे: बर्नहार्ड बेकार (ब्रन्सविक) क्नो* (स्टुटगार्ट) डीट्जगेन (ड्रेसडेन) कूगेलमान (केल) मिलके† (बर्लिन) रीटिंगहाउजेन (मुनखेन), शो‡ (बुरटेम्बेर्ग) और शूमाखेर (सोलिंगेन)। इतालियन बकुनिनवादियोंने अपने प्रतिनिधि कांग्रेसमें नहीं भेजे। उन्होंने रिमिनीमें§ अगस्तमें अपनी कान्फ्रेंस कर, जेनरल-कौंसिलसे सम्बन्ध-विच्छेद करनेका निश्चय किया। स्पेनके ५ प्रतिनिधियोंमें लाफार्गको छोड़कर बाकी बकुनिनके अनुयायी थे। इस प्रकार ब्लांके बुकुनिन और मार्क्सके समर्थकोंका यहाँ जो सम्मिलन हुआ, उसमें आरम्भ हीमें बड़े वाद-विवाद उठ खड़े हुये, जब कि प्रतिनिधियोंके प्रमाणपत्र (मैंडेट) के बारेमें पूछताछ शुरू हुई। लाफार्गको प्रतिनिधि न रखनेके लिये बड़ी जबर्दस्त कोशिश की गई। चौथे दिन कांग्रेसकी वास्तविक कार्रवाई शुरू हुई, जिसमें जेनरल-कौंसिलकी रिपोर्ट पढ़ी गई। रिपोर्टको मार्क्सने स्वयं तैयार किया था और उन्होंने उसे जर्मनमें पढ़ा। उसके अंग्रेजी अनुवादको सेक्सटनने फ्रेंचको लांग्वे¶ और डचको (फ्लेमिश) को ब्रीलने पढ़ा। इन्टर्नेशनलके विरुद्ध जो जुल्म किये गये, पैरिस कम्यूनको जिस तरह खूनी हाथोंसे दबाया गया,

---

* Cuno † Milke ‡ Schen § Rimini. ¶ Languet.

जर्मनीमें जिस तरह देशद्रोहके मुकद्मे चलाकर कमकरोंको दबानेकी कोशिश की गई, इन सबकी रिपोर्टमें अच्छी खबर ली गई। इसके बाद रिपोर्टने संक्षेपमें हालैंड, डेन्मार्क, पोर्तुगाल, आयर्लैंड, स्काटलैंडमें के भीतर प्रवेश करने और न्यूयार्क, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और बूनोआयरसमें अपने कामकी प्रगतिको बतलाया। रिपोर्टको कांग्रेसने बड़ी प्रसन्नताके साथ स्वीकार किया, और मुक्तिके लिये सर्वहारा-संघर्षमें जो शहीद या उत्पीड़ित हुये, उनके प्रति सम्मान और सहानुभूति प्रकट की। आगे मार्क्सने एक लम्बे भाषणमें जेनरल-कौंसिलके पहिलेके अधिकारोंको कम करनेकी जगह उसे बढ़ानेकी माँग करते कहा, कि जेनरल-कौंसिलको केवल लेटर-बक्स बना देनेकी जगह उसे बिलकुल उठा देना बेहतर होगा। मार्क्सके विचारको ६ के विरुद्ध ३६ वोटोंसे स्वीकार किया गया, १५ ने किसी ओर वोट नहीं दिया। इसके बाद एंगेल्सने प्रस्ताव रक्खा, कि जेनरल-कौंसिलका केन्द्र कमसे कम एक सालके लिये लन्दनसे न्यूयार्कमें बदल दिया जाय। प्रस्ताव एकाएक रक्खा गया था, जिसपर कितने ही प्रतिनिधियोंको आश्चर्य हुआ, किन्तु अन्तमें जेनरल-कौंसिलके स्थान-परिवर्त्तन २३ के विरुद्ध २६ वोटोंसे स्वीकार किया गया और ६ तटस्थ रहे। जब न्यूयार्कमें स्थान-परिवर्त्तन करनेका प्रस्ताव आया, तो पक्षमें ३० ने वोट दिये। कांग्रेसके अंतिम और छठवें दिन तक चलनेवाली बहसमें भाग लेने राँवियेर* वेलाँ† और दूसरे ब्लाँकानुयायी जेनरल-कौंसिलके न्यूयार्कमें स्थानान्तरिक करनेके निश्चयके बाद काँग्रेसको छोड़ गये और उन्होंने एक पुस्तिका प्रकाशित करके घोषित किया, कि "इंटर्नेशनल खतम हो गई, वह क्रांतिके मारे अतलातिक महासागर पार भाग गई।"

बकुनिनका व्यवहार भी बहुत बुरा रहा, इसलिये कांग्रेसके अन्तिम दिन उसके ऊपर विचार किया गया, और अन्तमे ७ के विरुद्ध २७ वोटोंसे बकुनिन-को इन्टर्नेशनलसे निकाल देनेका प्रस्ताव स्वीकृत हुआ, ८ तटस्थ रहे।

---

* Ranvier † Vaillant

३. इन्टर्नेशनल का अन्त

मार्क्स और एंगेल्सने इन्टर्नेशनलको जीवित रखनेकी यद्यपि बहुत कोशिश की, किन्तु हेग-कांग्रेसके साथ प्रथम इन्टर्नेशनलका इतिहास खतम हो गया। अमेरिकामें इन्टर्नेशनलको मजबूती के साथ पैर जमानेका मौका नहीं मिला, क्योंकि वहाँ भी आपसी विवाद उठ खड़े हुये। ज़ेनरल-कौंसिलका सबसे बड़ा आधार सोर्गे था, जिसे अमेरिकन स्थितिका पूरा पता था, इसीलिये उसने न्यूयार्कमें स्थान-परिवर्त्तनका पहले विरोध किया था। पीछे वही जेनरल-सेक्रेटरी चुना गया और उसने उसके लिये काम करनेका पूरा प्रयत्न भी किया। लीवक्नेख्ट भी स्थानपरिवर्त्तनके विरुद्ध था। उसने इसे हमेशा गलत कहा, लेकिन उस समय वह वेबेलके साथ हूबेरटुसबुर्ग* में बन्दी था।

जेनरल-कौंसिल न्यूयार्कमें चले जानेका प्रभाव इंगलैंडमें भी बुरा पड़ा। ८ सितम्बरको हेल्सने ब्रिटिश फेडरल कौंसिलमें मार्क्सके विरुद्ध निन्दाका प्रस्ताव यह कह करके रक्खा, कि उन्होंने इंगलिश मजूर-वर्ग नेताओंके ऊपर बुरे आक्षेप किये हैं। निन्दाका प्रस्ताव स्वीकृत हुआ, लेकिन इस संशोधनको स्वीकार नहीं किया गया, कि मार्क्सने खुदगर्जीके लिये ऐसा किया था। हेल्सने मार्क्सको इन्टर्नेशनलसे खारिज करनेका भी प्रस्ताव किया था। एक दूसरे मेम्बरने हॉग-कांग्रेसके निश्चयोंको रद करनेका प्रस्ताव रक्खा। हेल्स अब इकेरियस और युंगका जबर्दस्त सहकारी बन गया था। युंग तो कुछ समय बाद मार्क्स और एंगेल्सका जबर्दस्त विरोधी हो सब-कुछ करनेके लिये तैयार था। मार्क्स और एंगेल्सके विरोधियोंने नई इन्टर्नेशनल-कांग्रेस बुलानेकी असफल कोशिश की, लेकिन ब्रिटिश फेडरल कौंसिलमें भी आपसमें बहुत मतभेद हो गया था।

न्यूयार्ककी जेनरल-कौंसिलने इन्टर्नेशनलकी छठी कांग्रेस ८ सितम्बरको जेनेवामें बुलाई, जो कि इन्टर्नेशनलके लिये मृत्युका प्रमाणपत्र साबित हुई। बकुनिनने इससे पहले १ सितम्बरको अपनी विरोधी कांग्रेसका अधिवेशन किया था, जिसमें हेल्स और इकेरियस इंगलैंडके प्रतिनिधि बनकर गये थे। उनके

* Hubertusburg.

अतिरिक्त बेल्जियम, फ्रास और स्पेनके ५-५, इतालीके ४, हालैंडका १ और ६ जूरा-पार्टीके प्रतिनिधि सम्मिलित हुये थे। मार्क्सीय कांग्रेसमें अधिकतर स्विस प्रतिनिधि थे, जिसमेंसे अधिकाश जेनेवा निवासी थे। जेनरल-कौंसिल स्वय अपना कोई प्रतिनिधि नहीं भेज सकी। इंगलिश, फ्रेंच, स्पेनिश बेल्जियम और इतालियन कमकरोंके कोई प्रतिनिधि नहीं थे और जर्मनी तथा आस्ट्रियाके केवल एक-एक प्रतिनिधि थे। मार्क्सने साफ तौरसे स्वीकार किया, कि काग्रेस केवल तमाशा रही। मार्क्स और बकुनिनके रास्तोंका अब सीधा सघर्ष था। बकुनिनका प्रभाव अब भी रूसके कमकर-आन्दोलनमें वैसा ही बना रहा, जबकि मार्क्सका आरम्भ होते प्रभावको धक्का लगा। बकुनिन और बकुनिनवादियोंके विरुद्ध एंगेल्स और लाफार्गने "समाजवादी जनतान्त्रिकता मैत्री तथा अन्तर्राष्ट्रीय कमकर एसोसियेशन" नामसे एक पुस्तिका लिखी, जिसके सम्पादन तथा एक-दो अन्तिम पृष्ठोके जोडने भरका काम मार्क्सने किया था। इस पुस्तिकाके कारण यद्यपि बकुनिनको हमेशाके लिये मैदान छोडनेके लिये मजबूर होना पडा, लेकिन उसके अनुयायियोंपर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। बकुनिनने मैदान छोडते समय लिखा था: "तरुणोंको आगे बढ़ना चाहिये। जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, सभी जगह विजयी प्रतिक्रियावादके विरुद्ध. .पत्थर लुढकाना जारी रखनेके लिये मेरे पास न ताकत है, और न शायद आवश्यक विश्वास। इसलिये मै संघर्षसे हट रहा हूँ और मैं अपने योग्य समसामयिकोंसे केवल एक-एक बात माँगता हूँ: विस्मरण। अबसे मै किसीको परेशान नहीं करूँगा, और न कोई मुझे परेशान करे।" जूराके कमकरोंको सम्बोधित करके लिखे विदाईके पत्रमे उसने मार्क्सपर तीव्र आक्षेप करते हुये कहा था, कि मार्क्सका समाजवाद बिस्मार्ककी कूटनीतिसे कम प्रतिक्रियावादका केन्द्र नही है, इसलिये उसके विरुद्ध कमकरोको भयकर संघर्ष जारी रखना होगा। शायद बकुनिनके अनुयायी अब भी पूँजीवादकी सायामे पलते अपने गुरुकी परम्पराको कायम रखना चाहते हैं, लेकिन इतिहासका फैसला बिल्कुल दूसरा ही है। प्रतिक्रियावाद मार्क्सके समाजवादके पास नही फटक सकता, हाँ, वह मार्क्सवाद के विरोधियोंको अपने लपेटमें लिये बिना नहीं रह सकता। बकुनिन १ जुलाई

१८७६ को वेर्न (स्वीजलैंड) में मरा। आदमीके पतनकी पराकाष्ठा जितनी त्रोत्स्कीके लिये कही जा सकती है, उतनी बकुनिनकी नहीं, किन्तु जारके सामने घुटना टेककर प्रायश्चित करनेवाले इस भूतपूर्व क्रान्तिकारीको सिरपर उठानेवाले लोगोंकी संख्या तब तक कुछ बनी ही रहेगी, जब तक कि पूँजीवादकी काली छाया भूमण्डलके किसी भी कोनेपर मौजूद है।

अध्याय १९

जीवन-संध्या

१. बीमारी

१८५३ ई० में कम्युनिस्ट लीगकी समाप्तिके बाद मार्क्सने अपनेको लेखन और अध्ययनमें लगा दिया था, जोकि सर्वहाराके लिये भारी महत्वका काम था। इन्टर्नेशनलके भी मरणासन्न होनेके बाद १८७८ ई० से अब फिर उन्होने उधरसे अपना हाथ सदाके लिये खींच लिया। पेरिस-कम्यून मार्क्सके लिये बहुत आशा लेकर आई थी, लेकिन उसके पतनका प्रभाव मार्क्सके ऊपर बहुत बुरा पड़ा। १८७३ ई० के शरद्में ही उनको बीमारीने घेरना शुरू किया और बाजवक्त लकवा मारनेका सख्त खतरा भी पैदा हो गया था। दिमागी अवस्था ऐसी उनके मनमें लिखनेकी बिल्कुल इच्छा नहीं रह गई थी। एंगेल्सके मित्र डा० गम्पर्ट* ने मैन्चेस्टरमें कई सप्ताह मार्क्सकी चिकित्सा की, जिससे स्वास्थ्य-में कुछ सुधार हुआ। डा० गम्पेर्टकी सलाहसे वह स्वास्थ्य सुधारनेके लिये कार्लस्बाड (जर्मनी) में १८७४,१८७५ और १८७६ ई० के तीन वर्षों तक जाते रहे। इसके बारेमें मार्क्सकी सबसे छोटी लड़की एलिनोर (टूसी) ने लीब्क्नेख्टके पास भेजे अपने पत्रमें लिखा था :...कार्लस्बाड हम पहली बार १८७४ ई० में गये। उन्निद्रता और पेटकी शिकायतके कारण मूर (मार्क्स) को वहाँ भेजा गया था। वहाँके पहले निवाससे उनको काफी फायदा हुआ था, इसलिये अगले साल १८५७ ई० में वह अकेले वहाँ गये। फिर अगले साल १८७६ ई० में मै उनके साथ थीं, क्योंकि पिछले साल मेरे न रहनेका अभाव उन्हें खटकता था। कार्लस्बाडमें बहुत सजग रहकर उन्होंने अपनी चिकित्सा की और डाक्टरने जो कुछ बतलाया, उसीके अनुसार सब काम किया। वहाँ हमने बहुतसे मित्र बनाये। सहयात्रीके तौरपर मूर बड़े ही आनन्दी पुरुष

* Gumpurt

थे, हमेशा प्रसन्न मन रहते, और चाहे कोई सुन्दर दृश्य हो या बियरका एक ग्लास, हरेक चीजमें आनन्द लेनेके लिये तैयार थे। अपने विस्तृत इतिहास-ज्ञानसे रास्तेमें आनेवाले हरेक स्थानको अधिक सजीव और स्पष्ट करके वह हमारे सामने रखते थे।...१८७४-७५ ई० में लाइपजिगमें हमने एक-दूसरेको अन्तिम बार देखा। वहाँसे लौटते समय हम बिंगेनका चक्कर काटने गये, जिसे मूर मुझे दिखलाना चाहते थे, क्योंकि यहाँ ही उन्होंने मेरी माँके साथ अपना मधुमास बिताया था। इसके अतिरिक्त इन दोनों यात्राओंमें हम ड्रेसडेन, बर्लिन, प्राग, हाम्बुर्ग, नूरेनबेर्गमें भी गये थे।"

१८७७ ई० में मार्क्स स्वास्थ्यके ख्यालसे बाड नोयेनार* गये। कार्ल-स्बाड वह नहीं जा सके, क्योंकि जर्मनी और आस्ट्रिया दोनोंकी सरकारें उनके विरुद्ध आज्ञा निकालनेवाली थीं। पेटकी तकलीफ अब भी मौजूद थी और थकावट हद दर्जेकी थी, जिसके कारण सिरदर्द और उन्निद्रताकी तकलीफ बराबर बनी रही। यदि मार्क्स अपनेको पूर्ण विश्राम देनेके लिये तैयार होते, तो शायद स्वास्थ्यमें कुछ सुधार होता। लेकिन उनका दिमाग जीवित रहते कैसे निष्क्रिय रह सकता था। एंगेल्सने कहा था: "जिस आदमीने हरेक चीजका उसके ऐतिहासिक आरम्भ और विकासकी स्थितियोंके पता लगाने के लिये परीक्षण किया, निश्चय ही उसके लिये प्रत्येक नया उठनेवाला प्रश्न नये प्रश्नोंकी माला खड़ा कर देता था। तृतीय जिल्द (कपिटाल) के बारेमें पहलेसे अधिक पूर्णताके साथ विवेचन करनेके लिये मार्क्सने प्राचीन इतिहास, कृषिशास्त्र, रूसी और अमेरिकन जमींदारी-सम्बन्ध, भूगर्भशास्त्र आदिका विशेष तौरसे अध्ययन किया। सभी जर्मन-वंशीय और नई-लातिनवंशीय भाषाओंको सुगमताके साथ वह पढ़ते थे। फिर उन्होंने पुरानी स्लाव, रूसी और सर्बियन भाषाओंको सीखा।" यह उनके दिनके कामका सिर्फ आधा भाग था। यद्यपि सक्रिय राजनीतिसे वह हट गये थे, लेकिन अब भी यूरोप और अमेरिकाके मजदूर-आन्दोलनोंमें उनकी उसी तरह दिलचस्पी थी और भिन्न-भिन्न

* Bad Neuenahr

देशोंके प्राय: सभी मजदूर-नेताओंके साथ उनका पत्रव्यवहार था। लडाके सर्व-हारा बराबर उनसे सलाह लेते और मार्क्स उन्हें निराश नहीं करते थे।

२. मित्रों की दृष्टिमें मार्क्स

१. लाफार्गकी दृष्टिमें

पावल लाफार्गका जिक्र हम पहले कर चुके हैं। वह १५ जनवरी १८४२ को कूबामें पैदा हुआ था। बचपनमे ही माँ-बाप उसे पेरिस ले आये, जहाँ उसकी शिक्षा-दीक्षा हुई। तब (१८५१ ई०) से थोड़े समयके निर्वासनके अतिरिक्त वह पैरिसमें ही रहा, जहाँ १९११ ई० मे उसकी मृत्यु हुई। मार्क्सकी लडकी लौरासे इसका व्याह हुआ था, यह हम बतला आये है। लाफार्ग पेरिस युनिवर्सिटीके मेडिकल कालेजका विद्यार्थी था, लेकिन राजनीतिमें भाग लेनेपर उसे युनिवर्सिटीसे निकाल दिया गया। अपनी डाक्टरीकी शिक्षा समाप्त करनेके बाद वह पैरिस लौटा और वहाँके समाजवादी आन्दोलनके प्रमुख नेताओंमें हो १८७१ ई० मे पैरिस कम्यूनमें भी उसने भाग लिया। कम्यूनके समाप्त कर देनेपर वह स्पेन भाग गया, और वहाँ कितने ही समय तक मार्क्सवादके प्रचारमें लगा रहा। १८८२ ई० में वह फिर फ्रास लौटा और जूल ग्विदे (१८४५-१९२१ ई०) के साथ उसने फ्रासमें समाजवादका सैद्धान्तिक नेतृत्व किया और राजनीति, अर्थशास्त्र और दर्शनपर उसने कितनी ही स्वतंत्र पुस्तकें और पुस्तिकाएँ लिखीं। ऐतिहासिक भौतिकवादपर उसका विशेष अधिकार था। मार्क्स और एंगेल्सकी कई पुस्तकोंके उसने फ्रेंचमें अनुवाद किये। लेनिन-की नजरोंमें लफार्ग "मार्क्सवादके विचारोके प्रचार करनेवालोंमे एक बहुत ही साधन-सम्पन्न और अत्यन्त प्रतिभाशाली" पुरुष था।

लाफार्गने अपने ससुरका संस्मरण लिखा है, जो मार्क्सके व्यक्तित्वपर बहुत अच्छा प्रकाश डालता है। उसके कुछ अश निम्न प्रकार हैं :

"पहली बार मैने फर्वरी १८६५ में कार्ल मार्क्सको देखा। २८ सितम्बर १८६४ को सेन्ट मार्टिनहालमे इन्टर्नेशनलकी स्थापना हुई। मैं पेरिससे इस अभिनव संगठनके कार्यकी प्रगतिकी खबर लेकर आया था। मेशिये तोलें...ने मुझे एक परिचयपत्र दिया था।"

"मैं उस वक्त २४ वर्षका था। पहली मुलाकातके समय जो उनका प्रभाव मेरे ऊपर पड़ा, उसे मैं जीवन भर नहीं भुला सकता। उस समय मार्क्सका स्वास्थ्य खराब था, और वह "कपिटाल" की प्रथम जिल्दके लिये कड़ी मेहनत कर रहे थे (जो दो साल बाद १८६७ ई० में प्रकाशित हुआ)। उन्हें इसकी बड़ी चिन्ता थी, कि शायद वह उसे समाप्त न कर सकें। वह तरुण-जनोंका बहुत स्वागत करते थे। कहा करते थे—'मुझे आदमियोंको सिखलाकर तैयार करना है, जिससे मेरे चले जानेपर वह कम्युनिज्म प्रचारको जारी रख सकें।"

"कार्ल मार्क्स उन दुर्लभ आदमियोंमेंसे थे, जोकि विज्ञान और सार्वजनिक जीवन दोनोंमें प्रथम पंक्तिके योग्य होते हैं। इतनी घनिष्ठताके साथ इन दोनों क्षेत्रोंसे उनका सम्बन्ध था, कि हम उन्हें समझ नहीं सकते, यदि एक ही साथ उन्हें साइन्सके आदमी और समाजवादी योद्धा दोनों नहीं समझ लेते।... (उनका कहना था): 'साइन्स (विज्ञान) स्वार्थी आनन्दके लिये नहीं होना चाहिये। जो इतने सौभाग्यशाली हैं कि अपना समय साइन्सके अनुसरण और अनुसंधानमें लगा सकते हैं, उन्हें सबसे पहले अपने ज्ञानको मानवताकी सेवामें लगाना चाहिये।' उनका बहुत प्रिय वचन था 'दुनियाके लिये काम करो'।...

"मार्क्सने अपने कार्यक्षेत्रको अपनी जन्मभूमि ही तक सीमित नहीं रखा। वह कहा करते थे 'मैं दुनियाका नागरिक हूँ। जहाँ भी हूँ मैं वहीं काम करता हूँ।..."

"पहली बार जब मैंने उन्हें मेट्लेन पार्क रोडमें उनके अध्ययन-कक्षमें देखा, उस समय वह मुझे एक अद्वितीय और अनथक समाजवादी आन्दोलकके तौरपर नहीं, बल्कि विद्वान्के रूपमें मालूम हुये। सभ्य दुनियाके सभी भागों से पार्टीके साथी उनके अध्ययन-कक्षमें समाजवादी विचारधाराके आचार्यसे राय लेने आते थे। वह कमरा अब ऐतिहासिक बन गया है। जो कोई मार्क्सके बौद्धिक जीवनके अन्तरंग पहलूको समझना चाहता है, उसे इस कमरेसे परिचित होना चाहिये। वह पहली मंजिलपर था। बगीचेकी ओर खुलनेवाले एक चौड़े बंगलेसे उसमें काफी प्रकाश आता था। आग जलानेके स्थानकी दोनों तरफ, और बंगलेके सामने भी किताबदानोंसे कमरा भरा हुआ था। किताबदानोंके

ऊपर अखबारो और हस्तलेखोंके पैकेट छत तक गॅजे हुये थे। जंगलेकी एक तरफ दो मेजें थीं, जिनपर भी उसी तरह फुटकर पत्र, अखबार और किताबें भरी हुई थीं। कमरेके बीचमें सबसे अधिक प्रकाश रहता था, वहीं पर ३ फुट लम्बी, २ फुट चौड़ी सीधी-सादी लिखने की मेज और एक लकडीकी आरामकुर्सी थी। एक किताबदान और इस कुर्सीके बीचमे जंगलेकी ओर मुँह किये चमड़ेसे ढॅका एक सोफा था, जिसपर विश्राम करनेके लिये समय-समय मार्क्स लेट जाया करते थे। आगदानके ऊपरवाले छज्जे पर और भी किताबे थीं, जिनके बीच-बीचमे सिगार, दियासलाईके बक्स, तम्बाकूका डब्बा, पेपरवेट, अपनी लड़कियों, बीबी, फ्रेडरिक एंगेल्स और विलहेल्म वोल्फके फोटो थे।

मार्क्स बहुत ज्यादा तम्बाकू पीते थे। उन्होने मुझसे कहा था: 'कपिटाल उतना भी पैसा नहीं ले आयेगा, जितनेकी कि इसके लिखते समय मैंने सिगार पी डाले।' दियासलाइयोंके इस्तेमालमें तो वह बहुत ही फजूलखर्च थे। वह अपने पाइप या सिगारको जलाते वक्त अक्सर भूल जाते। जल जानेके बाद भी वह एकके बाद एक दियासलाइयाँ जलाकर उसे सुलगाते हुये थोड़े ही समयमे एक पूरी दियासलाईकी डिबिया खतम कर देते।

"वह अपनी किताबों और कागजोंको ठीकठाक करके रखनेके लिये किसी-को कभी इजाजत नहीं देते थे—वस्तुतः यह ठीकठाक करना नहीं, बल्कि गड़-बडी पैदा करना था। किताबें जो देखनेमें अस्त-व्यस्त रक्खी मालूम होती थीं, वह सिर्फ बाहरी तौरसे ही, नहीं तो हरेक चीज अपने ठीक स्थानपर थी, और बिना ढूँढनेका प्रयत्न किये वह जिस किताब या हस्तलेखको चाहते, उसे हाथसे उठा लेते थे। बातचीत करते समय भी वह अक्सर स्वयं किताबमेंसे तत्सम्बन्धित वाक्य या तसवीर दिखानेके लिये रुक जाते। अपने अध्ययन-कक्षसे वह एक हो गये थे, वहाँ किताबें और कागज-पत्र उसी तरह उनकी आज्ञाका अनु-सरण करते थे, जैसे उनके शरीरांग।

"वह अपनी किताबोंको ठीकसे रखनेमें बाहरी एकरूपताका बिल्कुल ध्यान नहीं करते थे, एक ही पाँतीमें पास-पास क्वार्तो (चारपेजी), अठपेजी जिल्दें तथा छोटी-छोटी पुस्तिकायें रक्खी रहतीं। वह अपनी पुस्तकोंको आकारके अनु-

सार नहीं, बल्कि विषयके अनुसार लगाते थे। उनके लिये किताबें शौकीनीकी चीज नहीं, बल्कि बौद्धिक हथियार थीं। वह कहा करते थे 'ये मेरी दासियाँ हैं, इन्हें मेरी इच्छानुसार सेवा करना होगा।' वह पुस्तकोंके रूप, जिल्द, कागज या छपाईकी सुन्दरताका जरा भी ख्याल न रखते थे—वह पन्नोंके कोने मोड़ देते, वाक्योंके नीचे पेन्सिल खींच देते और हाशिये को पेन्सिलके निशानों से ढाँक देते। वह अपनी पुस्तकोंपर नोट नहीं लिखा करते थे, किन्तु प्रश्न-चिन्ह या आश्चर्यचिन्ह किये बिना नहीं रहते थे।...पेन्सिलके निशान करने-का उनका तरीका ऐसा था, कि उससे वह बड़ी आसानीसे अपेक्षित वाक्यको ढूँढ़ निकालते थे। कुछ वर्षोंके अन्तरसे अपनी नोटबुकों और किताबोंमें चिन्ह किये वाक्योंको अपनी स्मृति ताजा करनेके लिये फिरसे पढ़नेकी उनकी आदत थी—उनकी स्मृति असाधारण तीव्र और निर्भ्रान्त थी। बहुत बचपनसे ही अपरिचित भाषाके पद्योंको कंठस्थ करनेकी हेगलकी हिदायतके अनुसार उन्होंने अपनी स्मृतिको अभ्यस्त किया था। हाइने और गोयथे उन्हें कंठस्थ थे और बातचीतमें अक्सर उनका उद्धरण देते थे। कवियोंकी कृतियोंको वह लगातार पढ़ा करते। सभी यूरोपीय भाषाओंके कवियोंकी कृतियोंको चुनकर वह लगातार पढ़ा करते थे।...

"...अपनेको विश्राम देते वह कमरेके एक छोरसे दूसरे छोर तक टहला करते, जिसके कारण जंगला और दरवाजेके बीचके कालीनका तार-तार हो एक पगडंडी बन गई थी, जो उसी तरह बिल्कुल स्पष्ट थी जैसे किसी घासके मैदानकी पगडंडी। कभी-कभी वह सोफापर लेटकर उपन्यास पढ़ते। वह अक्सर दो य तीन उपन्यास एक साथ शुरू किये रहते और उन्हें बारी-बारीसे पढ़ते—डारविन की तरह वह उपन्यास पढ़नेके बड़े प्रेमी थे। १८ वीं शताब्दीके उपन्यासोंको वह ज्यादा पसन्द करते थे, और फील्डिंगकी "टॉम जोन्ज" विशेष तौरसे उन्हें प्रिय था। आधुनिक उपन्यासकारोंमें उन्हें सबसे अधिक पसन्द थे पाल दे काक, चार्ल्स लीवर, ज्येष्ठ दूमा और सर वाल्टर स्काट—स्काटकी 'ओल्ड मोर्टेलिटी'*

* Old Mortality.

को वह मास्टरपीस समझते थे। साहसयात्राओं और व्यंगात्मक कहानियोंको पढनेकी उन्हें विशेष रुचि थी। सेर्वांते और बालजक को वह उपन्यासके महान् आचार्य मानते थे...बालजकके साथ उनका इतना गहरा सम्मानका भाव था कि वह "लाकमदी ऊमेन"* की समालोचना लिखना चाहते थे।...

"मार्क्स युरोपकी सभी प्रमुख भाषायें पढ़ सकते थे, और उनमेंसे तीन—जर्मन, फ्रेंच और इंगलिशमें इतने सुंदर ढगसे लिख सकते थे, कि जिसे देख उन भाषाओंसे परिचितोंके दिलमें सम्मान पैदा होता। वह कहा करते थे: 'जीवन-संघर्षमें विदेशी भाषा हथियारका काम देती है।' उन्हें भाषाओंके सीखने की बडी प्रतिभा थी, जिसे उनकी लडकियोंने भी दायभागमें पाया था। पचास वर्षके हो चुके थे, जब कि उन्होंने रूसी सीखना शुरू किया।...छ महीनेके भीतर उन्होने इतनी प्रगति कर ली, कि रूसी कवियों और लेखकों खास करके पुश्किन, गोगल और श्चेदरिनकी कृतियोंको मूल भाषामें पढ़कर आनन्द ले सकते थे।...

मानसिक विश्रामके लिये कविता और उपन्यास पढनेके अतिरिक्त मार्क्सका गणितके लिये अत्यधिक प्रेम था। अलजब्रा उन्हें हार्दिक सतोष देता था... अपनी पत्नीकी अन्तिम बीमारीके दिनोंमें अपने वैज्ञानिक कार्योंको वह यथापूर्व... नहीं कर सकते थे। पत्नीके दुस्सह कष्टोंके विचारसे अपनेको बचानेके लिये वह गणितमे डूब जाते थे। आतरिक दुस्सह पीडाके इस कालमें उन्होंने "अनन्तलव कलन"† पर एक निबन्ध लिख डाला था, जो कि जानकार गणितज्ञोंके मतानुसार प्रथम श्रेणी के महत्वका है।...

मार्क्सके पुस्तकालयमें एक हजारसे अधिक जिल्दें थीं, जिन्हें अपने अनुसंधानके जीवनमें उन्होने बडी मेहनतसे जमा किया था और जो उनकी आवश्यकताओंके लिये अपर्याप्त थीं। अनेक वर्षों तक वह लगातार ब्रिटिश म्युजियमके वाचनालयमें जाया करते थे।

"यद्यपि वह सदा बहुत देरसे सोने जाते थे, लेकिन सवेरे ८ और ९ के

* La Comedie humaine. † Infinitisimal calculus.

बीच सदा उठ खड़े होते। काली काफीका एक प्याला पीकर वह दैनिक पढ़ते, फिर अपने अध्ययन-कक्षमें चले जाते, जहाँ वह रातके दो-तीन बजे तक काम करते—बीचमें सिर्फ खानेके समय उठते और (जब मौसिम अच्छा होता) तो हेमस्टेडहीथमें टहलने जाते। दिनमें सोफापर एक या दो घंटे सो जाते। जवानी में सारी रात पढ़ने-लिखनेमें बिता देनेकी उन्हें आदत थी। मार्क्सके लिये काम एक बीमारी थी और वह उसमें इतने लीन हो जाते कि अपना भोजन भी भूल जाते थे। अक्सर उन्हें बार-बार बुलाया जाता, तब वह नीचे उतरकर भोजन-शालामें आते और मुश्किलसे अन्तिम कौर खतम करते ही वह फिर अपनी मेजकी ओर लौट पड़ते। वह अल्पभोजी थे और भूख उन्हें कम लगती थी, जिसको उत्तेजित करनेके लिये वह बहुत मसालेदार अधिक तली चीजों—हैम, भूनी मछली, मुरब्बा और अचार खाया करते थे। दिमागकी जबर्दस्त मेहनत के लिये उनके पेटको दण्ड भोगना पड़ता। सचमुच इसके लिये ही उनका सारा शरीर बलिदान हुआ। चिन्तन उनके परम आनन्दकी वस्तु थी। शारीरिक व्यायाममें केवल चहलकदमी वह करते थे। वह घंटों टहल सकते थे और बात करते तथा पाइप-सिगार पीते जरा भी थकावटका परिचय दिये पहाड़ोंपर भी चढ़ जाते थे। कहा जा सकता है, अपने अध्ययन-कक्षमें टहलते समय भी वह अपना काम करते थे। टहलनेके समय जो विचार उनके दिमागमें आता, उसे कागजपर उतारनेके लिये थोड़ी देर वह अपनी मेजपर बैठ जाते थे।...

"मार्क्सके हृदयको जानने और उनके प्रेमको...अच्छी तरह देखनेके लिए उन्हें अपने परिवारके बीचमें, इतवारकी शामको अपनी मित्रमंडलीके बीच देखना चाहिये था। ऐसे समय वह बड़े ही आनन्दी साथी, हाजिर-जवाबी, अद्भुत-मजाकी दिखाई पड़ते—उनका ठहाका हृदयके अन्तस्तमसे आता था।...

"वह बच्चोंके लिये भद्र, कोमल और दूसरोंके भावोंका सम्मान करनेवाले पिता थे। वह अक्सर कहा करते थे : 'बच्चोंको अपने माता-पिताको शिक्षित करना चाहिये।' उनकी बेटियाँ उन्हें बहुत प्यार करती थीं, और बाप और उनके बीचके सम्बन्धमें कहीं पैतृक-शासनका चिन्ह भी नहीं मिलता था।... उनकी लड़कियाँ उन्हें मित्र जैसा समझतीं और साथ खेलके साथी जैसा वर्ताव

करतीं। वह उन्हें बापू नहीं, बल्कि 'मूर' कहकर सम्बोधित करतीं। अपेक्षाकृत अधिक श्यामल रंग और आबनूस जैसे काले बालों तथा दाढ़ियोंके कारण उन्हें यह नाम मिला था। १८४४ ई० में भी, जब कि ३० वर्षके भी नहीं हुये थे, कम्युनिस्ट लीगके उनके साथी मेम्बर उन्हें 'बापू मार्क्स' कहा करते थे। वह अपने बच्चोंके साथ घंटों खेला करते थे।"

२. लीबक्नेख्ट की नजरोंमें

लीबक्नेख्ट २६ मार्च १८२६ में (मार्क्ससे सात साल पीछे) पैदा हुआ था। उसने अध्यापक बननेकी तैयारी की थी, लेकिन तरुणाईमें ही क्रान्तिने अपनी ओर खींच लिया। २२-२३ सालकी उमरमे १८४८-४९ ई० की जर्मन-क्रांतिमें उसने भाग लिया, जिसके असफल होनेपर उसे भागकर लन्दन चला जाना पड़ा, जहाँ वह मार्क्सके प्रभावमें आया। १८६२ ई० में वह जर्मनीमें लौटकर मजदूर-आन्दोलनमें जुट पड़ा। जर्मन-मजदूरोंके दूसरे प्रमुख नेता आगस्ट बेबल (१८४०-१९१३ ई०) के साथ मिलकर लीबक्नेख्ट १८६९ ई० मे सामाजिक-जनतान्त्रिक पार्टी कायम की और पार्टीके पत्र "फोक्स्टाट" (जन-राज्य) और पीछे "फोरवैट्‌र्स" (अग्रगामी) का सम्पादन किया। दूसरे पत्र का सम्पादन करते हुये ७ अगस्त १९०० को उसकी मृत्यु हुई। फ्रांस-प्रशिया-युद्ध के समय वह राइखस्टाग (पार्लियामेन्ट) का समाजवादी सदस्य था। अल्सेस-लोरनके हड़पनेके खिलाफ तथा युद्धके खर्चके विरुद्ध वोट देनेके कारण बिस्मार्कने उसे जेलमें डाल दिया। वह जन्मजात जननेता, प्रतिभाशाली वक्ता और कमकरोंके लिये लेखों और पुस्तिकाओंके लिखनेमें दक्ष लेखक था। लीबक्नेख्टने १८९६ ई० में कार्ल मार्क्सकी जीवनी प्रकाशित की थी, जिससे मार्क्सके जीवनके वैयक्तिक पहलूपर कितना ही प्रकाश पड़ता है :

"मैं १८५० ई० की गर्मियोंमें स्वीजर्लैंडसे लन्दन पहुँचा।...मार्क्स-परिवार से उन्हीं गर्मियोंमें लन्दनके नजदीक कहीं...मिला, मुझे याद नहीं ग्रीनविचमें या हेम्प्टनकोर्टमें।...

१८५० ई० से १८६२ ई० तक प्रायः बारह वर्षों तक लीबक्नेख्ट लन्दनमें रहा। वहाँ वह मार्क्सके परिवारका एक व्यक्ति हो गया था। बच्चोंके प्रति

मार्क्सके प्रेमके बारेमें लीबक्नेख्टने लिखा है : "मार्क्स मजबूत और स्वस्थ स्वभाववाले सभी व्यक्तियोंसे प्रेम करते थे, बच्चोंसे तो उन्हें असाधारण प्रेम था। वह ऐसे अत्यन्त कोमल पिता थे, जो कि अपने बच्चोंके साथ घंटों बच्चा बन सकता था। रास्तेमें मिलनेवाले अपरिचित बच्चों, विशेषकर असहाय और गरीब बच्चोंके प्रति चुम्बककी तरह उनका मन खिंच जाता था। सैकड़ों बार गरीबोंके मोहल्लेमें घूमते समय अलग हो चिथड़ेमें लिपटे दरवाजेपर बैठे किसी बच्चे के छोटे से हाथमें एक या आधा पेन्स रखने, तथा उसके बालोंको सहलानेके लिये वह हमारा साथ छोड़कर चले जाते।...

"शारीरिक कमजोरी और असहायावस्था हमेशा उनके हृदयमें सहानुभूति पैदा कर देती।...एक शामको उनके साथमें ओम्नीबसके ऊपर सवार हो हैम्पटेड रोडकी ओर जा रहा था। वहाँ...अड्डेपर हमने लोगोंकी भीड़ देखी, जिसके भीतरसे एक स्त्री चिल्ला रही थी—'खून! खून'! मार्क्स बिजलीकी तरह नीचे उतरकर चले और मैं उनके पीछे-पीछे था। मैं उन्हें पकड़कर रोकना चाहता था, जो नंगे हाथोंसे बन्दूककी गोली पकड़ रखने जैसा प्रयत्न था। एक क्षणमें ही हम भीड़में पहुँच गये। लोगोंकी भीड़ हमारे पीछे घेरे हुई थी। 'क्या बात है?'—जो बात थी, वह जल्दी ही स्पष्ट हो गई। एक शराबी औरतने अपने पतिसे झगड़ा कर लिया था। पति उसे घर ले जाना चाहता था और वह झगड़ रही थी, ऐसी चिल्ला रही थी, मानों भूत चढ़ा हुआ हो।...हमने देखा, कि वहाँ हमारे दखल देनेकी कोई जरूरत नहीं है। झगड़नेवाले दम्पतीने भी इसे देखा और तुरन्त ही उन्होंने आपसमें शान्ति स्थापित कर ली, फिर वह हमारी ओर टूट पड़े। चारों ओरकी भीड़ 'सारे विदेशियों' के विरुद्ध भयानक कांड करनेके लिये तैयार दीख पड़ी। स्त्री खास तौरसे मार्क्सके खिलाफ आगबबूला हो गई थी। उसने उनकी भव्य चमकती काली दाढ़ीपर आक्रमण करना चाहा। मैंने व्यर्थ ही तूफानको शान्त करनेका प्रयत्न किया। अगर लड़ाईके मैदानमें उसी समय दो मजबूत कान्सटेबल न आ गये होते, तो हम भीतर दखल देनेकी उदाराशयताका बहुत मँहगा मोल चुकाते। जरा भी बाल बाँका हुये बिना निकल कर ओम्नीबस पर बैठ घरकी ओर रवाना होते समय हमने अपने भाग्यको

सराहा। इसके बाद इस तरहके दखल देनेके प्रयत्नमे मार्क्स अधिक सावधान रहा करते।

यदि कोई विज्ञानके इस नायकके भावोंकी गम्भीरता और बचपनका पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना चाहता "तो मार्क्सको अपने बच्चोके भीतर देखनेकी जरूरत थी। अपने छुट्टीके क्षणों या टहलनेके समय उन्हें वह साथ लिये-लिये फिरते और उनके साथ अत्यन्त हर्षोन्मत्त हो खेल खेलते, बच्चोंके बीच बच्चे जैसे मालूम होते। हेम्प्स्टेडहीथमें हम अक्सर 'घोडसवार' का खेल खेलते : मैं छोटी-छोटी बच्चियोमेसे एकको अपने कन्धेपर उठाता और मार्क्स दूसरेको। फिर हम दोनो कदम और कुदान करते एक दूसरेसे होड करते—कभी-कभी घोडसवारोंके बीच छोटी लडाई भी हो जाती। लडकियाँ लडकोकी तरह ही अनियन्त्रित स्वभावकी थीं, और बिना रोये मार सह सकती थी। मार्क्सके लिये बच्चोंका सत्सग बहुत आवश्यक था—उनके द्वारा वह अपनी थकावट भूल कर ताजगी अनुभव करते। जब उनके अपने बच्चे बडे हो गये या मर गये, तो उनका स्थान नातियों और नातिनोने लिया। नन्ही जेनीने १८७० वाली दशाब्दीके आरम्भमे लाग्वेसे व्याह किया। लाग्वे पैरिस कमूनके शरणार्थियोमेसे था। इनके कई मनसुखी बच्चे घरमें थे। सबसे बडा जीन या (जानी)...अपने नानाका बहुत प्रिय था। उनके साथ वह जो चाहे सो कर सकता था, यह वह जानते थे। एक दिन जब मै लन्दन गया हुआ था, जानी...के दिमागमें एक चमत्कारिक विचार पैदा हुआ : मूर (मार्क्स) को ओम्नीबस (बग्गी) बनाया जाय। कोचवानकी गद्दीपर अर्थात् मार्क्सके कन्धोपर वह स्वय बैठा और एंगेल्स तथा मैं बग्गी के घोड़े बने। जब हम ठीक तरहसे जुट गये तो मेटलेडपार्क रोडमें मार्क्सके कुटीरके पीछेकी छोटी सी फुलवाडीमें एक जबर्दस्त दौड़—मैं कहना चाहूँगा भयंकर दौड—शुरू हुई। शायद रिजेन्ट पार्कमे एगेल्सके घरमें यह हुआ हो। ..घोड़े दौड़े जा-ओ! अन्तर्राष्ट्रीय पुकार थी, जर्मनमें, इगलिशमे और फ्रेंचमे—गो ऑन! प्लि विता!* हुर्रा। मूरको भी इतना दौडना पडा, कि उनके चेहरेसे पसीना चूने लगा। यदि एगेल्स या मैं अपनी गति कुछ धीमा

* Go on! Plus wita

करना चाहते तो निष्ठुर कोचवानका कोड़ा तुरन्त हमारी पीठपर पड़ता : तुम बदमाश घोड़े! आँ अवाँ इत्यादि। अन्तमें ऐसी हालत हुई, कि मार्क्सके लिये और आगे बढ़ना मुश्किल हो गया। फिर जोनीसे समझौतेकी बात चली और अन्तमें विराम-सन्धि स्वीकृत हुई।"

३. विरोधी

जीवनकी अन्तिम दशाब्दियोंमें मार्क्स अब पहलेकी अपेक्षा लोगोंमें प्रसिद्धि और सम्मानकी दृष्टिसे देखे जाते थे, तो भी वह अलग-थलग रहना पसन्द करते थे। उनके अपने घरमें अब लोगोंका आना-जाना बहुत था। शरणार्थी हमेशा उनसे सहायता और सलाह पाये बिना नहीं रहते थे। शार्ल लाँग्वेने १८७२ ई० में मार्क्सकी लड़की जेनीसे व्याह किया था, लेकिन योग्य होते हुये भी अपने श्वसुर-कुलसे उसकी वैसी वैयक्तिक या राजनीतिक घनिष्ठता नहीं स्थापित हुई जैसी कि लाफार्गकी। सबसे छोटी लड़की एलिनोर एक फ्रेंच लेखक लिज़ागरेको व्याही जानेवाली थी, लेकिन मार्क्सको वह अच्छा नहीं लगता था। अन्तमें कुछ आगा-पीछा करनेके बाद यह व्याह नहीं हो सका।

"कपिटाल" की बुरी आलोचना करनेवालोंमें डूरिंग भी एक था, जिसको अपने समाजवादका बड़ा अभिमान था। २४ मई १८७६ को एंगेल्सने मार्क्सको लिखा था: "यह साफ मालूम होता है कि इन लोगोंके दिमागमें तुम्हारे ऊपर नीचतापूर्ण आक्रमण करनेके कारण डूरिंग अजेय हो गया है*। यदि हम उसकी सैद्धान्तिक खुराफ़ातोंकी खिल्ली उड़ायें तो यह उसके ऊपर हमारा वैयक्तिक बदला छोड़ और कुछ नहीं होगा।"...किन्तु अन्तमें एंगेल्सको डूरिंगकी ओर ध्यान देना ही पड़ा, और उन्होंने "फोरवेर्ट" में १८७७ ई० के आरम्भसे कई लेख उसके विरुद्ध लिखे, जो "कपिटाल" के बाद मार्क्सवादका एक बड़ा ही सुन्दर और सबल ग्रंथ साबित हुआ। (मई १८७७ में) गोथामें जो पार्टीकी कांग्रेस हुई, उसमें एंगेल्सके इन लेखोंके विरुद्ध बड़ा विवाद उठ खड़ा हुआ और उनके पार्टीके मुखपत्र "फोरवेर्ट्स" में छापे जानेका विरोध किया गया। किन्तु अन्तमें समझौता हो किसी तरह बला टली।

---

* En avant.

१८७७ ई० में गोथा-काग्रेसने यह भी निश्चय किया, कि उसी सालके सितम्बरमें घेन्तमें होनेवाली विश्व-समाजवादी-काग्रेसमें पार्टीके प्रतिनिधि बनकर लीबक्नेख्ट भेजे जायँ। इस काग्रेसको बेल्जियमके साथियोंने बुलाया था, जिनका मन अब अराजकवादसे भर गया था और वह हाग-काग्रेसमें हुई फूटको मिटानेकी कोशिश करना चाहते थे। बकुनिनके अनुयायियोने अपनी काग्रेसें १८७३ (जेनेवा) में, १८७४ ई० (ब्रुशेल्स) में और १८७६ ई० (बेर्न) में की थीं, लेकिन प्रतिनिधियोंकी सख्यासे मालूम हो रहा था, कि उनका सगठन कमजोर होता जा रहा है। लीबक्नेख्ट कभी बकुनिनका मित्र नहीं रहा, लेकिन बाजेल-काग्रेसके समय वह उतना आगे नहीं बढ़ सका। दूसरी ओर जूल ग्विदे (फ्रास), चार्लो चाफियेरो (इताली), कैसर दे पेपे (बेल्जियम) और पॉल अखेलराद (रूस) हॉग-काग्रेसके समय और उसके बादमे भी देर तक बकुनिनके जबर्दस्त समर्थक रहे। पीछे जब बड़े उत्साही मार्क्सवादी बन गये, तब भी वह यह स्वीकार करते थे, कि हमने मार्क्ससे सहमत और बकुनिनके सम्मिलित विचारोंके आधारपर प्रगति की है। बकुनिनका अराजकवाद दिनपर दिन गिरता ही गया। उसके सैद्धान्तिक विचार ही अंडबड नहीं थे, बल्कि व्यवहारतः भी आधुनिक सर्वहारोंके तुरन्तके किसी हितके प्रश्नमें वह कोई सहायता नहीं दे सकते, जिसके कारण बकुनिनवाद एक आशा और विश्वासहीन सम्प्रदायसे आगे नहीं बढ सका। १८७६ ई० मे बर्नमें १८७७ ई० में घेन्तमें विश्व-सामाजवादी-काग्रेसका बुलाना इस बातका सबूत था, कि अराजकवाद जनताको अपनी ओर करनेमें बिल्कुल असफल रहा। यह काग्रेस ६-१५ सितम्बर तक घेन्तमें हुई, जिसमें ४२ प्रतिनिधि शामिल हुये। इसके ११ अराजकवादी प्रतिनिधियोंमें गुइओम* और क्रोपत्किन (रूसी) भी थे। इसके पुराने समर्थकोमें से बहुत से अब समाजवादी पक्षकी ओर मिल गये, जिनमें बेल्जियन प्रतिनिधियोंके अतिरिक्त अंग्रेज हेल्स भी था। इस पक्षके नेता लीबक्नेख्ट, ग्रोलिच और फ्रैंकेल थे।

---

* Guillaume.

अराजकवादी भी अपनी कमजोरियोंको समझते थे, इसलिये उन्होंने बहस-मुबाहिसेसे कड़वाहट पैदा करनेकी जगह अधिकतर समझौता करनेका प्रयत्न किया, किन्तु समझौतेका कोई परिणाम नहीं निकला।

इसी समय रूस और तुर्कीकी लड़ाई शुरू हो गई। मार्क्सने अपने विचार लीबक्नेख्टको लिखे पत्रोंमें अपनी सलाह दी थी। ४ फर्वरी १८७८ के पत्रमें मार्क्सने लिखा था : "हम निश्चित तौरसे तुर्कोंके पक्षमें हैं, जिसके दो कारण हैं : सबसे पहले इसलिये कि हमने तुर्क-किसानों अर्थात् तुर्क-जनसाधारणका अध्ययन करके देखा, कि वह यूरोपीय किसानोंके अत्यन्त सक्षम और चरित्रबलमें बहुत पक्के प्रतिनिधि हैं। दूसरी बात यह, कि रूसकी पराजय सामाजिक परिवर्त्तनको बहुत जल्दी ला सकती है, क्योंकि इस सामाजिक परिवर्तनके तत्व रूसमें सभी जगह मौजूद हैं। इस परिवर्त्तन द्वारा सारे यूरोपका भी परिवर्त्तन शीघ्र गतिसे होगा।" तीन महीने पहले मार्क्सने सोर्गेको लिखा था : "यह संकट यूरोपीय इतिहासका एक नया मोड़ है। मैंने मौलिक स्रोतों, सरकारी और गैर सरकारी दोनों (सरकारी स्रोत बहुत थोड़े से लोगोंको प्राप्य हैं, मैंने उन्हें पीतरबुर्गके मित्रोंकी सहायतासे प्राप्त किया) के अध्ययन से रूसी स्थितियोंका अध्ययन किया है। रूस बहुत दिनोंसे क्रान्तिके देहलीपर खड़ा है, और वहाँ सभी आवश्यक तत्त्व तैयार हैं। तुर्कोंने केवल रूसी सेना और रूसी कोश ही नहीं, बल्कि व्यक्तिगत तौरसे रूसी राजवंश (जार, युवराज और छ दूसरे रोमनोफों) को भी लथाड़ते विस्फोटको जल्दी कर समयमें वर्षोंकी कमी कर दी। रूसी विद्यार्थियोंका मूर्खता पूर्ण खिलवाड़ अपने भीतर व्यर्थका है, लेकिन वह एक निदान है। रूसी समाजके सभी अंग आर्थिक, नैतिक और बौद्धिक तौरसे छिन्न-भिन्न होने की अवस्था में हैं।"

मार्क्सकी मृत्युके पाँच साल पहले लिखे गये इन पंक्तियोंसे मालूम होता है, कि अधिक अध्ययन और गम्भीरतापूर्वक विचार करनेके बाद मार्क्स इस नतीजेपर पहुँचे थे, कि रूसमें क्रान्तिकी सम्भावना उससे कम नहीं है, जितनी कि पश्चिमी यूरोपमें। अस्तु तुर्कोंकी पीठ ठोकनेवालोंके विश्वासघात तथा अपनी बेवकूफियोंके कारण रूस-तुर्क-युद्धके परिणामस्वरूप रूसमें क्रान्ति नहीं होने

पाई, और न पश्चिमी यूरोपमे उसका विस्तार हुआ। इसके विरुद्ध अब बिस्मार्कने जर्मनीमे कमकरोपर दमन शुरू किया। संगठनकी फूट और शिथिलताके कारण पार्टीकी किस ओर खिचे बूर्ज्वा भी अपनी आदतके अनुसार इस दमनमे साथ छोड़कर भागने लगे। जर्मन पार्लियामेन्टमे चुने गये समाजवादी मेम्बरोमे घोर फूट पड गई। उनमें एक पक्षका नेता मेक्स कैजेर* था। उसके एक भाषणपर कार्ल हर्शने जबर्दस्त आक्रमण किया, जिसका राइखस्टागके समाजवादी गिरोहने विरोध किया, क्योंकि कैजरने उनकी अनुमतिसे उक्त भाषण दिया था। कार्ल हर्श एक तरुण पत्रकार था, जो लीबक्नेख्टके जेलमें रहनेके सालोमें उस पक्षकी ओरसे आगे बढ़ा था। पीछे वह पेरिसमें भाग गया, जहाँसे जर्मनीमें आम क्षमादानके बाद लौटा। अब उसने फिर जर्मन-पार्टीके लिये काम करना शुरू किया। १८७८ के दिसम्बरके मध्यमें "डी लाटेर्ने" के नामसे एक साप्ताहिक पत्र ब्रेदा (बेल्जियम) से निकालने लगा। हर्शपर मार्क्स और एंगेल्सका पूरा विश्वास था। वह उसके पत्रके लिये लेख लिखनेको भी तैयार थे। पार्टीकी तरफसे ज्यूरिचसे पत्र निकालनेका निश्चय हुआ। वहाँ रहनेवाले पार्टीके तीन मेम्बर श्रम्म, कार्ल होखबेर्ग और एडवर्ड बेर्नस्टाइन उसके संचालक नियुक्त किये गये। बहुत देर करके जुलाई १८७९ में वह "सामाजिक विज्ञान और सामाजिक राजनीतिका वर्षपत्र"† के रूपमें निकला। वर्षपत्रके लेखो उसमें विशेष करके होखबेर्ग‡ और श्रम्म द्वारा लिखे तथा बेर्नस्टाइन द्वारा कुछ पंक्तियाँ जोड़े 'समाजवादी आन्दोलनकी आलोचना' नामक लेख को पढकर मार्क्स और एंगेल्स बहुत क्षुब्ध हुये। इसके बाद हर्शने भी उसके साथ सम्बन्ध रखनेसे इन्कार कर दिया। होखबेर्गने लन्दन जाकर मार्क्ससे तो नहीं लेकिन एंगेल्सने मुलाकात की, लेकिन उसकी विचार-संबंधी गडबड़ीका एंगेल्सके ऊपर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा। १९ सितम्बर १८७९ में मार्क्सको सोर्गेके पास पत्र लिखते हुये कहना पडा था, कि यदि नये पार्टीके नये पत्रकी यही रफ्तार रही,

---

* Dic Laterne. † Das Jahrbuch fur Sozialvisenschaft and sozial pobitio. ‡ Hoch berg.

तो हमें खुलकर उसके विरुद्ध लिखना पड़ेगा। आगे इसकी जरूरत नहीं पड़ी क्योंकि वर्षपत्रको तीनों और आगे नहीं चला सके। जूरिचके "सोजियाल डेमोक्राट" (समाजवादी जनतांत्रिक) के सम्पादनका भार फोलमरने ले लिया, लेकिन वह अच्छी हालतमें नहीं निकल रहा था। जर्मन समाजवादियोंको कितनी कठिनाईके भीतर काम करना पड़ता था, इसे मार्क्स अच्छी तरह समझते थे, इसीलिये ५ नवम्बर १८८० के पत्रमें उन्होंने सोर्गेको लिखा था : "जिन लोगोंको दूसरे देशोंमें अपेक्षाकृत शान्ति और निश्चिन्तताका जीवन बितानेका अवसर मिला है, उन्हें अत्यन्त कठिन परिस्थितियोंमें और भारी बलिदानके साथ जर्मनीमें काम करनेवालों में रहा है, बूर्ज्वाजीको खुश करनेका कारण बननेके लिये कठिनाइयाँ उत्पन्न करनेका अधिकार नहीं है।"

कुछ सप्ताह बाद आपसी झगड़े खतम करके शान्ति स्थापित हुई। २१ दिसम्बर १८८० को बोल्मरने सम्पादक पदसे इस्तीफा दे दिया, और जर्मन पार्टीके नेताओंने उसकी जगह कार्ल हिर्श* को नियुक्त किया। यह मार्क्स और एंगेल्सका संतुष्ट करनेका प्रयत्न था। हिर्श उस वक्त लन्दनमें रहता था, उसको राजी करने तथा मार्क्स और एंगेल्सके साथ परिस्थितियोंपर पूरी तौरसे विचार करनेके लिये बेबल स्वयं लन्दन आया। वह अपने साथ बेर्नस्टाइनको भी लेता गया था। कार्ल हिर्शने लन्दनमें रहकर काम करनेकी बातें कहीं। वर्षपत्रके कारण बेर्नस्टाइनके खिलाफ जो भाव पैदा हुये थे, उन्हें दूर हटानेकी कोशिश बेबेलने की। इसमें उसे कितनी सफलता हुई, यह इसीसे मालूम होगा कि बेर्नस्टाइनको पत्रका अस्थायी सम्पादक नियुक्त कर दिया गया—और अन्तमें बेर्नस्टाइन स्थायी सम्पादक भी बन गया। मार्क्स और एंगेल्सके जीवित समय तक बेर्नस्टाइनका रवैया ठीक रहा, लेकिन हम जानते हैं, पीछे मार्क्सवादके शत्रुभूत अनुयायियोंमें बेर्टबेनस्टाइनका नाम सबसे पहले आया। मार्क्सके वास्तविक उत्तराधिकारी लेनिनको इस अवसरवादी समाजवादीके मुँहतोड़ जवाब देनेके लिये कलम उठानी पड़ी।

---

* Hirsch.

फ्रासमें भी बहुत से उतार-चढ़ावके बाद पार्टीके काममें सुगबुगाहट शुरू हुई। गुइदे अब काममे जुट पडा था। वह पेरिससे "एगालिते" (समानता) पत्र निकालने लगा था। १८८० ई० के वसन्तमे ग्विदे लन्दन गया। वह तरुण समाजवादी पार्टीके निर्वाचन-प्रोगाम तैयार करनेमें मार्क्स, एंगेल्स और लाफार्गसे सहायता लेना चाहता। जो प्रोग्राम तैयार हुआ, उसे मार्क्सने फ्रेंच क्मकरोंकी मुक्तिके लिये भारी कदम बतलाया। मार्क्स इतने सतुष्ट थे, कि उन्होंने अपने दोनो फ्रेंच दामादो को आम क्षमादानके तुरन्त ही बाद फ्रास लौटनेके लिये सहमति प्रकट की। लाफार्गने लौटकर गुइदेके साथ काम करना शुरू किया, और लाग्वेने एक प्रभावशाली पत्र "ला जुस्तिस" (न्याय) को सँभाला।

रूसमें स्थिति खराब थी, लेकिन मार्क्सकी दृष्टिमें वह अधिक आशाप्रद थी। उनके "कपिटाल" का वहाँ ज्यादा प्रचार हुआ। उसके महत्वको और देशोसे अधिक रूसमे माना गया—विशेषकर विज्ञान और साहित्यके क्षेत्रमें तरुणोने उसका दिल खोलकर स्वागत किया। यह कहनेकी आवश्यकता नहीं कि अभी इस समय लेनिन दस वर्षके बालक थे। उन्हें "कपिटाल" मे हाथ लगानेके लिये चार-पाँच सालोंकी और देर थी। तो भी वहाँके दो प्रमुख राज-नीतिक दल—जन-इच्छा पार्टी और काली वितरण पार्टी—मार्क्सकी विचार-धाराको बिल्कुल पसन्द नहीं करते थे। दोनो पार्टियाँ अपना सबसे बडा लक्ष्य किसानोको अपनी ओर खीचना समझती थीं, और इसमें वह पूरी तौरसे बकु-निनवादी थीं। मार्क्स और एंगेल्सने इसपर एक मुख्य प्रश्न उठाया था : क्या रूसी किसान सगत*—जो कि भूमिकी प्राचीन सम्मिलित प्रभुताके अत्यन्त विकृत रूप हैं—भूमिके प्रभुत्वके उच्चतम कम्युनिस्ट रूपमें सीधे विकसित हो सकती है, अथवा उन्हें सबसे पहले उसी तरहके विघटनकी प्रक्रियासे गुजरना पड़ेगा, जो कि पश्चिमी यूरोपीय देशोके ऐतिहासिक विकासके दौरानमें देखा गया है ? इसका जवाब मार्क्स और एंगेल्सने वेरा जासुलिच द्वारा कम्युनिस्ट

---

* Russian Peasant Community

घोषणापत्रके नये अनुवादमें निम्न शब्दोंमें दिया था : "यदि रूसी क्रान्तिने पश्चिममें कमकरोंकी एक ऐसी क्रान्तिकी पूर्व-सूचना दी, जिसमें कि दोनों क्रांतियाँ एक दूसरेकी पूरक बनें, तो रूसकी वर्तमान सम्मिलित सम्पत्तिका रूप कम्युनिस्ट विकासके आरम्भ स्थान का काम दे सकेगा।" इन्हीं विचारोंके कारण मार्क्स जन-इच्छा (नरोद्नया वोल्या) पार्टीका बहुत समर्थन करते थे, जिनकी आतंकवादी नीतिके कारण जारका इधर-उधर खुलकर घूमना बन्द हो गया था और वह एक तरहका बन्दी जीवन बिताता था। मार्क्स काला-वितरण-पार्टीके जबर्दस्त विरोधी थे, क्योंकि वह सभी तरहके राजनीतिक और क्रांतिकारी कार्रवाइयोंको छोड़कर अपनेको प्रोपेगेंडा तक ही सीमित रखती थी—अखेलराद और प्लेखानोफ जैसे मार्क्सवादी प्रचारक यद्यपि काला-वितरण-पार्टीसे सम्बन्ध रखते थे, लेकिन जबानी जमा खर्च और अकर्मण्यताको मार्क्स पसन्द नहीं कर सकते थे।

मृत्युके दो साल पहले जून १८८१ ई० में मार्क्सने इंगलैंडमें भी कुछ नई सुगबुगाहट देखी, जब कि हिंडमेनकी पुस्तक "इंगलैंड सबके लिये" प्रकाशित हुई, और जो जनतांत्रिक फेडरेशनके प्रोग्रामके तौरपर लिखी गई थी। फेडरेशन की शाखायें इंगलैंड और आयर्लैंडके कितने ही स्थानोंपर स्थापित हुई थीं। वह अर्ध-बूर्ज्वा और अर्ध-सर्वहारा उग्रवादी सभाओंको मिलाकर बना था। पुस्तकके श्रम और पूँजीवाले अध्यायोंमें मार्क्सके "कपिटाल" से बहुतसे सीधे उद्धरण और कितने ही विचार लिये गये थे। तो भी हिंडमेनने मार्क्सका नाम नहीं लिया था, जिसके लिये उसका बहाना था कि मार्क्सका नाम यहाँके लोगोंको पसन्द नहीं है, और अँग्रेज विदेशियोंसे सीख लेना पसन्द नहीं करते। मार्क्स ऐसे आदमीके साथ अपना सम्बन्ध कैसे कायम रख सकते थे?

४. पत्नी-वियोग (१८८१ ई०)

१८७८ ई० के बाद स्वास्थ्यकी खराबीके कारण मार्क्स कुछ काम नहीं कर सकते थे। इसी समय मार्क्स-पत्नी ज़ेनीका स्वास्थ्य बहुत बिगड़ चला, जिसका बड़ा बुरा प्रभाव मार्क्सपर पड़ना जरूरी था। अपनी सास (ज़ेनी) के बारेमें लाफार्गने लिखा है :

"मार्क्स केवल १७ वर्षके थे, जब कि उनकी मँगनी हो गई थी, लेकिन दोनोको नौ वर्ष तक इन्तिजार करना पड़ा, तब १८४३ ई० में उनका व्याह हुआ। उसके बाद वह फिर एक दूसरेसे तब तक अलग नहीं हुये, जब तक कि अपने पतिसे कुछ ही समय पहले फ्राउ मार्क्सका देहान्त नहीं हो गया। जेनी यद्यपि एक जर्मन सामन्त-परिवारमे पैदा हो पाल-पोसकर बड़ी हुई थीं, लेकिन उनके जैसा समानताका भाव रखनेवाला व्यक्ति मिलना मुश्किल था। सामाजिक भेद और ऊँच-नीचका भाव उनके लिये अस्तित्व नही रखता था। उनके घरमे, उनकी मेजपर, कामके अपने मोटे-झोटे कपड़ोमें कमकरोका उतनी ही नम्रता और खुले दिलसे स्वागत होता था, जितना कि किसी ड्यूक या प्रिन्सका। सभी देशोंके बहुतेरे कमकर उनका आतिथ्य प्राप्त करते थे। मुझे निश्चय है, उनका वह इतनी सादगी और अकृत्रिम स्नेहके साथ स्वागत करती थीं, कि वह कभी ख्यालमें भी नही ला सकते थे, कि हमारी स्वागत करने वाली महिला माताकी ओरसे अर्गाइलके ड्यूककी सन्तान है, उसका भाई प्रशियाके राजाका राज्य-मन्त्री रहा है। यह बातें एक क्षणके लिये भी उनके दिमागमें नहीं आ सकती थीं। सामन्ती सब बातें अपने कार्लका अनुगमन करते समय वह छोड़ आईं। उन्होने जो यह त्याग किया, उसका कभी उनके दिलमें अफसोस नहीं हुआ—उन दिनोमें भी जबकि अभावका पहाड़ उनके ऊपर गिरता रहा।

"उनमें गम्भीरता और सदा प्रसन्न रहनेका स्वभाव था। अपने मित्रोके लिये उन्होंने जो पत्र लिखे हैं, वह एक सजीव तथा मौलिक दिमागकी अधिकारपूर्ण उपज तथा उनकी सुलभ लेखनीके स्वरस निकले भावोद्रेक हैं।...जान फिलिप बेकरने इनमेंसे कुछको प्रकाशित किया है। निष्ठुर व्यंगकार (कवि) हाइने मार्क्सके परिहासोंसे डरता था, लेकिन फ्राउ मार्क्सकी तीक्ष्ण और भावपूर्ण बुद्धिका वह बहुत बड़ा प्रशंसक था। जब मार्क्स-दम्पती पेरिसमे रहते थे, तो वह उनके घरमें बराबर अतिथि बनता था। मार्क्स अपनी पत्नीकी बुद्धि और विवेककी इतनी कदर करते थे, जैसा कि १८६६ ई० में उन्होंने मुझसे कहा था, 'मैं अपने सभी हस्तलेखोंको उसके सामने पेश करता हूँ और उसके

फैसलेको बहुत मूल्यवान् समझता हूँ।' मार्क्सकी कृतियोंको प्रेसमें भेजनेसे पहले यह उनकी कापी उतार लेती थीं।

"फ्राउ मार्क्सकी बहुत सन्तानें हुईं। उनमेंसे तीन अत्यन्त छोटी उमर हीमें मर गये।...उस समय जब कि १८४८ ई० की क्रान्तिके बाद लन्दनमें शरणार्थीके तौरपर सोहो स्क्वायरकी डीन स्ट्रीटकी दो कोठरियोंमें रहते थे, मैं उनकी तीन लड़कियोंको ही जान सका हूँ। १८६५ ई० में जब मैं पहले-पहल मार्क्ससे मिला, तो सबसे छोटी लड़की (आजकल श्रीमती एवलिंग) एक बड़ी आनन्दी बच्ची थी, जो देखनेमें लड़कीकी अपेक्षा ज्यादा लड़के जैसी मालूम होती थी। मार्क्स अक्सर कहा करते थे—मेरी पत्नीने एलिनोरको दुनियामें लानेके समय लिंगके बारेमें भूल कर दी। दूसरी दो लड़कियाँ बड़ी सुन्दरी और सुशीला थीं—एलिनोरसे उलटी। सबसे बड़ी लड़की जेनी (आजकल मदान लांग्वे) अपने बापकी तरह ही (अपेक्षाकृत साँवले रंग, काली आँखों और काले बालोंवाली थी। उससे छोटी लौरा (वर्त्तमान मदाम लाफार्ग) अपनी माँ जैसी रंग में सफेद, गालोंसे लाल और सुनहले घुँघराले बालोंवाली थी।...

"मार्क्स और उनकी पत्नी पारस्परिक निर्भरताके बन्धनोंसे घनिष्टतया आबद्ध थे। जेनीका सौंदर्य मार्क्सके लिये आनन्द और अभिमानकी चीज थी। क्रान्तिकारी समाजवादीके तौरपर उनके भिन्न-भिन्न जीवनोंके साथ अटूट रूपसे सम्बद्ध गरीबीको सहन करनेमें जेनीकी कोमलता और भक्ति उनके लिये बड़ा सम्बल सिद्ध हुआ। जिस बीमारीकी भीषण यातनाने फ्राउ मार्क्सको कब्रमें पहुँचाया, उसने उनके पतिकी आयुको भी कम कर दिया। उनकी दीर्घ और यातनापूर्ण बीमारीमें मार्क्स शारीरिक और मानसिक दोनों तरहसे विशीर्ण हो गये।...उन्हें नींद नहीं आती थी!..."

१८७८ ई० के शरद्में मार्क्सने सोर्गेको लिखा था, कि मेरी पत्नी बहुत बीमार है। एक साल बाद फिर लिखा था: "मेरी पत्नी अब भी खतरनाक रूपसे बीमार है और मैं ठीक तरहसे अपने पैरों पर खड़ा नहीं हो सकता हूँ।" पहले बीमारी का पता नहीं लगा, किन्तु काफी समयके बाद यह मालूम हो गया, कि

मार्क्स-पत्नी असाध्य नासूरसे पीडित हैं, जो कि धीरे-धीरे और भयंकर यातनाके बाद मौतके मुख में डाले बिना नही छोड़ेगा। जेनीने जीवन भर मार्क्सके लिये जिस तरह अपनेको भुलाकर सब कुछ सहा था, उनके जीवनकी अन्तिम घड़ियों-मे मार्क्सने भी उसी तत्परतासे पत्नीकी पाटी नही छोडी। परिवारकी सारी चिन्ताओ और विपत्तियोंके बोझोंसे दबी जाती जेनीने हमेशा पतिके सामने मुस्कुराते हुये आनेका प्रयत्न किया था। इतिहासमे जेनी जैसी पत्नी विरले ही महान् विचारकोंको प्राप्त हुई।

१८८१ ई० की गर्मियोंमें, जब कि बीमारी काफी बढ चुकी थी, जेनीने हिम्मत करके अपनी विवाहिता लडकियोंसे मिलनेके लिये पेरिसकी यात्रा की। बीमारी छूटनेकी आशा नहीं थी, इसलिये डाक्टरोंने यात्राके खतरेसे रोकनेकी कोशिश नही की। मदाम लाग्वेको पत्र लिखते हुये २२ जून १८८१ को मार्क्स ने अपनी यात्राके बारेमे लिखा था : "तुरन्त जवाब दो, क्योंकि मामा तब तक यहाँसे नहीं प्रस्थान करेगी, जब तक जान न ले, कि तुम लन्दनसे क्या चीज लाना पसन्द करती हो। तुम तो जानती हो, कि वह ऐसी बातें पसन्द करती है।" यात्रा अच्छी तरह सम्पन्न हुई, लेकिन लौटने पर मार्क्सपर पार्श्व-शूल (फुफ्फुस की सूजन) का जबर्दस्त आक्रमण हुआ, जिसके साथ खाँसी और निमोनिया भी मिल गई। यह बड़ी खतरनाक बीमारी थी, लेकिन अपनी लड़की एलिनोर और परमभक्ता लेनचेन डेमुथके स्वार्थत्याग और सेवाओंसे वह उस समय बच गये। एलिनोरके लिये यह बड़े परेशानीके दिन थे। उसने लिखा था : "१८८० ई० की शरद्‌मे मेरी प्यारी माँ इतनी बीमार हो गई, कि वह अपनेको चारपाईसे खडा नहीं कर सकती थी। इसी समय मूर भी फुफ्फुस-शोथके भयकर आक्रमणसे पीड़ित हुआ। यह इतनी भयंकर इसीलिये हो उठी, कि उसने सदा अपनी बीमारी की उपेक्षा की थी। डाक्टर (हमारे श्रेष्ठ मित्र डनकिन) का विचार था, कि अवस्था बिल्कुल निराशाजनक है। भयंकर समय था। सामनेके बड़े कमरेमें हमारी माँ पडी हुई थी, और पीछेवाले छोटे कमरेमें मूर। वह दोनों जो एक दूसरेके इतने घनिष्ठ थे, अब एक ही कमरेमें नहीं रह सकते थे।

"हमारी भली पुरानी लेनचेन (तुम जानते हो, हमारे लिये वह क्या थी ?)

और मैं दोनों की देखभाल करते थे। डाक्टरने कहा था, कि हमारी सेवा-सुश्रूषा-ने मूर के प्राण बचा लिये। जो भी हो, मैं अच्छी तरह जानती हूँ, कि न तो हेलेन (लेनचेन) और न मैं ही तीन सप्ताह तक कभी चारपाईपर गई। हम रात दिन खड़ीं रहतीं, और जब कभी पूरी तौरसे अशक्त हो जातीं, तो बारी-बारीसे एक-एक घंटा आराम करतीं। मूर एक बार फिर अपनी बीमारीसे उठ खड़ा हुआ। मैं उस प्रातःकालको भूल नहीं सकती, जब कि उसने माँके कमरेमें जाने-के लिये अपने पास काफी शक्ति पाई। दोनों फिर एक साथ तरुण हो गये—वह एक प्यारी तरुणी और वह एक प्यारा तरुण, दोनों मानों एक साथ जीवन-में प्रवेश कर रहे थे। उनका यह मिलन बीमारीसे कंकाल मात्र एक बूढ़े आदमी और मरती हुई एक ऐसी बुढ़िया स्त्रीका मिलन नहीं था, जो दोनों अपने जीवन में एक दूसरेसे अन्तिम बिदाई ले रहे थे।

"मूरका स्वास्थ्य बेहतर हो गया, यद्यपि वह अभी बल नहीं प्राप्त कर सका था, तो भी वह देखनेमें मजबूत मालूम होता था।...इसी समय २ दिसम्बर १८८१ को माँ मर गई। उसने अपने अन्तिम शब्द—अंग्रेजीमें यह उल्लेखनीय है—अपने कार्लको सम्बोधित करके कहे थे। जब हमारे प्यारे जेनरल (एंगेल्स) आये, तो उन्होंने कहा जिसने मुझे करीब-करीब क्रुद्ध कर दिया—"मूर भी मर गया।"

"...(मेरी माँ) एक महीने तक नासूरकी भयंकर यातनाको सहती मरणा-सन्न पड़ी रही, तो भी उसकी सुन्दर प्रकृति, असीम हाजिरजवाबी—जिसे कि तुम खूब अच्छी तरह जानते हो—एक क्षणके लिये भी उससे अलग नहीं हुई। उसने लड़केकी तरह अधीर होकर उस समय (१८८१ ई०) हो रहे जर्मनीके निर्वाचनके परिणामोंको पूछा, और हमारी विजयोंको सुनकर बड़ी प्रसन्न हुई। अपने मृत्युके समय तक वह प्रसन्न-हृदय रही और मजाक करते हुये हमारे दिलमें पैदा हुई आशंकाओंको हटानेकी कोशिश करती थी। भयंकर यातनामें पड़ी रहने पर भी वह हँसी करती—वह डाक्टर और हम सबकी हँसी उड़ाती, क्योंकि हम बीमारीके बारेमें इतनी विकलता अनुभव करते थे। करीब-करीब अन्तिम क्षण तक वह पूरी तौरसे होशमें रही। बोल सकने से पहिले उसका

अन्तिम शब्द 'कार्ल' सम्बोधित करते निकला और उसने हमारे हाथोंको दबाकर मुस्कुरानेकी कोशिश की।"

५. मार्क्सका निधन (१८८३ ई०)

मार्क्सकी लड़की एलिनोरने अपने पिताके अन्तिम समय के बारेमें लीब-क्नेख्टको लिखा था : "१८७७ ई० में मूरको फिर कार्लस्बाड जाना था, लेकिन जब पता लगा, कि जर्मनी और आस्ट्रियाकी सरकारें उन्हें निकाल बाहर करने-का इरादा रखती हैं, तो यात्राके लम्बेपन और खर्चका ख्याल करके वह फिर कार्लस्बाड नहीं गये। ..हम बर्लिन गये, जिसका मुख्य उद्देश्य था मेरे पिताके विश्वासपात्र मित्र तथा मेरे मामा एडगर फान वेस्टफालेनसे मुलाकात करना। हम कुछ ही दिनों वहाँ रहे। मूरको प्रसन्नता हुई, जब कि हमने सुना कि पुलिस हमारे होटलमे तीसरे दिन—हमारे स्थान छोड़नेसे ठीक एक घंटा बाद—ढूँढने आई थी।...

"माँके प्राणोंके साथ मूरके भी प्राण चले गये। उसने जीवनको कायम रखनेके लिये बहुत संघर्ष किया, क्योंकि वह अन्त तकका योद्धा अब जीर्ण-शीर्ण पुरुष था। उसका स्वास्थ्य बिगड़ता ही गया। अगर वह स्वार्थी होता, तो सभी चीजोंको छोड़ देता, किन्तु उसके लिये बाकी सभी चीजोंसे जो ऊपर थी—वह थी अपने आदर्शके प्रति ईमानदारी। वह अपनी महान् कृतिको पूरा करनेकी कोशिश कर रहा था, इसलिये अपने स्वास्थ्य-लाभके लिये उसने दूसरी यात्रा करना स्वीकार किया। १८८२ ई० के वसन्तमे वह पेरिस और अर्जेत्वी* गया, जहाँ मै उसे मिली और हमने जेनी और उसके बच्चोंके साथ सचमुच ही कुछ सुखमय दिन बिताये। इसके बाद मूर फ्रांसके दक्षिणमें और अन्तमे अल्जियरकी ओर गया। अल्जियर, मीस और कानेसके निवासके सारे समयमे उसे बुरे मौसिमका सामना करना पड़ा। अल्जियरसे उसने मेरे पास लम्बे पत्र लिखे, जिनमेसे बहुतोंको मैने खो दिया, क्योंकि मूरके कहनेपर मैने उन्हें जेनीके पास भेज दिया, और उसने बहुत कमको मेरे पास लौटाया।

* Argentevil

"अन्तमें जब मूर घर आया, तो वह बहुत बीमार था। हमें अब अत्यन्त-अनिष्टका डर होने लगा। डाक्टरकी सलाहसे उसने शरद और जाड़ोंको वाइट द्वीपके वेन्टनर* (कस्बे) में बिताया। मैं इसका जिक्र करना चाहूँगी, कि उस समयके मूरकी इच्छानुसार मैंने जेनीके सबसे छोटे लड़के जीन (जोनी) के साथ इतालीमें बिताया। १८८३ ई० के वसन्तमें अपने साथ जॉनीको लिये मैं मूरके पास लौटी। जानी अब भी मूरके नातियोंमें विशेष प्रिय था। मुझे लौट जाना पड़ा, क्योंकि मुझे पढ़ाने के काममें लगना था।

"और अब अन्तिम भीषण प्रहार हुआ: जेनीकी मृत्युकी खबर आई। जेनी पहिलौठी और मूरकी प्रिया पुत्री एकाएक (८ जनवरीको) मर गई। हमें उस समय मूरके पत्र मिले थे, वह उस समय मेरे सामने हैं उनमें वह लिखता है: 'जेनीका स्वास्थ्य बेहतर है और तुम (हेलेन और मैं) को भय खानेकी जरूरत नहीं।' जिस पत्रमें मूरने उपरोक्त बात लिखी थी, उसके एक घंटा बाद जेनीके मरनेका तार हमें मिला। मैं तुरन्त वेन्टनोर गई।

"अपने जीवनमें मैंने बहुत से शोकपूर्ण घंटोंका सामना किया है, लेकिन कोई इस जैसा शोकपूर्ण नहीं था। मैं महसूस कर रही थी, कि मैं अपने पिताके पास मृत्युदंड लिये जा रही हूँ। उत्सुकतापूर्ण लम्बी यात्रामें मैं अपने दिमागको यह सोचनेमें परेशान कर रही थी, कि कैसे इस खबरको उसे दूँ। मुझे इसे कहनेकी जरूरत नहीं थी, चेहरेने मेरा भेद खोल दिया—मूरने तुरन्त कहा 'हमारी जेनी मर गई!' और इसके बाद उसने मुझसे तुरन्त पेरिस जाकर बच्चों-की सहायता करनेके लिये कहा। मैं उसके साथ रहना चाहती थी—लेकिन वह किसी बातको सुननेके लिये तैयार नहीं था। मैं मुश्किलसे आधघंटा वेन्टनरमें रह पाई थी, फिर तुरन्त पेरिसके लिये रवाना होनेके वास्ते लन्दनकी शोक-पूर्ण यात्राके लिये तैयार हो गई। मूरने जो कुछ बच्चोंके बारेमें कहा था, मैंने वह किया।

"मैं अपनी वहाँकी यात्राके बारेमें नहीं कहूँगी—मैं काँपते हृदयसे उस समय

---

* Ventnor

की याद भर कर सकती हूँ—वह मानसिक यातना, वह सासत—और कुछ उसके बारेमे नहीं। यही पर्याप्त है—मै लौट आई और मूर घर लौटा मरनेके लिये।...

"अब, चूँकि मूरके दक्षिणमें प्रवासके बारेमे कुछ और बात तुम चाहते हो। हमने—मै और वह—१८८२ ई० के आरम्भमें कुछ सप्ताह जेनीके साथ अरजान्तीमें बिताये। मार्च और अप्रैलमें मूर अल्जियरमे था, मईमें मोंतेकार्लो, नीस, कानेसमें। जूनके अन्त तथा सारी जुलाई वह फिर जेनीके साथ था, उस समय लेनचेन भी अरजांत्वीमे थी। अरजांत्वीसे लौराके साथ मूर स्वीजर्लैंड, वेवे आदि गया। सितम्बरके अन्त या अक्तूबरके आरम्भमें वह इंगलैंड लौटा और फिर तुरन्त ही वेन्टनोर गया, जहाँ जानी और मै उसके पास गये।

"और अब दूसरे बच्चोंके बारेमें तुम्हारे प्रश्नोंके लिये—हमारा नन्हा एडगर (मूश) १८७४ ई० में पैदा हुआ था—पर मैं इसे निश्चयपूर्वक नहीं कह सकती—और वह १८५५ ई० के अन्तमे मरा। नन्हा फ्रांक हाइनरिख ५ नवम्बर १८४६ को पैदा हुआ और वह जब मरा, तो दो वर्षका था। मेरी नन्ही बहन फ्रांसिस्का १८५१ ई० मे पैदा हुई, और करीब ११ महीनेकी हो शैशवमे ही मर गई।"

प्रिया पत्नीके मरने (२ दिसम्बर १८८१) के बाद मार्क्स (मृत्यु १४ मार्च १८८३) के १५ महीनोके समयमें फिर दोनों मित्र अधिकतर एक दूसरेसे अलग रहने लगे। अलग रहनेका एक फायदा यह हुआ, कि अब फिर उनके बीचमे पहलेकी तरह पत्र-व्यवहार शुरू हो गया, जिसमें जीवनकी दुःखपूर्ण घड़ियोका मार्मिक वर्णन मिलता है और पता लगता है कि इस शक्तिशाली पुरुषको भी, सभी मनुष्योंके भाग्यमें जीवनका जो निष्ठुर विघटन बदा है, उसका सामना करना पड़ा। इस समय भी अभी मार्क्सको अपनी बाकी शक्ति अपने जीवन-उद्देश्यको पूरा करनेमें लगानेका ख्याल था। १५ दिसम्बर १८८१ को उन्होंने सोर्गेको लिखा था: "पिछली बीमारीसे मै डबल लुंज हो निकला हूँ: मानसिक तौरसे लुंज अपनी पत्नीके मरनेके कारण और शारीरिक तौरसे इस-

लिये कि बीमारीके कारणने फुफ्फुस-शोथ और स्वासनालीकी बढ़ी हुई खरखरा-हटको मेरे साथ लगा दिया। अपने स्वास्थ्यको फिरसे प्राप्त करनेके प्रयत्नमें मुझे अपने समयका कुछ भाग हाथसे खोना पड़ेगा।" लेकिन, जो समय मार्क्सको देना पड़ा, वह जीवनके अन्तिम क्षणों तक का था। वह फिर अपने स्वास्थ्यका सुधार नहीं कर सके।

सितम्बर (१८८२ ई०) में जब वह गेनेवा-सरोवरसे लौटे थे, तो काफी मजबूत मालूम होते थे और अक्सर हेम्प्सटेडहीथ टहलने जाया करते थे। वह उनके घरसे ३०० फुट ऊँचा था, तो भी चलनेमें उन्हें भारी थकावट नहीं मालूम होती थी। अब उन्होंने फिर अपने काममें लगनेका इरादा किया। डाक्टरोंने उन्हें जाड़ोंमें लन्दनमें रहनेसे मना कर दक्षिणी समुद्रतट पर रहनेकी अनुमति दी थी। नवम्बरमें लन्दनकी धुन्द बढ़ने लगी, तो वह फिर वेन्टनर गये, लेकिन वहाँ भी बदली और धुन्द उसी तरहकी मिली, जैसी कि पिछले जाड़ोंमें अल्जियर और मोंतेकार्लोमें मिली थी। फिर उन्हें सर्दी लग गई, ताजी हवामें स्वास्थ्यकर चहलकदमी करनेकी जगह वह अपने घरमें रहकर अधिक और अधिक कमजोर होनेके लिये मजबूर हुये। अब लिखने-पढ़नेका कुछ भी काम करना असम्भव था, यद्यपि साइन्सकी प्रत्येक प्रगतिकी ओर उनका ध्यान लगा रहता था। जब फ्रांसमें तरुण कमकरोंकी पार्टीमें फिर हलचल शुरू हुई, तो वह अत्यन्त असंतुष्ट हो अपने दोनों दामादोंके बारेमें कह उठे: "लांग्वे चरम प्रूधनवादी और लाफार्ग चरम बकुनिनिस्ट। शैतान उन्हें ले जाये।" इसी समय मार्क्सके मुँहसे वह वाक्य निकला था, जिसे समाजवादके विभीषण दोहराया करते हैं: 'जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, निश्चय ही मैं मार्क्सवादी नहीं हूँ।' यह कहनेकी आवश्यकता नहीं कि मार्क्स किसी तरहके रूढ़िवादके विरुद्ध थे, और वह लकीरका फकीर किसीको देखना नहीं चाहता था।

११ जनवरी १८८३ को अपनी ज्येष्ठा पुत्री जेनीके मरनेका जबर्दस्त प्रहार मार्क्सके हृदयपर पड़ा। उसके साथ ही सर्दी-खाँसी और कंठनालीकी असह्य पीड़ा आरंभ हुई। अब उन्हें कुछ भी निगलना मुश्किल हो गया। "भीषणसे भीषण पीड़ाओंको जो बेपर्वाहीसे सहन करते रहे, अब उन्होंने अधिक ठोस

आहारके लेनेका प्रयत्न फिर न करके दूध पीना अच्छा समझा, जिसे कि वह तमाम जीवनमें नापसन्द करते रहे।" फर्वरीमें एक फेफड़ेमें गाँठ निकली। कोई दवा अब काम नहीं कर रही थी—पन्द्रह महीनोंसे दवाइयाँ लेते-लेते अब शरीरपर उनका प्रभाव नहीं पड़ रहा था। दवाओंने बल्कि भूखको बन्द और पाचनशक्तिको कम कर दिया। वह दिन-दिन घुलते जा रहे थे, लेकिन डाक्टर निराश नहीं थे, क्योंकि पीछे गलेकी शिकायत और खाँसी दूर होनेसे निगलना आसान हो गया। लेकिन, यह केवल ऊपरी दिखावा था। मार्क्सके पास मृत्यु ढिंढोरा पीटकर नहीं आना चाहती थी। १४ मार्च १८८३ के अपराह्नमें चुपचाप आरामकुर्सीपर बैठे मार्क्सको विना किसी पीड़ाके मृत्युने अपने कोमल हाथोंसे अनन्त निद्रामें सुला दिया।

एंगेल्सको अपने आजीवन बन्धुके प्रति जितना प्रेम था, उसके कारण उन्हें जो दुःख हुआ, उसे आसानीसे समझा जा सकता है। बुद्धके शब्दोंमें वह भी कह सकते थे "कुतोत्थ लब्भा" (वह—मृत्युसे छुटकारा—कहाँ मिलनेवाला है)। एंगेल्सने कहा था : "डाक्टरोका कौशल शायद एक असहाय व्यक्तिके जीवनको एकाएक नहीं, बल्कि इंच-इंच करके मरनेके लिये, तथा डाक्टरी पेशेके यशको बढ़ाते कुछ और सालो तक घसीटकर ले जाना सम्भव कर देता। लेकिन, हमारे मार्क्स कभी इसे बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। अपने सामने इतनी मात्रामें अपूर्ण कामको देखना, उसे समाप्त करनेकी तरसानेवाली इच्छाका बर्दाश्त करना तथा यह समझना कि मैं कभी उसे नहीं कर सकूँगा—यह उससे हजार गुना कड़वा होता, जितना कि कोमल मृत्युने उन्हें ले कर किया, एपिकुरुकी तरह वह कहा करते थे : 'मरनेवालेके लिये मृत्यु कोई दुःखकी बात नहीं, बल्कि उनके लिये दुःखकी बात है जो बच रहते हैं।' इस महान् प्रतिभाको डाक्टरी विद्याके भारी यश...के लिये घुलानेसे हजार गुना बेहतर है, जो कि हम उन्हे उस कब्र-की ओर ले जा रहे हैं, जहाँ उनकी पत्नी पड़ी है।'

इस प्रकार १४ मार्च १८८३ को मेटलैंड पार्कमे मार्क्स लड़कीके शब्दोंमे : . .तुम जानते हो कि मैटलेंड पार्कमे अपने शयनकक्षसे अध्ययनकक्षमे गये, आरामकुर्सीपर बैठे और शान्तिके साथ सो गये।

"जेनरल (एंगेल्स) ने उस कुर्सीको जीवनभर अपने पास रक्खा, फिर अब वह मेरे पास है।"

१५ मार्च १८८३ को एंगेल्सने अपने अमेरिकन मित्र सोर्गेको लिखा था :

"कल अपराह्नमें ढाई बजे उनसे मिलनेके सबसे अच्छे समय में उन्हें देखने गया। सबकी आँखोंमें आँसू थे, जान पड़ता था प्रलय आ गई। मैंने पूछताछ करते बातकी सच्चाई तक पहुँचनेकी कोशिश की, जिसमें कि सान्त्वना दे सकूँ। हल्कासा रक्तस्राव हुआ था, और एकाएक सर्वनाश आ मौजूद हुआ। हमारी भली पुरानी लेना—जिसने उससे कहीं बेहतर सेवा-सुश्रूषा की, जितनी कि माँ अपने बच्चेके लिये करती है—ऊपर गई और फिर नीचे आई। 'वह अर्धनिद्रित हैं'—उसने कहा और यह भी कि 'मैं ऊपर जा सकता हूँ।' जब हम भीतर गये, तो वहाँ लेटे पड़े थे, सोये थे फिर कभी न जागनेके लिये। नाड़ी और साँस बन्द हो गई थीं, इन दो मिनटोंके भीतर बिना पीड़ाके शान्तिपूर्वक वह अनंतनिद्रामें चले गये।...मानवताके पास अब एक सिर कम है, लेकिन सचमुच आजका वह अत्यन्त महत्वपूर्ण सिर था। मजदूर-वर्गका आन्दोलन अपने मार्क्सका अनुसरण करेगा, लेकिन उसका वह केन्द्रविन्दु चला गया, जिसकी ओर निर्णायक क्षणोंमें अपनी इच्छासे फ्रेंच, रूसी, अमेरिकन और जर्मन ऐसी स्पष्ट निर्भ्रान्त सलाहको पानेके लिये सदा आते थे, जिसे केवल एक प्रतिभा और पूर्ण अधिकार रखनेवाला ही दे सकता था।"

६. अन्तिम विश्राम-स्थान

मृत्युके तीन दिन बाद १७ मार्च सनीचर के दिन (१८८३ ई०) कार्ल मार्क्सको उनकी सती पत्नी जेनीकी कब्रमें लिटा दिया गया। एक ओर यह महान् प्रतिभा दुनियासे बिदाई ले रही थी, दूसरी ओर उसी समय उसका वास्तविक उत्तराधिकारी १३ वर्षका हो रहा था, यद्यपि अभी उसे यह नहीं मालूम था, कि मार्क्सकी ज्योति उसके हृदय और मस्तिष्कमें समाने जा रही है। मार्क्सके कामको पूर्णता तक पहुँचाना उसीके हाथमें बदा था। उसीने मार्क्सके आदर्शोंको दुनियाके एक छठे हिस्सेपर सजीवरूपसे सफलतापूर्वक स्थापित किया,

किन्तु इस दूसरी महान् प्रतिभा (लेनिन) के बारेमे हम अन्यत्र कहनेवाले हैं।* मार्क्सकी इच्छाके अनुसार परिवारने इस अन्त्येष्टि-क्रियाको बहुत सीधे-सादे-ढंगसे किया। कब्रिस्तानमें मार्क्सके थोड़ेसे मित्र पहुँचे जिनमें एंगेल्स, लेस्नेर, लोखनेर (कम्युनिस्ट लीगके जमानेके उनके दोस्त), फ्रांससे दोनो दामाद लाफार्ग और लाग्वे, तथा जर्मनीसे उनके शिष्य लीब्क्नेख्ट उपस्थित थे। साइन्सके दो प्रमुख अग्रदूत रसायनशास्त्री शोरलेमेर और प्राणिशास्त्री रेलेकेस्टर मौजूद थे। एंगेल्सने अंग्रेजीमें विदाईका भाषण दिया, जो कि उसी तरह मानवताकी एक मधुर थाती और पथ-प्रदर्शनके लिये भारी सहारा है, जिस तरह लेनिनकी कब्रपर स्तालिन के मुँहसे निकले शब्द :

१४ मार्चके अपराह्नमें पौने ३ बजे जीवित महानतम चिन्तकने चिन्तन छोड़ दिया। दो मिनट अकेला रहनेके बाद जब हम भीतर गये, तो देखा, कि वह कुर्सीपर आरामसे, किन्तु सदाके लिये सोये हैं।

इस क्षतिका मात्राकन करना असम्भव है, जो कि इस पुरुषकी मृत्युके साथ यूरोप और अमेरिकाके लड़ाके सर्वहारा और ऐतिहासिक विज्ञानने उठाया है। जल्दी ही हम उस विच्छेद (भेदन) को काफी अनुभव करेंगे, जिसे कि इस जबर्दस्त पुरुषकी मृत्युने पैदा किया है।

"जैसे डारविनने प्रकृतिमे विकासके नियमके कानूनका आविष्कार किया, उसी तरह मार्क्सने मानव-इतिहासमें विकासके कानूनका आविष्कार किया : यह सीधा-सादा तथ्य, जो कि पहले वादोके जङ्गलमे छिपा हुआ था—कि मानव प्राणीको सबसे पहले खाने, पीने, वास और पहननेकी जरूरत होती है, इसके पहले कि उसका ध्यान राजनीति, साइन्स, कला और धर्मकी ओर जाये। इसीलिये जीवनके नजदीकके भौतिक साधनोका उत्पादन अतएव लोगोंके आर्थिक विकासकी सीढ़ी या काल वह आधार है, जिसके ऊपर राज्य-संस्थायें, कानूनी सिद्धान्त, कला और लोगोंके धार्मिक विचारभी विकसित हुये हैं।

"लेकिन, इतना ही नहीं, मार्क्सने आजकलके पूँजीवादी उत्पादनके ढग,

---

* "लेनिन", जिसे लिखा जा चुका है।

उससे उत्पादन और बूर्ज्वा समाज-व्यवस्था उत्पादन के विकासके विशेष कानूनका आविष्कार किया। अतिरिक्त-मूल्यके आविष्कारके साथ ही उन्होंने उस अन्धकारपर एकाएक प्रकाश डाला, जिसमें कि बूर्ज्वा और समाजवादी दोनों ही प्रकारके दूसरे अर्थशास्त्री भटक रहे थे।

"इस तरहके दो आविष्कार किसी एक जीवनके लिये पर्याप्त थे। सचमुच वह सौभाग्यशाली है, जो कि इनमेंसे एकको भी ढूँढ़ निकालनेमें सफल हो। लेकिन मार्क्सने जिस किसी क्षेत्रमें अनुसन्धान किया (ऐसे क्षेत्र बहुत थे और उनमेंसे कहीं भी मार्क्सका अनुसन्धान पल्लवग्राही नहीं था।) उन्होंने स्वतन्त्र आविष्कार किये—गणितके क्षेत्रमें भी।

"वह एक साइन्सके पुरुष थे, लेकिन इससे ही उनका व्यक्तित्व पूरा नहीं होता। मार्क्सके लिये साइन्स एक सृजनात्मक ऐतिहासिक और क्रांतिकारी शक्ति थी। सैद्धान्तिक साइन्सके इस या उस क्षेत्रमें ऐसे नये आविष्कारसे उनको आनन्द जरूर प्राप्त होता था, जिसके व्यावहारिक फल शायद अभी दिखाई नहीं पड़ रहे हैं। किन्तु और भी बड़ा नया आविष्कार था, जो एक क्रान्तिकारी ढंगसे औद्योगिक विकासको, सारे ऐतिहासिक विकासको लेते, तुरन्त प्रभावित करता है। उदाहरणार्थ बिजली साइन्सके क्षेत्रमें आविष्कारोंके विकास और अन्तिम समयमें मार्सेल देपरेजके कामको वह बहुत दिलचस्पीके साथ देख रहे थे।

"चूँकि सबसे ऊपर मार्क्स एक क्रांतिकारी थे। जीवनमें उनका महान् लक्ष्य था पूँजीवादी समाज और उसके द्वारा पैदा की गई राज्य-संस्थाओंको उलट फेंकनेमें सहयोग देना, और उस आधुनिक सर्वहाराकी मुक्तिके प्रयत्नमें सहयोग देना, जिसके लिये उन्होंने पहले-पहल उसकी मुक्तिके लिये आवश्यक स्थितियोंका ज्ञान प्रदान किया। इस संघर्षमें उनका असली रूप दिखाई पड़ता था। वह बड़े उत्साह तथा ऐसी सफलताके साथ लड़ते रहे, जो कि बहुत कमको मिली है—पहले १८४२ ई० में "राइनिशे जाइटुंग", पेरिसमें १८४४ ई० में "फोरवार्ड", १८४७ ई० में "ड्वाशे-ब्रूजेलेर जाइटुंग", १८४८-४९ ई० में "नोये राइनिशे जाइटुंग", १८५२-६१ ई० में "न्यूयार्क ट्रिब्यून"—और फिर

बहुत सी खंडनात्मक कृतियाँ, पेरिस, ब्रुशेल्स और लन्दनमें संगठन-सम्बन्धी काम और अन्तमें इन सबसे बढकर महान् इन्टर्नेशनल कमकर-एसोसियेशन सचमुच यही अकेला जीवनका अभिमान करने लायक काम होता, चाहे उसके निर्माताने और कुछ भी नही किया होता।

"और इसीलिये मार्क्स अपने युगके सबसे अधिक घृणित और अत्यधिक गाली पानेवाले पुरुष थे। निरकुश और गणतंत्री दोनो प्रकारकी सरकारोंने उन्हें अपने देशसे निकाल बाहर किया, टोरी और चरम जनतान्त्रिक बूर्ज्वा भी उन्हें कलंकित करनेके अभियानमें होड लगाये रहे। उन्होंने इस सबको मकडी के जालेकी तरह एक ओर बुहार दिया, उपेक्षित किया। और मजबूर होनेपर ही जवाब दिया। वह साइबेरियन खानोसे यूरोप होते अमेरिकाके कलिफोर्नियाके तट तक करोड़ों क्रातिकारी कमकरों द्वारा सम्मानित स्नेहपात्र हो उन्हें शोकाकुल करते मरे। मैं यह कहनेकी हिम्मत रखता हूँ, कि यद्यपि उनके बहुतसे विरोधी थे, लेकिन वैयक्तिक शत्रु मुश्किलसे कोई था।

"उनका नाम शताब्दियों तक जीता रहेगा, और उसी तरह उनकी कृतियाँ भी"। मार्क्सकी समाधि लन्दनके हाईगेटकी कब्रोके जंगलमे है, जिसका पता लगाना आसान काम नहीं है। १९३२ ई० मे इन पंक्तियोंके लेखकने मानवता-के उस परम पुनीत तीर्थकी यात्रा करते हुये निम्न पंक्तियोंको लिखा था :

"६ नवम्बरको श्री एलिस मेरे साथ हुये। ऋषि मार्क्सकी समाधि देखने जाना था। टैक्सी करके हम लोग हाईगेटके उस कब्रिस्तानपर चले, जहाँ संसारका वह महान् उद्धारक और तत्ववेत्ता आखिरी नींद ले रहा है। जानेपर मालूम हुआ, कि वहाँ इस नामके दो कब्रिस्तान हैं—एक रोमन कैथलिकोके लिये और दूसरा दूसरोंके लिये। रोमन कैथलिक कब्रिस्तानमें भला उस घोर नास्तिकको कहाँ जगह मिल सकती थी? हम लोग दूसरे कब्रिस्तानकी ओर गये। फाटकपर फूल बिक रहे थे। हम तो देवताके स्थानपर जा रहे थे, इसलिये श्री एलिससे कहा कि फूल ले लीजिये। कब्रिस्तानके सिपाहीसे पूछा। वह उस त्राणकर्त्ताकी कब्रसे वाकिफ नहीं था। दूसरे (आदमी) ने बतलाया—मैं जानता हूँ। थोड़ी देरमें छोटी-छोटी (यानी गरीबोंकी) कब्रोंको पारकर हम उस कब्रके

सामने पहुँच गये। गरीबीके उद्धारकको गरीबोंके बीच ही सोना चाहिये, और सो भी एक गरीब ही गड्ढेमें। आस-पासकी कब्रोंसे इतना ही फर्क है, कि सिरहाने किसीने काँच जड़े गौखेमें कुछ नकली फूल और शायद लाल झंडा रख दिया है। इसी चार हाथ लंबी दो हाथ चौड़ी जमीनके नीचे—जिसके ऊपरी भागमें सिर्फ गच की हुई चौकोर मेखला मात्र है—कार्ल मार्क्स, उनकी स्त्री, उनका नाती एक और...चार प्राणी लेटे हुये हैं। गरीबोंके हितके लिये अपने जीवनमें वह यातनायें सहता रहा, दरबदर फिरता रहा और आज वह ऐसी गुमनाम जगहमें सोया पड़ा है, जबकि मनुष्य जातिके एक पंचमांशने उसको अपना गुरु मान लिया है, और बाकी जगहोंमें भी यदि उसकी दवाको समझाकर पूछा जाय, तो तीन-चोथाई लोग उसीके होंगे।"

लीवक्नेख्टने आजसे आधी शताब्दी पहले लिखा था :

"हम समाजवादी-जनतांत्रिकोंके पास न सन्त हैं और न सन्तोंकी समाधियाँ, लेकिन करोड़ों मानव श्रद्धा और कृतज्ञताके साथ उस पुरुषकी ओर देखते हैं, जो कि लन्दनके उत्तरके इस कब्रिस्तानके भीतर विश्राम कर रहा है। आजसे एक हजार वर्ष बाद—उस समय जब कि मजदूर वर्गकी मुक्तिके प्रयत्नके लिये जिस बर्बरता और संकीर्ण हृदयताका मुकाबिला करना पड़ रहा है, अतीतकी अविश्वसनीय कथा बन जायेगी—स्वतन्त्र और भद्र मानव उस समय भी नंगे सिर इस समाधिके पास खड़े होकर अपने बच्चोंको कहेंगे : 'यहाँ सोया है कार्ल मार्क्स!'

मार्क्सके महान् जीवनसे इतिहासमें यदि दिमाग और विशाल हृदयतामें किसीकी कुछ तुलना की जा सकती है, तो वह बुद्ध ही हो सकते हैं। उनके मृत्युस्थानके बारेमें भी कहा गया था : "श्रद्धालु कुलपुत्रके लिये यह...स्थान दर्शनीय...है।...श्रद्धालु यहाँ...आवेंगे दर्शनार्थ।"

समाधिके ऊपर संगमर्मरकी पट्टीपर निम्न अभिलेख उत्कीर्ण है :

"जेनी फान वेस्टफालेन
प्रिया पत्नी

कार्ल मार्क्सकी
जन्म १२ फर्वरी १८१४
मृत्यु २ दिसम्बर १८८१
और कार्ल मार्क्स
जन्म ५ मई १८१८, मृत्यु १४ मार्च १८८३
और हेरी लांग्वे
उनका नाती
जन्म ४ जुलाई १८७८, मृत्यु २० मार्च १८८३
और हेलेन डेमुथ
जन्म १ जनवरी १८२३, मृत्यु ४ नवंबर १८९०"

७. हेलेन डेमुथ

हेलेन डेमुथके रूपमें सर्वहारा साकार बनकर मार्क्सके सामने बना रहा। हेलेन जिसे लेनचेनके नामसे भी पुकारा जाता था, आयुमें मार्क्ससे पाँच वर्ष जेनी वेस्टफालेनसे नौ वर्ष छोटी थी। वह एक किसानकी लड़की थी और जेनी के मार्क्ससे व्याह करनेसे पहले ही छोटी उमरमे ही वेस्टफालेन सामन्त-परिवारो में नौकरानी बनकर आई। हेलेनका जेनीके साथ बड़ा प्रेम हो गया था। व्याहके बाद वह फ्राउ मार्क्सको छोड़नेके लिये तैयार नहीं थी। वह जेनीके साथ मार्क्सके परिवारमे चली आई। उसके बादसे आजीवन वह मार्क्स परिवारका एक व्यक्ति बनकर रही और अपने सर्वस्वत्यागमें वह सामन्ती युगके किसी अत्यन्त त्यागमूर्ति स्वामिभक्त स्त्री से भी बढ़कर थी। जब परिवार पेट-भर खाता, तो हेलेन भी तृप्त रहती थी। जब दाने-दानेके लाले पड़ते, तो वह भी कभी शिकायत नहीं करती। घरकी वह नौकरानी नहीं, बल्कि परिवारकी माता और प्रबन्धिका, रसोईदारिन, घरकी सेविका थी। वह बच्चोको कपड़ा पहनाती और उनके लिये फ्राउ मार्क्सकी सहायतासे कपड़ा सीती। वह गृहकी चौकीदारिन थी और साथ ही उसकी मालकिन भी। मार्क्सके बच्चे उसे माँ-की तरह प्यार करते थे, और वह भी अपने प्रेमके कारण उनके ऊपर माँ जैसा

प्रभाव रखती थी। मार्क्स और उनकी पत्नी दोनों उसके साथ अपने प्रिय मित्रकी तरह बर्ताव करते थे। मार्क्स हेलेनके साथ शतरंज खेला करते और कितनी ही बार इस किसान-पुत्रीसे बुरी तौरसे हारते। हेलेनका परिवारके प्रति अन्धा-पक्षपात था—वहाँ जो कुछ होता वह सब ठीक था, भली बात छोड़कर वहाँ कोई दूसरी बात नहीं की जा सकती। मार्क्सकी जरा भी आलोचना हुई कि भिड़का छत्ता छू दिया। जिन लोगोंका मार्क्स-परिवारके साथ घनिष्ठ सम्बन्ध था, उसके लिये हेलेनका हृदय सदा स्वागतके वास्ते तैयार था। मार्क्स और उनकी पत्नीके मरनेके बाद वह एंगेल्सके पास चली गई, तरुणाईसे ही उसका एंगेल्सके साथ परिचय था और मार्क्स-परिवारकी तरह ही एंगेल्सके साथ उसका प्रेम था।

लीब्क्नेख्टने लेनचेन (हेलेन) के बारेमें लिखा है: "जबसे मार्क्स-परिवार स्थापित हुआ, तबसे ही लेनचेन मार्क्सकी, एक लड़कीके शब्दोंमें सर्व-श्रेष्ठ अर्थोंमें घरकी आत्मा, सभी कामोंकी करनहारी बन गई। क्या कोई भी ऐसी चीज थी, जो उसे न करना पड़ता हो? क्या ऐसी कोई चीज थी, जिसे वह आनन्दपूर्वक न करती हो? इसके लिये मैं उसकी उन अत्यन्त नापसन्दको भी करनेके लिये मजबूर उन बहुत सी रहस्यमय यात्राओंकी याद दिलाऊँगा, जोकि वह हितकारी, तीन पीतलकी घंटियोंवाले "चचा" के पास जानेके लिये करती थी। वह सदा प्रसन्नमन हँसती और सहायता करनेके लिये तैयार रहती। यही नहीं वह कुछ भी हो जाती थी, और मूरके शत्रु उसे बड़ी भयंकर घृणाकी दृष्टिसे देखते थे।

"अगर फ्राउ मार्क्स स्वस्थ न होती, तो लेनचेन माँकी जगह काम करती—दूसरे समयोंमें भी बच्चोंके लिये वह दूसरी माँ थी और उसका बड़ा ही मजबूत और दृढ़ मनोबल था, जिसका होना वह आवश्यक समझती थी।

"लेनचेन, जैसा कि हमने कहा, एक प्रकारसे अधिनायकताका बर्ताव करती थी। घरके सम्बन्धके बारेमें ठीक तरहसे बतलानेके लिये मैं कह सकता हूँ: घरमें लेनचेन अधिनायक (डिक्टेटर) थी, फ्राउ मार्क्स शासक और मार्क्स मेमनेकी तरह इस अधिनायकताको शिरोधार्य करते थे। कहा जाता है,

अपने सेवककी आँखोंमें कोई भी बड़ा आदमी नहीं है। निश्चय ही मार्क्स भी लेनचेनकी आखोंमें वैसे ही थे। लेनचेनने उनके लिये अपनेको बलिदान कर दिया वह उनके, फ्राउ मार्क्स और प्रत्येक बच्चेके लिये आवश्यक तथा सम्भव होनेपर सौ बार कुर्बान हो सकती थी—सचमुच उसने ऐसा ही किया अपने जीवनको बलिदान दिया। किंतु मार्क्स उसपर प्रभाव नहीं डाल सकते थे। वह उनके सभी मूडों और कमजोरियोंको जानती थी और उन्हें अपनी कानी अँगुलीपर नचाती थी। मार्क्सका मूड किसी समय चाहे कितना ही चिड़चिड़ा हो, चाहे वह ऐसे तूफानी क्रोधमें पड़े हों, कि दूसरा हरेक आदमी उनसे अलग रहनेमें ही खैरियत समझता हो, लेकिन लेनचेन सीधे सिंहकी माँदमें चली जाती। अगर वह गुर्राते, तो वह जबर्दस्ती लेविटेकसके वाक्योंको उनके सामने पढ़ती और सिंह पालतू मेमना बन जाता।"

मार्क्सकी पुत्री एलिनोरने लेनचेन बारेमें लिखा है: "हेलेन...मेरे माता-पिताके पास उनके विवाहसे तुरन्त बाद पेरिस जानेके पहले आई या पीछे, यह मैं नहीं बतला सकती। मैं इतना ही जानती हूँ, कि मेरी नानीने इस तरुण लड़कीको मेरी माँके पास यह कहकर भेजा कि सबसे बढ़िया चीज जो भेज सकती हूँ, वह मेरी ईमानदार प्रिय लेनचेन है। और ईमानदार प्रिय लेनचेन हमारे माता-पिताके साथ सदा बनी रही। कुछ समय बाद उसकी छोटी बहन मरियम भी आ गई।"

लीबक्नेख्टने लेनचेनके मार्क्स और एंगेल्सकी कब्रके भीतर जगह पानेका जिक्र करते हुये लिखा है: "परिवारकी कब्रमें केवल मृत पुत्र और नातियोंने ही स्थान नहीं, बल्कि उस भक्त लेनचेन, हेलेन, डेमुथने भी स्थान पाया, जो कि खूनका सम्बन्ध न होनेपर भी परिवारकी थी। उसे परिवारकी कब्रमे रखना होगा, इसका निर्णय फ्राउ मार्क्सने ही कर लिया था, जिसे उनके बाद, मार्क्सने भी स्वीकार किया। एंगेल्स और एकहार्टने मिलकर भक्त लेनचेनके प्रति इस कर्त्तव्यको पूरा किया। .." लीबनेख्टके माँगनेपर एलिनौरने अपने माता-पिता के बारेमें लिखने हुये कहा था: "लेनचेनको न भूलना!" इसपर लीबक्नेख्ट लिखता है: "मैं लेनचेनको नहीं भूला, उसे कभी नहीं भूल सकता। क्या वह

सचमुच मेरे लिये चालीस सालों तक मित्र नहीं थी ? क्या लन्दनके शरणार्थी दिनोंमें सचमुच अक्सर वह मेरे लिये 'भाग्य' नहीं बनी ? कितनी बार उसने मेरा पाकेट खाली रहनेपर मुझे ६ पेन्स देकर नहीं सहायता की, यह ऐसे समय जब कि मार्क्सके परिवारकी स्थिति बहुत हीन नहीं होती, यदि वह हीन होती तो लेनचेनको कुछ मिलनेवाला नहीं था। कितनी ही बार जबकि मेरी दर्जीकी कला पर्याप्त नहीं होती तो वह मेरे कुछ अत्यन्त आवश्यक कपड़ोंको—जिन्हें उस समय आर्थिक कठिनाइयोंके कारण नया बनाने की कोई सम्भावना नहीं होती—वह बड़े कला पूर्ण ढंगसे रफू करके कुछ सप्ताह और पहनने लायक बना देती।

"जब मैंने लेनचेनको पहले-पहल देखा, उस समय वह २७ वर्षकी थी। यद्यपि उसे सुन्दरी नहीं कहा जा सकता, तो भी वह बहुत आकर्षक चेहरेवाली, हट्टी-कट्टी तथा प्रियदर्शना थी। उसके लिये प्रेमियोंकी कमी नहीं थी। उसे बार-बार ब्याहका अच्छा अवसर मिला, किन्तु बिना किसी तरह की शपथ लिये उसके ईमानदार हृदयके वास्ते साधारण सी बात थी, कि वह मूर, फ्राउ मार्क्स और बच्चोंके साथ बनी रहे। वह बनी रही—उसकी जवानीके वर्ष बीत गये। अभाव और दरिद्रता, सौभाग्य और दौर्भाग्य में वह बनी रही। उसका पहला विश्राम उस समय आया, जबकि मृत्युने उस स्त्री और पुरुषको मार गिराया, जिनके साथ उसने अपने भाग्यको जोड़ दिया था। उसने एंगेल्सके यहाँ विश्राम पाया और उसके यहाँ ही अन्त तक अपनेको बिल्कुल भूलकर वह मरी। अब वह परिवारकी कब्रमें आराम ले रही है।

८. मार्क्सके सम्बन्धमें

मार्क्सके मौलिक सिद्धान्तों—दार्शनिक भौतिकवाद, द्वन्द्ववाद, इतिहासकी भौतिक व्याख्या, आर्थिक सिद्धान्त—मूल्य, अतिरिक्त-मूल्य, समाजवाद और वर्ग-संघर्षका बहुत संक्षिप्त और सुन्दर विवेचन उनके उत्तराधिकारी लेनिनने किया है, जिसे हम "लेनिन" में देंगे। अपनी दोनों बेटियों जेनी और लौराके साथ पहेलीके रूपमें मार्क्स निम्न प्रश्नोत्तर कराते थे :

तुम्हारा प्रिय गुण—सादगी

मनुष्यमें तुम्हारा प्रिय गुण—शक्ति (बल)।

स्त्रीमे तुम्हारा प्रिय गुण—निर्बलता।

तुम्हारी मुख्य विशेषता—लक्ष्यके प्रति एकात भक्ति।

सुखके बारेमें तुम्हारा विचार—लड़ना।

दुःखके बारेमें तुम्हारा विचार—आत्मसमर्पण।

अत्यन्त त्याज्य तुम्हारे लिये दुर्गुण—क्षुद्रता।

सबसे बुरा जिस दुर्गुणको तुम मानती—दास-मनोवृत्त।

तुम्हारी घृणाकी वस्तु—मार्टिन टपर।

प्रिय व्यवसाय—किताबका कीड़ा बनना।

कवि—शेक्सपियर, एशिलस, गोयथे।

गद्य-लेखक—दिदेरो।

नायक—स्पार्टेक्स, केपलेर।

नायिका—ग्रेशेन।

फूल—डेफनी।

रंग—लाल।

नाम—लौरा, जेनी।

थाल—मछली।

प्रिय सूत्र—कोई मानवोचित बात मेरे लिये पराई नहीं।

प्रिय आदर्श-वाक्य—हरेक चीजपर सन्देह करो।

अध्याय २०

एंगेल्स (१८५०-९५ ई०)

१. योग्य सहकर्मी

एंगेल्सके बारेमें हम देख चुके हैं, कि वह मार्क्सके लिये एक प्राण दो शरीर जैसे थे। मार्क्सकी लड़कियाँ उन्हें द्वितीय पिता मानतीं और प्यारसे "जेनरल" कहकर पुकारतीं। वह मार्क्सके बहिश्चर प्राण थे। बहुत सालों तक जर्मनीमें दोनोंके नाम एक साथ लिये जाते थे और इसमें शक नहीं इतिहास-में सदा उनका नाम साथ-साथ लिया जायगा। जब एंगेल्सने मैन्चेस्टरसे १८७० ई० में विदाई ले लन्दनमें आकर रहनेका निश्चय प्रकट किया, तो मार्क्सके परिवारमें कई दिनों तक इसकी चर्चा रही और मार्क्स तो आगमनके दिन बच्चोंकी तरह अधीर होकर एक-एक घड़ीकी प्रतीक्षा कर रहे थे। फिर वह शुभ घड़ी आई, दोनों मित्रोंने सारी रात चुरुट और शराब पीने तथा बातें करनेमें बिता दी। तबसे १८८३ ई० में मृत्युके समय तक लन्दनमें रहते शायद ही कोई दिन बीतता, जबकि एक या दूसरेके घरमें दोनों न मिलते।

मार्क्स एंगेल्सकी रायको सबसे ज्यादा मानते। एंगेल्स उनके लिये सबसे योग्य सहकारी थे। एंगेल्स मानो उनके लिये सारी जनता थे। यदि एंगेल्सको उन्होंने मना लिया, तो सारी दुनिया मान लेगी—मार्क्सका यह विश्वास था। एंगेल्सकी रायको बदलकर अपनी बात मनवानेके लिये छोटी-छोटी बातोंके वास्ते, वह तथ्योंको ढूँढ़ते कितनी ही जिल्दें पढ़ जाते। मार्क्सको अपने मित्रका भारी अभिमान था। लाफार्गने लिखा है : "उन्होंने अपने मित्र (एंगेल्स) के सभी नैतिक और बौद्धिक गुणोंको बड़ी प्रसन्नतासे दोहराया और मुझे एंगेल्सको दिखलानेके लिये मैन्चेस्टरकी एक विशेष यात्रा की। एंगेल्सके ज्ञान की भारी गम्भीरताकी वह बड़ी प्रशंसा करते थे और उनके साथ कोई दुर्घटना न हो जाये, इसके लिये बड़े चिन्तित रहते थे। एक दिन मार्क्सने उनसे कहा—

"मैं सदा काँपता रहता हूँ। देशके आरपार पागलों जैसे घोड़ा दौड़ानेमें कहीं वह नीचे न गिर जाये।"

२. मैन्चेस्टरमें (१८५० ई०)

एंगेल्सके जीवनकी कुछ बातें हम पहले बतला चुके हैं। सक्रिय साहित्यिक और राजनीतिक जीवनसे अलग होकर अपने पिताके व्यवसायमें लग जानेके लिये एंगेल्सका मजबूर होना मार्क्सको आर्थिक सहायता देनेके ख्यालसे था। वह समझते थे, कि वैयक्तिक महत्वाकाक्षाको दबाकर यदि मैं इस महान् तत्व-दर्शीको आर्थिक चिन्तासे मुक्त कर सकूँ, तो यह मेरे जीवनका सबसे बड़ा काम होगा। इसी ख्यालसे वह १८५० ई० में मैन्चेस्टर लौट गये और वहाँ अपने पिताकी एरमेन और एंगेल्स कपड़ा मिलमें क्लर्कके तौरपर काम करने लगे। उसी साल दिसम्बरमें अपने बच्चेके मरनेपर एंगेल्सकी सहानुभूतिके पत्रका जवाब देते हुये जेनी मार्क्सने लिखा था :

"मेरा पति और हम सभी तुम्हारी अनुपस्थितिको बहुत महसूस करते हैं और अक्सर हमारे मनमें चाह होती है, कि तुम हमारे साथ होते। तो भी, मै यह जानकर प्रसन्न हूँ, कि तुम चले गये और अब एक बड़े कपास-राजा बननेके रास्तेमें हो।..." एंगेल्सको अपने पिताके लिये अति उपयोगी बननेकी सलाह देते जेनीने फिर लिखा है : "अभीसे अपनी कल्पनामे तुम्हें ज्येष्ठ एंगेल्सके छोटे भागीदार फ्रेडरिक एंगेल्सके रूपमें देख रही हूँ, लेकिन सबसे अच्छी बात यह है, कि कपासके व्यापारी होते हुये भी तुम पुराने फ्रिट्ज बने रहोगे।... और स्वतन्त्रताके पवित्र उद्देश्यसे मुँह नही मोड़ोगे।...बच्चे चचा एंगेल्सके बारेमे बहुत बड़बड़ाते रहते हैं, और छोटा टिल तुम्हारी सिखाई हुई गीतको बहुत अच्छी तरह गाता है।..."

अगले बीस वर्षोंके लिये एंगेल्स मार्क्सकी आँखोंसे ओझल हो गये। दोनों मित्र कभी ही कभी कुछ समयके लिये मिलते। लेकिन, इससे इतिहासको एक बड़ा फायदा उन पत्रोंका यह हुआ, जो कि दोनोंके बीच प्रायः रोज ही आते-जाते रहते थे, जिनमें तात्कालिक जीवनकी कितनी ही बातोंके साथ-साथ

साहित्यिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक तथा दूसरे विषयों पर भी विचार-विनिमय होता रहता था। जैसे ही अर्थशास्त्र, दर्शन या किसी और विषय पर कोई विचार एकके दिलमें आता, वह तुरन्त ही उसके बारेमें दूसरेको लिखकर उसकी राय पूछता। इस प्रकार विचारोंको स्पष्ट करनेमें उन्हें बड़ी सहायता मिलती।

मेन्चेस्टरमें पिताके मिलमें काम करते एंगेल्सने पढ़ने-लिखनेको छोड़ नहीं दिया, विशेष कर सैनिक इतिहास और विज्ञानपर उनका अध्ययन बड़ी गम्भीरताके साथ होता रहा। प्राकृतिक विज्ञान और तुलनात्मक भाषाशास्त्र भी उनके दिलचस्प विषय थे। १८५२ के मार्चमें अपने रूसी भाषाके अध्ययनके बारेमें उन्होंने कम समय निकालनेकी शिकायत की : "मैंने रूसीको चौदह दिनों देखा-भाला और व्याकरण काफी अच्छा हो गया। दो या तीन महीने और देने पर मुझे आवश्यक शब्दावली मालूम हो जायगी और तब मैं कुछ दूसरी बात करना आरम्भ करूँगा। मुझे इस वर्ष स्लाव भाषाओंको अवश्य खतम कर देना है, और वह वस्तुतः उतनी अधिक कठिन नहीं है।...बकुनिन इसीलिये कुछ अधिक महत्वका बन गया है, क्योंकि दूसरा कोई रूसी नहीं जानता। पुरानी वृहत्तर-स्लावकी चालको—कि पुरानी स्लाव सामूहिक सम्पत्ति-अधिकारको साम्यवादमें परिवर्तित किया जा सकता है, और रूसी किसान जन्मजात कम्युनिस्ट समझे जाने चाहिये—फिर बड़े पैमानेपर फैलाया जायगा।

हम देख चुके हैं, कि इतालियन-युद्धके समय १८५६ ई० में एंगेल्सने "पो और राइन" नामक पुस्तिकाको बिना नामके प्रकाशित कराया था, जिसे मार्क्सने बहुत पसन्द किया था। इतालियन-युद्धकी समाप्तिके बाद एंगेल्सने सवाय, नाइस और राइन, पुस्तिका लिखी, फिर १८६५ ई० में "प्रशियन सैनिक समस्या और जर्मन मजूर पार्टी" के नामसे एक पुस्तिका लिखी।

३. पिताके स्थानपर (१८६० ई०)

१८६० के मार्चके अन्तमें एंगेल्सके पिता मर गये। १८६४ ई० के सितम्बरमें अब वह पिताके फर्ममें पार्टनर (भागीदार) बन गये थे, जिसका अर्थ

था उनके ऊपर कामकी और जिम्मेवारी और समयकी और कमी हो गई। मई १८६० में ही मार्क्सको पत्र लिखते हुये एंगेल्सने कहा था: "मै अपने सहभागी-के साथ कंट्राक्टको ऐसा कठिन बनाना चाहता हूँ, जिसमें वह खुशीसे मुझे छोड़ दे। लेकिन, वह नहीं हो सका। पार्टनर बन जानेसे, अब एंगेल्सकी आम-दनी बढ़ गई थी, जो कि उस समय कम महत्वकी बात नहीं थी। लेकिन एंगेल्स अपने पत्रोंमें इस तरहके जीवनसे बराबर असतोष प्रकट करते थे, जिससे मार्क्स भी सहमत थे, लेकिन वैसा करना गुनाह बेलज्जत नहीं था।" उन्होंने एक पत्रमे लिखा था: "मै किसी चीजकी उतनी चाह नहीं रखता, जितना कि इस सौरे व्यापारसे छुट्टी पानेको, जो कि समयकी बरबादीके साथ-साथ मुझे पूर्णतया पूरा भ्रष्ट कर रहा है। जब तक इसमें हूँ, मैं किसी चीजके लिये भी उपयुक्त नहीं हूँ। खासकर जबसे मैं पार्टनर हो गया, तबसे और बहुत बुरा हो गया, क्योंकि जिम्मे-वारियाँ अधिक बढ गई हैं। यदि अधिक आमदनीका ख्याल न होता, तो मैं फिर क्लर्क होना पसन्द करता।" लेकिन, जब-जब व्यवसायसे हटनेका ख्याल उनके दिमाग मे आता, तब-तब उनके दिमागमें यह परेशानी भी उठ खडी होती, कि तब मार्क्सको आर्थिक सहायता कैसे पहुँचाऊँगा। कुछ वर्षों बाद उन्होने व्यवसाय छोड़नेका निश्चय जरूर कर लिया था, लेकिन फिर वही चिन्ता उपस्थित हुई। इसीलिये वह चाहते थे कि व्यवसाय छोड़नेसे पहले मार्क्स अपने ग्रंथों द्वारा आर्थिक तौरसे स्वतन्त्र हो जायें।

एंगेल्सके आत्मत्यागको मार्क्स अच्छी तरह समझते थे। अपने पत्रोमे वह आशा करते रहते थे, कि एकाध सालमें अपने पैरोंपर खड़े होनेकी संभावना है, किन्तु साथ ही वह यह भी कहते थे: "तुम्हारे बिना मै अपनी कृति (कपिटाल) को नहीं पूरा कर पाये होता। मैं तुम्हें विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि मेरे दिमागपर पहाड़की तरहका एक भार सदा पड़ा रहता है: खासकर मेरे ही लिये तुमने अपनी अद्भुत प्रतिमा को बेकार होने और व्यापारमे मुर्चा खाने दिया।"

१८६५ ई० में अपनी भारी आर्थिक कठिनाइयोके बारेमें कहते हुये मार्क्सने लिखा था: "इन सभी स्थितियोंमें एक ही ख्याल मुझे सहारा देता है, वह यह

कि हम दोनों एक व्यवसायी कम्पनी हैं, जिसमें मैं सैद्धान्तिक बातोंके लिये समय देता हूँ...”

एंगेल्स अपनी कमाईके पैसे से ही मार्क्सको सहायता नहीं करते थे, बल्कि १८५१ ई० के आरम्भसे “न्यूयार्क ट्रिब्यून” के लिये मार्क्सजो लेख लिखने लगे थे, और जिसका भी उद्देश्य था कुछ पैसे कमाना, उसमें भी एंगेल्स मदद करते थे। अभी मार्क्सका इंगलिश भाषापर अधिकार नहीं था, इसलिये एंगेल्स उनके लेखोंका अनुवाद कर देते। जब समयाभाव या किसी और कारणसे मार्क्स लेख न लिख पाते, तो एंगेल्स स्वयं लेख लिख देते। अपने और कामोंके अतिरिक्त वह प्रति सप्ताह एक-दो ऐसे लेख लिख दिया करते थे, जो मार्क्सके हस्ताक्षरके साथ ट्रिब्यून में भेज दिये जाते। १८५७ के ६ अप्रेलको अपने एकलौते पुत्रके मर जानेपर मार्क्सने लिखा था : “बेचारा मूश (एडगर) अब नहीं रहा।...मैं कभी इसे नहीं भूलूँगा, जो कि तुम्हारी मित्रताने इस भयंकर समयमें हमारी सहायता की।...” एक सप्ताह बाद फिर मार्क्सने लिखा थाः “जबसे प्रिय बच्चा मरा घर, हाँ, बिलकुल अस्त-व्यस्त और निर्जन है।...यह कहना असंभव है, कि कैसे चारों ओर हम बच्चेके अभावको अनुभव करते हैं। मुझे सभी प्रकारके दुर्भाग्योंको झेलना पड़ा, लेकिन केवल अभी मैं समझ पाया हूँ, कि वास्तविक दुःख क्या है।...इन दिनों जिन भयंकर यातनाओंके भीतरसे मैं गुजरा हूँ, तुम्हारे और तुम्हारी मित्रताके ख्यालने मुझे सहारा दिया और आशा दिलाई कि हम अभी भी साथ मिलकर दुनियामें कुछ बौद्धिक काम कर सकेंगे।”

१८५७ ई० में एंगेल्सकी सख्त बीमारीकी खबर पाकर मार्क्सने लिखा था : “हमारे सभी दुर्भाग्योंके होनेपर भी तुम्हें निश्चित रहना चाहिये, कि मैं और मेरी पत्नी तुम्हारे स्वास्थ्यकी अवस्थाके पिछले वर्णनको सुनकर आपबीतीका बहुत कम ध्यान रखते हैं।” मार्क्सने एंगेल्सपर जोर दिया, कि स्वास्थ्यके लिये समुद्रके किनारे जाना चाहिये। एंगेल्सने भी अपने मित्रकी सलाह स्वीकार की। यद्यपि मार्क्सने “ट्रिब्यून” के लिये लेखका ख्याल छोड़ देनेके लिये कहा था, लेकिन समुद्रतटसे भी उन्होंने मार्क्सके पास लेख लिखकर भेजते अफसोस प्रकट किया, कि मैंने तुम्हारे पास शराबका एक अच्छा बक्स नहीं

भेजा। एंगेल्स शरावके प्रेमी थे। उनके तहखानामें वरावर अच्छी शरावकी बोतलें भरी रहतीं और उनको बरावर ध्यान रहता कि मार्क्सके घरमें चाहे और किसी चीजका अभाव हो, लेकिन शरावकी कमी न होने पाये।

मार्क्स अपनी कृतियोंकी सबसे बड़ी कसौटी एंगेल्सको मानते। उनकी सलाहों से बरावर फायदा उठानेके लिये तैयार रहते थे। जून १८५६ को उन्होंने "राजनीतिक अर्थशास्त्र आलोचना" के बारेमें एंगेल्सको लिखा था : "सबसे पहले यह कहने दो, कि मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई, कि तुम प्रथम भागको पसन्द करते हो। इस विषय में केवल तुम्हारा ही फैसला मेरे लिये महत्व रखता है।" १८६७ के जूनमें "कपिटाल" की कुछ शीटोंको भेजते हुये मार्क्सने लिखा था : "मुझे विश्वास है कि इन चार शीटोंसे तुम संतुष्ट होगे। तुम्हारा सन्तोष...मेरे लिये बाकी सारी दुनियासे कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। एंगेल्स अपनी राय हाँमें हाँ मिलानेके लिये नहीं दिया करते थे। उनकी आलोचना गुण-दोषको दिखलाते होती थी, जिसको पाकर मार्क्स अक्सर अपनी कृतियोंमें फेर-बदल करते थे।

"कपिटाल" की प्रथम जिल्दके अन्तिम प्रूफको देख लेनेके बाद १६ अगस्त १८६७ को मार्क्सने एंगेल्सको निम्न पत्र लिखा था :

"प्रिय फ्रेड, अन्तिम प्रूफ-शीटका संशोधन अभी-अभी समाप्त किया। परिशिष्ट—छोटे अक्षरोंमें सवा चार प्रूफ शीटोंके हैं।

"प्राक्कथनको कल संशोधित कर लौटा दिया। इस प्रकार यह जिल्द समाप्त हो गई। यह केवल तुम्हारी सहायता थी, जोकि यह संभव हो सका। मेरे लिये तुमने जो आत्मत्याग किया, उसके बिना मैं तीनों जिल्दोंके लिये विशाल कामको कभी नहीं पूरा कर सकता था। मैं कृतज्ञतापूर्ण हो तुम्हारा आलिंगन करता हूँ।

"शोधित प्रूफकी दो शीटें यहाँ साथ हैं।

"अत्यन्त सधन्यवाद पन्द्रह पौंड पाया।

"अभिनन्दन, मेरे प्रिय स्नेही मित्र—

"तुम्हारा, का० मार्क्स।"

४. क्षणिक मनमुटाव (१८६३ ई०)

मार्क्स और एंगेल्सकी आजीवन घनिष्ठ मित्रताके लम्बे अर्सेमें सिर्फ एक ही बार (जनवरी १८६३) ऐसा अवसर आया, जबकि दोनोंके मनमें कुछ दुर्भाव पैदा हुआ।

मैन्चेस्टरमें रहते एंगेल्सका परिचय बर्न्स नामक एक आइरिश प्रिय परिवार-के साथ था। परिवारकी एक लड़की मैरीके साथ उनका प्रेम हो गया। दोनों कानूनी तोरसे विवाह किये बिना पति-पत्नीकी तरह एक साथ रहते रहे। मेरी सुन्दर तथा साथ ही बड़ी समझदार स्त्री थी। एंगेल्सपर उसका बहुत स्नेह था। वर्षों साथ रहनेके बाद ६ जनवरी १८६३ को एकाएक मैरीकी मृत्यु हृदय-रोगसे हो गई। पिछली ही शाम एंगेल्स उसके साथ थे, वह बिल्कुल स्वस्थ थी। उसकी मृत्युसे एंगेल्सके हृदयको भारी धक्का लगा। एंगेल्सने जब अपने दुःखको प्रकट करते इसके बारेमें मार्क्सको लिखा, तो मार्क्सका उत्तर उस तरहका नहीं आया, जैसा कि उन्हें आशा थी। इसे कहनेकी आवश्यकता नहीं, कि मार्क्सके लिये अत्यधिक भावुकतापूर्ण वाक्यावलीका लिखना वैसे भी कठिन था। मार्क्सने कुछ वाक्योंमें मैरीके मरनेपर शोक प्रकट करते हुये, फिर अपने घरकी कठिनाइयोंको लिख डाला। एंगेल्सको यह बात बहुत खटकी। छ दिनों तक मनमें सोचते हुये उन्होंने कोई जवाब नहीं लिखा। फिर पत्रमें मार्क्सके इस "ठंडे" व्यवहारके लिये शिकायत करते हुये कहा : मेरे सभी मित्रोंने...मेरे दुखमें उससे कहीं अधिक सहानुभूति और सौहाद्रभरी स्थितिके बारेमें प्रकट की, जितना कि मैं तुमसे आशा करता था।"

मार्क्सको अब अपनी गलती पूरी तौरसे मालूम हुई और उन्होंने बहुत-बहुत क्षमा माँगते हुये एंगेल्सको पत्र लिखते हुये बतलाया। "उस समय मेरे घरमें अन्न नहीं था, लड़की जेनी बीमार थी और उधार देनेवाले सामान नीलाम करानेके लिये घरमें पहुँचे हुये थे। यही कारण था, जो मैं एकान्तचित्तसे मेरीके मरनेपर अपने भावोंको प्रकट नहीं कर सका।"

एंगेल्सके लिये मार्क्सकी मित्रता प्राणोंसे भी अधिक मूल्यवान् थी। उन्होंने

तुरन्त मार्क्सको क्षमा करते हुये लिखा : "तुम्हारी सच्चाईके लिये मैं तुम्हे धन्यवाद देता हूँ तुम स्वयं समझ सकते हो, कि तुम्हारे पहलेवाले पत्रने मेरे ऊपर क्या प्रभाव डाला ? कोई आदमी किसी स्त्रीके साथ इतने दिनों तक जीवन बिताते हुये उसकी मृत्युसे भयंकर रूपसे दुखी हुये बिना नहीं रह सकता। मैंने अनुभव किया, कि उसके साथ मैं अपनी जवानीके अन्तिम अवशेषोको दफना रहा हूँ। जब मुझे तुम्हारा पत्र मिला, तब अभी वह अपनी कब्रमें नहीं गई थी। मैं तुम्हें बतलाता हूँ, कि तुम्हारा पत्र सारे सप्ताहभर मेरे दिमागमें घूमता रहा, मै उसे भूल नहीं सकता था। कोई पर्वा नहीं, तुम्हारे पिछले पत्रने सब ठीक कर दिया और मुझे प्रसन्नता है कि मेरीके साथ-साथ मैंने अपने सबसे पुराने और सबसे अच्छे मित्रको नहीं खो दिया।"

मार्क्सने भी अपने जवाबमें उसी तरह लिखा : "अब बिना किसी बाहरी दिखलावेके तुमसे कह सकता हूँ, कि इन पिछले कुछ हफ्तोंमें जितनी कठिनाइयोंसे मैं गुजरा, उनके होते भी किसी चीजका बोझ उसे पासंग भी नहीं मालूम हो रहा था, जितना कि हम दोनोंकी मित्रताके टूटनेका भय।"

१८६४ ई० के अन्तमें मेरी बर्न्सकी बहन लिजी एंगेल्सकी पत्नी बनी और १८७८ ई० मे लिजीके मरनेके समय तक दोनोने बडे आनन्दपूर्वक जीवन बिताया। लिजी एगेल्स बड़ी ही समझदार महिला थी। वह अपने पतिके आदर्शोंको मानती थी। साथ ही वह आयरिश स्वतन्त्रताके योद्धाओ—सिन-फिनों—की आजन्म पक्षपातिनी रही। दोनोको कोई संतान नहीं हुई, लेकिन उन्होंने लिजीकी भतीजी मेरी एलेन (पम्पस) को अपने यहाँ रखकर बेटीकी तरह पढाया-लिखाया था।

५. मित्रके पास

१८६८ ई० के अन्तमें एगेल्सको फिर व्यवसायसे भारी विरक्ति होने लगी। उनके पार्टनर गाट्फ्रीड एर्मेननने भी इस शर्तपर काफी पैसा देना स्वीकार किया, कि एगेल्स अपने हिस्सेको बेचकर अलग उसी तरहके व्यवसायको न खोले। एगेल्सको इसका कोई ख्याल भी नहीं हो सकता था। उनको केवल यही चिंता

थी, कि पैसा इतना मिले, जिसमें वह और खर्चोंके अतिरिक्त मार्क्सको प्रति-वर्ष ३५० पौंड दे सकें—कमसे कम पाँच-छ सालोंके लिये। पाँच-छ सालके बाद क्या होगा, यह एंगेल्सको मालूम नहीं था, लेकिन उन्हें आशा थी, कि तब भी कमसे कम डेढ़ सौ पौंड वह प्रतिवर्ष दे सकेंगे। ३५० पौंड वार्षिक पर्याप्त होगा या नहीं, यह पूछनेपर मार्क्सने उसे पर्याप्त कहा। अन्तमें १ जुलाई १८६९ को एंगेल्सने अपने पत्रमें लिखा : "हुर्रा! आज मैं मधुर व्यापारसे पिंड छुड़ा एक स्वतन्त्र मनुष्य हूँ।...गाडफ्रीड (एर्मेन) ने सभी बातें मान लीं। टुसी (मार्क्सकी सबसे छोटी लड़की एलिनोर, जो कि उस समय एंगेल्स दम्पतीके साथ कुछ सप्ताहसे रहती रही थी) और मैंने अपने प्रथम मुक्ति-दिवस को आज सुबह देहातमें एक लम्बी चहलकदमी करते हुये मनाया।...

"हिसाब-किताब और वकील कुछ सप्ताह और मुझे बाँधे रहेंगे—लेकिन इसका अर्थ अब पहले जैसी समयकी भारी क्षति नहीं होगी।..."

मार्क्सने इसके जवाबमें लिखा था : "बन्धनसे तुम्हारी मुक्तिके लिये सबसे अच्छे अभिनन्दन! इस घटना के सम्मानमें एक और ग्लास पान लिया, किन्तु प्रशियन सैनिकोंकी तरह सवेरेसे पहले नहीं, बल्कि शामको देरसे।..."

एंगेल्सकी पत्नी लिजीके सम्बन्धी भी अन्तमें राजी हो गये और १८७० के सितम्बरके अन्तमें अपने ससुरालवालों मेनचेष्टरसे विदाई ले एंगेल्स लन्दन चले आये। अब दोनों मित्र आपसी सलाहसे कामका बँटवारा कर काममें लग गये। मार्क्सने अपने जिम्मे मौलिक अर्थशास्त्रीय और दार्शनिक सिद्धान्तोंपर कलम चलानेका काम लिया। और एंगेल्सने इन सिद्धान्तोंके प्रकाशमें तत्का-लीन महत्वपूर्ण समस्याओंके हल और खंडन-मंडनको सँभाला।

(१) सामयिक लेख—समस्याओंपर एंगेल्सने बहुत भारी संख्यामें लेख और पुस्तिकायें लिखीं। उनमेंसे बहुतोंका केवल ऐतिहासिक महत्व नहीं, बल्कि आजकलकी समस्याओंमें उपयोग हो सकता है, जैसे "घरोंका प्रश्न" जो कि १८७२ ई० में कई लेखोंके रूपमें निकला, जिसमें प्रूधों और मूलवेर्गेर छोटे

चिपके निम्न बूर्ज्वा-अनुयायियोके विचारोका खडन किया गया है। एंगेल्सने लिखा है : "घरोंकी समस्या कैसे हल की जाय ? वैसे ही जैसे कि आजकल समाजमें कोई दूसरा सामाजिक प्रश्न हल किया जाता है : माँग और पूर्तिके क्रमशः आर्थिक तालमेल द्वारा। यह ऐसा हल है, जोकि नये तौरसे उसी सवाल को पैदा करता है, और इसलिये वह हल नहीं है। सामाजिक क्राति कैसे इस प्रश्नको हल करेगी ? वह प्रत्येक अवस्थामें मौजूदा परिस्थितियोंपर ही केवल निर्भर नहीं करती, बल्कि उसका सम्बन्ध और भी दूर तक पहुँचनेवाले प्रश्नोंसे है, जिनमेंसे एक अत्यन्त मौलिक प्रश्न है नगर और गाँवके बीचके विरोधो का खतम करना।... एक बात निश्चित है : 'यदि उनके बुद्धिपूर्वक उपयोगको स्वीकार किया जाय, तो वास्तविक घरोंकी कमीको तुरन्त पूरा करनेके लिये बड़े शहरोंमें अभी भी रहनेके लिये काफी मकान मौजूद हैं। यह आसानीसे हो सकता है, यदि वर्तमान स्वामियोंसे उन्हें लेकर और बेघरवाले या पहले घरोंमें अत्यधिक भरे हुये कमकरोंको इन घरोंमें बसा दिया जाय। राजनीतिक शक्ति को जैसे ही सर्वहारा अपने हाथमें ले लेंगे, तुरन्त सार्वजनिक हितके उद्देश्यसे इस तरहकी कार्रवाई उसी तरह आसानीसे की जा सकती है, जैसे वर्तमान राज्य द्वारा दूसरेकी सम्पत्तिको हाथमें लेना और घरमें बसाना।"

(१) डूरिंग-खंडन—मार्क्सवादपर यह बहुत ही सुन्दर पुस्तक है, जिसमें आक्षेपोंका जवाब देते हुये मार्क्सके सिद्धान्तोंका स्पष्टीकरण किया गया है। इस पुस्तकके दूसरे सस्करण के प्राक्कथनमें एंगेल्सने लिखा है :"

"जहाँ तक इन पुस्तकमें विवेचन और दृष्टिकोणकी प्रणालीके विकासकी व्याख्याका सम्बन्ध है, उसका श्रेय बहुत अधिक मार्क्सको है और बहुत थोड़े परिमाणमें मुझे भी। हम दोनोंके बीच यह बात तैसी थी, कि बिना मार्क्सके ज्ञानके मेरी यह व्याख्या प्रकाशित न हो। छपनेसे पहले मैंने सारे हस्तलेखको उनके सामने पढ़ा और अर्थशास्त्रपर दसवें अनुच्छेदको तो मार्क्सनेही लिखा। मैंने इतना ही किया, कि उसे थोड़ा छोटा कर दिया।...विशेष विषयोंमें हम एक दूसरे की सहायता करनेके आदी हैं।

(२) डूरिंग-खंडन (१८७५ ई०)—एंगेल्स की यह प्रसिद्ध पुस्तक १८७५ ई० में "फोरवेटर्स" में वैज्ञानिक परिशिष्टके तौरपर प्रकाशित हुई। और इसके अन्तिम भागको "समाजवाद उटोपियन और वैज्ञानिक" के नामसे अलग भी प्रकाशित किया गया। १८७० वाली शताब्दीके आरम्भमें जर्मनीमें समाजवादी जनतंत्रताका काफी प्रचार हो गया और उसकी ओर उदारवादी बूर्ज्वाजी भी खिंचने लगी। ऐसे लोगोंके समाजवाद और मजदूर-संगठनमें आनेमें कोई आपत्ति नहीं हो सकती, लेकिन यह जरूरी है कि उनके पुराने मनोभाव बिल्कुल दूर हो गये हों और उन्होंने सर्वहारा क्रान्तिकारी आन्दोलनको अच्छी तरह आत्मसात् कर लिया हो। फैशनके लिये सर्वहारा वर्गके संगठनमें ऐसे लोगोंके आने या समाजवादी बननेसे हानि छोड़ लाभ नहीं हो सकता। यूगेन डूरिंग इसी तरहका एक प्रतिभाशाली बूर्ज्वा-नेता था, जिसने समाजवादीकी तरफ अपने झुकावको दिखलाकर तरुणों पर काफी प्रभाव डालना शुरू किया। उसने बहुत से विषयोंका अध्ययन किया था, जो चंचुग्राही पांडित्य-से अधिक नहीं था। पर उसकी कलममें शक्ति थी। इस प्रकार वह कितनी ही बार गलत-सलत बातें कहकर लोगोंको पथ-भ्रष्ट करनेमें सफल होता। एंगेल्सने यद्यपि अपने इस ग्रंथको डूरिंगके विचारोंके खंडनके लिये ही लिखना शुरू किया था, लेकिन अपनेको उतने ही तक सीमित नहीं रक्खा और जिस विषयको भी लिया, उसपर गम्भीरतापूर्वक अपने विचारोंको प्रकट करते हुये इस पुस्तकको वैज्ञानिक साम्यवादका एक सुन्दर और स्पष्ट प्रकरण-ग्रंथ बना दिया। उन्होंने इसमें सारे आधुनिक साइन्सकी विवेचना मार्क्सीय भौतिकवादी दृष्टिकोणसे की।

सबसे पहले इस पुस्तकमें ऐतिहासिक भौतिकवादके स्रोतोंका अनुसन्धान करते हुये अपने और मार्क्स द्वारा इस्तेमाल किये गये द्वन्द्वात्मक-अनुसन्धान-प्रणालीका विवेचन कर, उसे विज्ञान तथा दर्शनके क्षेत्रमें उचित स्थान दिलाया। इस ग्रंथमें पुराणके भीतर नवीनके उगनेके द्वन्द्वात्मक सिद्धान्तका उदाहरण दिया गया है, और यह भी कि इसके परिणामस्वरूप विकास अथवा परिपक्वताकी एक निश्चित मंजिलमें पहुँचकर पुरानेका स्थान नवीन अनिवार्य-तया ग्रहण करता है। एंगेल्सने इस सिद्धान्तकी व्याख्या भिन्न-भिन्न प्रकारकी

भौतिक, प्राकृतिक और प्राणिशास्त्रीय विज्ञानों एवं इतिहास, दर्शन आदिके क्षेत्रों के उदाहरणोंसे की है :

द्वन्द्वात्मकता (द्वन्द्ववाद) वस्तुओं और उनके विचारों, उनके आपसी सम्बन्धमें सारतः अपने परिणाममें अपनी गति, अपने जन्म और मृत्युमें उपरोक्त प्रक्रियाये द्वन्द्ववादकी अपनी व्यवहार-प्रणालीके उतने प्रकारके पुष्टीकरण हैं। प्रकृति द्वन्द्ववादकी कसौटी है।...

"इसीलिये विश्व, उसके विकास और मानव-जतिके विकास तथा मानव-मस्तिष्कमें इस विकासके प्रक्षेपणकी ठीक तौरसे प्रतिमूर्ति केवल द्वन्द्वात्मक तरीकेसे ही आम क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं, प्रगतिशील अथवा प्रतिगतिशील परिवर्तनोंके रुक जानेका लगातार ध्यान रखते ही द्वन्द्वात्मक तरीकेसे निर्मित की जा सकती है।" वस्तुतः 'द्वन्द्ववाद प्रकृति' मानव-समाज और विचारमें गति और विकासके विश्वजनीन नियमके साइन्सके "सिवा और कुछ नहीं है।" आचार, सत्य और न्यायके सनातन नियमोंकी दुहाई देनेवालोपर आक्षेप करते हुये एंगेल्सने लिखा है :

"हम यहाँ उस प्रयत्नकी ओर ध्यान आकृष्ट करना चाहते हैं, जो कि हमारे ऊपर एक प्रकारके आचारिक मतवादको सनातन, अन्तिम, कूटस्थ, आचारिक नियमके बहानेसे लादा जाता है, कि आचारिक नियम विधानमें वह स्थिर सिद्धात निहित है, जो कि इतिहास और वैयक्तिक लोगोंके भेदोके प्रभावसे परे हैं। इसके विरुद्ध हम मानते हैं, कि जहाँ तक सभी आचारिक वादोंका सम्बन्ध है वह अन्ततः किसी विशेषकालमें एक समाजमें प्रचलित कुछ आर्थिक स्थितियों के अस्तित्वकी एक गवाही है।"

"और जैसे चूंकि अब तक समाज वर्ग-विरोधमें चलता आ रहा है, इसलिये आचार, नियम सदासे एक वर्ग-आचार रहा है। इसने या तो शासकवर्गके प्रभुत्व और हितोंको उचित ठहराया, अथवा जैसे ही उत्पीडित वर्ग काफी शक्ति, शाली हो गया, उसने इस प्रभुता और उत्पीडितोंके भावी स्वार्थोंके विरुद्ध विद्रोहका प्रतिनिधित्व किया।...जो कि उनके सभी दु ख और विलासके प्रकट,

दरिद्रता और समृद्धिके असह्य विरोधोंके साथ श्रमकी उपजोंके वितरणके वर्तमान ढंगमें क्रान्तिके लिये अधिक सुरक्षित होने नहीं देते, तो यह धारणा (चेतना) अन्तमें फैलकर रहेगी, कि वितरणका यह ढंग अन्यायोचित है, न्यायको अन्तमें हावी होना पड़ेगा, नहीं तो हम दुर्गतिमें पड़ वहाँ चिरकाल तक रहेंगे।...

"दूसरी शब्दोंमें यह हुआ : आधुनिक पूँजीवादी उत्पादनके तरीकेकी उत्पादक शक्तियाँ तथा उसपर आधारित आधुनिक पूँजीवादी वितरण-व्यवस्था स्वयं उत्पादन-व्यवस्थासे इतना विरोध रखती है, कि उत्पादन और वितरणके ढंगमें ऐसी क्रान्ति होनी अनिवार्य हो गई है, जो कि सभी वर्ग-विभेदों को नष्ट करे, अन्यथा सारा आधुनिक समाज पतनके खड्डमें गिरेगा। यह वास्तविक भौतिक तथ्य हैं, जो कि शोषित सर्वहाराके मनमें और अधिक स्पष्ट करते जा रहे हैं, कि यह उन किताब कीड़ोंके न्याय और अन्याय-सम्बन्धी ज्ञानकी नहीं, बल्कि वास्तविक भौतिक तथ्योंको शोषित सर्वहाराके लिये और स्पष्ट करके आधुनिक समाजवादकी विजयके विश्वासकी नींव बनते हैं।"

डूरिंगने कितने ही बूर्ज्वा-उदारवादियोंकी तरह जोर देकर कहा था, कि वर्ग-गुलामीका कारण राजनीतिक शक्ति मुख्य कारण हैं, आर्थिक स्थितियाँ वर्गभेद-के गौण कारण हो सकती हैं। इसके जवाबमें एंगेल्सने बतलाया, कि किस तरह प्रचीन लोगोंमें वैयक्तिक सम्पत्तिका आरम्भ हुआ : आम तौरसे जबर्दस्ती लूट द्वारा नहीं बल्कि आरम्भिक कबीलाशाही कम्यून (संघ) में कुछ चीजोंके अभाव-के कारण वैयक्तिक सम्पत्तिका आरम्भ हुआ, इसलिये विनिमयकी आवश्यकता पड़ी, और उपयोगकी जगह विनिमयके लिये मालका उत्पादन शुरू हुआ। इसके द्वारा वितरणके तरीकेमें भी परिवर्त्तन हुआ, और व्यक्तियोंकी सम्पत्तिमें असमानता पैदा हुई। बाहरी हिंसात्मक स्वेच्छाचारिताके होते भी शताब्दियों तक पुराण-साम्यवाद कायम रहा, लेकिन महान् उद्योगकी उपजोंकी होड़ने अपेक्षाकृत थोड़े समयमें वह खतम हो गया।

बूर्ज्वा-क्रांतिके बारेमें एंगेल्सने बतलाया, कि उसने सभी सामन्ती बेड़ियोंको तोड़ फेंका : किन्तु, हेर डूरिंगके सिद्धान्तके अनुसार राजनीतिक स्थितियोंके अनु-

कुल आर्थिक-व्यवस्थाके तालमेल द्वारा नहीं ..' बल्कि उससे उलटे पुराने जीर्ण-शीर्ण राजनीतिक कूड़े-करकटको अलग हटाकर ऐसी राजनीतिक स्थितियोंके निर्माण द्वारा हुई, जिसमें कि नवीन "आर्थिक-व्यवस्था" मौजूद रहते विकसित हो सके। अपनी आवश्यकताओंके अनुकूल राजनीतिक तथा कानूनी वातावरणमें, वह इतने अद्भुत चमत्कारके साथ विकसित हुआ, कि १७८९ ई० मे बूर्ज्वाजीने करीब-करीब उस स्थानको प्राप्त कर लिया, जो कि पहिले सामन्तोंका था। अब बूर्ज्वाजी केवल सामाजिक रूपसे ही अधिकाधिक फजूल नहीं होती जा रही है, बल्कि वह एक सामाजिक बाधा बन रही है, उत्पादक कार्रवाइयोंसे अधिकाधिक अलग होती, पुराने सामन्तवर्गकी तरह अधिकाधिक केवल मालगुजारी लेनेवाला वर्ग बनती जा रही है। इस क्रान्तिमें उसने अपनी स्थितिको ठीक करते हुये किसी तरहका बलात्कार किये, शुद्ध आर्थिक तरीकेसे एक नये वर्ग—सर्वहारा—का सृजन किया।

इस प्रकार मालूम होगा, कि "डूरिंग-खंडन" में एंगेल्सने केवल डूरिंगका तत्कालोपयोगी खंडनभर नहीं किया, बल्कि मार्क्सवादके सिद्धान्तोंकी सरल और स्पष्ट विवेचना की है।

६. मार्क्सके बाद—(१८८३-९५ ई०)

(१) "कपिटाल" का सम्पादन—हम देख चुके हैं, कि मार्क्सने अपने महान् ग्रंथ "कपिटाल" (पूँजी) को तीन जिल्दोंमें तैयार किया था; जिनमें केवल प्रथम जिल्दको ही वह प्रेसके लिये तैयार करके अपने सामने छपा देख पाये थे, बाकी दो जिल्दे अब भी ऐसी स्थितिमें नहीं थीं, कि उन्हें प्रेसमें दिया जा सकता। मार्क्सकी मृत्युके समय (१८८३ ई०) में एंगेल्स ६३ सालके हो चुके थे, लेकिन सौभाग्यसे अभी उन्हें बारह साल और जीना था। दुनियाँके सर्वहारा-संगठनों और नेताओंकी अब एंगेल्सकी ओर नजर लगी, इसलिये उनका समय उनको सलाह देने और दूसरे कामोंमें लगता था, तो भी उन्होंने अपने अवशिष्ट जीवनका उद्देश्य रक्खा था—शत्रुओंके मार्क्सवादपर होते प्रहारका विफल करना तथा "कपिटल" के बाकी दोनों जिल्दोंको ठीक करके

प्रकाशित करना। १८९४ ई० में "कपिटाल" की तीसरी जिल्दके प्राक्कथनमें एंगेल्सने स्वयं लिखा है :

"पहली बात यह है, कि मेरी आँखोंकी कमजोरी है, जो कितने ही वर्षोंसे अल्पतम मात्रामें भी लिखनेमें मुझे अपने समयका उपयोग करने नहीं देती, और आजकल भी कभी-कभी कृत्रिम प्रकाशन ही लिखनेका मौका देती है।... इसके अतिरिक्त दूसरे भी काम थे, जिनसे मैं इन्कार नहीं कर सकता था, जैसे कि मार्क्स और मेरी अपनी पहेलीकी कृतियोंके नये संस्करण और अनुवाद, संशोधन, प्राक्कथन, परिशिष्ट, जिनके लिये अक्सर विशेष अध्ययन आदिकी आवश्यकता पड़ती थी। सबसे ऊपर इस ग्रंथकी प्रथम जिल्दके अँग्रेजी संस्करण का सवाल था, जिसके लिये अन्तिम जिम्मेवार मैं हूँ और जिसने मेरा बहुत सा समय लिया। जिस किसीने पिछले दस वर्षोंमें अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी साहित्यकी प्रकांड बृद्धि, विशेष कर मार्क्स और मेरी पहलेकी कृतियोंके बहुसंख्यक अनुवादोंको देखा होगा, वह मुझसे सहमत होगा..., कि कुछ परिमित संख्यामें ही ऐसी भाषायें हैं, जिनमें कि मैं किसी अनुवादककी सहायता कर सकता हूँ। यह काम संशोधनकी माँग माननेके लिये मुझे मजबूर करता है।

"किन्तु, साहित्यकी यह वृद्धि स्वयं अन्तर्राष्ट्रीय मजूर-आन्दोलनकी वृद्धिकी साक्षी है, जिसने यह नई जिम्मेवारियाँ मेरे ऊपर लादीं। हमारे सार्वजनिक जीवन के प्रथम दिनोंसे ही समाजवादियोंके राष्ट्रीय आन्दोलन और कमकर-जनताके बीच समझौता करनेका काफी भार मार्क्स और मेरे कन्धोंपर पड़ा।...इस बोझको अपने मृत्युके समय तक मार्क्सने उठाया। उनके बाद बराबर बढ़ते हुई कामको केवल मुझे करना पड़ा।

"इसी बीच भिन्न-भिन्न राष्ट्रीय मजूर पार्टियोंके बीच सीधा सम्बन्ध स्थापित होना आम हो गया और सौभाग्यसे वह अधिकाधिक होता जा रहा है। तो भी, मेरे सैद्धान्तिक अध्ययनोंको ख्यालमें रखते हुये जितना मुझसे बन सकता है, उससे कहीं अधिक सहायता अब भी माँगी जाती है।...हमारे इस उथल-पुथलवाले समयमें १६ वीं शताब्दीकी तरह सार्वजनिक कार्योंके सम्बन्धमें

थ्यौरी (वाद) गढ़नेवाले केवल प्रतिक्रियावादियोंके दलमें ही देखे जाते हैं। इसी कारण ये भद्रपुरुष वेदवाले वैज्ञानिक नहीं, बल्कि सिर्फ प्रतिक्रियावादके समर्थक हैं।

"चूँकि मै लन्दनमें रहता हूँ, इसके कारण जाड़ोंमें पार्टियोंके साथ मेरा सम्बन्ध केवल पत्र-व्यवहारका रहता है, जबकि गर्मियोंमे मेरा अधिकाश समय वैयक्तिक भेंट-मुलाकातमें चला जाता है।

"यह तथ्य तथा कितने ही देशोंमें दृढतापूर्वक आगे बढ़ते आन्दोलनके अनुगमन करनेकी आवश्यकता, और उससे भी कहीं तेजीके साथ बढती पार्टी-मुखपत्रोंकी सख्या मुझे इस बातके लिये मजबूर करती है, कि इतनी सामग्री सुरक्षित रक्खूँ, जिससे कि सालके जाड़ोंके महीनोंमें बाधा न खड़ी हो।

"जब आदमी सत्तरसे ऊपरका हो जाता है, तो उसके मस्तिष्कके जोड़ने वाले तन्तु कुछ बुरी सी लगनेवाली सुस्तीके साथ काम करते हैं, और आदमी पहलेकी तरह आसानी और शीघ्रताके साथ कठिन सैद्धान्तिक समस्याओंकी बाधाको सुलझा नहीं पाता। जिसका नतीजा यह होता है, कि एक जाड़ेका काम, यदि उस समय पूरा नहीं हुआ, तो अधिकतर अगले जाड़ेमें करना पड़ता है।

"यह बात खास करके अत्यन्त कठिन पंचम अनुच्छेदके बारेमें हुई।

"पाठक निम्न बातोंसे देखेंगे, कि तृतीय जिल्दके सम्पादनका कार्य द्वितीय जिल्दकी अपेक्षा वस्तुतः भिन्न था। तृतीय जिल्दके लिये प्रथम मसौदेके सिवा और कोई चीज मौजूद नहीं थी, और वह भी बहुत अपूर्ण था।

"भिन्न-भिन्न अनुच्छेदोंके आरभिक भाग आम तौरसे अच्छी तरह साव-धानीके साथ विस्तारित अथवा शैलीके तौरपर पालिश किये हुये भी थे, लेकिन आदमी जितना ही आगे बढता है उतना ही देखता है कि वह अधिकतर ढाँचेके रूपमें तथा विश्लेषण अपूर्ण था।..."

इस प्रकार हम देख रहे हैं; कि अमर ग्रथ "कपिटाल" की अंतिम दोनों महत्पूर्ण जिल्दोंका उद्धार करते उन्हें मार्क्सके विचारोंके अनुसार ही रखनेका

महान् काम एंगेल्सने किया, और केवल वही कर भी सकते थे, क्योंकि वही अनु-मार्क्स थे।

(२) "परिवारकी उत्पत्ति" (१८८४ ई०)—मार्क्सकी मृत्युके अगले सालकी गर्मियोंमें एंगेल्सकी पुस्तक "परिवार, वैयक्तिक सम्पत्ति और राज्यकी उत्पत्ति" प्रकाशित हुई। मार्क्सवादके समझनेके लिये एंगेल्सका यह ग्रंथ अद्भुत सहायक है। प्रथम संस्करणके प्राक्कथनमें एंगेल्सने स्वयं लिखा है: "यह एक अर्थमें एक वसीयतको कार्यरूपमें परिणत करना है।.. कार्ल मार्क्सने अपने सामने यह भावी काम रक्खा था, कि मोर्गनके अनुसन्धानोंके परिणामोंको कुछ निश्चित सीमाओंमें वह अपने सिद्धान्तोंके प्रकाशमें...रक्खें...—हमारे भौतिकवादी इतिहास-सम्बन्धी परीक्षणके प्रकाशमें रक्खें, और इस प्रकार उसके पूर्ण महत्वको स्पष्ट करें, क्योंकि मोर्गनने अपने तरीकेसे ४० वर्ष पहले मार्क्स द्वारा आविष्कृत इतिहासकी भौतिकवादी धारणाका अमेरिकामें नये तौरसे पता लगाया, और बर्बरता तथा सभ्यताकी तुलना द्वारा वह भी उन्हीं मुख्य तथ्योंपर पहुँचा, जिसपर कि मार्क्स पहुँचे।..."

मोर्गनने अमेरिकाकी आदिम जातियोंके समाजके गम्भीर अध्ययनके बाद अपना ग्रंथ "प्राचीन समाज" लिखा, जिसमें उसने जन (कबीला) और परिवारके विकासको दिखलाया। एंगेल्सने इतिहासकी भौतिकवादी दृष्टि का प्रयोग करते हुये भिन्न-भिन्न मंजिलोंसे होते मानव-समाजके विकासको इस पुस्तकमें दिखलाया और बतलाया, कि सभी दूसरी सामाजिक संस्थाओंकी तरह परिवार भी अपने विकासका एक लम्बा इतिहास रखता है, और वह विकास समाजके विकास एवं वैयक्तिक सम्पत्तिकी वृद्धिके साथ हुआ है। परिवारका सबसे पुराना रूप जांगल-अवस्थाके अनुरूप था, जिसमें यूथ-विवाहका रवाज था।

समाजके विकासकी अगली सीढ़ी था बर्बर-समाज, जिसमें परिवार जोड़ेका परिवार था, जिसमें प्रत्येक आदमीकी एक मुख्य स्त्री और प्रत्येक स्त्रीका एक मुख्य पति होता था। इस समाजमें नजदीकी सम्बन्धियोंके बीचमें व्याह अधिकाधिक निषिद्ध होता गया, लेकिन जब तक समाज जनताके रूपमें संगठित

रहा, तब तक आधुनिक अर्थोंमें माने जानेवाला समाज अस्तित्वमें नहीं आया। उस समय परिवार साम्यवादी रूपका था, जिसमें कि सभी या अधिकांश स्त्रियाँ एक जनसे आती थीं, जब कि पति भिन्न-भिन्न जनतोंसे। इस गृहस्थीमे स्त्री पुरुषकी दासी नहीं, बल्कि प्रमुख स्थान रखती थी। एंगेल्सने एशेर राइटका इस विषयमें उद्धरण दिया है : "आम तौरसे स्त्री-भाग घरका शासन करता। . भंडार सम्मिलित थे...चाहे पुरुषके कितने ही बच्चे हों अथवा जो भी सामान घरमे हो, उसे किसी समय हुकुम दिया जा सकता था, कि अपना कम्बल ले रास्ता नापे, और ऐसी आज्ञाके बाद वह इन्कार करनेका प्रयत्न नहीं कर सकता था। घर उसके लिये कॉटा बन जाता और...उसे अपने जन (कबीले) की ओर लौटना पडता, अथवा जैसा कि अक्सर होता है किसी दूसरे जनमे जाकर नया वैवाहिक सम्बन्ध आरंभ करना पड़ता। स्त्रियॉ और सभी जगहोकी तरह कबीलों (जनतो) मे बडी शक्तिशालिनी थी। समयकी आवश्कता होनेपर वह 'सींग तोड फेंकने' मे भी आनाकानी नहीं करतीं—सरदारके सिरपर सींग उसका विशेष चिन्ह होता था—जिसे तोडकर उसे भाटोकी पंक्तिमें लौटा देतीं।

जनके संगठनके बारेमें एंगेल्स कहते हैं : "यह जन-सविधान अपनी बच्चों जैसी सादगी में एक अद्भुत संविधान है! न सैनिक हैं, न मलिसिया न पुलिस, सामन्त हैं न राजा, न रिजेंट (उपराज) न दंडनायक या न्यायाधीश, न जेल हैं न कानूनके मुकद्मे—और सभी बातें सुव्यवस्थितरूपसे चल रही हैं। सभी झगड़े और मामले तत्सम्बन्धी सारे समूह, जनो या कबीलो अथवा जनतो द्वारा अपने भीतर ही तै कर लिये जाते हैं। केवल चरम अवस्थामें और अपवाद-रूपेण खूनके बदले खूनका खतरा पैदा होता है—और हमारा मृत्युदंड उसी खूनके बदलेके सभ्य रूपके सिवा और कुछ नहीं है।. .जनोंमें कोई गरीब या अभावग्रस्त सामूहिक गृहस्थी नहीं हो सकती थी। वृद्ध, बीमार और युद्धमें वेकार हुये आदमीके प्रति जन अपनी जिम्मेवारीको मानते थे। वहॉ सभी समान और स्वतन्त्र थे—स्त्रियॉ भी।"

लेकिन, यह जन-संस्थायें अपने-अपने कबीलेके भीतर ही ऐसी स्थिति रखती थीं। एक कबीला दूसरे कबीलेका शत्रु था, और जैसे-जैसे वैयक्तिक सम्पत्ति

बढ़ती जाती थी, वैसे ही वैसे सबसे पहले दायभागके कानूनोंमें परिवर्त्तन हुआ, पैतृक कानून तथा बापकी सम्पत्ति पर बेटेके अधिकारका विकास हुआ, जिसके कारण विशेष परिवारोंकी शक्ति अधिक बढ़ी। जैसे-जैसे उत्पादनके साधन विकसित होते गये, अर्थात् धन-उत्पादन करनेका तरीका अधिक और अधिक श्रमकी माँग करने लगा, जन-समाजके बाद (दासताकी प्रथा) प्रचलित हुई। परिवार पहले पितृसत्ताके रूपमें अर्थात् आदिम साम्यवादी जन-समाजसे होते तीसरी मंजिलपर पहुँचा। पितृसत्ताके समाजमें श्रमकी मांगके कारण आरंभ हुई दासताने अब दासतामूलक समाजका जन्म दिया, और उसके साथ परिवार पितृसत्ताके रूपसे बहुत कुछ वर्त्तमान रूप ले चला, जिसके महत्वके बढ़नेके साथ जन-संस्था अधिकाधिक कमजोर होती गई और उसके भीतरसे आधुनिक समाज अपने प्राचीन रूपमें प्रकट हुआ, जिसमें कि सम्पत्तिशाली वर्ग सम्पतिहीन वर्गोंके शोषणपर गुजारा करता है, और समाजमें शोषितका स्थान दास, अर्ध-दास या मजूर-दासके रूपमें रह गया है। मोर्गनने इन सभी परिवर्त्तनोंमें वैयक्तिक सम्पत्तिको मुख्य कारण माना है: "सम्पत्ति (वैयक्तिक) वह तत्व थी, जो कि परिवर्त्तनकी माँग कर रही थी। पौर जीवन और संस्थाओंका विकास, प्राकारबद्ध नगरोंमें सम्पत्तिका ढेर लगना, और उसके द्वारा जीवनके ढंगमें बड़े परिवर्त्तन वह चीजें थीं, जिन्होंने कि जन-संस्थाओंके उखाड़ फेंकनेके लिये रास्ता तैयार किया।"

समाजमें स्त्रियोंकी स्थिति, राज्य तथा और विषयोंपर भी एंगेल्सने अपनी लेखनी द्वारा बहुत से मौलिक तथ्योंका विश्लेषण किया।

(३) फ्वारबाख़ (१८८८ ई०)—हेगेलीय दर्शनके तत्कालीन प्रतीक फ्वारबाख़की विचारधाराका विवेचन और खंडन एंगेल्सने अपनी इस पुस्तकमें किया है, जो कि १८८८ ई० में प्रकाशित हुई। फ्वारबाख़की विज्ञानवादकी और रुझानोंकी आलोचना करनेके बाद इस ग्रंथमें एंगेल्सने बहुत ही स्पष्ट और सारगर्भित शैलीमें इतिहासकी भौतिकवादी धारणाकी इस ग्रंथमें व्याख्या की है।

एंगेल्सकी अन्तिम कृति थी मार्क्सके "१८४८-५०ई० से फ्रांसमें वर्ग-संघर्ष"

की भूमिका। इस ग्रंथको उन्होने अपनी मृत्युसे केवल पॉच महीने पहले लिखा था। अब वह ७५ साल (जन्म २८ नवम्बर १८२० ई०) के हो रहे थे, लेकिन अब भी उनकी बुद्धि उसी तरह प्रखर और गम्भीर थी। उन्होंने अपनी इस कृतिमें १८५० से १८९५ ई० तकके यूरोपीय समाजके इतिहासका सिंहावलोकन किया है।

७. मृत्यु

१८९३ ई० मे जूरिच-काग्रेसमें अन्तिम बार एगेल्स सार्वजनिक मचपर आये। वह भाषणसे अधिक लेखनीके धनी थे। वैसे वह वीना और बर्लिनकी काग्रेसोंमें भी शामिल हुये थे। १८९५ ई० के मार्चमें उनके गले में नासूर (कैन्सर) हो गया, और जैसा कि इस घातक बीमारीका स्वभाव है, पॉच महीने तक यंत्रणा देते उसने ६ अगस्त (१८९५ ई०) को उनके प्राण हर लिये। एगेल्सने प्रथम श्रेणीकी प्रतिभा और योग्यता पाकर भी हमेशा अपनेको पीछे रखना चाहा। मरने के बादके लिये भी मेरी लाशको जलाकर राख समुद्रमें फेक देना—कहकर उन्होने साबित कर दिया कि उन्हें किसी प्रकारकी महत्वाकाक्षा नहीं थी। लेकिन, इतिहास उनको महत्वहीन नहीं समझता। मार्क्सके साथ एगेल्सका नाम सदा के लिये जुट गया और आज एकके सामने उपस्थित होने पर दूसरा स्वतः उपस्थित हो जाता है। उनकी चिताके पास उनके घनिष्ट मित्र जमा हुये। मार्क्सकी पुत्री एलिनोर उस समय एगेल्सके प्रिय समुद्रतट ईस्टबोर्न-पर पहुँची। उसने २७ अगस्त को एक नाव किराया करके महान् एंगेल्सकी भस्मको ले जाकर समुद्रमें डाल दिया। मार्क्सकी हड्डियॉ अब भी लन्दनके हाइगेट कब्रिस्तानमे मौजूद हैं, उनके शिष्य लेनिन और प्रशिष्य स्तालिनके शवोंको सजीव से रूपमें आज भी मास्कोके लालमैदानके समाधि-मन्दिरमें देखा जा सकता है, लेकिन एगेल्स अब केवल अपनी कृतियोंमे ही जीवित हैं—जो उन अस्थियोंसे भी अधिक मूल्यवान और अमर हैं, इसे कहनेकी आवश्यकता नही।

इति।

परिशिष्ट

वर्षपत्र

सन्	स्थान	घटना-विवरण
१८१८ मई ५	ट्रीर (ट्रेव्स)	कार्ल मार्क्सका जन्म
१८२४	"	पिता हाइनरिख मार्क्स इसाई बने
१८३५ अगस्त २५	"	ट्रीर कालेजकी पढ़ाई समाप्त
१८३५-३६	बोन	कानूनकी पढ़ाई और जेनीसे सगाई
१८३६-४१	बर्लिन	कानून-दर्शन-इतिहासके विद्यार्थी, प्रथम लेख (कविता आदि)
१८३८	ट्रीर	पिता मरे
१८४१	जेना	डाक्टरकी उपाधि
१८४२-४३	कोलोन	"राइनिशे-जाइटुंग" का संपादन
१८४३	ट्रीर	ज़ेनी फान वेस्टफालेनसे विवाह
१८४३-४५	पेरिस	निर्वासित जीवन और लेखन आदि
१८४४	"	"जर्मन-फ्रेंच वर्षपत्र" का संपादन; एंगेल्ससे पहली मुलाकात, अर्थशास्त्र और दर्शनका विशेष अध्ययन
१८४५	ब्रुशेल्स	पेरिससे निष्कासन
१८४५-४८	"	एंगेल्सके साथ काम : "पवित्र परिवार" "जर्मन विचारधारा"
१८४७	"	कम्युनिस्ट लीगमें सम्मिलित, कृति : "दर्शनकी दरिद्रता"
१८४८	"	"कम्युनिस्ट लीग" का पुनः संगठन, ब्रुशेल्ससे निष्कासन, "कम्युनिस्ट घोषणापत्र" का प्रकाशन

सन्	स्थान	घटना विवरण
१८४८-४९	कलोन	"नोये राइनिशे जाइटुंग" का संपादन
१८४९	"	जूरी द्वारा मार्क्स मुकदमेसे बरी, कलोनसे निष्कासन
१८४९-८३	लन्दन	निर्वासित जीवन और महान् कार्य
१८५०	मेन्चेस्टर	एंगेल्स व्यवसायमें लगे
१८५१	लन्दन	"न्यूयार्क ट्रिव्यून" में लेख शुरू (१८६१ तक)
१८५२	"	सबसे छोटी लड़कीकी मृत्यु
१८५३	"	भारतपर लेख
१८५५	"	एकमात्र पुत्र एडगर (मूश) की मृत्यु
१८५७-५८	"	नवीन अमेरिकन साइक्लोपीडियाके लिये काम
१८५९	"	"राजनीतिक अर्थशास्त्रकी आलोचना" का प्रकाशन
१८६०	"	"हेर फोग्ट" लिखना
१८६१-६२	"	"डी प्रेस" (वीना) को लेख
१८६१	"	जर्मनी की यात्रा, लाबेलसे भेंट (बर्लिन)
१८६३	"	लाजेल द्वारा कमकर पार्टीकी स्थापना
" जनवरी	"	एगेल्ससे क्षणिक मनमुटाव
१८६४ सितंबर २८	"	प्रथम इंटर्नेशनलकी स्थापना, इसी साल लाजेल वोल्फकी मृत्यु
१८६५	"	लाजेलके संगठनसे सम्बन्ध-विच्छेद, "मूल्य, दाम और लाभ" पर श्रमि-

सन्	स्थान	घटना विवरण
		भाषण (२६ जून), आस्ट्रिया प्रशिया-युद्ध, घोर आर्थिक कष्ट
१८६६	”	जेनेवामें इन्टर्नेशनली प्रथम कांग्रेस
१८६७	”	'कपिटाल' की प्रथम जिल्द प्रकाशित
१८६८	”	ब्रुशेल्समें इंटर्नेशनलकी तृतीय कांग्रेस
१८६८-६६	”	पश्चिमी और मध्य-यूरोपमें हड़ताल आन्दोलनकी वृद्धि
१८६८	लन्दन	ब्रुशेल्समें इंटर्नेशनलकी तृतीय कांग्रेस, बकुनिनसे सम्बन्ध विच्छेद
१८६६-६६	”	पश्चिमी और मध्य युरोपमें हड़ताल की वृद्धि
१८६६ सितम्बर ५, ६	”	बाजेलमें इंटर्नेशनलकी चौथी कांग्रेस
१८६६-७०	”	मार्क्सका स्वास्थ्य खराब
१८६६ जून ३०	”	एंगेल्स व्यवसाय त्याग
१८७० सितम्बर	”	एंगेल्स सदाके लिये लन्दनमें
१८७०	”	फ्रेंच-प्रशियन-युद्ध
” अप्रैल २२	सिम्बिर्स्क (रूस)	लेनिन का जन्म
१८७१	”	आत्मसमर्पण (जनवरी २८) पेरिस कम्यून (२६ मार्च-२८ मई) "फ्रांसमें गृह-युद्ध" का लिखना
१८७२ सितम्बर ३	”	हेगमें इंटर्नेशनलकी कांग्रेस, एम्स-टर्डममें मार्क्सका भाषण, इन्टर्नेशनल की जेनरल कौंसिल न्यूयार्कमें स्थानान्तरिक
१८७३	”	बकुनिनके खिलाफ पुस्तिका, कड़ी बीमारी

सन्	स्थान	घटना-विवरण
१८७५	”	“गोथा प्रोग्रामकी आलोचना”
१८७६	”	बकुनिनकी मृत्यु
१८७७	”	‘डूरिंग-खंडन’ में एंगेल्सकी सहायता
१८७८	”	जर्मनीमे समाजवाद-विरोधी कानून-की घोषणा
१८७९-८३	”	मार्क्स सख्त बीमार
१८७९ दिसम्बर ११	गोरी	स्तालिनका जन्म
१८८१ दिसम्बर २	लन्दन	जेनी मार्क्सकी मृत्यु
१८८२	अल्जियर, फ्रास	स्वास्थ्यके लिये यात्रायें, प्रियपुत्री जेनीकी मृत्यु, जेनेवा सरोवर (सितम्बर)
१८८३ मार्च १४	लन्दन	मार्क्सकी मृत्यु
१८८३ मार्च १७	”	अन्त्येष्टि-क्रिया
१८८५		“कपिटाल” दूसरी जिल्द प्रकाशित
१८८४	लन्दन	एंगेल्सकी पुस्तक |“परिवारकी उत्पत्ति” प्रकाशित
१८८५		“कपिटाल” दूसरी जिल्द प्रकाशित
१८८८	”	एंगेल्सकी पुस्तक “फ्वारबाख” प्रका-
१८९४	”	शित “कपिटाल” की तीसरी जिल्द प्रकाशित
१८९५	”	एगेल्स मार्चमें बीमार और २७ अगस्तको मृत।
१९१७	रूस	साम्यवादी क्रांति और प्रथम कमकर राज्यकी स्थापना

मार्क्स के दर्शन की उपयोगिता और सार्थकता इससे सिद्ध है कि आज रूस, चीन आदि देशो के साथ एक विशाल भू भाग की मानवता मार्क्स के दर्शन का अनुसरण करके सुख और व्यापक सम्पन्नता के मार्ग पर उत्साह से अग्रसर है।

यह हर्ष और सन्तोष का विषय है, कि हिन्दी के एक महान विचारक, लेखक और मनीषि ने इस पुस्तक मे विश्व के इस महान दार्शनिक का जीवन और दर्शन हिन्दी जगत के सामने प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत पुस्तक एक ऐसा व्यापक ग्रन्थ है जिसमे पाठक को न केवल मार्क्स के जीवन तथा कार्यशीलता की झाँकी मिल सकेगी वरन् वह मार्क्स के मानव-हित सम्बन्धी सिद्धान्तों तथा दर्शन को समझ सकेगा। मार्क्स के सम्पूर्ण साहित्य तथा उन पर लिखे गये साहित्य का मन्थन करके अकथ परिश्रम के बाद जो अमृत राहुल जी ने प्रस्तुत किया है, उसको पाठक जगत कृतज्ञता से स्वीकार करेगा इसकी हमे आशा है।